स्वयं चुनिए
अपना
भाग्यशाली रत्न

गोपाल राजू

स्वयं चुनिए
अपना
भाग्यशाली रत्न

रत्नों का उपयोग सदियों से अलंकरण के लिए किया जाता रहा है। समाज के लगभग प्रत्येक वर्ग में विश्व स्तर पर यह भी प्रचलित है कि यदि रत्नों का अपने अनुकूल ठीक-ठीक चयन कर लिया जाए तो दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक तीनों सुखों की प्राप्ति होने लगती है।

प्रस्तुत पुस्तक में शास्त्रोक्त, विवेचनात्मक, व्यवहारिक आदि अनेक ऐसी नई तथा अछूती विधियाँ दी गयी हैं जो आपको अपना भाग्यशाली रत्न चयन करने में सहायक सिद्ध होंगी। पाठक पुस्तक पढ़कर यह अवश्य स्वीकार करेंगे कि व्यवसाय से दूर हटकर यह पुस्तक लेखक के शोधपरक परीक्षण का सार-सत है तथा एक ऐसी कुंजी है जो रत्न विषयक सामग्री के शोध में आपके लिए बिल्कुल नए द्वार खोल देगी।

शैल दीदी जिनसे सदैव मातृत्व मिला, नवीन सक्सेना, नीतू जिन्होंने सदैव मामृत्व दिया तथा निःस्वार्थ भाव से गुह्य विद्याओं के शोध, उत्थान तथा स्वस्थ प्रचारादि में जुड़े जिज्ञासुओं एवं मर्मज्ञों को समर्पित।

— गोपाल राजू

स्वयं चुनिए
अपना
भाग्यशाली रत्न

लेखक :
गोपाल राजू
रत्न मर्मज्ञ, रत्न विशारद्, रत्न शिरोमणि,
मिलेनियम एवार्ड इन जॅमोलॉजी,
ज्योतिष महामहोपाध्याय

मूल्य :120-00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : गगन बुक डिपो
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

जम्मू विक्रेता : पुस्तक संसार
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

मुद्रक : राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92

© रणधीर प्रकाशन

SWYAM CHUNIYE APNA
BHAGYASHALI RATNA
WRITTEN BY : GOPAL RAJU
PUBLISHED BY : RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)

अनुक्रमणिका

1. प्राक्कथन 7
2. रत्नों का वर्गीकरण 9
3. प्रमुख रत्नों के उपरत्न 13
4. चौरासी रत्न-उपरत्न 18
5. चन्द्र राशि एवं रत्न चयन 25
6. पाश्चात्य मतानुसार रत्न चयन 27
7. जन्म तिथि के आधार पर रत्न चयन 30
   भारतीय जन्म मास के अनुसार रत्न चयन 30
   वार एवं रत्न चयन 31
   आयु के अनुसार रत्न चयन 32
   रत्नों में परस्पर मैत्री 32
8. आपका जन्म लग्न एवं रत्न चयन 35
9. लग्नानुसार शुभ दिन, रंग तथा रत्न चयन 40
10. ग्रह विभिन्न भावों का स्वामी होकर क्या देगा 42
11. रत्न जड़ित चमत्कारी जन्म लग्न यंत्र 45
12. ज्योतिष का विलक्षण योग एवं रत्न चयन 52
13. बलहीन ग्रह एवं रत्न चयन 54
14. मनहूस घड़ी में जन्म एवं रत्न चयन 56
15. दशा-अन्तर्दशा एवं रत्न चयन 58
16. अष्टक वर्ग एवं रत्न चयन 66
17. ज्योतिष के छः महादोष एवं रत्न चयन 69
   I. विनाशकारी मूल संज्ञक नक्षत्र एवं रत्न चयन 69
   II. मंगल दोष का हौवा एवं रत्न चयन 72
   III. कालसर्प दोष एवं रत्न चयन 75
   IV. नाड़ी दोष एवं रत्न चयन 76
   V. मारकेश एवं रत्न चयन 78
   VI. शनि का भूत एवं रत्न चयन 80
18. भाग्यप्रदायक दिशा एवं रत्न चयन 85

19. कृष्णामूर्ति पद्धति एवं रत्न चयन 87
20. रमल शास्त्र एवं रत्न चयन 93
21. प्रस्तार अर्थात रमल कुण्डली 97
22. जैन प्रश्न शास्त्र एवं रत्न चयन 103
23. इस्लामिक मान्यता एवं रत्न चयन 107
24. सिद्धलामा द्वारा रत्न चयन 109
25. लाल किताब एवं रत्न चयन 115
26. कीरो का अंक शास्त्र एवं रत्न चयन 120
27. जीवन का निर्धारित चक्र एवं रत्न चयन 131
28. भाग्यांक, विभिन्न आकृतियाँ एवं रत्न चयन 133
29. विभिन्न रंग एवं भाग्यशाली रत्न चयन 135
30. नियंत्रक अंक एवं भाग्यशाली रत्न चयन 154
31. हस्त रेखाएँ एवं रत्न चयन 171
32. विभिन्न रोग एवं रत्न चयन 178
33. रोगोपचार हेतु रत्न-उपरत्न युग्म चयन 189
34. रोगोपचार की रत्न जड़ित प्लेट 197
35. रत्नों का विकल्प विविध वनस्पति 198
36. रत्नों के विकल्प धातुओं के छल्ले एवं कड़े 200
37. रत्नों के विकल्प - विभिन्न फूल 203
38. रत्नों के विकल्प विभिन्न वृक्षों का रोपण 208
39. अपने जन्मलग्न के अनुरूप वृक्षारोपण 211
40. जन्मराशि और नामराशि से वृक्षारोपण 212
41. जन्मनक्षत्र से वृक्षारोपण 213
42. अनुकूल नवरत्न चयन 215
43. रत्नों की प्राण प्रतिष्ठा 219
44. प्राण-प्रतिष्ठित अर्थात चैतन्य पदार्थों के चित्र 224
45. जिज्ञासु प्रश्नोत्तरी 226

+ + +

प्राक्कथन

चिरन्तर से प्रेरणास्रोत पाठक रत्न विषय पर कुछ नया प्रस्तुत करने के लिए मुझे निरन्तर प्रोत्साहित करते रहे हैं। विगत एक दशक से विषय की एक सौ से अधिक छोटी-बड़ी पुस्तकें लेकर मैं गूढ़ता से अध्ययन तथा मनन-गुनन कर रहा था। जो प्रयोगातीतातीत तथ्य मुझे प्रयोगानुकूल लगे उन्हें मैं संकलित करता रहा तथा व्यापकरूप से व्यवहार में भी लाता रहा। प्रस्तुत पुस्तक उस शोधपूर्ण विषय वस्तु का ही सार-सत् है। पाठक यह अवश्य स्वीकार करेंगे कि यह पुस्तक पारम्परिक रूप से चली आ रही रत्नों की तथाकथित परिपाटी से सर्वथा भिन्न है। अधिकांशत: प्रयास किया गया है कि पाठकगण पौराणिक युग की किंवदन्तियों तथा दंत कथाओं आदि में न जीकर आधुनिक परिवेश में जिएँ। हाँ, नीतिपरक, शास्त्रोक्त, विवेचनात्मक तथा वैज्ञानिक तथ्यों से मैं कहीं भी विमुख नहीं हुआ हूँ।

रत्न चयन करने की जितनी अधिक विधियाँ प्रस्तुत की गयी हैं वह एक साथ अन्यत्र मिलना असम्भव है। रत्न विषयक आज तक के उपलब्ध साहित्य में यह विधियाँ (कुछ को छोड़कर) न तो कभी प्रकाशित हुई हैं और न ही किसी ने उन्हें प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।

विधियों में कुछ मूल सूत्र ऐसे भी उपलब्ध करवाए गए हैं जो पाठकों को विषय की अनन्तानंत विधियाँ खोजने में सहायक सिद्ध होंगे। विधियाँ अपनाकर तदनुसार उन्हें प्रयोग करवाकर अन्ततः आपको यह लगेगा कि यह इति नहीं, श्रीगणेश है। संक्षिप्त प्रस्तावना, उदाहरण तथा सरल भाषा शैली के विवेचन द्वारा कृति को ऐसा बनाया गया है कि प्रत्येक वर्ग के पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो। बौद्धिक वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति के मार्गदर्शन के लिए मैं सदैव तत्पर हूँ। अपरिपक्व मानसिकता वाले, छोटे आयु के लड़के-लड़कियाँ मुझसे सम्पर्क तब करें जब वह विषय को पढ़-समझ लें। यथाशक्ति जिज्ञासु पाठकों के प्रत्येक पत्र का स्वयं उत्तर देता हूँ तथापि पत्रों की भीड़ में विलम्ब हो अथवा डाक व्यवस्था के कारण पत्र ही न मिल पाएं तो कृपया अन्यथा न लें।

कोई भी प्रयोग अपनाने से पूर्व एक बात अवश्य गाँठ बाँध लें—अपनी बुद्धि-विवेक का भी रत्न चयन से पूर्व अवश्य प्रयोग करें। फल मिलना, न मिलना, अर्थ-अनर्थ होना, न होना आदि हमारा दायित्त्व नहीं है, अन्ततः यह ईश्वरीय देन है और अपने-अपने प्रारब्ध पर भी निर्भर है।

जिस परिवेश में रहकर यह शोधपूर्ण कार्य पूर्ण हो सका, सम्भवतः अन्य किसी के लिए वह सम्भव न हो पाता। प्रभु तथा अपने गुरूजनों के निमित्त असीम आस्था के कारण पल-प्रतिपल मुझे लगता रहा कि कम से कम इस शरीर का कार्य तो यह नहीं हो सकता, कोई अदृष्य शक्ति ही दायित्व वहन करने का बल देती रही और सब सम्पन्न हो सका।

छोटा भाई राकेश सक्सेना मध्य प्रदेश वन सेवा में डी.एफ.ओ. है। दोनों की घुमन्तु, जिज्ञासु प्रवृत्ति तथा खान-पान प्रेमी स्वभाव ने हमें जंगल, पहाड़ आदि स्थानों में भरपूर भ्रमण करवाया। पुस्तक का कलेवर बटोरने में उस सबका बहुत बड़ा योगदान मिला है। उसे तथा उसकी पत्नी उदिता को सहयोग तथा मित्रवत व्यवहार का आभार।

सहभागी अंजू, पुत्र रनित सक्सेना एवं अर्चित, बहू रिया तथा पौत्र हनु (मलय) का सदैव ऋणी रहुँगा। प्रभु से यही प्रार्थना है कि इस ऋण से उऋण हो सकूँ।

अन्त में अपने प्रकाशक श्री रणधीर सिंह जी का मैं अवश्य आभार प्रकट करूँगा जिनके सशक्त सम्पादन में तथा व्यक्तिगत रूचि के अथक प्रयास से यह कृति इतनी सुन्दर रूप-सज्जा में आपके हाथों तक पहुँच सकी।

यह मेरा शोधपरक प्रयास है। अकिंचन बालक हूँ इसलिए त्रुटियाँ सम्भावित हैं। पाठक वृंद कृपया इस ओर ध्यान इंगित कर देंगे तदनुसार आगे के संस्करणों में सुधार किए जा सके।

—गोपाल राजू

पोष शुक्ल पक्ष 9
श्री सम्वत् 2061

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र (रजि.)
पी. ओ. बॉक्स-87
30, सिविल लाइन्स, रुड़की-247667
(हरिद्वार) उत्तरांचल
दूरभाष :+91-1332-274370

रत्नों का वर्गीकरण

धरती को रत्नगर्भा कहा गया है। अब तक के उपलब्ध आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि आकर्षक रसायन अर्थात खनिजों में 2000 से भी अधिक खनिज अर्थात रत्न उपलब्ध हैं। परन्तु इतनी अधिक संख्या में से मात्र 16 को ही रत्नों के रूप में प्रसिद्धि मिली है। इन 16 में ही विश्वभर के तथाकथित् 84 रत्न आते हैं। इनमें से अनेक तो दुर्लभ हैं तथा कुछ का अता-पता ही नहीं कि उनका अस्तित्व है भी अथवा नहीं ? जैसे पारसमणि।

ऐसे पदार्थ जिनकी रासायनिक और परमाणविक संरचना सुनिश्चित होती है तथा जो प्रकृति में अकार्बनिक क्रियाओं के फलस्वरूप बनते हैं, खनिज कहलाते हैं। खनिजों के अकार्बनिक रसायनों के आक्साइड्स, सिलिकेट्स कार्बोनेट्स आदि के मिश्रण से विभिन्न रत्न जन्म लेते हैं। खनिजों के अतिरिक्त जैविक तथा वानस्पतिक रत्न जैसे मूंगा तथा मोती भी प्रकृति से मिलते हैं। आज विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि अप्राकृतिक रूप से बने रत्नों (Synthetic Stones) की संरचना भी सिंथेसाइज करके प्राकृतिक बना दी जाती है। व्यवहार में अधिकांशत: ऐसे बनावटी रत्नों का ही चलन है। रत्नों का वर्गीकरण मात्र ज्ञानार्थ संक्षेप में निम्न प्रकार है—

1. क्राइसोविराएल (Chrysoberyl)

यह प्राय: क्रिस्टल्स में पाया जाता है। यह धुनैला, मटमैला तथा पीत-हरित आभा में भी मिलता है। यह जिरकॉन, तुरमुली, पेरीडॉट, स्पाइनल, एन्डालुसाइट आदि जैसा प्रतीत होता है। इस वर्ग में चन्द्रकांत मणि, लहसुनिया तथा विभिन्न हरित मणियाँ आती हैं। यह इंडोनेशिया, श्रीलंका, ब्राज़ील, रूस तथा इटली आदि में पाया जाता है।

2. कोरडंम (Corundum)

इसमें ताँबे की बुंदकी वाली चमकदार बिल्लौर, फिटका, स्फटिक आती हैं। यह वर्ग हिन्दी के कोरुण्ड शब्द से बना है जिसका अर्थ है अज्ञात खनिज अथवा रत्न। इस वर्ग में माणिक्य, पुखराज आते हैं। हीरे के बाद सर्वाधिक

कठोरता इसमें ही होती है। यह बर्मा, भारत, ग्रीस, कम्बोडिया, तन्जानिया में पाया जाता है।

3. हीरा (Diamond)

अधिकांश हीरे रंगहीन अथवा पीलापन लिए होते हैं। इलमास, तेलिया, हल्का पीलापन तथा चमकदार श्वेत वर्ण हीरे सर्वोच्च होते हैं। वैसे हीरा भूरा, हल्का हरा, लाल, काला, नीला सफेद आदि अनेक रंगों में भी मिलता है। हीरा भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, गुआना, वैनिनजुएला, चीन आदि में पाया जाता है।

4. फेल्सपार (Feldspar)

यह अपारदर्शी तथा लाल-भूरा, नारंगी, आसमानी तथा चमकीला होता है। इसमें श्वेत धारियाँ होती हैं।

चंद्रकांत तथा सूर्यकांत-गोदंत इसके ही नाम हैं। यह इटली, चैकोस्लोवाकिया, श्रीलंका, बर्मा, स्पेन, नार्वे आदि में पाया जाता है।

5. गार्नेट (Garnet)

गोसुलर गार्नेट, हैसोनाइट, टापाजालाइट, पायराब (Almondine garnet), रोडोलाइट, एन्ड्रेडाइट (Spssartite garnet) एक ही वर्ग में आते हैं। प्रेम का यह रत्न चिकना तथा अनेक रंगों में मिलता है। परन्तु अधिकांशतः यह लाल रंग का होता है। गार्नेट बर्मा, भारत, मैक्सिको, ब्राजील, केन्या, दक्षिण अफ्रीका आदि में पाया जाता है।

6. जेडाइट (Jadeite)

यह भूरा, काला, पीला, हरा आदि रंगों में मिलता है। इसका एक प्रकार नेफ्राइट भी है। मरगज अथवा संगेयशब इसका ही नाम है। इसको हरितमणि भी कहते हैं।

यह ब्राजील, ब्रिट्रेन, न्यू मैक्सिको आदि में पाया जाता है।

7. लेजुराइट (Lazurite)

यह गहरे नीले रंग का रत्न होता है। लाजावर्द और तुरमुली इसके ही नाम हैं। इसमें काँच की तरह चमक होती है।

यह अफगानिस्तान, साइबेरिया, बर्मा, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका

तथा भारत में पाया जाता है।

8. ओलिवाइन (Olivine)

यह पीले, हरे आदि रंगों में मिलता है। जबरजद (Peridot) इसका ही नाम है। यह जर्मनी, बर्मा, ब्राजील, एरिजोना, हवाईद्वीप आदि में पाया जाता है।

9. ओपल (Opal)

यह सफेद, लाल, नीले, काले आदि चकत्तों वाला सुन्दर रत्न है। उपल, तुषार, कर्बुरमणि आदि ओपल के नाम हैं। ओपल मेक्सिको, ग्वाटेमाल, हंगरी, आस्ट्रेलिया आदि में मिलता ह।

10. क्वार्ट्ज (Quartz)

यह अनेक रंगों तथा रंगहीन होता है। लहसुनिया (Cat's eye Quartz, Tiger's eye Quartz) एवेन्चुरिन क्वार्ट्ज, हॉक्स आई क्वार्ट्ज (Hawk's eye) सिट्राइन क्वार्ट्ज आदि इसके नाम हैं। यह भारत, ब्राजील, अमरीका आदि में पाया जाता है।

11. स्पाईनल (Spinel)

यह लाल, गुलाबी, बैंगनी, नारंगी आदि रंगों में मिलता है। यह माणिक्य की तरह चमकीला होता है। लालड़ी इसका ही नाम है। अधिकांशत: माणिक्य, पुखराज, नीलम आदि कृत्रिम रत्न इसका ही रूप हैं। यह भारत, बर्मा, श्रीलंका, ब्राजील, अफगानिस्तान आदि में मिलता है।

12. टोपाज (Topaz)

यह लाल-भूरा, पीला, हल्का नीला, रंगहीन गुलाबी आदि रंगों में मिलता है।

यह क्वार्ट्स अथवा सिट्राइन वर्ग का रत्न है। पुखराज एक प्रकार से कोरण्डम (Corundum) है।

कुंजाइट, फ्लोराइट, सिट्राइन, एक्वामेरिन आदि कोरण्डम से टोपाज का भ्रम होता है जबकि वस्तुत: यह सबसे भिन्न है।

यह श्रीलंका, रूस, ब्राजील, जापान आदि देशों में मिलता है।

13. तुरमुली (Tourmuline) अथवा कोर्ड्राइट (Cordierite)

यह हरी, पीली, काली आदि रंगों में मिलती है। तुरमुली अपनी कठोरता

के लिए प्रसिद्ध है। वस्तुत: यह वैक्रान्त मणि ही है। इंडिकोलाइट, रुबीलाइट आदि इसके ही प्रारूप हैं। तुरमुली श्रीलंका, ब्राजील, मोजम्बिक आदि देशों में मिलती है।

14. फिरोजा (Tourquoise)

यह आसमानी रंग का होता है।

अमेन्ट्रिक्स लाजुलाइट, अमेजोनाइट आदि फिरोजा के नाम पर बेचे जाते हैं। फिरोजा आस्ट्रेलिया, तंजानिया, अमरीका, अफगानिस्तान आदि में मिलता है।

15. बेराइल (Beryl)

यह पीला-हरा, गुलाबी, रंगहीन, सुनहरा आदि रंगों में मिलता है। मुख्यत: पन्ने के स्थान पर इसको बेचा जाता है। बिक्सबाइट, एक्वामेरीन, मोर्गेनाइट, हेलियोडोर आदि इसके ही समरूप हैं। यह कोलम्बिया, ब्राजील, तन्जानिया, आस्ट्रिया आदि में मिलता है।

16. जिरकॉन (Zircon)

यह विभिन्न रंगों की आभा में मिलता है। फ्लोराइट, फेल्सपार, एन्डेल्यूसाइट आदि इसके ही प्रारूप हैं। यह म्यामार, श्रीलंका, अफ्रीका, ब्राजील, कम्बोडिया, थाइलैण्ड आदि में मिलता है।

❀ ❀ ❀

पढ़ाई से जी चुराना

क्या आपका बच्चा पढ़ाई से विमुख होता जा रहा है? क्या उसकी एकाग्रता पलायन करती जा रही है? क्या परिश्रम करने के बाद भी आशातीत परिणाम नहीं दिखाई दे रहा है? उसे हरे रंग की तुरमुली चांदी में दाएँ हाथ की कनिष्ठिका अथवा पैन्डेन्ट बनवाकर गले में धारण करवाएँ।

प्रमुख रत्नों के उपरत्न

नौ प्रमुख रत्नों के विषय में सामान्यतः सब जानते हैं। यह भी आपके अनुभव में अवश्य आया होगा कि यह नौ प्रमुख रत्न मँहगे होने के कारण जन साधारण की क्रयक्षमता से दूर हैं। मैं इनके विकल्प पर विशेष बल देता हूँ। इन रत्नों के स्थान पर विभिन्न वनस्पतियों तथा धातुओं का वर्णन भी इसीलिए मैंने इस पुस्तक में लिख दिया है ताकि इस विषय का लाभ सर्वसुलभ हो। यह किसी धनपति अथवा वर्ग विशेष तक ही सीमित न रह जाए। इस अध्याय में मैं प्रमुख रत्नों के कुछ उपरत्नों का संक्षिप्त विवरण पृथक रूप से लिख रहा हूँ ताकि पाठकों को प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा हो।

1

माणिक्य के उपरत्न

लालड़ी— माणिक्य के पहले उपरत्न को लालड़ी (Spinel) कहते हैं। लालड़ी लाल, गुलाबी, कनेर के फूल, अनार दाने के रंग सी अथवा गेरु के रंग वाली होती है। अच्छी लालड़ी चमकदार, चिकनी, शुद्ध रंग वाली तथा रक्तिम आभा-सी बिखरने वाली होती है। हाथ की मुट्ठी में यदि इसको दबाकर रखा जाए तो हाथ हल्का सा गरम हो जाता है। अच्छी लालड़ी को यदि दूध में डाल दिया जाए तो दूध में से रक्तिम आभा फूटती प्रतीत होती है।

जालयुक्त, क्षुद्र रेखाओं वाली, दोषपूर्ण रंग वाली, अपारदर्शी, गड्ढे वाली, अनेक रंगों अथवा काले धब्बों वाली लालड़ी अच्छी नहीं मानी जाती। यह गुणों में निम्नता लाती है इसलिए इसका सुप्रभाव भी कम होता है।

लालड़ी के भी तीन उपरत्न देखने को मिलते हैं। **संग टोपाज**-यह नारंगी रंग का चिकना सा रत्न है। **संग आतशी**-आतशी तथा बादामी रंग का यह उपरत्न भी लालड़ी का उपरत्न है। इसके ऊपर कभी-कभी पीले, काले तथा गुलाबी से रंग के धब्बे भी मिलते हैं। तीसरा उपरत्न **संग सिन्दूरिया** कहलाता है। नामानुरूप यह रत्न सिन्दूरी से रंग का होता है।

संग तामड़ा—भारतवर्ष में यह रत्न बहुतायत में मिलता है इसलिए मूल्य में भी यह बहुत सस्ता है। गहरे लाल रंग का यह रत्न माणिक्य के स्थान पर बहुचर्चित है।

संग सिगली—वर्मा, चीन आदि देशों में इसकी खानें हैं। यह चिकना सा, अबरक के रंग सा एक सस्ता रत्न है।

संग माणिक्य—यह रत्न भी अनेक देशों में बहुतायत में पाया जाता है। यह माणिक्य की तुलना में हल्की सी चमक तथा रंग वाला होता है।

सामान्यत: माणिक्य के चलन में उपरत्न हैं : स्टार रूबी, रतवा, नरम (सौगन्धिक), लाल रंग का अक़ीक़, चुन्नी तथा लालड़ी।

2.

मोती के उपरत्न

जो व्यक्ति मोती क्रय करने में असमर्थ हैं वह निम्न उपरत्नों से भी कुछ सीमा तक लाभ ले सकते हैं।

विमरू—मोती की तरह यह भी सीप से ही निकलता है परन्तु आकार में यह तुलनात्मक रूप से छोटा तथा दूध सा सफेद होता है।

सामान्यत: मोती के उपरत्न हैं : चन्द्रकांत, स्फटिक, शंख, सीप, ओपल तथा सफेद मूंगा।

3

मूंगा के उपरत्न

संग मूंगी—मूंगे के पौधे में से जो पतली शाखाएँ निकलती हैं उन्हें ही संगमूंगी कहा जाता है। यह मूल्य में कम होते हैं। मूंगे के स्थान पर इस उपरत्न को धारण किया जा सकता है। सामान्यत: मूंगे के अन्य उपरत्न हैं — लाल अक़ीक़, लाल ओनेक्स तथा रक्तमणि।

4

पन्ना के उपरत्न

संग मरग़ज—यह कुछ सफेदी लिए हुए हरे रंग का होता है।

की ओर एक नीली धारी लिपटी सी दिखाई देती है। यह उपरत्न विषनाशक माना जाता है।

संग गौरी—नरम, चमकदार तथा सफेद से रंग का यह उपरत्न अपने धरातल पर सफेद तथा नीली सी धारियों वाला होता है। इन्हीं धारियों से गौरी-शंकर की छवि भी कभी-कभी दृष्टिगोचर होती लगती है।

शंख जोड़—सौभाग्य से कभी-कभी समुद्र में से सीप-मोतियों के साथ दक्षिणावर्ती शंख का यह जोड़ा भी मिल जाता है। यदि इसे ऐसे ही अपने घर में किसी पवित्र स्थान में रख लिया जाए तो यह आशातीत लाभ दिलवाता है।

चन्द्रकान्त मणि—सफेद रंग का धुंधला-सा यह रत्न सस्ता तथा प्रत्येक स्थान पर सुगमता से मिल जाता है। सबसे अच्छा उपरत्न हल्का सा पीलापन लिए होता है।

सफेद अक़ीक़—सर्वसुलभ तथा सर्वाधिक यह रत्न साधारण से साधारण व्यक्ति भी मोती के स्थान पर धारण कर लाभ उठा सकता है।

अलेमानी और यजेमानी (Onyx)—यह भी अकीक़ श्रेणी के ही रत्न हैं परन्तु मूल्य में उनसे थोड़े से अधिक मूल्यवान हैं। यह पारदर्शी हों तो और भी मूल्यवान हो जाते हैं। इन उपरत्नों के धरातल में धारियाँ होती हैं। इन धारियों के अनुरूप ही इनका मूल्य कम अथवा अधिक निर्धारित किया जाता है। किसी-किसी उपरत्न में तो विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ भी स्पष्ट हो जाती हैं जो धर्मानुसार अपना-अपना महत्त्व रखती हैं।

6

हीरे के उपरत्न

जो लोग हीरा नहीं जुटा सकते वह जिरकन धारण कर सकते हैं। देखने में यह हीरे से भी सुन्दर लगता है और दाम में उससे कहीं कम इसलिए इसका उपयोग बहुतायत में किया जाता है। हीरे के नीचे लिखे पाँच उपरत्न बहुत प्रचलित हैं।

संग तुरमुली—तुरमुली अनेक रंगों में उपलब्ध होती है।

संग कांसला—यह गुलाबी अथवा सफेद रंग का होता है। किसी

उपरत्न में कभी-कभी हरी-सी आभा भी निकलती दिखाई देती है।

संग दतला—यह उपरत्न चिकना, हल्का, सफेद वर्ण तथा चमकदार होता है।

संग कुरंज—इसमें पीतवर्ण आभा सी निकलती है। यह गुलाबी अथवा श्वेतवर्ण होता है।

सामान्यत: हीरे के उपरत्न के अन्य प्रचलित नाम हैं—

पुलक, विमल, सफेद अक़ीक़, स्फटिक।

7

नीलम के उपरत्न

नीलम के दो उपरत्न पाए जाते हैं। इनका उपयोग बहुतायत में किया जाता है।

संग जामुनिया—यह जामुन के रंग वाला तथा चमकदार उपरत्न है। शराब की लत छुड़वाने के लिए यह रामबाण सा कार्य करता है। अपने प्रयोगों में मैं जामुनिया को विशेष रूप से चुनता हूँ।

संग नीली—यह नीलापन लिए हुए चमकदार सतह वाला होता है। नीलम और संग नीली को साथ रख दिया जाए तो कोई रत्न पारखी ही इनमें अन्तर निकाल सकता है।

सामान्यत: नीलम के उपरत्न हैं—

काला अक़ीक़, काला स्टार, लाजवर्त, गन मैटल।

8 तथा 9

राहु और केतु

इन छाया ग्रहों का अपना कोई अस्तित्व न होने के कारण इन्हें ज्योतिषा तथा अन्य चलित-प्रचलित मान्यताओं के अनुसार अन्य ग्रहों से जोड़ा जाता है। यह उन्हीं के प्रतिनिधि बन जाते हैं तदनुसार वैसा ही कार्य करते हैं। वैदूर्य, पीला कर्केतन, टाइगर, हॉक, केट्स, दाना-ए-फिरंग आदि इन ग्रहों के प्रचलित उपरत्न हैं।

+ + +

चौरासी रत्न-उपरत्न

इन चौरासी रत्न-उपरत्नों का भी अति सूक्ष्म परिचय दे रहा हूँ। यह परिचय रत्न विज्ञान की रीढ़ है। विषय के विस्तार में जाने के लिए अथाह सागर की तरह छोटी-बड़ी पुस्तकें भरी पड़ी हैं। बौद्धिक पाठक यदि इस विषय में थोड़ी सी भी रुचि मेरी इस अकिंचन कृति के सौजन्य से जाग्रत कर पाते हैं, तो वह उस अथाह सागर में प्रवेश अवश्य करें।

रत्न

1. हीरा (Diamond)—सर्वाधिक कठोर तथा मूल्यवान रत्न है। यह सफेद, गुलाबी, पीले, काले आदि रंगों में मिलता है।

2. पन्ना (Emrald)—नीम के पत्ते सा हरा यह रत्न पारदर्शी तथा अपारदर्शी दोनों रंगों में मिलता है।

3. पुखराज (Yellow Sapphire)—यह पारदर्शी रत्न पीले तथा श्वेत रंगों में मिलता है।

4. नीलम (Blue Sapphire)—मोर की गर्दन से रंग वाला नीलम पारदर्शी तथा नीले रंग में मिलता है।

5. माणिक्य (Ruby)—रक्तवर्ण, यह रत्न-लाल भी कहलाता है।

6. मूंगा (Coral)—यह लाल, सिंदूरी तथा गुर्दयी रंगों में मिलता है।

7. मोती (Pearl)—यह श्वेत, हल्का गुलाबी, पीतवर्ण तथा श्यामवर्ण में भी मिलता है।

8. गोमेद (Gomed)—यह पीत-लाल वर्ण होता है। गोमूत्र रंग का गोमेद सर्वोच्च माना जाता है।

9. लहसुनिया (Cat's Eye)—बिल्ली की आंख से मिलता हुआ यह रत्न हरे तथा पीले से रंग का होता है।

उपरत्न

1. सुनहला (Golden Topaz)—सोने से सुनहरे रंग वाला यह पारदर्शी रत्न है।

2. कटैला (Amethyst)—यह पारदर्शी हल्के बैंगनी रंग का होता है।

3. स्फटिक (Rock Crystal)—सफेद बिल्लौर ही स्फटिक कहलाता है।

4. दाना-ए-फिरंग (Kedney Stone)—यह हरे रंग का रत्न है।

5. फिरोज़ा (Turquoise)—यह आसमानी रंग का अपारदर्शी रत्न है।

6. ज़बरज़द (Peridot)—आभायुक्त यह रत्न हरे रंग का होता है।

7. तुरमुली (Tourmuline)—यह विभिन्न रंगों में मिलता है।

8. ओपल (Opal)—प्रायः यह श्वेतवर्ण होता है और इसमें रंग-बिरंगे चकत्ते होते हैं।

9. संग सितारा (Gold Stone)—गेहुएँ रंग का, अपारदर्शी रत्न सुनहरे रंगों से युक्त होता है।

10. ज़िरकॉन (Zircon)—प्रायः यह श्वेत वर्ण होता है। यह अन्य रंगों में भी उपलब्ध होता है।

11. माह-ए-मरियम—यह मटमैले से रंग का होता है। इस पर पीले रंग की आड़ी-तिरछी रेखाओं का जाल-सा होता है।

12. लाजवर्त (Lapis Lazuli)—यह नीलवर्ण होता है। इसकी सतह पर चाँदी-स्वर्ण के धब्बे स्पष्ट देखे जा सकते हैं। यह शनि का उपरत्न है।

13. तामड़ा (Garnet)—यह गहरे लाल रंग का तथा कालापन लिए होता है। यह माणिक्य का उपरत्न है।

14. चन्द्रकांत मणि (Moon Stone)—गोदंती नाम से प्रचलित यह मोती का उपरत्न है।

15. गन मेटल (Gun Metal)—यह काले रंग का चमकदार रत्न है। यह शनि ग्रह का उपरत्न है।

16. मकनातीस (Load Stone)—काले रंग का चमकदार पत्थर है, इसे चुम्बक भी कहते हैं। यह शनि का उपरत्न है।

17. काला स्टार (Black Star)—काले रंग के इस पत्थर की सतह पर चमकीला-सा स्टार स्पष्ट दिखाई देता है। यह शनि का उपरत्न है।

18. टाइगर (Tiger Stone)—इस रत्न की सतह पर शेर के खाल की तरह पीली तथा काली धारियाँ होती हैं।

19. मरगज़ (Jade)—यह हरे तथा नीले रंग का रत्न होता है। इसे बुध तथा शनि का उपरत्न माना जाता है।

20. ऑनेक्स (Onyx)—यह हरे तथा नीले रंग में मिलता है। यह भी शनि तथा बुध का उपरत्न है।

21. अक़ीक़ (Agate)—यह विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है। रंगानुसार यह विभिन्न राशियों पर उपरत्न के रूप में धारण करवाया जाता है।

22. सुलेमानी (Sulemani Onyx)—काले रंग के इस उपरत्न पर सफेद रंग की धारियां होती हैं। यह शनि के उपरत्न के रूप में प्रयोग किया जाता है।

23. यमनी (Sardonyx)—लाल ऑनेक्स को भी यमनी अकीक़ कहा जाता है। यह लाल रंग का होता है। मंगल के उपरत्न के रूप में यह धारण करवाया जाता है।

24. बैरुज़ (Aquamarine)—यह हल्के हरे रंग का होता है। यह पन्ने का उपरत्न है।

25. धुनैला (Smoky Topaz)—यह सुनहरे तथा धुएं के मिश्रित रंग का होता है। यह पुखराज का उपरत्न है।

26. सजरी अथवा शज़र (Moss Agate)—यह भी अक़ीक़ श्रेणी का उपरत्न है तथा विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है। रंगानुसार राशि द्वारा इसका उपयोग किया जाता है।

27. हॉलदिली अथवा हालन (Heliodor)—सफेद तथा हरे रंग के मिश्रित रंगों के उपरत्न हैं। यह दिल को पुष्ट बनाता है।

28. अलैक्जैन्डर (Alexandrite)—यह जामनी रंग का उपरत्न है तथा नीलम के उपरत्न के रूप में प्रयोग होता है।

29. लालड़ी (Spinel)—यह गुलाबी रंग का सूर्य का उपरत्न है।

30. रोमनी (Romni)—यह लाल तथा कुछ-कुछ कालापन लिए होता है। यह सूर्य तथा मंगल का उपरत्न है।

31. नरम (Spinel Ruby)—यह लाल में कुछ-कुछ पीलापन लिए होता है। यह माणिक्य का उपरत्न है।

32. लूधिया अथवा लूधना (Pink Sapphire or corundum)—लाल रंग का उपरत्न है।

33. सिंदूरिया (Pink Sapphire)—यह गुलाबी रंग में कुछ-कुछ सफेदी लिए होता है।

34. नीली (Iolit)—नीलम का हमशक्ल यह नीलम का उपरत्न है।

35. पितौनिया (Blood Stone)—हरे से रंग के इस पत्थर पर लाल-लाल रंग के धब्बे होते हैं।

36. बांसी (Bamboo Stone)—यह हल्के हरे से रंग का पन्ने का उपरत्न है।

37. द्रर्वेनक अथवा दूर-ए-नजफ (Door-E-Nazaf)—कच्चे धान के रंग का सा उपरत्न होता है।

38. आलेमानी (A Kind of Agate)—यह सुलेमानी अकीक श्रेणी का उपरत्न है। भूरे रंग पर इसमें काली धारियाँ होती हैं।

39. जज़ेमानी (Variety of Onyx)—यह भूरे से रंग का रत्न है। इस पर क्रीम रंग की धारियाँ होती हैं।

40. सीवार (Sivar)—यह हरे रंग का होता है तथा इसमें भूरे रंग की धारियां होती हैं।

41. तुरसावा (A Kind of Zircon)—यह गुलाबी तथा पीतवर्ण मिश्रित उपरत्न है।

42. अह्वा (Rhodonite)—यह गुलाबी से रंग का होता है।

43. आबरी (Abri)—यह काले रंग का होता है।

44. कुदरत (Kudrat)—यह काले रंग पर सफेद और पीले धब्बेदार होता है।

45. चित्ती (Chatoyant)—काले रंग के इस उपरत्न पर सुनहरी

धारियाँ होती हैं।

46. संगसन (White Zade)—यह सफेद तथा अंगूरी रंग का होता है।

47. लारु (A Kind of Marble)—यह मकराने पत्थर की श्रेणी का उपरत्न है।

48. संगमरमर (Marble)—यह विभिन्न रंगों में मिलता है।

49. कसौटी (Basanite)—यह काले रंग का होता है। इससे असली सोने की परख होती है।

50. दारेचना (Braunite)—कत्थई रंग के इस पत्थर में पीले रंग के धब्बे होते हैं।

51. हक़ीक़-कल-बहार (A variety of Agate)—इसका रंग कुछ पीलापन लिए होता है।

52. हालन (Sand Stone)—यह गुलाबी से रंग का पत्थर है।

53. मुबेन ज़फ (Floor Stone)—सफेद रंग के इस उपरत्न पर काली सी धारियाँ होती हैं।

54. कहरुवा (Amber) अर्थात तृणमणि—यह लाल अथवा पीले रंग का होता है।

55. झरना (Jharna)—यह मटमैले रंग का होता है।

56. संग बसरी (A Kind of Antimony)—इससे सुरमा भी बनाया जाता है।

57. दांतला (Achroite)—यह सफेद तथा हरे रंग का होता है।

58. मकड़ा (Spider Stone)—हल्के काले से रंग के इस पत्थर पर मकड़ी का जाला सा बना होता है।

59. संगिया (A Kind of Gypsum)—यह सेलखड़ी से मिलते-जुलते रंग का होता है।

60. गुदड़ी (A Kind of Marble)—यह पीले रंग का होता है।

61. कांसला (A Variety of Turmuline)—यह सफेद तथा हरे में होता है।

62. सिफरी (Amazonite)—यह पत्थर नीले तथा हरे रंग के मिश्रण सा होता है।

63. हरीद (Eye Agate)—यह काला तथा भूरापन लिए होता है।

64. हवास (Hawas)—यह कुछ-कुछ सुनहरे से रंग का होता है।

65. सिंगली (Mysore Star)—यह लाल तथा कुछ-कुछ कालापन लिए होता है।

66. ढेडी (A Kind of Marble)—यह काले से रंग का पत्थर होता है।

67. गौरी (A Kind of Agate)—इस पत्थर में अनेक रंगों की धारियाँ होती हैं।

68. सीया (Black Marble)—यह काले रंग का पत्थर है।

69. सीमाक (Prophyry)—यह कुछ पीलापन लिए हुए काले रग का पत्थर है।

70. मूसा (Jet)—यह सफेद तथा मटमैले रंग का पत्थर है।

71. पनघन (Sard Pebble)—यह हरापन लिए हुए काले से रंग का पत्थर है।

72. अमलीया (A Variety of Marble)—यह हल्का कालापन लिए गुलाबी रंग का पत्थर है।

73. डूर (Epidote)—यह कत्थई रंग का होता है।

74. तिलियर (Tiliyar)—यह काले रंग का होता है तथा इस पर सफेद रंग के छीटे से होते हैं।

75. खारा (Tektites)—यह हरे से रंग का पत्थर है।

76. पाराज़हर अथवा पायेज़हर (A Kind of soft Stone)—यह सफेद रंग का पत्थर है।

77. सेलखड़ी (Gypsum)—सफेद से रंग का चिकना पत्थर होता है।

78. जहरमोहरा (Serpentine)—यह सफेद-काले से रंग का पत्थर है।

79. रवात (Jasper)—यह लाल तथा नीले रंगों में मिलता है।

80. सोनामाखी (Pyrite or Marcasite)—यह सफेद मिट्टी के से रंग का होता है।

81. हज़रते ऊद (Hazrat-E-Ud)—यह काल रंग का पत्थर है।

82. सुरमा (Antimoney Crystal)—यह काले से रंग का पत्थर है।

83. पारस (Philosopher's Stone)—इस पत्थर के रंग-रूप का पता नहीं।

84. रेनबो (Rainbo Quartz)—सफेद रंग का यह चमकदार पत्थर है।

विशेष : जैसे 13 का अंक अशुभ माना गया है वैसे ही रत्न शास्त्र की दुनियाँ में 84 के अंक को महाअशुभ माना जाता है। रत्न विक्रेता, रत्नवेत्ता आदि कभी भी रत्न की संख्या, भार आदि 84 नहीं लिखते। इसके पीछे क्या सिद्धान्त है, यह तो राम जानें।

स्थान, वर्ग, फर्म आदि के अनुसार रत्नों के नाम-रूप अलग-अलग भी हो सकते हैं। अधिकांशत: यह अक्रीक्र वर्ग के ही रत्न होते हैं तथा अपने रंग के अनुसार विभिन्न राशियों में प्रयोग करवाए जाते हैं।

✣✣✣

विभिन्न विषयों में सफलता के रत्न

स्कूल/कालेज हेतु	जिरकन + पुखराज + पन्ना
मैडिकल कोर्स हेतु	पन्ना + पुखराज + माणिक्य
इंजीनियरिंग कोर्स हेतु	पन्ना + मोती
मैनेजमैन्ट कोर्स हेतु	पन्ना + पुखराज
डिजाइनिंग/कला कोर्स हेतु	हीरा + पुखराज
प्रशासनिक प्रतियोगिता हेतु	पन्ना + पुखराज

चन्द्र राशि एवं रत्न चयन

प्राचीन ऋषियों ने अपने दिव्यज्ञान और योगजन्य शक्ति से ग्रह, नक्षत्र, राशियों आदि के सम्बन्ध में बहुत कुछ जान लिया था। पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों की आकर्षण शक्ति के विषय में भारतीयों ने न्यूटन और गैलिलियो से भी हजारों वर्ष पूर्व ज्ञान प्राप्त कर लिया था। आश्चर्य का विषय यह है कि बिना शक्तिशाली दूरबीन के दिव्य ज्ञान की वह क्या शक्ति थी जो आकाश की सारी स्थिति को मनीषी जान लेते थे। अब न तो उतनी सुसज्जित वेधशालाएँ हैं और न ही योगक्रिया के पारगंत ऋषि-महर्षि, इसी कारण अर्वाचीन ज्योतिष व अन्य गुह्य विधाओं में शिथिलता आई है। आकाश में स्थित भचक्र के 360 अंश अथवा कहें 108 भाग होते हैं। समस्त भचक्र को 12 राशियों में विभक्त किया गया है। अत: 30 अंश अथवा 9 भाग की एक राशि होती है। अपनी जन्म लग्न देखें। उसमें 1 से लेकर 12 तक अंक एन्टीक्लॉक दिशा में लिखे होते हैं। यही अंक 1 से लेकर 12 राशियाँ हैं। जिस अंक में चन्द्रमा स्थित होता है, वह चन्द्र राशि कहलाती है। राशि का नाम प्रत्येक अंक के सामने नीचे दी गयी सारणी से स्पष्ट हो जाएगा। सूर्य तथा चन्द्र को छोड़कर प्रत्येक राशि दो-दो ग्रहों का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक चन्द्र राशि का अपना एक भाग्यशाली रत्न है जो आप अपनी चन्द्रराशि ज्ञात कर आगे की सारिणी से ज्ञात कर सकते हैं।

राशि अंक	राशि नाम	स्वामी ग्रह	रत्न/उपरत्न
1	मेष	मंगल	मूंगा
2	वृष	शुक्र	हीरा, पन्ना
3	मिथुन	बुध	पन्ना, मोती
4	कर्क	चन्द्र	मोती, नीलम
5	सिंह	सूर्य	माणिक्य
6	कन्या	बुध	पन्ना
7	तुला	शुक्र	हीरा
8	वृश्चिक	मंगल	मूंगा
9	धनु	गुरु	पुखराज
10	मकर	शनि	नीलम
11	कुंभ	शनि	नीलम, वैडूर्य, फिरोजा
12	मीन	गुरु	पुखराज, गोमेद

उदाहरण के लिए माना आपकी जन्म लग्न में जहाँ चन्द्रमा स्थित है, वहाँ अंक 6 लिखा हुआ है। यह अंक ही आपका राशि अंक है। इसके सामने कन्या राशि लिखा है और रत्न के नीचे पन्ना लिखा है। इस प्रकार आपको स्पष्ट हो जाएगा कि आपकी राशि कन्या है और आपका भाग्यशाली रत्न पन्ना है।

जिन पाठकों को अपनी लग्न का पता न हो वह अपने नाम के प्रथम अंक से भी अपनी नामराशि ज्ञात कर सकते हैं। जन्म के समय निकाला गया नाम चन्द्र राशि ही इंगित करता है। परन्तु अधिकांश नाम बाद में बदल दिए जाते हैं इससे उनकी जन्मराशि और चलित नामराशि में अन्तर आ सकता है। भारतीय पद्धति में इन दोनों राशियों के रत्न/उपरत्न समान ही माने गए हैं। निम्न सारिणी से अपने नाम का प्रथम अक्षर देखकर आप अपनी नामराशि ज्ञात कर सकते हैं।

राशि अंक	नाम का प्रथम अक्षर	राशि नाम
1.	चू चे चो ला ली लू ले लो आ	मेष
2.	ई उ ए ओ वा वी वू वे वो	वृष
3.	का की कू घ ङ छ के को हा	मिथुन
4.	ही हू हे हो डा डी डू डे डो	कर्क
5.	मा मी मू मे मो टा टी टू टे	सिंह
6.	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो	कन्या
7.	रा री रु रे रो ता ती तू ते	तुला
8.	तो ना नी नू ने नो या यी यू	वृश्चिक
9.	ये यो भा भी भू धा फा ढा भे	धनु
10.	भो जा जी खी खू खे खो गा गी	मकर
11.	गू गे गो सा सी सू से सो दा	कुंभ
12.	दी द थ झ ञ दे दो चा ची	मीन

उदाहरण के लिए माना आपका नाम रामसेवक है। रामसेवक के नाम का प्रथम अक्षर 'रा' राशि अंक 7 के सामने आता है जो तुला राशि दर्शाता है। इस प्रकार जन्मराशि ज्ञान न होने की स्थिति में रामसेवक तुला राशि होने के कारण हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

+++

पाश्चात्य मतानुसार रत्न चयन

इधर रत्नों का निर्यात सुदूर प्रदेशों में जिस संख्या में हुआ है उससे स्वत: ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इन रत्नों के लिए विदेशियों का आकर्षण तथा लगाव कितना बढ़ा है। यह लगाव आज का नहीं है। सैकड़ों वर्षों पूर्व से यूरोप और पश्चिम के देशों में अपना लॅकी स्टोन क्रास अथवा किसी अन्य रूप में धारण करना प्रचलित है। अब से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व यहूदियों के एक साथी हजरत हारुन, जो उस समय के एक प्रसिद्ध ज्योतिष तथा रत्न विशेषज्ञ थे, अपने सीने पर बारह रत्न जड़ित सोने का लाकेट धारण करते थे। आज हजारों विदेशी अपना लॅकी स्टोन पहने मिल जाएँगे। उनकी मान्यता है कि लॅकी स्टोन व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बदलने, उन्नति देने और विपत्तियों से लड़ने की क्षमता रखते हैं।

भारतीय और पाश्चात्य विधि से राशि विचार और तदनुसार रत्न निर्धारित करने में थोड़ा सा अन्तर है। पूरब में चन्द्र राशि पर बल दिया जाता है परन्तु पाश्चात्य विधि में सूर्य राशि पर। जैसे पूरब में चन्द्र के गोचर से राशि विचार किया जाता है वैसे ही पश्चिम में सूर्य की विभिन्न राशियों में गोचर की स्थिति से सूर्य राशि का विचार किया जाता है। सूर्य एक राशि में एक माह तक रहता है इस प्रकार पूरी बारह राशियों में भ्रमण करने में उसे एक वर्ष लग जाता है। भारतवासियों की भाँति ही वहाँ भी माह में 30 दिन होते हैं परन्तु उनका माह का प्रथम दिन पहली तिथि से प्रारम्भ न होकर दो माह की संयुक्त तिथि से प्रारम्भ होता है। इस क्रम में माह के आधार पर रत्न/उपरत्न का चयन निम्न सारिणी से स्पष्ट हो जाएगा।

माह अंक	माह	रत्न/उपरत्न
1.	जनवरी	मूंगा, गार्नेट, माणिक्य
2.	फरवरी	कटैला, तांमड़ा
3.	मार्च	एक्वामेरीन, जेस्पर, बेरुज
4.	अप्रैल	हीरा, पुखराज

माह अंक	माह	रत्न/उपरत्न
5.	मई	पन्ना, अक़ीक़
6.	जून	केल्सेडनी, सुलेमानी अक़ीक़, पन्ना, मोती
7.	जुलाई	ऑनिक्स, माणिक्य, सार्डोनिक्स
8.	अगस्त	जबरजद, गोमेद,कार्नेलियन, सार्डोनिक्स
9.	सितम्बर	कटैला, पुखराज, नीलम, क्राइसोलाइट, फिरोजा
10.	अक्टूबर	ओपल, चन्द्रकान्त मणि, एक्वामेरिन
11.	नवम्बर	पुखराज
12.	दिसम्बर	लहसुनिया, फिरोजा

पाश्चात्य विधि से राशि निकालने में समय का कोई औचित्य नहीं माना गया है। इसमें दिन और रात का भी कोई स्थान नहीं है। सारिणी में दी गयी समयावधि में हुए जन्म को ही राशि निर्धारित करने का आधार मान लिया गया है। यह समयावधि पृथ्वी की गति के साथ प्रतिवर्ष परिवर्तित होती है, यह अवश्य ध्यान रखें।

माह	राशि	राशि(अंक)	रत्न/उपरत्न
20 जनवरी से 19 फरवरी	कुंभ	11	तुरमुली, ऑनिक्स, गोमेद, नीलम, फिरोजा, दूधिया, लहसुनिया
20 फरवरी से 20 मार्च	मीन	12	कटैला, एक्वामेरीन, नीलम, पुखराज, लहसुनिया
21 मार्च से 19 अप्रैल	मेष	1	जेस्पर, माणिक्य, हीरा, लाल मूंगा
20 अप्रैल से 19 मई	वृष	2	हीरा, पुखराज, अक़ीक़, ज़मर्रुद
20 मई से 20 जून	मिथुन	3	पन्ना, सुलेमानी अक़ीक़, नीलम
20 जून से 20 जुलाई	कर्क	4	सुलेमानी अक़ीक़, पन्ना, मोती माणिक्य
21 जुलाई से 21 अगस्त	सिंह	5	लालड़ी, माणिक्य, नीलम

माह	राशि	राशि(अंक)	रत्न/उपरत्न
22 अगस्त से 22 सितम्बर	कन्या	6	सार्डोनिक्स, कार्नेलियन, पन्ना ज़बरज़द, हीरा
23 सितम्बर से 22 अक्टूबर	तुला	7	नीलम, गोमेद, हीरा
23 अक्टूबर से 22 नवम्बर	वृश्चिक	8	ओपल, सुलेमानी अक़ीक़, पुखराज, लाल मूंगा
23 नवम्बर से 20 दिसम्बर	धनु	9	पुखराज, कटैला, नीलम, हीरा, पुखराज
21 दिसम्बर से 19 जनवरी	मकर	10	एक्वामैरीन, गोमेद, हीरा, नीलम

राशि के अनुरूप पाश्चात्य मतानुसार एक पुरानी पुस्तक में निम्न प्रकार से विवरण मिलता है।

राशि	रत्न
मेष	एक्वामेरीन, कार्नेलियन
वृष	हायसिंथ
मिथुन	काल्सडनी
कर्क	एमराल्ड
सिंह	टोपाज़
कन्या	क्राइसोलाइट
तुला	सारडोनिक्स
वृश्चिक	जैस्पर, टोपाज़
धनु	क्राइसो प्रेज
मकर	रुबी, ओनिक्स
कुम्भ	एमेथिस्ठ
मीन	हैलियोट्रोट

जन्म तिथि के आधार पर रत्न चयन

जन्मतिथि से रत्न चयन करने के लिए विख्यात अंक शास्त्री शरमन ने अपनी पुस्तक Gems and Their Occult Power में जन्म तिथि के आधार पर एक सारणी दी है। वह भी पाठकों के लाभार्थ एवं शोधकार्य को आगे बढ़ाने के निमित्त यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जन्म तिथि		सूर्य की	जन्म रत्न
से	तक	निरयन राशि	
15 अप्रैल	14 मई	मेष	मूंगा
15 मई	14 जून	वृष	हीरा
15 जून	14 जुलाई	मिथुन	पन्ना
15 जुलाई	14 अगस्त	कर्क	मोती
15 अगस्त	14 सितम्बर	सिंह	माणिक
15 सितम्बर	14 अक्टूबर	कन्या	पन्ना
15 अक्टूबर	14 नवम्बर	तुला	हीरा
15 नवम्बर	14 दिसम्बर	वृश्चिक	मूंगा
15 दिसम्बर	14 जनवरी	धनु	पीला पुखराज
15 जनवरी	14 फरवरी	मकर	नीलम
15 फरवरी	14 मार्च	कुंभ	गोमेद
15 मार्च	14 अप्रैल	मीन	लहसनिया

भारतीय जन्म मास के अनुसार रत्न चयन

यदि आपको हिन्दी तिथि व मास का ज्ञान है तब निम्न सारिणी के अनुसार आप अपना भाग्यशाली रत्न/उपरत्न चुन सकते हैं। भारतीय मास के आगे जो रत्न/उपरत्न वर्णित है वही आपका भाग्यशाली रत्न है।

	मास	रत्न/उपरत्न
1.	चैत्र (चैत)	कपिश मणि
2.	वैशाख (बैशाख)	हीरा
3.	ज्येष्ठ (जेठ)	पन्ना
4.	आषाढ़ (असाढ़)	मूंगा
5.	श्रावण (सावन)	माणिक्य अथवा लालड़ी
6.	भाद्रपद (भादों)	जबरजद
7.	आश्विन (क्वार)	नीलम
8.	कार्तिक (कातिक)	ओपल
9.	मार्गशीर्ष (अगहन)	पुखराज
10.	पौष (पूस)	फिरोजा
11.	माघ	तामड़ा
12.	फाल्गुन (फागुन)	कटैला
13.	पुरुषोत्तम (मलमास या अधिकमास)	नवरत्न

वार एवं रत्न चयन

सात ग्रहों के अनुसार सात वारों का चलन हुआ। सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रहों के अनुरूप सात दिनों का नामकरण हुआ। इन ग्रहों से सम्बन्धित रत्नों का श्रीगणेश भी इसी क्रम में प्रारम्भ हुआ। सात ग्रह उनसे सम्बन्धित सात वार तथा उनके ग्रह निम्न सारिणी से स्पष्ट हो जाएँगे। आपको यदि अपने जन्म का वार ज्ञात है तो आप उससे सम्बन्धित रत्न धारण करके लाभ उठा सकते हैं।

वार	सम्बन्धित ग्रह	रत्न/उपरत्न
रविवार	सूर्य	माणिक्य
सोमवार	चन्द्र	मोती
मंगलवार	मंगल	मूंगा
बुधवार	बुध	पन्ना
गुरुवार	गुरु	पुखराज
शुक्रवार	शुक्र	हीरा
शनिवार	शनि	नीलम

आयु के अनुसार रत्न चयन

यदि आपको ज्ञान है कि आप कितने वर्ष के हैं तो इस विधि द्वारा चुने गए भाग्यशाली रत्न को धारण करके आप स्वास्थ्य, मान, प्रतिष्ठा और धन को प्राप्त कर सकते हैं। पाश्चात्य जगत में चर्चित आयु के अनुसार रत्न का चयन सर्वप्रथम आपके लिए इस हिन्दी पुस्तक द्वारा प्रस्तुत कर रहा हूं।

आयु (वर्ष में)	रत्न/उपरत्न
12	सुलेमानी अक्रीक़
13	चन्द्रकान्त मणि
14	अक्रीक़
15	चट्टानी बिल्लौर
16	पुखराज
17	कटैला
18	गार्नेट
19	तुरमुली
20-26	स्टार रुबा
27-30	मोती
31-35	मूंगा
36-38	लहसुनिया
39-40	माणिक्य
41-45	अलेग्जेन्ड्रिया
46-52	स्टार रुबी
53-55	पन्ना
56-60	पीतवर्ण हीरा
61-75	हीरा

रत्नों में परस्पर मैत्री

व्यक्ति का भाग्यशाली रत्न संख्या में यदि एक होता है तब तो कोई समस्या नहीं है परन्तु जहाँ रत्न एक से अधिक निकलते हैं वहाँ यह दुविधा

स्वयं चुनिए
अपना
भाग्यशाली रत्न

किस कामनापूर्ति हेतु कौनसा रत्न धारण करें-

मरियम स्टोन

पेट के सभी रोगों में अत्यंत लाभदायक

टाइगर स्टोन

बच्चों को नजरदोष से बचाने के लिए

लाजवर्त

पिता-पुत्र संबंधों को मधुर बनाने वाला

चन्द्रमणि

प्रेम में सफलतादायक

किडनी स्टोन

किडनी रोग में लाभदायक

कटैहला

शनि का उपरत्न संघर्ष समाप्ति हेतु

आनेक्स

शिक्षा और व्यवसाय में सफलता देने वाला

सुनहला

गुरु का उपरत्न शीघ्र विवाह हेतु

ब्ल्यू टोपाज

दाम्पत्य जीवन सुखमय बनाने वाला

सूर्य का रत्न — माणिक्य (Ruby)

सरकारी पद, धन, सम्मान, प्रसिद्धि के लिए माणिक्य धारण करें

चन्द्रमा का रत्न — मोती (Pearl)

मानसिक शान्ति के लिए मोती रत्न धारण करें

मंगल का रत्न — मूँगा (Corel)

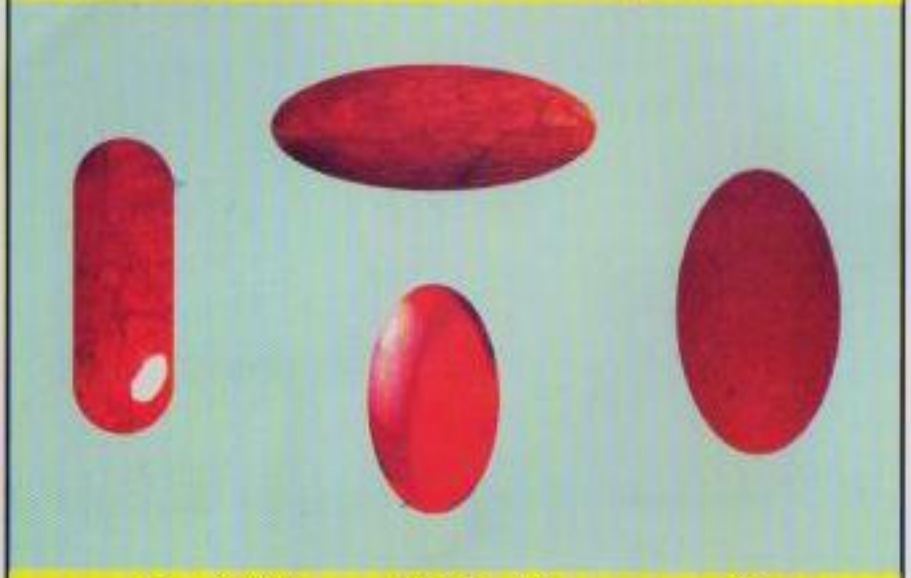

विवादों में विजय पाने के लिए मूँगा रत्न धारण करें

बुध का रत्न — पन्ना (Emerald)

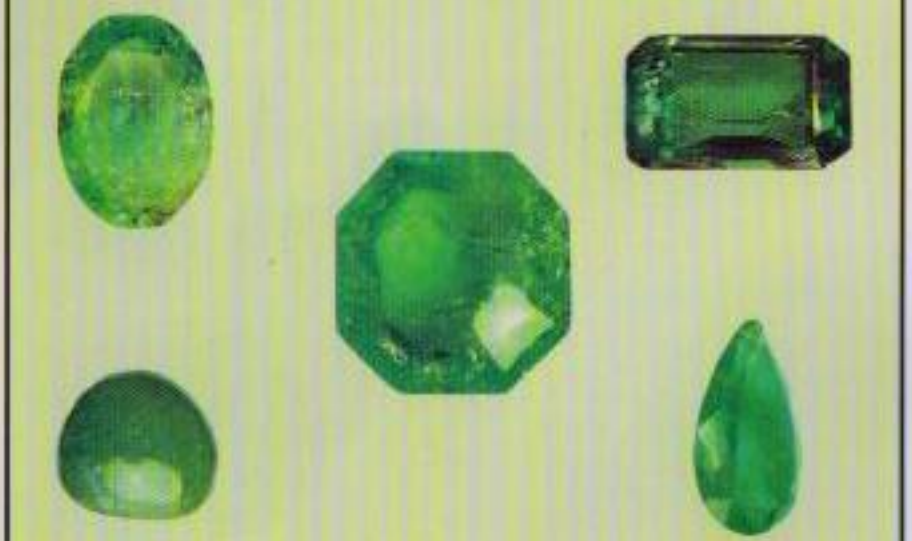

शिक्षा एवं व्यवसाय में सफलता के लिए पन्ना धारण करें

गुरु का रत्न — पुखराज (Topaz)

उच्च प्रतिष्ठा, ज्ञान देने वाला एवं शीघ्र विवाह के लिए

शुक्र का रत्न — हीरा (Diamond)

धन-समृद्धि एवं स्त्री सुख देने वाला

शनि का रत्न — नीलम (Sapphire)

उच्च सफलता और स्थिरता के लिए नीलम धारण करें

राहु का रत्न — गोमेद (Zircon)

दुर्घटना एवं विपत्तियों से बचाने वाला धन-समृद्धि देने वाला

केतु का रत्न — लहसुनिया (Cat's Eye)

अकस्मात् सफलता के लिए लहसुनिया धारण करें

रत्न/उपरत्न	सामान्य	अच्छा
माणिक्य	Rs. 250.00	Rs. 2500.00
मोती	Rs. 100.00	Rs. 300.00
मूँगा	Rs. 600.00	Rs. 1500.00
पन्ना	Rs. 1200.00	Rs. 8000.00
पुखराज	Rs. 4000.00	Rs. 15000.00
गोमेद	Rs. 150.00	Rs. 3000.00
लहसुनिया	Rs. 150.00	Rs. 3000.00
ब्ल्यू टोपाज	Rs. 500.00	Rs. 1500.00
जिरकॉन	Rs. 60.00	Rs. 100.00
चन्द्रमणि	Rs. 60.00	Rs. 200.00
सुनहला	Rs. 100.00	Rs. 300.00
कटैहला	Rs. 100.00	Rs. 300.00
ऑनेक्स	Rs. 60.00	Rs. 100.00
लाजवर्त	Rs. 100.00	Rs. 300.00
किडनी स्टोन	Rs. 150.00	Rs. 400.00
टाइगर स्टोन	Rs. 60.00	Rs. 150.00
मरियम	Rs. 100.00	Rs. 200.00

आपका भाग्य बदल सकते हैं ये चमत्कारी रत्न—

राशि	रत्न	उपरत्न	धारण का दिन	राशि
मेष	मूंगा	लाल गोमेद/लाल ओनेक्स	मंगलवार	तुला
	हीरा	स्फटिक/ओपेल	शुक्रवार	
वृष	हीरा	स्फटिक/ओपेल	शुक्रवार	वृश्चिक
	मूंगा	लाल गोमेद/लाल ओनेक्स	मंगलवार	
मिथुन	पन्ना	हरी तुरमली/हरा ओनेक्स	बुधवार	धनु
	पुखराज	सुनैहला/पीला टाइगर	गुरुवार	
कर्क	मोती	मून स्टोन/सफेद मूंगा	सोमवार	मकर
	नीलम	नीली कटेला/लाजवर्त	शनिवार	
सिंह	माणिक्य	लाल तुरमली/गोनेट	रविवार	कुम्भ
	नीलम	नीली कटेला/लाजवर्त	शनिवार	
कन्या	पन्ना	तुरमली/हरा ओनेक्स	बुधवार	मीन
	पुखराज	सुनैला/पीला टाइगर	गुरुवार	

होना स्वाभाविक है कि रत्नों के संयोग कैसे बनाए जाएँ कि वह परस्पर विरोध न करें। ग्रहों की शत्रु-मित्रवत नैसर्गिक प्रकृति की भाँति रत्नों की भी ऐसी ही प्रवृत्ति होती है। एक से अधिक रत्न का जहाँ चयन करना हो तो परस्पर शत्रु रत्नों को आप छोड़ भी सकते हैं। मेरे व्यक्तिगत विचार से रत्न चयन करने का यह भी एक अच्छा प्रयास सिद्ध होगा।

पाठक निम्न सारणी को सदैव ध्यान में रखें—

रत्न	मित्र रत्न	शत्रु रत्न	सम रत्न
माणिक्य	मोती, मूंगा, पुखराज	हीरा, नीलम, गोमेद,	लहसुनिया, पन्ना
मोती	माणिक्य, पन्ना	हीरा, मूंगा, गोमेद, लहसुनिया	मूंगा, पुखराज, हीरा, नीलम
मूंगा	माणिक, मोती, पुखराज, लहसुनिया	पन्ना, गोमेद	हीरा, नीलम
पन्ना	माणिक्य, हीरा	मोती	मूंगा, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनिया
नीलम	पन्ना, हीरा, गोमेद	माणिक्य, मोती, मूंगा, लहसुनिया	पुखराज
पुखराज	माणिक्य, मोती, मूंगा	पन्ना, हीरा	नीलम, गोमेद, लहसुनिया
हीरा	पन्ना, नीलम, गोमेद, लहसुनिया	माणिक्य, मोती	मूंगा, पुखराज
गोमेद	नीलम, हीरा, पुखराज	माणिक्य, मोती, मूंगा, लहसुनिया	पन्ना
लहसुनिया	हीरा, मूंगा	माणिक्य, मोती, नीलम, गोमेद	पुखराज, पन्ना

कुछ अन्य विद्वान रत्न शास्त्र पर लिखे साहित्य के अनुसार परस्पर रत्न शत्रु-मित्र व्यवहार का निम्न रूप अधिक मान्य मानते हैं। यह सब सुनिश्चित करना वास्तव में व्यक्तिगत अनुभव पर अधिक निर्भर करता है। गुह्य विद्याओं के यम-नियम मेरे अनुसार व्यक्ति-व्यक्ति पर अधिक निर्भर करते हैं। जो मेरे लम्बे अन्तराल के अनुभव में आया वह मैंने पूर्व में लिख दिया है तथापि पाठक सर्वमान्य एवं प्रचलित ग्रह-मैत्री भेद निम्न प्रकार से भी ध्यान में रखकर रत्न का चयन करें।

रत्न	मित्र रत्न	शत्रु रत्न	सम रत्न
माणिक्य	मोती, मूंगा, पुखराज	हीरा, नीलम	पन्ना
मोती	माणिक्य, पन्ना	कोई नहीं	हीरा, मूंगा, नीलम
मूंगा	माणिक्य, मोती,	पन्ना	हीरा, नीलम
पन्ना	माणिक्य, हीरा	मूंगा	पुखराज
नीलम	पन्ना, हीरा	माणिक्य, मोती	मूंगा, नीलम, पुखराज
पुखराज	माणिक्य, मोती, मूंगा	पन्ना, हीरा	नीलम
हीरा	पन्ना, नीलम	माणिक्य, मोती	मूंगा, पुखराज
गोमेद	पन्ना, नीलम,हीरा	माणिक्य, मोती	मूंगा, पुखराज
लहसुनिया	पन्ना, नीलम, हीरा	माणिक्य, मोती	मूंगा, पुखराज

+ + +

रत्नादि प्रयोग करें परन्तु कर्म प्रधान अवश्य बनें। साथ-साथ मन में ऐसी आस्था अवश्य बलवती रखें कि सुरक्षा के लिये कोई अदृष्य शक्ति अवश्य आपके साथ है जो निरन्तर आपको बल भी दे रही है क्योंकि जब तक अलौकिक अनुभूति नहीं होंगी तब तक नई प्रेरणा, नई सम्वेदना तथा नए-नए समाधान नहीं मिलेंगे और यदि मिले भी तो वह पूर्णतया फलीभूत नहीं होंगे।

आपका जन्म लग्न एवं रत्न चयन

व्यक्ति के जन्म लग्न के आधार पर भाग्यशाली रत्न का चयन करना एक सरलतम विधि है जो प्रायः प्रयोग की जाती है। ज्योतिष के प्रारम्भिक ज्ञान मात्र से आप यह विधि उपयोग में ला सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र में जन्म कुण्डली में लग्न का स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति के तन, आचार-विचार, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व आदि को द्योतक है। ज्योतिष के अनेक विद्वान मात्र लग्नेश की स्थिति से रत्न का चयन करते हैं। निम्न सारिणी से यह अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

लग्न में स्थिति राशि (राशि अंक)	लग्न राशि का स्वामी ग्रह (अर्थात लग्नेश)	लग्नेश से सम्बन्धित शुभ रत्न
मेष (1)	मंगल	मूंगा
वृष (2)	शुक्र	हीरा
मिथुन (3)	बुध	पन्ना
कर्क (4)	चन्द्र	मोती
सिंह (5)	सूर्य	माणिक्य
कन्या (6)	बुध	पन्ना
तुला (7)	शुक्र	हीरा
वृश्चिक (8)	मंगल	मूंगा
धनु (9)	गुरु	पुखराज
मकर (10)	शनि	नीलम
कुम्भ (11)	शनि	नीलम
मीन (12)	गुरु	पुखराज

यह रत्न चयन करने का एक अति सामान्य सा विधान है। रत्न चयन के लिए अधिक गहराई में जाने के लिए जन्म कुण्डली के बारह भाव (लग्न के सापेक्ष) शुभ-अशुभ प्रभाव दर्शाते हैं। लग्न कुण्डली में मूल त्रिकोण को सर्वाधिक प्रभावशाली माना गया है दूसरा स्थान है केन्द्र का। सबसे निकृष्ट स्थान माने गए हैं जन्मपत्री के 6, 8 तथा 12वें भाव। लग्न द्वारा रत्न चुनने में इसीलिए विभिन्न लग्नों वाली जन्म पत्री में मूल त्रिकोण तथा केन्द्र के कारक ग्रहों से सम्बन्धित रत्न चयन करने पर बल दिया जाता है तथा निकृष्ट भावों 6, 8 तथा 12वें भाव के स्वामी ग्रहों के रत्नों को सर्वथा त्याज्य माना जाता है।

किस लग्न के लिए कौन-कौन से रत्न शुभाशुभ होंगे यह प्रत्येक बारह लग्नों की अलग-अलग कुण्डलियों से स्पष्ट हो जाएगा।

1. मेष लग्न की कुण्डली में सिंह तथा धनु मूल त्रिकोण राशियाँ हैं। मेष लग्न में होने पर विशेष रूप से बलवान है। गुरु मूल त्रिकोण के साथ बारहवें भाव का भी स्वामी है। परन्तु पहला फल यह मूल त्रिकोण अर्थात धनु राशि को देगा। इसलिए मेष लग्न में जन्मे व्यक्ति के लिए माणिक्य, पुखराज तथा मूंगा शुभ फलदायक सिद्ध होगा तथा पन्ना जो कि छठे भाव का स्वामी है अशुभ फल देने वाला होगा।

2. वृष लग्न के लिए पन्ना तथा नीलम शुभ फल देने वाला होगा क्योंकि बुध व शनि मूल त्रिकोण राशियों के स्वामी हैं तथा किसी भी रूप से त्रिकभाव अर्थात 6, 8 तथा 12वें भाव से नहीं जुड़े हैं। शुक्र इस स्थिति में लग्नेश होने के कारण तटस्थ रहेगा।

3. मिथुन लग्न के लिए हीरा तथा नीलम शुभ फल देगा तथा अशुभ प्रभाव किसी भी ग्रह का नहीं होगा इसलिए अन्य रत्न भी अन्य गणनाओं द्वारा चुने जाने पर धारण किए जा सकते हैं।

4. कर्क लग्न के लिए मंगल विशेष योगकारक ग्रह है इसलिए यहाँ मूंगा शुभ फल देगा। मोती लग्नेश ग्रह का कारक होने के कारण दूसरे स्थान पर धारण करवाया जा सकता है। तीसरा स्थान आता है केन्द्र स्वामी शुक्र का जिसका रत्न हीरा भी धारणीय है। परन्तु इस स्थिति में पुखराज, पन्ना तथा नीलम रत्न करना लाभदायक सिद्ध नहीं होगा क्योंकि यह त्रिकभावों के स्वामी हैं।

5. सिंह लग्न के लिए माणिक्य, मूंगा तथा पुखराज शुभ होंगे। गुरु पहले मूल त्रिकोण का स्वामी है फिर त्रिकभाव का, इसलिए प्रथम फल यहाँ पंचम भाव का ही देगा। मोती द्वादश भाव का स्वामी होने के कारण सिंह लग्न वालों के लिए शुभ सिद्ध नहीं होगा।

6. कन्या लग्न के लिए 6, 8 तथा 12वें भाव के स्वामी क्रमशः शनि, मंगल और सूर्य के रत्न शुभ नहीं होंगे। यहाँ हीरा अथवा इसका उपरत्न बहुत शुभ रहेगा क्योंकि शुभ त्रिकोण तथा धन स्थान का स्वामी है।

7. तुला लग्न के लिए शनि योगकारक है तथा बुध अशुभ, इसलिए यहाँ शनि का रत्न नीलम शुभ और बुध का रत्न पन्ना अशुभ सिद्ध होगा।

8. वृश्चिक लग्न के लिए सूर्य तथा चन्द्र शुभ तथा शुक्र अशुभ और मंगल ग्रह लग्नेश भी होने के कारण समफलदायी हैं। इसलिए यहाँ पुखराज, माणिक्य तथा मोती पहनाना शुभ होगा। हीरा यहाँ शुभ नहीं सिद्ध होगा।

9. धनु लग्न के लिए माणिक्य तथा मूंगा रत्न शुभ तथा मोती अशुभ सिद्ध होंगे। मंगल पहले मूल त्रिकोण का स्वामी है फिर त्रिक्भाव का इसलिए यह शुभ ही माना जाएगा। गुरु क्योंकि दो केन्द्रों का स्वामी है इसलिए पुखराज भी यहाँ उपयोग किया जा सकता है।

10. मकर लग्न के लिए माणिक्य तथा पुखराज शुभ सिद्ध नहीं होंगे। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने के कारण योगकारक है इसलिए इस ग्रह से सम्बन्धित रत्न हीरा बहुत शुभ रहेगा।

11. कुम्भ लग्न के लिए मोती तथा पन्ना अशुभ हैं। शुक्र योगकारक होने के कारण हीरा शुभ सिद्ध होगा। पुखराज भी यहाँ शुभ रहेगा।

12. मीन लग्न वालों के लिए चन्द्र तथा मंगल योगकारक हैं। मूल त्रिकोण से सम्बन्ध होने के कारण इनके रत्न मोती तथा मूंगा शुभ सिद्ध होंगे। मीन लग्न के लिए सूर्य, शुक्र तथा शनि त्रिकभावों से सम्बन्धित होने के कारण योगकारक नहीं हैं। इसलिए माणिक्य, हीरा तथा नीलम यहाँ फलदायी नहीं रहेंगे।

लग्न से रत्न का चयन करना एक विधि है किन्तु यह अपने में पूर्ण कदापि नहीं है। इसीलिए बार-बार मैं बल देता हूँ कि रत्न चयन के लिए अन्य विधियों में भी अपना भाग्यशाली रत्न तलाश अवश्य करें। उपरोक्त विवरण एक सारिणी के रूप में भी लिख रहा हूँ ताकि पाठकों को रत्न चयन करने में सरलता रहे।

रत्नों का मापन

अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली में रत्नों की मापन इकाई कैरेट है :

200 मि. ग्रा. = 100 सैन्ट = 1 कैरट

58.18 कैरेट = 1 तोला, 5 कैरेट = 1 ग्राम

भारतवर्ष में कुछ शहरों को छोड़कर यह इकाई कच्ची-पक्की रत्ती में निम्न है—

	कच्ची रत्ती	=	120 मि. ग्रा.
	पक्की रत्ती	=	180 मि. ग्रा.
जयपुर में :	100 रत्ती	=	90.00 कैरेट
कोलकाता में :	100 रत्ती	=	90.50 कैरेट
मुम्बई में :	100 रत्ती	=	90.75 कैरेट

12. मीन लग्न वालों के लिए चन्द्र तथा मंगल योगकारक हैं। मूल त्रिकोण से सम्बन्ध होने के कारण इनके रत्न मोती तथा मूंगा शुभ सिद्ध होंगे। मीन लग्न के लिए सूर्य, शुक्र तथा शनि त्रिकभावों से सम्बन्धित होने के कारण योगकारक नहीं हैं। इसलिए माणिक्य, हीरा तथा नीलम यहाँ फलदायी नहीं रहेंगे।

लग्न से रत्न का चयन करना एक विधि है किन्तु यह अपने में पूर्ण कदापि नहीं है। इसीलिए बार-बार मैं बल देता हूँ कि रत्न चयन के लिए अन्य विधियों में भी अपना भाग्यशाली रत्न तलाश अवश्य करें। उपरोक्त विवरण एक सारिणी के रूप में भी लिख रहा हूँ ताकि पाठकों को रत्न चयन करने में सरलता रहे।

रत्नों का मापन

अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली में रत्नों की मापन ईकाई कैरेट है :

200 मि. ग्रा. = 100 सैन्ट = 1 केरट

58.18 कैरेट = 1 तोला, 5 कैरेट = 1 ग्राम

भारतवर्ष में कुछ शहरों को छोड़कर यह ईकाई कच्ची-पक्की रत्ती में निम्न है—

	कच्ची रत्ती	=	120 मि. ग्रा.
	पक्की रत्ती	=	180 मि. ग्रा.
जयपुर में :	100 रत्ती	=	90.00 कैरेट
कोलकाता में :	100 रत्ती	=	90.50 कैरेट
मुम्बई में :	100 रत्ती	=	90.75 कैरेट

लग्नानुसार शुभ दिन, रंग तथा रत्न चयन

लग्न	दिन (वार)	रंग	रत्न
मेष	मंगल, रवि, गुरु	लाल, बैंगनी, पीला	मूंगा,माणिक्य, पुखराज
वृष	शनि, बुध	काला, हरा	नीलम, पन्ना
मिथुन	शनि, शुक्र, बुध	काला, हरा, स्टीलग्रे	नीलम, हीरा, पन्ना
कर्क	मंगल, सोम	लाल, सफेद	मूंगा, मोती
सिंह	रवि, मंगल, गुरु	बैंगनी, लाल, पीला	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
कन्या	बुध, गुरु	हरा, पीला	पन्ना, पुखराज
तुला	शुक्र, सोम, शनि	क्रीम, काला, सफेद	हीरा, नीलम, मोती
वृश्चिक	सोम, रवि, गुरु, मंगल	सफेद, पीला, बैंगनी	मोती, पुखराज, माणिक्य, मूंगा
धनु	गुरु, बुध, मंगल, रवि	पीला, हरा, बैंगनी, लाल	पुखराज, पन्ना, मूंगा माणिक्य,
मकर	रवि, शुक्र, बुध	काला, क्रीम, हरा	नीलम, हीरा, पन्ना
कुम्भ	शुक्र, शनि, मंगल, गुरु	क्रीम, काला, लाल, पीला	हीरा, नीलम, मूंगा, पुखराज
मीन	गुरु, सोम, मंगल, बुध	पीला, हरा, सफेद, लाल	पुखराज, पन्ना, मोती, मूंगा

लग्नानुसार अशुभ दिन, रंग तथा रत्न चयन

लग्न	दिन (वार)	रंग	रत्न
मेष	बुध	हरा	पन्ना
वृष	मंगल, गुरु	पीला, लाल	पुखराज, मूंगा
मिथुन	—	—	—
कर्क	गुरु, शनि	पीला, काला	नीलम, पुखराज
सिंह	सोम	सफेद	मोती
कन्या	शनि, मंगल, रवि	काला, लाल, बैंगनी	नीलम, मूंगा, माणिक्य
तुला	गुरु, बुध	पीला, हरा	पन्ना, पुखराज
वृश्चिक	शुक्र	क्रीम	हीरा
धनु	सोम	सफेद	मोती
मकर	सोम, रवि, गुरु	पीला, बैंगनी	माणिक्य, पुखराज
कुंभ	सोम, बुध	सफेद, हरा	मोती, पन्ना
मीन	रवि, शुक्र, शनि	बैंगनी, क्रीम, काला	माणिक्य, नीलम, हीरा

ग्रह के दिन तथा रंगानुसार रत्न चयन

ग्रह	दिन	रंग	रत्न
सूर्य	रविवार	बैंगनी	माणिक्य
चन्द्र	सोमवार	सफेद	मोती
मंगल	मंगलवार	लाल	मूंगा
बुध	बुधवार	हरा	पन्ना
गुरु	गुरुवार	पीला	पुखराज
शुक्र	शुक्रवार	क्रीम	हीरा
शनि	शनिवार	नीला	नीलम
राहु	शनिवार	ग्रे	गोमेद
केतु	मंगलवार	गहरा लाल	फिरोजा

ग्रह (रत्न) विभिन्न भावों का स्वामी होकर क्या देगा?

पाठकगण अपनी लग्न पत्रिका के अनुसार अब तक अपना भाग्यशाली रत्न चयन करना अच्छी तरह से जान गए होंगे। ग्रहों से सम्बन्धित भाग्यशाली तथा अशुभ रंग भी मैंने साथ-साथ लिख दिए हैं। इसका अभिप्राय यह है कि यदि आपको रत्न न जुटा पाने की स्थिति में वह उस रंग के उपरत्न भी प्रयोग कर सकें और रत्न से लाभ पाने में बराबर के स्वामी बन सकें।

लग्न द्वारा रत्न तलाश करने की ही शृंखला में आप यह भी जान लें कि कोई ग्रह (रत्न) किसी राशि का स्वामी होकर सम्बन्धित बारह भावों के क्या-क्या शुभ परिणाम देगा? इस प्रस्तुति से यह बात भी पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगी कि अमुक रत्न से आपको क्या-क्या उपलब्धि सम्भावित है।

प्रथम भाव—कोई ग्रह लग्न का स्वामी है तो उससे सम्बन्धित रत्न लग्न अर्थात स्वास्थ्य की वृद्धि करेगा, व्यक्तित्व में सुधार लाएगा, जीवन में सामान्य दृष्टिकोण से आवश्यक साधनों की पूर्ति करेगा। यह स्थान बल का कारक है। इसलिए व्यक्ति को बलशाली बनाएगा। उदाहरण के लिए मंगल प्रथम तथा अष्टम भाव का स्वामी है इसलिए यहाँ प्रयोग किया गया मूंगा व्यक्ति को उपरोक्त से सुखानुभूति कराएगा। इसी प्रकार अन्य भावों के स्वामियों से सम्बन्धित रत्न के विषय में भी समझें। पूर्व में लग्नानुसार रत्न चयन की व्याख्या लिख ही दी है। अन्य भावों से क्या-क्या शुभ मिलना सम्भावित है, इसका संक्षिप्त विवरण भी पाठकों के ज्ञानार्थ दे रहा हूँ।

द्वितीय भाव—यदि इस भाव को इसके सम्बन्धित ग्रह के रत्नानुसार बलवान कर दिया जाता है तो व्यक्ति की आयु की रक्षा होगी, धन लाभ मिलेगा, दाहिनी आँख के रोग ठीक होंगे, परिवार में सुख-शान्ति उत्पन्न होगी, व्यक्ति की बोली में प्रभाव बढ़ेगा, व्यापार में उन्नति मिलेगी तथा ज्ञान एवं बुद्धि में वृद्धि होगी।

तृतीय भाव—तीसरे भाव से सम्बन्धित रत्न द्वारा इस भाव को बल देने पर छोटी बहन के स्वास्थ्य में सुधार होगा, छोटी-छोटी यात्राओं से लाभ मिलेगा, लेखक वर्ग की लेखनी में नयी चेतना जगेगी, आँतों के रोग में लाभ मिलेगा, साँस की बीमारी दूर होगी तथा गुर्दे आदि रोगों के निवारण में सहायता मिलेगी।

चतुर्थ भाव—चतुर्थ भाव को बलवान करने से भूमि-भवन सुख, माँ के स्वास्थ्य की रक्षा, सीने के रोगों से राहत, पारिवारिक सुखों में वृद्धि, वाहन सुख तथा पिता की आयु में वृद्धि होगी। चतुर्थ भाव मूलतः सुख का कारक है। यदि रत्न का ठीक-ठीक चयन हो जाए तो व्यक्ति को चहुँदिश सुखानुभूति मिल सकती है।

पंचम भाव—पंचम भाव भावना, बुद्धि, संतान सुख, पाचन शक्ति, सट्टा, प्रतिस्पर्धा, प्रेम प्रसंग, अधिकार की प्राप्ति, वाणी दोष, मामा के स्वास्थ्य तथा विद्या क्षेत्र आदि का कारक है। यदि इसके स्वामी ग्रह से सम्बन्धित रत्न द्वारा प्रयास किया जाए तो इन सब कार्यों में शुभ की सम्भावना बढ़ जाती है।

षष्ठ भाव—छठा भाव ऋण, शत्रु, हार, सेवक, स्त्री का स्वास्थ्य, रोग, मामा, पिता की बड़ी बहन आदि का कारक है। यदि इस भाव को रत्न द्वारा उपयुक्त बल प्रदान किया जाए तो उक्त सम्बन्धी वांछित फल मिलने की आशा बलवती होती है।

सप्तम भाव—सप्तम भाव पत्नी, व्यापार में साझीदार, किरायेदार, कानूनी बन्धन/अनुबंध आदि का कारक है। पत्नी के स्वास्थ्य आदि के लिए सप्तम भाव से सम्बन्धी रत्न धारण करने पर विशेष रूप से लाभ मिलता है।

अष्टम भाव—आठवां भाव मृत्यु के रूप का प्रतीक है। यह भविष्यनिधि, अवकाश वृत्ति, दीर्घायुष्य वंशानुगत प्राप्तियाँ आदि का द्योतक है। स्वास्थ्य लाभ तथा उत्तरार्ध में सुख के लिए धन भाव से सम्बन्धित रत्न धारण करना शुभ होता है।

नवम भाव—जन्म कुण्डली में नवम भाव से भाग्य, पिता, सुदूर देश की यात्राएँ, उच्च शिक्षा, पिछले जन्म के कर्म आदि का शुभाशुभ देखा जाता है। नवम भाव के स्वामी ग्रह के अनुरूप रत्न धारण करने से उक्त विषयों में लाभ मिलता है।

दशम भाव—दसवाँ भाव कर्म, कार्य, व्यवसाय, आश्रम, नौकरी, राज्य सुख आदि का कारक है। इन विषयों में अनुकूल फल की प्राप्ति के लिए दसवें भाव के स्वामी ग्रह से सम्बन्धित रत्न धारण करना शुभ रहता है।

एकादश भाव—यह भाव लाभ का द्योतक है। वांछित फलों की पूर्ति के लिए एकादश भाव का बली होना आवश्यक है। वांछित फल की प्राप्ति अथवा लाभ के लिए इसके कारक ग्रह का रत्न धारण करना भाग्य को प्रबल करने का एक सुन्दर उपक्रम सिद्ध हो सकता है।

द्वादश भाव—यह भाव जेल, अस्पताल, हानि, व्यय तथा निर्वाण का कारक है। जीवन-मरण के चक्करों से उऋणी होना है अथवा आय और व्यय में सन्तुलन बनाना है तो इस भाव से सम्बन्धित रत्न धारण करना शुभ सिद्ध होता है।

रत्न धारण करने का सर्वाधिक शुभ स्थान

दोनों भौंवों के मध्य का भाग अर्थात आज्ञाचक्र सबसे अच्छा रिसीवर है। बाह्य ऊर्जा-शक्ति को ग्राह्य करने का यह सर्वाधिक उत्तेजित भाग है। यदि कोई रत्न यहाँ धारण किया जाए तो सर्वाधिक शुभ सिद्ध होगा। राजा-महाराजा अपने मुकुट के इसी स्थान में रत्न जड़वाते थे। दूसरा प्रभावशाली स्थान है हृदयचक्र के पास पैन्डेन्ट के रूप में धारण किया गया कोई रत्न। तीसरा स्थान है अनामिका अंगुली। कुल 72,000 नाड़ियों में से सर्वाधिक 108 नाड़ियों का सम्बन्ध इसी अंगुली से माना गया है। इसके बाद रत्न धारण के शुभ स्थान वर्णानुसार विभिन्न अंगुलियाँ तथा शरीर के अन्य अंग हैं।

रत्न जड़ित चमत्कारी जन्म लग्न यंत्र

एक विलक्षण-विचित्र यन्त्र का वर्णन यहाँ कर रहा हूँ। इसका संक्षिप्त विवरण मैं अपनी पुस्तक "धनदायक तान्त्रिक प्रयोग" में भी लिख चुका हूँ। यह गोपाल राजू का अपना शोधकार्य है जो अनेक लोगों पर सफल सिद्ध हो चुका है और वर्तमान में भी इस पर निरन्तर शोध-सुधार चल रहे हैं। यह विधि पूर्णतया मेरे अनुभव और अनेक भुक्त-भोगियों के ऊपर निरन्तर चल रहे परीक्षणों पर आधारित है अथवा कहें कि उनके ऊपर सफल परीक्षणों का परिणाम है तो अधिक उचित होगा। यह यन्त्र व्यक्ति विशेष के सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी है परन्तु इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि यह मात्र उन्हीं के उपयोग में आ सकता है जिन्हें अपने जन्म के विवरण जैसे तिथि, माह, वर्ष तथा समय का शुद्ध ज्ञान है अथवा जिनके पास अपना शुद्ध जन्म लग्न उपलब्ध है। यह यन्त्र बनाने में जितना सरल है इसका उपयोग उतना ही अधिक है, है न विचित्र बात! ज्योतिष के अल्प ज्ञानमात्र से आप इसे स्वयं ही बना सकते हैं अथवा अपने विश्वासपात्र सुनार से बनवा सकते हैं कहीं भी अथवा किसी भी स्थिति में इसको बनाने अथवा समझने में कठिनाई आए तो मुझसे सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

जिस क्षण मानव शरीर पृथ्वी पर जन्म लेता है, वह उस व्यक्ति के लिए कोई साधारण घड़ी नहीं होती। पुराणों तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में भी वर्णन आता है कि मानव जीवन सहज ही नहीं मिल पाता। जन्म-जन्मान्तर के कष्ट भोगने के बाद यह शरीर सुलभ हो पाता है। हम सब इस तथ्य को स्वीकार करते हैं, परन्तु हममें से ऐसे कितने हैं जो कभी अपने जन्म समय को गम्भीरता से सोचते हों। यह बात अलग है कि वर्ष में कभी अपनी वर्षगाँठ मनाकर बस हो-हल्ला कर लिया।

किसी के जन्म समय आकाश में ग्रहों की जो स्थिति होती है, जन्म लग्न उसी को दर्शाने वाला एक दर्पण समझा जा सकता है। इस लग्न की आकृति प्रान्त अथवा देशानुसार भिन्न-भिन्न होती है परन्तु हम अपने प्रयोग के लिए

उत्तर भारत में मान्य आयताकार अथवा वर्गाकार आकृति की ही चर्चा करेंगे। एक बात और स्पष्ट कर दूँ कि विभिन्न धातुओं के गुणधर्म अलग-अलग होते हैं। सामान्यत: हम ताँबा, चाँदी अथवा सोना ही विभिन्न यंत्रों के निर्माण में प्रयोग करते हैं। अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यक्ति इनमें से कोई धातु प्रयोग कर सकते हैं।

सर्वप्रथम अपना जन्म नक्षत्र ज्ञात करें। उस नक्षत्र काल में अपने जन्म लग्न का निर्माण प्रारम्भ करवाएं। यन्त्र का आकार अपनी सुविधा-सामर्थ्य अनुसार कुछ भी रखा जा सकता है। यदि जब, बटुए आदि में सदैव इसे साथ रखना है तो छोटा आकार और अपने पूजा स्थान में इसे स्थाई रूप से स्थापित करना है तो तदनुसार आकार बड़ा हो सकता है। यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा स्वयं कर लें या किसी योग्य व्यक्ति से करवा लें। यह ध्यान रखना है कि यन्त्र पर जन्म लग्न की आकृति उभरी हुई दिखाई दे। यह आकृति दबी हुई गड्ढे में नहीं होनी चाहिए। यदि धातु की पतली चादर पर यन्त्र बनाना है तो आप स्वयं भी इसे बना सकते हैं। चादर के पीछे से अंक तथा अक्षर उल्टे किसी नोकदार वस्तु से लिखें तो चादर की दूसरी ओर यह सीधे तथा उभरे हुए दृष्टिगत होंगे। लग्न यन्त्र का एक चरण यहाँ पूरा हो जाता है। यह यन्त्र अपने पूजा स्थल में रखकर इसकी पूजा आराधना की जा सकती है। यन्त्र पर त्राटक कर ऐसी धारणा बनाएँ कि प्रभु आपका जीवन पल-प्रतिपल सफल, सार्थक, उन्नतिशील और खुशहाल बना रहे हैं। ऐसा दिन में अपनी श्रद्धा और समयानुसार जितना अधिक कर सकते हैं, करें। यह यन्त्र देव तुल्य है, यह वह मापदण्ड है आपके जीवनचक्र का जो विधि ने इस रूप में अंकित कर दिया है। अपनी आराधना-त्राटक और दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा इस मापदण्ड को आप सृजनात्मक दिशा में मोड़ने का सतत् प्रयास कर रहे हैं। आपकी यह साधना, तपस्या व्यर्थ नहीं जाएगी। एक दिन आप स्वयं ही यह अनुभव करने लगेंगे कि आपका जीवन चक्र प्रभावित होने लगा है और वह प्रगति, शान्ति और सत्कर्मों की ओर अग्रसर होने लगा है।

लग्न का दूसरा चरण है इसमें एक, दो अथवा अधिक रत्न जड़वाना। रत्न कितने, कहाँ और कैसे जड़वाए जाएँ यह प्रत्येक व्यक्ति पर अलग-अलग

निर्भर करेगा। हर व्यक्ति का अपना अलग यन्त्र बनेगा। ठीक लग्न यन्त्र की तरह ही इसकी पूजा अर्चना का भी विधान है। सबसे उत्तम और प्रभावशाली विधि यह है कि त्राटक के बाद यन्त्र के सामने बैठकर नवग्रह शान्ति पाठ अथवा नवग्रह के बीजमंत्र का उच्चारण करें। गोपाल राजू की विधि से एक सिद्ध भभूत बनाएँ। इसकी विधि निम्न प्रकार है।

किसी भी सिद्ध मुहूर्त में अथवा किसी भी पूर्णिमा में दो फूलदार लौंग लें। इन्हें शुद्ध घी में डुबाकर तर कर लें। दो कपूर की टिक्की, दो छोटी हरी इलायची तथा आधा चाय के चम्मच बराबर सिन्दूर लें। यह सिन्दूर वह हो जो हनुमानजी पर चढ़ाया जाता है। इन चारों सामग्रियों को एक साफ सी कटोरी में रखकर आग पर जलाएँ। चम्मच से इसे बीच-बीच में हिलाते भी रहें। सब सामग्री पहले पिघलेगी फिर जलकर भूरी-लाल सी भभूत बन जाएगी। यह ध्यान रखें कि आग से इसी समय इसे उतार लें अन्यथा यह जलकर काली हो जाएगी। इस भभूत को ठण्डा करके किसी डिब्बी में भरकर रख लें। ध्यान से पूर्व यन्त्र पर अपनी दाएँ हाथ की अनामिका से स्पर्श करके यह अपनी भृकुटियों के मध्य स्थित आज्ञाचक्र पर रखकर हल्का सा दबाव दें। आँखें अर्धखुली हों। ध्यान नासाग्र पर हो तथा मुँह हल्का सा खुला हो। अब अनुभव करें कि आपका मस्तिष्क विचारशून्य हो गया है, मन में न कोई भाव है, न अविभाव, बस चेतनाशून्य है। जब दस-पाँच सैकेण्ड में यह चेतनाशून्य की अवस्था आ जाए तब अपनी शक्ति, श्रद्धा, समयानुसार त्राटक कर पूजा अर्चना करें। आपको असीम आनन्द की प्राप्ति होगी आपको मानसिक तनाव जैसा विकार तो कभी होगा ही नहीं। इस प्रयोग के साथ अपना "अन्य कुछ" करवाकर मैंने दर्जनों ऐसे डिप्रैशन के रोगी ठीक किए हैं जिन्हें बड़े-बड़े डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। डॉक्टरी भाषा में कहें कि ऐसे केस भी ठीक हो गए जो क्लीनिकली बोगस (लाइलाज) घोषित कर दिए गए थे।

व्यक्ति विशेष का लग्न यन्त्र अपने में प्रभावशाली है। यह आप प्रयोग करने के बाद अवश्य स्वीकार करेंगे। इस यन्त्र प्रयोग के दूसरे चरण का जो शोध कार्य है वह क्लिष्ट है। पूर्ण रूप से इसका लाभ लेने के लिए संयम तथा धैर्यपूर्वक गणना करने की परम आवश्यकता है। यदि थोड़ा सा भी संयम से

अभ्यास करके आप अपने अनुरूप रत्न अथवा रत्नों-उपरत्नों को चुनकर लग्न के भावों में जड़वा लें तो प्रभाव गई गुना बढ़ जाएगा। यह मैं नहीं कह रहा बल्कि उन अनेकों व्यक्तियों का दावा है जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में रत्न जड़ित लग्न यन्त्र बनाया अथवा बनवाकर प्रयोग किया है।

लग्न यन्त्र पर किया अथवा सर्वप्रथम लिखा जा रहा कार्य मेरी अपनी वर्षों की शोध का परिणाम है। इस यन्त्र को निर्माण करने की प्रेरणा मूलत: मुझे मूल महाग्रन्थ लाल किताब से मिली है। लाल किताब का एक सामान्य सा सिद्धान्त है कि किसी ग्रह को दूसरे घर में भी पहुँचाया जा सकता है। इसके लिए उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तु को धर्म स्थान अर्थात घर के पूजा स्थान अथवा मन्दिर आदि शुभ स्थान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली में दूसरे अर्थात धनभाव का स्वामी निर्बल है अथवा अशुभ घरों में स्थित है या अशुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट है तो ऐसे में वह व्यक्ति धन सम्बन्धी विषयों में कष्ट भोग रहा होगा तथा अनेकों पारिवारिक कठिनाइयों का सामना कर रहा होगा। यहाँ आर्थिक तथा पारिवारिक दृष्टिकोण से उस व्यक्ति को राहत दिलाने के लिए आवश्यकतानुसार अन्य ग्रह को इस घर में पहुँचाना होगा। इस पहुँचाना वाले उपक्रम में लाल किताब में अनेकानेक प्रयोग लिखे हैं जो लाल किताब के टोटकों के नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसे सूर्य को दूसरे घर में पहुँचाने के लिए मन्दिर में ताँबे का पात्र रखना चाहिए तथा नित्य मिष्ठान बाँटना चाहिए। चन्द्र को दूसरे घर में पहुँचाने के लिए पवित्र नदी का जल पूजा घर में रखना चाहिए। मंगल के लिए हनुमानजी पर सिन्दूर चढ़ाना चाहिए। बुध को यहाँ पहुँचाने के लिए पूजाघर में चाँदी की छोटी-छोटी गोलियाँ रखना चाहिए। गुरु को दूसरे भाव में पहुँचाने के लिए मन्दिर में केले का वृक्ष लगाना चाहिए। शुक्र को दूसर घर में पहुँचाने के लिए गोघृत का मिट्टी का दीपक जलाना चाहिए, आदि। टोटका विज्ञान अलग विषय है उसका उल्लेख करना यहाँ तर्कसंगत नहीं है परन्तु इससे यह निष्कर्ष अवश्य निकलता है कि किसी भाव अथवा ग्रह को बलवान बनाकर वाँछित कार्य लेना सम्भव है। इस सम्भवत: की सीमा क्या है ? यहाँ बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न मैं छोड़ता हूँ। अपनी-अपनी बौद्धिकता से चिन्तन-मनन करें। जो अपने को

स्वयंभू कहकर इस सीमा का 100% पक्ष में करने का दावा करते हैं, उसे भी मनन करें।

जन्मपत्री में लग्न स्थान पर मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन बारह राशियाँ में से कोई एक राशि अंकित होती है। इन्हें क्रमशः 1, 2, 3, 4 से 12 तक के अंकों से सम्बोधित किय जाता है।

उदाहरण के लिए दी गयी एक लग्न कुण्डली को ध्यान से देखें। इसमें लग्न के स्थान पर 1 अंक लिखा है जिसका तात्पर्य यह है कि यह मेष लग्न की कुण्डली है। घड़ी की सूइयों के विपरीत कुण्डली में क्रमशः 2, 3, 4 से लेकर 12 तक के अंक अंकित हैं जो दर्शाते हैं कि यह क्रमशः वृष, मिथुन, कर्क से लेकर मीन तक की राशियाँ हैं। कुण्डली के बारह भाव व्यक्ति से सम्बन्धित विभिन्न बातों को दर्शाते हैं। इन भावों में अंकित राशियाँ किसी न किसी ग्रह से सम्बन्धित हैं। ज्योतिष की भाषा में इसे कहते हैं कि किस राशि का स्वामी अमुक ग्रह है। विभिन्न ग्रहों से सम्बन्धित रत्न-उपरत्न लिख दिए गए हैं। ज्योतिष के अधिक ज्ञान के लिए कोई भी प्रारम्भिक ज्योतिष की पुस्तक आप भी ज्ञानार्थ देख सकते हैं। मेरी पुस्तक 'सात दिनों में ज्योतिष ज्ञान' इसके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

दिए गए व्यक्ति के लिए यदि धनभाव अर्थात दूसरा भाव जहाँ-जहाँ अर्थात् वृष राशि अंकित है तथा भाग्य भाव जहाँ धन राशि अंकित है, दो राशियों के कारक ग्रह शुक्र तथा गुरु को बलवान करना पड़ेगा।

इसके लिए दोनों भाव में क्रमशः हीरा अथवा जिरकन तथा पुखराज अथवा सुनैला रत्न अथवा उपरत्न जड़वाकर लग्न यन्त्र बनवाना पड़ेगा।

इसी प्रकार प्रत्येक लग्न के लिए आप भावानुसार ग्रह के रत्न-उपरत्न चुनकर उन भावों में जड़वाकर उस ग्रह को वहाँ पहुँचा सकते हैं। एक अन्य कुण्डली का उदाहरण देखें—आपको विषय अधिक स्पष्ट होने लगेगा।

बलहीन होने के कारण सूर्य ग्रह को इस कुण्डली में माना नवम भाव में पहुँचाना है तथा चन्द्र ग्रह को सप्तम स्थान में पहुँचाना है तो इसके लग्न यन्त्र में माणिक तथा मोती जड़वाने की स्थिति निम्न प्रकार होगी।

रत्न जड़ित लग्न यन्त्र

एक अन्य कुण्डली का उदाहरण देखें।

लग्न कुण्डली

शनि ग्रह यहाँ पर बलहीन होकर अशुभ करवा रहा है। इसने पूरे पुरुषार्थ को असन्तुलित कर दिया है। पुरुषार्थ में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए इसे तृतीय स्थान में पहुँचाना है तो तीसरे भाव अर्थात कन्या राशि के साथ यहाँ शनि से सम्बन्धित कोई रत्न-उपरत्न जैसे नीलम, कटैला, नीली आदि यहाँ जड़वाना होगा।

रत्न जड़ित लग्न यन्त्र

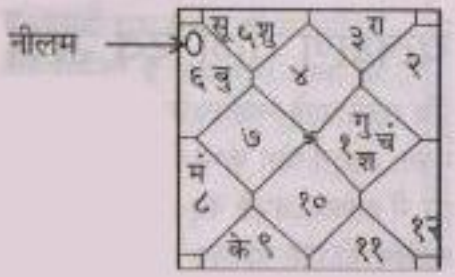

लग्न यन्त्र में रत्न जड़वाने के सैकड़ों संयोग हो सकते हैं जो अनुभव तथा अपने बुद्धि-विवेक के द्वारा ही सम्भव हैं। लग्न तथा रत्न जड़ित लग्न यन्त्र की भूमिका भर पाठकों के ज्ञानार्थ यहाँ दी गयी है। इसमें अधिक सकारात्मकता उत्पन्न करने के लिए केन्द्र में निरन्तर शोधकार्य चल रहे हैं। आप भी अपने-अपने स्तर पर इस शोधपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाकर अपना तथा अपने इष्टमित्रों एवं परिजनों का कल्याण कर सकते हैं।

कम्प्यूटर द्वारा रत्न चयन

कम्प्यूटर द्वारा जो जन्म पत्रियाँ बनाई जा रही हैं। उनमें अधिकांशतः आपका भाग्यशाली रत्न भी गणना करके लिखा होता है। आप इसका भी अपने बुद्धि-विवेक से प्रयोग कर लाभ उठा सकते हैं। इसमें दिए गए रत्नों के मुख्यतः चार आधार होते हैं।

1. **राशि रत्न** - यह आपकी चन्द्र राशि पर आधारित होता है।
2. **जीवन रत्न** - यह आपके जन्म लग्न अर्थात लग्नेश पर आधारित है।
3. **पुण्य रत्न** - यह जन्म पत्री के पंचम अर्थात पंचमेश भाव पर आधारित है।
4. **भाग्य रत्न** - जन्म पत्री के नवम भाव अर्थात नवमेश से इसका निर्धारण होता है।

रत्न जड़ित लग्न यन्त्र

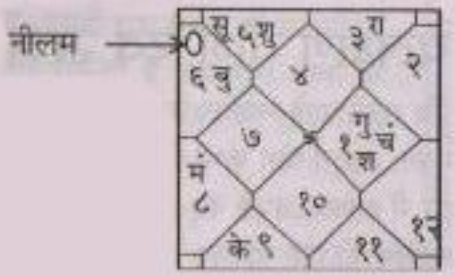

लग्न यन्त्र में रत्न जड़वाने के सैकड़ों संयोग हो सकते हैं जो अनुभव तथा अपने बुद्धि-विवेक के द्वारा ही सम्भव हैं। लग्न तथा रत्न जड़ित लग्न यन्त्र की भूमिका भर पाठकों के ज्ञानार्थ यहाँ दी गयी है। इसमें अधिक सकारात्मकता उत्पन्न करने के लिए केन्द्र में निरन्तर शोधकार्य चल रहे हैं। आप भी अपने-अपने स्तर पर इस शोधपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाकर अपना तथा अपने इष्टमित्रों एवं परिजनों का कल्याण कर सकते हैं।

कम्प्यूटर द्वारा रत्न चयन

कम्प्यूटर द्वारा जो जन्म पत्रियाँ बनाई जा रही हैं। उनमें अधिकांशतः आपका भाग्यशाली रत्न भी गणना करके लिखा होता है। आप इसका भी अपने बुद्धि-विवेक से प्रयोग कर लाभ उठा सकते हैं। इसमें दिए गए रत्नों के मुख्यतः चार आधार होते हैं।

1. **राशि रत्न** - यह आपकी चन्द्र राशि पर आधारित होता है।
2. **जीवन रत्न** - यह आपके जन्म लग्न अर्थात लग्नेश पर आधारित है।
3. **पुण्य रत्न** - यह जन्म पत्री के पंचम अर्थात पंचमेश भाव पर आधारित है।
4. **भाग्य रत्न** - जन्म पत्री के नवम भाव अर्थात नवमेश से इसका निर्धारण होता है।

ज्योतिष का विलक्षण योग एवं रत्न चयन

ज्योतिष शास्त्र में रुचि रखने वाले ज्योतिष के योग तथा अरिष्ट से भली-भाँति परिचित होंगे। सम्भवत: प्रस्तुत योग कभी किसी के व्यवहार आया हो। मैं इसे अनेक बार व्यवहार में लाकर अपने नए-नए प्रयोग करवाता रहा हूँ। कानपुर से छपने वाली ज्योतिष की एक पत्रिका 'होरा' में मेरा एक लेख छपा था 'ग्रह गोचर एवं कर्क लग्न।' अनेक लोगों ने उसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। कुछेक लोभी प्रवृत्ति लोगों के हाथ भी वह लेख पड़ा। उस आधार पर वह जमा-पूंजी बेचकर जुआ खेल बैठे और लाखों का घाटा उठाकर दोषार्पण मुझ पर करने लगे। उसके बाद से मैंने इस प्रकार के प्रयोग करना ही बन्द कर दिए। यहाँ भी मैं अपने स्नेही पाठकों को सावधान कर रहा हूँ कि पुस्तक में दिया मेरा कोई भी प्रयोग लोभवश न अपनाएँ। अपने बुद्धि-विवेक का भी अवश्य प्रयोग करें। अन्यथा विपरीत फल का मेरा किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं होगा। हानि-लाभ के वह स्वयं उत्तरदायी होंगे। मैं तो अपना शोध, अपना मत लिख रहा हूँ, यह आवश्यक नहीं कि उससे सब सहमत हों। वैसे एक सत्य बात लिख दूँ—मात्र शोधपरक निष्काम कार्य करने वाले को अधिकांशत: प्रताड़ना ही मिलती है। मैं सबसे बड़ा उदाहरण आपके सामने हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक-दो बार यह योग अवश्य आता है। अज्ञानतावश हम उसे पहचान नहीं पाते। यदि समय रहते उसे जान लिया जाए और उसको प्रभावशील बनाने के लिए ठीक-ठीक उपाय कर लिए जाएँ तो वह शुभता में उत्प्रेरक की तरह कार्य करेगा। यह भी सदैव ध्यान रखें कि जहाँ भाग्य विपरीत होता है और कोई शुभ समय जीवन में आता है तो उसका प्रभाव प्रारब्ध के कारण इतना नगण्य होता है कि दृष्ट नहीं हो पाता इसी अदृश्य को मेरा रत्न का प्रयोग कभी-कभी मूर्त भी कर देता है। प्रयास कर देखें। एक लग्न कुण्डली से इसे समझने का प्रयास करें।

गोचरवश भ्रमण करते हुए तीन, चार अथवा अधिक ग्रहों का ऐसा संयोग अवश्य बनता है जब लग्न से ग्रह अपनी जन्म की मूल स्थिति में एकत्रित हो जाते हैं। संयोग से चन्द्रमा भी अपनी जन्म की राशि में आ जाए अथवा शुभ

राशियों में रहे तो यह समय सर्वाधिक भाग्यशाली समय होता है। दूसरी शुभ समय की सम्भावित स्थिति वह हो सकती है जब शुभ भावों के स्वामी ग्रह गोचरवश लग्न से उन्हीं राशियों में हों। अर्थात लग्नेश सूर्य लग्न में, धनेश बुध द्वितीय में सुखेश मंगल चतुर्थ में, त्रिकोणेश पंचम गुरु पाँचवें में, सप्तमेश शनि सातवें में, नवमेश मंगल नवें में, दशमेश शुक्र दसवें में तथा लाभेश बुध ग्यारहवें अर्थात मिथुन राशि में स्थित हो जाएँ। देखने-सुनने में यह विचित्र लगेगा परन्तु यह नितान्त सत्य है—ऐसा संयोग जीवन में आता अवश्य है। रत्नों के माध्यम से इसे उत्प्रेरित कर अधिक प्रभावशाली बनाएँ। जो ग्रह जन्म लग्न के मूल ग्रहों की राशि में अथवा उक्त भावों में गोचरवश आ जाएँ उनका रत्न, रंग, वनस्पती, धातु आदि से प्रभावी बनाने का पूर्व में प्रयास कर रखें। जब यह संयोग बनेगा तब वह रत्न, रंगादि अपना सुप्रभाव अवश्य दिखाएँगे।

उक्त संयोगों में आप अपने महत्त्वपूर्ण कार्य का श्रीगणेश करने का सोच सकते हैं। इस मुहूर्त में किया गया व्यक्ति विशेषानुसार कार्य फलीभूत होता है। यह शीशे-सा कोमल प्रयोग है, सोच-समझ कर सावधानी तथा संयम से प्रारम्भ करें। मैं विशेषरूप से इस प्रयोग को गुप्त ही रखे हुए हूँ। कहीं व्यवसायिक वर्ग के हाथ इसके सूत्र लग गए तो वह अर्थ का अनर्थ बना देंगे।

दूसरा योग मेरे व्यक्तिगत अनुभव में आया है कि जब कोई ग्रह वर्गोत्तम अर्थात लग्न तथा नवांश कुण्डली में एक ही राशि में स्थित हो और उस ग्रह का नियमानुसार रत्न-उपरत्न, धातु आदि प्रयोग करा जाए तो उस ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में चमत्कारी रूप से हम अनुकूल परिणाम पा सकते हैं। परन्तु यहाँ भी विषय इसलिए शिथिल हो जाता है कि बिना शोध के असंयमी बनकर हम रत्नादि का तत्काल प्रभाव पाने के लिए उसका उपयोग कर बैठते हैं। यदि आपमें संयम है और आप गोपाल राजू की संयम वाली परिपाटी अपना रहे हैं तो सर्वप्रथम अपने लिए छोड़कर अन्य किसी के लिए यह प्रयोग प्रारम्भ करें। जब हम अपने को तथा अपने परिजनों को भूलकर आगे बढ़ेंगे तब ही मेरे इन शोधकार्यों में आगे बढ़ पाएंगे। यहाँ भाव निःस्वार्थ काम का ही है।

बलहीन ग्रह एवं रत्न चयन

अधिकांशत: बल दिया जाता है कि बलवान रत्न से सम्बन्धित रत्न धारण करना सुरक्षित है। मैंने भी पुस्तक में इसी परिपाटी का पालन किया है। परन्तु एक वर्ग ऐसा भी है जो बलवान ग्रहों के विपरीत निर्बल ग्रह सम्बन्धी रत्न धारण करवाने पर बल देता है। न्यूयार्क के डॉ. ऑस्कर बून्तर ने इस विषय पर अत्यधिक शोधकार्य किए हैं। उनके शोधकार्य से यह निष्कर्ष निकाला गया कि ग्रह-नक्षत्रों तथा जीवात्मा के मध्य एक सामन्जस्य बना हुआ है। उनमें से निरन्तर कॉस्मिक तरंगें फूटती रहती हैं। इन तरंगों का रूप ठीक अनुप्रस्थ तथा अनुधैर्य तरंगों की तरह होता है। इनमें बना असन्तुलन जीवन में अराजकता उत्पन्न करने लगता है तदनुसार जीवात्मा कष्ट भोगना प्रारम्भ कर देता है।

योग्य ज्योतिषी व्यक्ति की जन्म पत्रिका से शुभ-अशुभ ग्रहों को खोज लेते हैं और फलाफल की सम्भावित अवधि गणना कर लेते हैं, तदनुसार अनेक क्रम-उपक्रमों से निदान खोजने का कार्य करते हैं। रत्नों द्वारा समस्या का समाधान करना भी एक अच्छा उपक्रम है। किसी रोग को जैसे दवा अपने अन्दर संचित गुणधर्म के द्वारा ठीक करती है वैसे ही रत्न दुष्ट ग्रहों के विपरीत प्रभाव को निष्क्रिय कर देते हैं।

निर्बल अर्थात अनहित करवाने वाले ग्रह के लिए चुने गए रत्न यहाँ सामान्य चलन में आने वाले रत्नों से कुछ भिन्न हैं।

माना कि जन्मपत्री में सूर्य बलहीन होकर कष्टों का कारण बन रहा है। इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि सूर्य की शुभता प्रदान करने वाली फ्रीक्वैन्सी पूर्ण रूप से संचित नहीं हो पा रही है। जीवात्मा को जीवन निर्वाह के लिए प्राप्त होने वाली ऊर्जा अपेक्षाकृत कम रूप से मिल रही है। परिणाम स्वरूप व्यक्ति हड्डियों के रोग से ग्रसित होगा सूर्य के विपरीत प्रभाव को दूर करने के लिए यहाँ माणिक्य धारण करवाना लाभदायक सिद्ध होगा।

माना किसी जन्मपत्री में गुरु शुभ स्थिति में नहीं है और परिणामस्वरूप

रक्त ज्वलन कष्ट दे रहा है तो यहाँ गुरु का रत्न पुखराज न पहनाकर एक मोती प्रयोग करवाना कष्टों से मुक्ति दिलवाने वाला सिद्ध हो सकता है।

विपरीत प्रभाव देने वाले ग्रहों के लिए कौन से रत्न धारण करें जिससे कि उनका दुष्प्रभाव न्यून हो, यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

कष्टकारी ग्रह	कष्ट निवारण हेतु रत्न
सूर्य	माणिक्य
चन्द्र	लहसुनिया
मंगल	मूंगा
बुध	पुखराज
गुरु	मोती
शुक्र	हीरा
शनि	नीलम
राहु	गोमेद
केतु	पन्ना

+ + +

बच्चे का नज़र बट्टू

नवजात शिशुओं में प्रायः देखा जाता है कि वह सोते-सोते चौंक जाते हैं, दुःस्वपन देखकर अकस्मात् डरकर रोने लगते हैं अथवा उनको किसी की बुरी नजर लग जाती है। ऐसे में आप निम्न सामग्री एक धागे में पिरोकर उसके गले में डाल दें, आशातीत फल आपको दिखाई देने लगेगा।

1. श्वेतार्क की जड़
2. मूंगा
3. फिटकरी
4. लहसुन
5. नीलकण्ठ का पंख

मनहूस घड़ी में जन्म एवं रत्न चयन

पता नहीं किस मनहूस घड़ी में जन्म लिया है जो यह सब कष्ट झेलने पड़ रहे हैं—प्रायः यह लोगों को कहते हुए आपने अवश्य सुना होगा। मेरी अपनी मान्यता यह है कि कोई भी घड़ी मनहूस अर्थात अशुभ नहीं होती है। आत्मा जब धरती पर जन्म लेता है तब वह कोई साधारण घड़ी नहीं होती है। जन्म-जन्मान्तरों के सुकर्मों के बाद आत्मा को मनुष्यरूपी चोला मिलता है तब वह मनहूस घड़ी कैसे हो सकती है, मनन करें।

यदि अज्ञानतावश कहीं ऐसा प्रकरण सामने आ रहा हो और उसके जन्म विवरण का अता-पता न हो तो सूर्य, चन्द्र, बुध तथा गुरु के रत्न, उपरत्न, धातु अथवा वनस्पति आदि प्रयास करके देखें। सम्भवतः मनहूस घड़ी का कलंक कुछ न्यून हो जाए।

दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक तीन प्रकार के सुखों की कामना आत्मा के शरीर में प्रवेश करने के बाद से अपेक्षा की जाने लगती हैं। यदि इनमें सम्बन्धित वाँछित परिणाम मिलते जाते हैं तब तो ठीक है अन्यथा जीवात्मा स्वयं तथा अपने परिजनों अथवा अन्य का आक्रोश झेलना प्रारम्भ कर देता है। ज्योतिषीय योगों के आधार पर इसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। मेरी अल्प बुद्धि में जो आया है वह लिख रहा हूँ। सम्भव है कि सब इससे सहमत न हों।

सूर्य ग्रह को आत्मा का कारक माना गया है। जीवात्मा का सर्वप्रथम आत्मप्रधान होना आवश्यक है। सूर्य मान, प्रतिष्ठा तथा समृद्धि का प्रतीक है। यह प्रतिनिधित्व करता है ऐश्वर्य पर। सूर्य को सर्वाधिक तेजस्वी ग्रह माना जाता है। रोगी की पित्त प्रवृत्ति इसी ग्रह से निर्धारित होती है।

चन्द्र ग्रह को मन का कारक माना गया है। शारीरिक-मानसिक पुष्टि का प्रतिनिधि ग्रह चन्द्र है। यह सम्पत्ति तथा सौभाग्य का भी सूचक है। रोग में यह कफ प्रवृत्ति पर नियन्त्रण रखता है।

बुध वैसे तो नपुंसक ग्रह है परन्तु त्रिसुखों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण योगदान

देता है। जिस ग्रह के साथ स्थित होता है वैसे ही व्यवहार करने लगता है। वात रोग का नियन्त्रण करने वाला ग्रह यदि बलवान है तो बुद्धि, वाणी और स्नायु तन्त्र को सन्तुलन में रखता है जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल बनने के लिए बुद्धि तथा वाणी का स्थिर अथवा नियन्त्रित होना अति आवश्यक है।

गुरु ग्रह महत्वाकांक्षाओं को द्योतक है। यह पारलौकिक तथा आध्यात्मिक सुखों में वृद्धि करता है। आत्मा की अन्ततः सद्गति हो जाए इसके लिए गुरु का बलवान होना आवश्यक है।

यह चार ग्रह यदि सन्तुलन में कर लिए जाएँ तो जीवात्मा का परम कल्याण है, भले ही वह कैसी भी घड़ी में जन्मा हो। पुखराज, माणिक्य, पन्ना तथा मोती एक साथ धारण करके आप भी इनका चमत्कारिक रूप से प्रभाव देख सकते हैं। आयुर्वेद में रोगी बनाने वाले त्रिदोष कफ, वात और पित्त को तो यह रत्नों का यह संयोग सन्तुलित करेगा ही भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों में भी आप उत्तरोत्तर वृद्धि अनुभव करने लगेंगे।

प्राण-प्रतिष्ठा

निष्प्रभाव हुए अपने किसी भी रत्न, यंत्र, विग्रह, कंकड़ तथा वनस्पति आदि को पुनः प्रभावी अर्थात चैतन्य करने के लिए **गोपाल राजू** की विधि अपनाएँ, यदि प्रारब्ध अच्छा है तो वह पदार्थ शुभ-शुभ करेगा ही करेगा।

दशा-अन्तर्दशा एवं रत्न चयन

दशानुसार रत्न चयन करना आपको पहली दृष्टि में कठिन अवश्य लगेगा। सर्वप्रथम तो दुविधा तब आएगी जब पता चलेगा कि ग्रहों की दशाएँ अनेक प्रकार की होती हैं। इन विभिन्न दशाओं का प्रयोग-उपयोग प्रान्त, देश तथा व्यक्ति-व्यक्ति के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। भारतवर्ष में सामान्यत: अनेक दशाओं में से विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी, चर, सन्ध्या तथा महादशा दशा-अन्तर्दशा का प्रयोग किया जाता है। उत्तर भारत में विंशोत्तरी दशा प्रचलित है, दक्षिण भारत में अष्टोत्तरी, हिमाचल प्रदेश में योगिनी आदि। पश्चिम के देशों में दशाओं के स्थान पर ग्रह गोचर के आधार पर भविष्यवाणी करने का प्रचलन है, अस्तु।

दशा अन्तर्दशाओं की लम्बी चौड़ी गणनाओं के लिए आपको करना कुछ नहीं है। बीस-तीस रुपए मात्र देकर यह आपको किसी कम्प्यूटर पर सुविधा से उपलब्ध हो जाएँगी। आप यह अपनी जन्म तिथि, जन्म समय तथा जन्म स्थान देकर उपलब्ध कर लें। अपने क्षेत्र, सुविधा तथा विवेक से जो भी दशा आप रत्न चयन के लिए चुन रहे हैं उसको ध्यान से देखें। किस ग्रह की कितने समय से कितने समय तक आपकी वर्तमान दशा-अन्तर्दशा चल रही है, वह लिख लें। एक बात यह अवश्य जान लें कि दशाओं के प्रत्यन्तर, प्राण, सूक्ष्म आदि और भी अन्य आगे भाग किए जाते हैं। उन्हें इसलिए रत्न चयन के लिए विचार नहीं किया जा रहा है क्योंकि उनकी समयावधि बहुत थोड़ी होती है। दशा के अनुरूप ऐसे में हमें उनके अनुरूप ही बार-बार रत्न-उपरत्न बदलना पड़ेगा जो सुविधाजनक नहीं है। दशा-अन्तर्दशा की एक अच्छी लम्बी समयावधि होती है इसीलिए इन दोनों के अनुरूप रत्न चयन करने पर मैं बल देता हूँ।

विभिन्न दशाओं में विंशोत्तरी दशा को रत्न चयन का आधार मानें अथवा अन्य को, निम्न घटक यदि जन्म कुण्डली के अनुसार ठीक बैठते हैं तो उन ग्रहों से सम्बन्धित रत्न आपके लिए सर्वाधिक उपयुक्त होंगे—

1. यदि दशा और अन्तर्दशा नाथ (ग्रह) परस्पर शत्रु अथवा अधिशत्रु नहीं हैं। (यह आप कम्प्यूटर पत्री में मैत्री वाले पृष्ठ से पंचधामैत्री से देख सकते हैं।)

2. यदि दशा और अन्तर्दशानाथ (ग्रह) षडाष्टक दोष नहीं बनाते अर्थात एक दूसरे से छठे और आठवें भाव में नहीं होते। (जन्म कुण्डली अथवा जन्म लग्न वाले वर्ग से आप ग्रहों की यह स्थिति देख सकते हैं।)

3. दशा और अन्तर्दशानाथ में से कोई भी ग्रह पहले त्रिक अर्थात् छठे, आठवें और बारहवें भाव का स्वामी नहीं होता (यह भी आप जन्म लग्न वाले वर्ग से देख सकते हैं।)

4. दशा और अन्तर्दशानाथ में से कोई भी ग्रह कुण्डली में शत्रु राशि में स्थित नहीं होता (नैसर्गिक मैत्री चक्र से आप यह सरलता से देख सकते हैं।)

सामान्यत: ऐसा संयोग बहुत कम होगा जब उपरोक्त चारों घटक आपको एक साथ मिल जाएँ। हो सकता है कि किसी दशा-अन्तर्दशा में यह योग बन जाए तो आप तब भी उन ग्रहों से सम्बन्धित रत्न की अँगूठी पैन्डैन्ट आदि बनवा लें। दूसरी प्राथमिकता आप उस स्थिति को दें जब उक्त चार में से तीन घटक आपको मिल जाएँ। यदि यह भी सम्भव न हो और आपको एक अथवा दो घटक ही मिलें तब आप रत्न चयन के लिए अन्य विधियों का भी सहारा लें। मैं पहले भी लिख चुका हूँ कि यदि आपके लिए कई विधियों से यदि एक अथवा अधिक रत्न एक से मिल जाएं तो आप उन्हें अपने प्रयोग के लिए चुन लें।

उदाहरण के लिए रनित नामक एक लड़के की पत्री भी देख लेते हैं। इससे समझने में और भी सुविधा होगी। रनित का जन्म 27 अगस्त 1978 को प्रात: 6:37 पर रुड़की में हुआ था। उनकी पत्री के सम्बन्धित पृष्ठ यहाँ संलग्न हैं।

नाम	रनित
लिंग	पुरुष
जन्म तिथि	27-08-1978 (रविवार,
जन्म समय (मानक)	06:37:00 (इष्टकाल 01:46:38 घटी)

देश/विभाग इण्डिया

जन्म स्थान रुड़की (उत्तराचल)

निरयण ग्रह स्पष्ट

ग्रह	राशि	अंश	दिशा	नक्षत्र	पद	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी
लग्न	सिंह	18:38:17		11 पूर्वा फाल्गुनी	2	सूर्य	शुक्र
सूर्य	सिंह	09:52:21		10 माघ	3	सूर्य	केतु
चन्द्र	वृष	27:02:05		05 मृग	2	शुक्र	मंगल
मंगल	कन्या	20:47:21	मार्गी	13 हस्त	4	बुध	चन्द्र
बुध	कर्क	26:57:28	वक्री	09 अश्लेषा	4	चन्द्र	बुध
गुरु	कर्क	04:34:41	मार्गी	08 पुष्य	1	चन्द्र	शनि
शुक्र	कन्या	25:55:44	मार्गी	14 चित्रा	1	बुध	मंगल
शनि	सिंह	10:22:57	मार्गी	10 माघ	4	सूर्य	केतु
राहु	कन्या	03:16:35	वक्री	12 उत्तरा फाल्गुनी	2	बुध	सूर्य
केतु	मीन	03:16:35	वक्री	25 पूर्वा भाद्रपद	4	गुरु	गुरु
यूरेनस	तुला	19:21:18	मार्गी	15 स्वाति	2	शुक्र	राहु
नैपच्यून	वृश्चिक	21:58:09	वक्री	18 ज्येष्ठ	2	मंगल	बुध
प्लूटो	कन्या	21:25:39	मार्गी	13 हस्त	4	बुध	चन्द्र

राहु व केतु के स्पष्ट मान दिये गये हैं।

लग्न कुण्डली

नवमांश

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	
चन्द्र	मित्र		सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र		शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम		सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु		शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम		मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र		मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र		शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र		शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु		मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र		शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु		मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र		मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र		मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र		शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु	सम	अतिशत्रु
चन्द्र	अतिमित्र		शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	अतिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम		सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र		शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिशत्रु		सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र		अतिमित्र	सम	सम
शनि	अतिशत्रु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र		अतिमित्र	अतिशत्रु
राहु	सम	अतिशत्रु	अतिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र		अतिशत्रु
केतु	अतिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अतिशत्रु	अतिशत्रु	

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	4	6	5	3	3	4	3	5	3	1	4	7	48
चन्द्र	2	7	6	5	0	1	7	4	2	7	5	3	49
मंगल	4	5	5	3	3	2	4	2	4	2	2	3	39
बुध	5	6	7	4	3	5	3	4	6	3	3	5	54
गुरु	5	5	5	5	4	5	6	4	4	5	4	4	56
शुक्र	5	6	5	4	3	4	3	6	5	3	2	6	52
शनि	1	4	6	3	4	1	3	4	3	3	4	3	39
कुल	26	39	39	27	20	22	29	29	27	24	24	31	337

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	1	5	2	0	0	3	0	2	0	0	1	4	18
चन्द्र	2	6	1	2	0	0	2	1	2	6	0	0	22
मंगल	1	3	3	1	0	0	2	0	1	0	0	1	12
बुध	2	3	4	0	0	2	0	0	3	0	0	1	15
गुरु	1	0	1	1	0	0	2	0	0	0	0	0	5
शुक्र	2	3	3	0	0	1	1	2	2	0	0	2	16
शनि	0	3	3	0	3	0	0	1	2	2	1	0	15
कुल	9	23	17	4	3	6	7	6	10	8	2	8	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् अष्टकवर्ग सारिणी

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कुल
सूर्य	1	5	0	0	0	3	0	1	0	0	1	4	15
चन्द्र	1	6	1	2	0	0	0	1	2	6	0	0	19
मंगल	1	3	3	1	0	0	0	0	0	0	0	0	8
बुध	2	3	2	0	0	2	0	0	1	0	0	1	11
गुरु	1	0	1	1	0	0	2	0	0	0	0	0	5
शुक्र	0	3	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	5
शनि	0	3	3	0	3	0	0	1	2	1	1	0	14
कुल	6	23	11	4	3	6	2	3	5	7	2	5	77

शोध्य पिण्ड

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	139	139	65	91	33	43	126
ग्रह पिण्ड	70	60	30	45	15	30	45
शोध्य पिण्ड	209	199	95	136	48	73	171

विंशोत्तरी दशा (महादशा)

राहु (18 वर्ष)

18-09-1983
18-09-2001
ाहु 30-05-86
ुरु 24-10-88
ानि 30-08-91
बुध 18-03-94
केतु 06-04-95
ुक्र 06-04-98
ूर्य 02-03-99
न्द्र 30-08-00
मंगल 18-09-01

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष
08-06-1994
08-06-1999
भद्रिका 18-02-95
उल्का 18-12-95
सिद्धा 08-12-96
संकटा 18-01-98
मंगला 08-03-98
पिंगला 18-06-98
धान्या 18-11-98
भ्रामरी 08-06-99

योगिनी स्वामी	चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र
योगिनी नाम	मंगला	पिंघला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा

लगभग 1998-99 में इन्हें मैंने विंशोत्तरी तथा योगिनी दशाओं के अनुसार माणिक्य तथा पन्ना रत्न एक ही अँगूठी में धारण करवाया था। उस एक वर्ष में वास्तव में चमत्कारी प्रभाव इन रत्नों ने दिखाया। पढ़ाई का इनका वह चरम समय था। पत्री में पड़ा केमद्रुम दोष तथा काल सर्पदोष और शत्रु क्षेत्री लग्नस्थ शनि इन्हें भ्रमित किए हुए था। परिणाम यह निकल रहा था कि घर-बाहर वाले सब इनकी पढ़ाई और भविष्य को लेकर चिन्तित थे। पाठक स्वयं देखें कि इन रत्नों ने कैसे सुप्रभाव दिखाया। हाँ यह अवश्य रहा कि यह प्रभाव अल्प समय तक ही प्रभावी रहा। यह समय था राहु दशा में सूर्य की अन्तर्दशा का अर्थात अप्रैल 1998 से मार्च 1999 तक। इस समय योगिनी दशा भद्रिका में क्रमशः संकटा, मंगला, पिंगला आदि की थीं। पंचधा मैत्री में आप देखें राहु तथा सूर्य सम हैं। तात्कालिक मैत्री में मित्र हैं। एक-दूसरे से परस्पर छठे और आठवें भाव में नहीं हैं तथा दोनों में से कोई त्रिकभाव में भी नहीं है। राहु बुध की राशि कन्या में है इसलिए बुध की तरह कार्य कर रहा है। इसीलिए यहाँ राहु का गोमेद न चुनकर बुध ग्रह का पन्ना रत्न लिया गया था। सूर्य ग्रह की अन्तर्दशा के लिए माणिक्य रत्न चयन किया गया था। यही संयोग सौभाग्य से योगिनी दशा से निकलता था। उस समय भद्रिका की योगिनी दशा चल रही थी जिसका स्वामी ग्रह बुध है। भद्रिका में पिंगला की योगिनी अन्तर्दशा मार्च 1998 से जून 1998 तक थी। यह वह समय था जब राहु में सूर्य की दशा का कुछ समय इससे संयोग रखता था। फलस्वरूप इस अवधि में इनका मानसिक स्तर उच्चशिखर का रहा। यहाँ से ही पढ़ाई को इन्होंने गम्भीरता से जीवन का लक्ष्य बना लिया। यह भी एक विचित्र संयोग रहा कि जिन दो-चार मित्रों की संगत में वह पथभ्रष्ट हो रहे थे, वह किन्हीं कारणों से उनसे अलग हो गए।

दशा-अन्तर्दशानुसार रत्न चयन करने पर पाठक विशेष बल दें क्योंकि ग्रहों के शुभाशुभ का फल तदनुसार इन समयावधियों में ही होता है। यदि रत्न ठीक-ठीक चयन किया गया है तो अशुभ दशा-अन्तर्दशा भी कुछ न कुछ शुभ फल दिखाएगी। शुभ प्रभाव न भी हो तो भी अशुभता की दर अवश्य न्यून होगी।

इस विधि में एक बात यह विशेष रूप से ध्यान में रखें कि यहाँ चयन

लगभग 1998-99 में इन्हें मैंने विंशोत्तरी तथा योगिनी दशाओं के अनुसार माणिक्य तथा पन्ना रत्न एक ही अँगूठी में धारण करवाया था। उस एक वर्ष में वास्तव में चमत्कारी प्रभाव इन रत्नों ने दिखाया। पढ़ाई का इनका वह चरम समय था। पत्री में पड़ा केमद्रुम दोष तथा काल सर्पदोष और शत्रु क्षेत्री लग्नस्थ शनि इन्हें भ्रमित किए हुए था। परिणाम यह निकल रहा था कि घर-बाहर वाले सब इनकी पढ़ाई और भविष्य को लेकर चिन्तित थे। पाठक स्वयं देखें कि इन रत्नों ने कैसे सुप्रभाव दिखाया। हाँ यह अवश्य रहा कि यह प्रभाव अल्प समय तक ही प्रभावी रहा। यह समय था राहु दशा में सूर्य की अन्तर्दशा का अर्थात अप्रैल 1998 से मार्च 1999 तक। इस समय योगिनी दशा भद्रिका में क्रमशः संकटा, मंगला, पिंगला आदि की थीं। पंचधा मैत्री में आप देखें राहु तथा सूर्य सम हैं। तात्कालिक मैत्री में मित्र हैं। एक-दूसरे से परस्पर छठे और आठवें भाव में नहीं हैं तथा दोनों में से कोई त्रिकभाव में भी नहीं है। राहु बुध की राशि कन्या में है इसलिए बुध की तरह कार्य कर रहा है। इसीलिए यहाँ राहु का गोमेद न चुनकर बुध ग्रह का पन्ना रत्न लिया गया था। सूर्य ग्रह की अन्तर्दशा के लिए माणिक्य रत्न चयन किया गया था। यही संयोग सौभाग्य से योगिनी दशा से निकलता था। उस समय भद्रिका की योगिनी दशा चल रही थी जिसका स्वामी ग्रह बुध है। भद्रिका में पिंगला की योगिनी अन्तर्दशा मार्च 1998 से जून 1998 तक थी। यह वह समय था जब राहु में सूर्य की दशा का कुछ समय इससे संयोग रखता था। फलस्वरूप इस अवधि में इनका मानसिक स्तर उच्चशिखर का रहा। यहाँ से ही पढ़ाई को इन्होंने गम्भीरता से जीवन का लक्ष्य बना लिया। यह भी एक विचित्र संयोग रहा कि जिन दो-चार मित्रों की संगत में वह पथभ्रष्ट हो रहे थे, वह किन्हीं कारणों से उनसे अलग हो गए।

दशा-अन्तर्दशानुसार रत्न चयन करने पर पाठक विशेष बल दें क्योंकि ग्रहों के शुभाशुभ का फल तदनुसार इन समयावधियों में ही होता है। यदि रत्न ठीक-ठीक चयन किया गया है तो अशुभ दशा-अन्तर्दशा भी कुछ न कुछ शुभ फल दिखाएगी। शुभ प्रभाव न भी हो तो भी अशुभता की दर अवश्य न्यून होगी।

इस विधि में एक बात यह विशेष रूप से ध्यान में रखें कि यहाँ चयन

किया गया रत्न स्थाई नहीं होगा। दशा-अन्तर्दशा के अनुसार उसमें पुन- पुनः परिवर्तन करते रहना पड़ेगा।

बात आती है एक विपरीत स्कूल की जो यह मानता है कि पीड़ित ग्रह के अनुसार रत्न चयन करना अधिक प्रभावशाली होता है। शुभ ग्रह तो शुभता देगा ही, यदि अशुभ ग्रह के लिए कोई उपाय-उपक्रम कर लिया जाए तो वह बलवान हो जाता है तदनुसार शुभ-शुभ फल करने लगता है। इस विचारधारा के अनुसार उपरोक्त वर्णित चारों घटकों को अशुभता की दृष्टि से लें अर्थात् दशा-अन्तर्दशानाथ परस्पर शत्रु हों, शत्रु क्षेत्री हों, तथा एक-दूसरे से छठे-आठवें भाव में स्थित हों।

मैं दशा-अन्तर्दशा से रत्न चयन करने के लिए इस मत से सहमत नहीं हूँ। मैं यह मानता हूँ कि सत्पुरुष अथवा किसी संतादि का सानिध्य बुरे से बुरे व्यक्ति को भी संकटों से राहत दिलवा देता है। ग्रहों को भी संत की तरह मानें यदि शुभ हैं तो नीचस्थ अथवा शत्रु श्रेणी ग्रह को भी बल देंगे। यदि वह और भी अधिक बलवान बना दिए जाएँ तो प्रभाव भी अधिक दिखाने लगेंगे।

दुष्ट प्रकृति ग्रहों की प्रवृत्ति जल्दी नहीं बदली जा सकती। बिच्छु डंक मारेगा ही, आप लाख उसे पुचकार लें। कुत्ते की दुम जीवन भर टेढ़ी ही रहेगी, उसे सीधे करने का लाख उपक्रम भले ही कर लें।

मैं जो लिख रहा हूँ वह अध्ययन-मनन के साथ-साथ मेरे व्यवहारिक रूप से किए गए प्रयोगों तथा बुद्धिजीवियों से परस्पर तर्क-कुतर्क का सार संक्षेप है। जो कुछ भी लिख रहा हूँ उसे इति न माने उसे श्रीगणेश मानकर चलें। यह भावना सतत् बनाए रखें कि शोधकार्य का यह तो अभी प्रथम चरण भी नहीं है।

अष्टक वर्ग एवं रत्न चयन

रत्न की पुस्तक को मैंने ऐसा बना दिया है कि जितना भी आप विषय वस्तु का मन्थन करेंगे उतने ही अधिक आपको हीरे-मोती सरीखे रत्न कलेवर के रूप में मिलते जाएँगे। व्यवसायिकता से दूर हटकर शोध के रूप में एक बार आप इस पुस्तक को उठाकर देखें, अपने लिए तो जो कुछ मिलेगा, सो मिलेगा ही, आपका क्रम-उपक्रम इस विषय में आगे के खोज के लिए भी मार्ग प्रशस्त करता जाएगा।

ज्योतिषशास्त्र में अष्टक वर्ग व्यक्ति के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भविष्यवाणी करते समय जो व्यक्ति इसका सहारा लेते हैं उनके सटीक भविष्यवाणी करने की सम्भावना भी बढ़ जाती है। अपने शोधकार्य में मैंने पाया कि किसी ग्रह के शुभ फल की सम्भावना उस समय अधिक बढ़ जाती है जब वह अष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु वाले भावों से गोचरवश भ्रमण करता है। यदि व्यक्ति उस समय सौभाग्य से उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न अथवा उपरत्न आदि भी धारण किए होता है तो वह शुभ फल देने में ठीक एक उत्प्रेरक की तरह कार्य करता है।

अष्टक वर्ग प्राप्त करने के लिए भी आपको कोई श्रम नहीं करना है। कम्प्यूटर द्वारा लग्न, ग्रह, मैत्री, दशा आदि की तरह आप यह भी सुगमता से जुटा सकते हैं। उदाहरण के लिए रनित नामक लड़के का अष्टक वर्ग यहाँ प्रस्तुत है। रनित की मूल जन्मपत्री के अष्टक वर्ग को लेकर ग्रहों के अलग-अलग बिन्दु यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं।

एक भाव में अधिक से अधिक 8 तथा कम से कम 0 तक बिन्दु हो कते हैं। जिस भाव से ग्रह गोचरवश भ्रमण कर रहा है उसका फलाफल उस व में स्थित बिन्दुओं पर पड़ता है। यदि उस भाव से 4 से कम बिन्दु हैं तो गाम अशुभ और 4 से अधिक है तो प्रभाव क्रमशः शुभ होता जाएगा।

पाठकगण रनित की कुण्डली में ध्यान दें। मैंने उसे माणिक्य तथा पन्ना रत्न 1998-99 में धारण करवाया था। 15 मार्च 1999 को सूर्य गोचरवश मीन राशि में भ्रमण कर रहा था। सूर्य के अष्टकवर्ग में मीन राशि के स्थान पर 7 बिन्दु इस बात का कारण बने कि जीवन को गम्भीरता से जीने की भावना इस लड़के में बलवती होने लगी। जो लड़का सारे-सारे दिन सोता रहता था, प्रातः इसलिए उठने लगा कि उसे अपने गिरते हुए स्वास्थ्य की चिन्ता सताने लगी थी। परिणाम यह हुआ कि यहाँ से उसका स्वास्थ्य पुनः ठीक होने लगा। 27 फरवरी 1999 से बुध ने मीन राशि में प्रवेश किया था, यहाँ से वह समय प्रारम्भ हुआ था जब उसका दुष्ट तथा आपराधिक प्रवृत्ति लड़कों का साथ छूटना प्रारम्भ हो गया था। लगभग यहाँ से ही उसे ऐसे लड़कों का साथ मिलने लगा था जिनके मूलतः दो उद्देश्य थे स्वस्थ शरीर और ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि।

कण्ठमाला अर्थात गलकण्ठ

यदि इन अथवा गले के किसी अन्य रोग से पीड़ित हैं तो दोनों पैर के अंगूठों में तांबे तथा जस्ते के तार से बने हुए छल्ले पहन लें। छल्ले ऐसे बनवाएँ कि वह अंगूठों के मूलभाग को कसकर दबाए रहें।

ज्योतिष के छः महादोष एवं रत्न चयन

ज्योतिष योग तथा अरिष्ट से बना है। ग्रह-नक्षत्रों के विभिन्न संयोग यदि शुभ प्रदान करने वाले हैं तो योग कहलाते हैं। यह संयोग यदि अशुभ प्रदान करने वाले हैं तो अरिष्ट कहलाते हैं। सारा ज्योतिष देखा जाए तो योग और अरिष्ट के बीच समाहित है अर्थात् शुभ और अशुभ। शुभ सबको अच्छा लगता है तथा अशुभ से कोई भी साक्षात्कार नहीं करना चाहता। अशुभ से बचने के लिए व्यक्ति तरह-तरह के क्रम-उपक्रम से सदैव जुड़ा रहना चाहता है। ज्योतिष क्षेत्र के व्यवसायी वर्ग व्यक्ति की इस कमी का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं और जन्मपत्री में भाँति-भाँति के अरिष्टकारी योग निकालकर व्यक्ति को पहले तो अरिष्ट से भयभीत करते हैं फिर निदान सुझाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। आज के परिवेश की बस यही ज्योतिषी रह गयी है। तन्त्र-ज्योतिष आदि क्षेत्र में मैं लम्बे समय से जुड़ा हूँ। मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने कभी किसी को अरिष्ट से डराकर अपना स्वार्थ सिद्ध किया हो।

अरिष्टकारी योगों में सर्वाधिक चर्चित छः दोष मैं नित्यप्रायः देखता-पढ़ता रहा हूँ। अपने मिलने वाले जिज्ञासुओं से जब चर्चा होती है तो वह अधिकांशतः इन अरिष्ट से बचने का मार्ग अवश्य पूछते हैं। मुझे उनकी अज्ञानता पर दुःख होता है और हँसी भी आती है। पता नहीं भय के बीज उनके मन में कैसे बो दिए जाते हैं? रत्नादि के शोध विद्यार्थियों के लिए मैंने दीर्घकालीन अध्ययन, मनन तथा व्यवहारपरक जो कुछ भी किया है, उसका सार संक्षेप मैं लिख रहा हूँ। मेरे इस शोध कार्य को व्यवसायिकता से दूर हटकर आगे बढ़ाएँ।

1. विनाशकारी मूल संज्ञक नक्षत्र एवं रत्न चयन

सृष्टि त्रिआयामी तथा त्रिगुणात्मक है। इसमें 27 नक्षत्र हैं। यदि इनको तीन समान भागों में बाँटा जाए तो[1] 1 से 9[2] 10 से 18 तथा[3] 19 से 27 वर्ग बनते हैं। इन तीनों वर्गों की सन्धि वाले नक्षत्रों को मूलसंज्ञक नक्षत्र कहते हैं। यह नक्षत्र हैं—पहला अश्विनी, नवां आश्लेषा, दसवाँ मघा, अट्ठारहवाँ

ज्येष्ठा, उन्नीसवाँ मूल तथा सत्ताइसवाँ रेवती।

यह तीन नक्षत्र युग्म ऐसे हैं जहाँ दो संलग्न नक्षत्र अलग-अलग राशियों में हैं, किसी का कोई चरण दूसरी राशि में नहीं आता। इसीलिए इन्हें नक्षत्र चक्र के 'मूल' अर्थात प्रधान नक्षत्र माना जाता है। ऐसे नक्षत्रों को अशुभ मानने की परम्परा जाने कब, कहाँ और कैसे चल पड़ी यह तो बस भगवान ही जानें।

तथ्य वस्तुत: यह है कि नक्षत्रों का सम्बन्ध व्यक्ति की प्रवृत्तियों से है। नक्षत्र चक्र के तीन मूल बिन्दुओं पर स्थित नक्षत्रों में व्यक्ति की 'मूल' वृत्तियों को तीव्रता से उछालने की विशेष क्षमता है। मूल वृत्तियों में शुभ तथा अशुभ दोनों ही बात हो सकती हैं। सम्भवत: इसीलिए विचारकों ने हीन वृत्तियों को निराकरण करने के उपक्रम पहले से ही कर लेने पर बल दिया हो।

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण हो सकते हैं। जिस चरण में आत्मा का जन्म होता है, शरीर वैसे ही शुभाशुभ करता है। यह फल निम्न प्रकार से है।

मूल नक्षत्र /चरण	अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
पहला	पितृ भय	सुख-शान्ति	मातृ हानि	अग्रज हानि	पितृ भय	मौत
दूसरा	सुख	धन हानि	पितृ भय	अनुज हानि	मातृ कष्ट	उन्नति
तीसरा	उन्नति	मातृ हानि	सुख	मातृ हानि	धन हानि	धन वृद्धि
चौथा	मान	पितृ भय	धन लाभ	पितृ हानि	सुख-शान्ति	कष्ट

यदि आप अन्य की तरह मूल नक्षत्र से भयभीत हैं तो रत्न अथवा उनके उपरत्न, वनस्पति, रंग आदि से भी उपाय करके देखें।

सर्वप्रथम आप शुद्ध जन्मपत्री से अपना जन्म नक्षत्र, उसका चरण तथा लग्न जान लें। माना आपका जन्म रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। यह उपरोक्त सारिणी में दर्शाता है कि आपको मान-सम्मान मिलना है। यह इंगित करता है कि आपको अपनी जन्म कुण्डली के दशम भाव के अनुसार शुभ फल मिलना है। इस प्रकार यदि आप अपनी जन्म कुण्डली में दसवें भाव की राशि के अनुरूप रत्न धारण कर लेते हैं तो आपको शुभ फल अवश्य मिलेगा। माना आपकी लग्न मकर है। इसके अनुसार आपके दसवें भाव का स्वामी हुआ शुक्र। शुक्र ग्रह के अनुसार यदि आप हीरा अथवा उसका उपरत्न धारण कर लेते हैं तो आपको लाभ मिलेगा ही मिलेगा।

माना आपका जन्म मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है तो यह दर्शाता है कि आप धन सम्बन्धी विषयों में भाग्यशाली रहेंगे। जन्मपत्री में दूसरे भाव से धन सम्बन्धी पहलुओं पर विचार किया जाता है। यदि आपका जन्म (माना) सिंह लग्न में हुआ है तो दूसरे भाव में कन्या राशि होगी जिसका स्वामी ग्रह बुध है। इस स्थिति में बुध का रत्न पन्ना आपको विशेष रूप से लाभ देगा।

एक अन्य उदाहरण देखें, आपको विधि और भी सरल लगने लगेगी। माना आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। इसका अर्थ हुआ कि आप सुखी हैं। यदि आपका जन्म (माना) मेष लग्न में हुआ है तो सुख के कारक भाव अर्थात चतुर्थ में कर्क राशि होगी। इस राशि का रत्न है मोती। आप यदि इस स्थिति में मोती धारण करते हैं तो वह आपको सुख तथा शान्ति देने वाला सिद्ध होगा।

मूल संज्ञक नक्षत्र यदि शुभ फल देने वाले हैं तब रत्न का चयन करना सरल है। कठिनाई उस स्थिति में आती है जब यह अरिष्टकारी बन जाएँ। आप यदि थोड़ा-सा अभ्यास कर लेते हैं तो यह भी पूर्व की भाँति सरल प्रतीत होने लगेगी। कुछ उदाहरणों से अपनी बात स्पष्ट करता हूँ।

माना आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। यह इंगित करता है कि आप अपनी माता पर भारी हैं। आपके जन्म लेने से वह कष्टों में रहती होगीं। जन्मपत्री में माता का विचार चतुर्थ भाव से किया जाता है। ध्यान रखें यहाँ पर चतुर्थ भाव में स्थित राशि का रत्न धारण नहीं करना है। अरिष्टकारी परिस्थिति में आप देखें कि जिस भाव से यह दोष सम्बन्धित है उसमें स्थित राशि की मित्र राशियाँ कौन-कौन सी हैं। वह राशि कारकराशियों से यदि षडाष्टक दोष बनाती हैं तथा त्रिक्भावों अर्थात 6, 8 अथवा 12वें भाव में स्थित हैं तो उन्हें छोड़ दें। अन्य मित्र राशियों के स्वामी ग्रहों से सम्बन्धित रत्न-उपरत्न आपको मूल नक्षत्र जनित दोष से मुक्ति दिलवाने में लाभदायक सिद्ध होंगे। साधारण परिस्थिति में शुभ राशि विचार नैसर्गिक मित्रचक्र से कर सकते हैं परन्तु यदि रत्न चयन के लिए आप गम्भीरता से विचार कर रहे हैं तो मैत्री के लिए पंचधा मैत्रीचक्र से अवश्य विचार करें। माना इस उदाहरण में जन्म मेष राशि में हुआ है। चतुर्थ भाव में यहाँ कर्क राशि होगी जिसका स्वामी ग्रह है

चन्द्र और रत्न है मोती। इस स्थिति में मोती धारण नहीं करना है। चन्द्र के नैसर्गिक मित्र ग्रह हैं, सूर्य, मंगल तथा गुरु। इन ग्रहों की राशियाँ क्रमश हैं— सिंह, मेष तथा वृश्चिक और धनु तथा मीन। धनु राशि कर्क राशि से छठे भाव में स्थित है अर्थात षडाष्टक दोष बना रही है। इसलिए यहाँ इसके स्वामी ग्रह गुरु का रत्न पुखराज धारण नहीं करना है। इस उदाहरण में माणिक्य अथवा मूंगा रत्न लाभदायक सिद्ध होगा।

2. मंगल दोष का हौवा एवं रत्न चयन

मैंने अनेक कट्टरपंथी आर्यसमाजी तथा ज्योतिष आदि में विश्वास न करने वालों को भी मात्र इस एक योग से भयभीत होते देखा है। श्री सत्यप्रकाश गुप्ता हमारे क्षेत्र के आर्यसमाज अध्यक्ष हैं। जीवनभर ज्योतिष की आलोचना करने वाले एक दिन अपनी बेटी की पत्री कहीं से बनवाकर मेरे पास आए और कहने लगे, वैसे तो हम ज्योतिष-वोतिष में विश्वास नहीं करते बस आप हमें यह बता दें कि लड़की कहीं मंगली तो नहीं है। मैं मुस्कराया, आप तो यह सब मानते नहीं और भाई मेरे जिस ग्रह का नाम मंगल है वह अमंगल कैसे कर सकता है।

क्या है यह मंगल दोष का हौवा जो ज्योतिष में विश्वास न करने वाले को भी भयभीत किए हुए है? लड़के अथवा लड़की की जन्म कुण्डली में मंगल ग्रह जब 1, 4, 7, 8, तथा 12वें भाव में स्थित होता है तो वह मंगलदोष कहलाता है। ऐसे में एक-दूसरे के जीवन में अनिष्टकारी परिणाम होते हैं। लग्न के अतिरिक्त चन्द्र तथा सूर्य लग्न से भी मंगल को इन भावों में स्थिति मंगलीदोष का कारण बनती है। दक्षिण भारत में मंगल की द्वितीय भावगत स्थिति को भी मंगलीदोष का कारण मानते हैं तथा शुक्र लग्न से भी इन भावों में मंगल की स्थिति को गम्भीरता से विचारा जाता है।

इतने सारे संयोगों को यदि सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए तो इस गणित से 70 प्रतिशत से अधिक लड़के-लड़कियाँ मंगली होते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि मंगलीदोष होने से दाम्पत्य जीवन अनिष्टकारी होगा ही होगा। यह मात्रएक हौवा बना दिया गया है। मंगलदोष होता अवश्य है परन्तु यह विषय विद्वान ज्योतिष द्वारा ही गणना किया जा सकता है क्योंकि

चन्द्र और रत्न है मोती। इस स्थिति में मोती धारण नहीं करना है। चन्द्र के नैसर्गिक मित्र ग्रह हैं, सूर्य, मंगल तथा गुरु। इन ग्रहों की राशियाँ क्रमश हैं— सिंह, मेष तथा वृश्चिक और धनु तथा मीन। धनु राशि कर्क राशि से छठे भाव में स्थित है अर्थात षडाष्टक दोष बना रही है। इसलिए यहाँ इसके स्वामी ग्रह गुरु का रत्न पुखराज धारण नहीं करना है। इस उदाहरण में माणिक्य अथवा मूंगा रत्न लाभदायक सिद्ध होगा।

2. मंगल दोष का हौवा एवं रत्न चयन

मैंने अनेक कट्टरपंथी आर्यसमाजी तथा ज्योतिष आदि में विश्वास न करने वालों को भी मात्र इस एक योग से भयभीत होते देखा है। श्री सत्यप्रकाश गुप्ता हमारे क्षेत्र के आर्यसमाज अध्यक्ष हैं। जीवनभर ज्योतिष की आलोचना करने वाले एक दिन अपनी बेटी की पत्री कहीं से बनवाकर मेरे पास आए और कहने लगे, वैसे तो हम ज्योतिष-वोतिष में विश्वास नहीं करते बस आप हमें यह बता दें कि लड़की कहीं मंगली तो नहीं है। मैं मुस्कराया, आप तो यह सब मानते नहीं और भाई मेरे जिस ग्रह का नाम मंगल है वह अमंगल कैसे कर सकता है।

क्या है यह मंगल दोष का हौवा जो ज्योतिष में विश्वास न करने वाले को भी भयभीत किए हुए है? लड़के अथवा लड़की की जन्म कुण्डली में मंगल ग्रह जब 1, 4, 7, 8, तथा 12वें भाव में स्थित होता है तो वह मंगलदोष कहलाता है। ऐसे में एक-दूसरे के जीवन में अनिष्टकारी परिणाम होते हैं। लग्न के अतिरिक्त चन्द्र तथा सूर्य लग्न से भी मंगल को इन भावों में स्थिति मंगलीदोष का कारण बनती है। दक्षिण भारत में मंगल की द्वितीय भावगत स्थिति को भी मंगलीदोष का कारण मानते हैं तथा शुक्र लग्न से भी इन भावों में मंगल की स्थिति को गम्भीरता से विचारा जाता है।

इतने सारे संयोगों को यदि सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए तो इस गणित से 70 प्रतिशत से अधिक लड़के-लड़कियाँ मंगली होते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि मंगलीदोष होने से दाम्पत्य जीवन अनिष्टकारी होगा ही होगा। यह मात्रएक हौवा बना दिया गया है। मंगलदोष होता अवश्य है परन्तु यह विषय विद्वान ज्योतिष द्वारा ही गणना किया जा सकता है क्योंकि

चन्द्र और रत्न है मोती। इस स्थिति में मोती धारण नहीं करना है। चन्द्र के नैसर्गिक मित्र ग्रह हैं, सूर्य, मंगल तथा गुरु। इन ग्रहों की राशियाँ क्रमश हैं— सिंह, मेष तथा वृश्चिक और धनु तथा मीन। धनु राशि कर्क राशि से छठे भाव में स्थित है अर्थात षडाष्टक दोष बना रही है। इसलिए यहाँ इसके स्वामी ग्रह गुरु का रत्न पुखराज धारण नहीं करना है। इस उदाहरण में माणिक्य अथवा मूंगा रत्न लाभदायक सिद्ध होगा।

2. मंगल दोष का हौवा एवं रत्न चयन

मैंने अनेक कट्टरपंथी आर्यसमाजी तथा ज्योतिष आदि में विश्वास न करने वालों को भी मात्र इस एक योग से भयभीत होते देखा है। श्री सत्यप्रकाश गुप्ता हमारे क्षेत्र के आर्यसमाज अध्यक्ष हैं। जीवनभर ज्योतिष की आलोचना करने वाले एक दिन अपनी बेटी की पत्री कहीं से बनवाकर मेरे पास आए और कहने लगे, वैसे तो हम ज्योतिष-वोतिष में विश्वास नहीं करते बस आप हमें यह बता दें कि लड़की कहीं मंगली तो नहीं है। मैं मुस्कराया, आप तो यह सब मानते नहीं और भाई मेरे जिस ग्रह का नाम मंगल है वह अमंगल कैसे कर सकता है।

क्या है यह मंगल दोष का हौवा जो ज्योतिष में विश्वास न करने वाले को भी भयभीत किए हुए है? लड़के अथवा लड़की की जन्म कुण्डली में मंगल ग्रह जब 1, 4, 7, 8, तथा 12वें भाव में स्थित होता है तो वह मंगलदोष कहलाता है। ऐसे में एक-दूसरे के जीवन में अनिष्टकारी परिणाम होते हैं। लग्न के अतिरिक्त चन्द्र तथा सूर्य लग्न से भी मंगल को इन भावों में स्थिति मंगलीदोष का कारण बनती है। दक्षिण भारत में मंगल की द्वितीय भावगत स्थिति को भी मंगलीदोष का कारण मानते हैं तथा शुक्र लग्न से भी इन भावों में मंगल की स्थिति को गम्भीरता से विचारा जाता है।

इतने सारे संयोगों को यदि सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए तो इस गणित से 70 प्रतिशत से अधिक लड़के-लड़कियाँ मंगली होते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि मंगलीदोष होने से दाम्पत्य जीवन अनिष्टकारी होगा ही होगा। यह मात्रएक हौवा बना दिया गया है। मंगलदोष होता अवश्य है परन्तु यह विषय विद्वान ज्योतिष द्वारा ही गणना किया जा सकता है क्योंकि

जितनी संख्या में मंगलीदोष होते हैं उतनी ही उस दोष के परिहार को सम्भावनाएँ बनती हैं। लड़के-लड़की मंगल मंगलप्रदा अर्थात मंगली योग मंगल प्रदाता होते हैं। सर्वप्रथम तो मंगलदोष के हौवे को अपने मन से निकाल दें, इससे भयभीत न हों।

यदि वास्तव में मंगलीदोष जन्मपत्री में बनता है तो अपने अनुरूप रत्न चयन करें। यह उपक्रम भी मंगल दोष के निवारण में उपयोगी सिद्ध होगा।

अधिकांशतः देखा जाता है कि मंगलदोष के निदानस्वरूप पुखराज अथवा मूंगा धारण करवाया जाता है। यह चुनाव प्रत्येक दशा में उपयुक्त नहीं है, यह ध्यान रखें। यदि जन्मपत्री में मंगलीदोष बनता है तथा गुरु से मंगल या तो युति बनाता है अथवा उससे दृष्ट है तब तो पुखराज इस दोष निवारण में उपयोगी होगा। गुरु यदि मंगल से षडाष्टक दोष बनाता है अथवा ऐसी राशि में स्थित है जो पंचधामैत्री से मंगल का शत्रु है तब पुखराज पहनाना उचित नहीं है। इसी प्रकार मात्र मंगलदोष देखकर मूंगा धारण करवा देना भी सर्वथा अनुचित है।

गुरु की तरह मंगल का राहु से युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध बनता है और राहु मंगल की किसी मित्र राशि में स्थित है तो गोमेद अथवा उस ग्रह का रत्न धारण करवाया जा सकता है जिस ग्रह के नक्षत्र में राहु हो। दूसरे राहु जिस ग्रह की राशि में हो उस राशि के स्वामी ग्रह से सम्बन्धित रत्न भी धारण करवाया जा सकता है। तीसरे राहु के साथ जितने ग्रह स्थित हों उनमें से जो मंगल का मित्र ग्रह हो तो उस ग्रह का रत्न भी मंगलदोष के निवारण हेतु धारण करवाया जा सकता है। हर पल प्रयास यह रखना है कि मित्र राशि पीड़ित ग्रह से षडाष्टक दोष न बनाती हो। यदि राशि से सम्बन्धित ग्रह का भी इस दोष में ध्यान रखा जाता है तो यह सर्वाधिक प्रभावशाली चयन सिद्ध होगा।

मंगल का राहु अथवा गुरु से सम्बन्ध न हो और उसकी स्थिति मंगल दोष बना रही हो तो मंगल की राशि की मित्र राशियाँ देखें। यह कुण्डली में मंगल की स्थिति से छठे आठवें नहीं होनी चाहिए। इन राशियों के स्वामी ग्रह से सम्बन्धित रत्न मंगलदोष का निवारण करेंगे। पूर्व की भाँति यदि यह भी

ध्यान रखा जाए कि सम्बन्धित ग्रह भी मंगल से षडाष्टक दोष न बना रहे हों तो आपका चयन सर्वथा उचित होगा।

उदाहरण के लिए कुछ जन्म पत्रियों की सहायता भी लेकर अपनी बात स्पष्ट करता हूँ तो यह विधि और भी अधिक सरल हो जाएगी।

1. तुला लग्न की कुण्डली में मंगल चौथे भाव में स्थित है तथा गुरु की सप्तम दृष्टि से दृष्ट है। यहाँ पुखराज प्रयोग करवाना शुभ रहेगा।

2. तुला लग्न की कुण्डली में मंगल आठवें भाव में मंगलीदोष का कारण बन रहा है। परन्तु पाठक ध्यान दें कि गुरु की राशि धनु मंगल से अष्टम भाव में षडाष्टक दोष का कारण बन रही है इसलिए यहाँ पुखराज धारण करवाना उचित नहीं है।

3. मेष लग्न की एक कुण्डली में अष्टम भावगत मंगल यहाँ मंगलीदोष बना रहा है। मंगल वृश्चिक राशि में स्थित है। मंगल से छठी तथा आठवीं राशियां है क्रमशः मिथुन तथा मेष। यहाँ पन्ना अथवा मूंगा रत्न धारण करवाना सर्वथा अनुचित होगा। वृश्चिक राशि की मित्र राशियाँ हैं कर्क, सिंह तथा धनु। इन राशियों में से सिंह राशि का रत्न माणिक्य पहनाना ही यहाँ उचित है। कर्क तथा धनु राशियों के रत्न को यहाँ इसलिए नहीं चुना गया क्योंकि इनके स्वामी ग्रह चन्द्र तथा गुरु मंगल ग्रह से क्रमशः छठे तथा आठवें भाव में स्थित हैं। इन उदाहरणों में मैंने ग्रहों की मित्रता के लिए केवल नैसर्गिक मैत्री की ही सहायता ली है।

4. पाठकों के लिए एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसमें सूक्ष्मता का भी ध्यान रखा गया है इसीलिए यहाँ मैत्री के लिए पंचधा मैत्री की सहायता भी ली गयी है। मोना नाम की एक लड़की 15 फरवरी 1975 को रुड़की में 13 बजकर 3 मिनट पर उत्पन्न हुई। इसका जन्मांक इस प्रकार से सुनिश्चित होता है।

वृष लग्न की कुण्डली में आठवें भाव का मंगल मंगलदोष बना रहा है। पंचधा मैत्री चक्र से मंगल के मित्र ग्रह हैं सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र। मंगल से चन्द्र की राशि आठवीं होती है इसलिए मोती रत्न यहाँ छोड़ना उचित है। शुक्र ग्रह की राशि वृष मंगल से छठे भाव में है

इसलिए हीरा भी इन्हें शुभ सिद्ध नहीं होगा। जब यह पहली बार मेरे पास आयी थीं तो उस समय इनके पतिदेव ने इनको मानसिक रूप से प्रताड़ित करके छोड़ रखा था। उस समय मैंने इनको हीरे के सब गहने उतरवा दिए थे और इन्हें सलाह दी थी कि पुखराज तथा माणिक्य एक ही अँगूठी दाएँ हाथ की अनामिका उँगली में धारण करें। इस संयोग का इनको अत्यधिक लाभ पहुँचा था। पति ने इन्हें पुनः स्वीकार कर लिया था। आज यह सुखद गृहस्थजीवन जी रही हैं।

3. काल सर्पदोष से बाधित उन्नति एवं रत्न चयन

तथाकथित यह दोष जन्मकुण्डली में तब बनता है जब राहु तथा केतु के मध्य सातों ग्रह आ जाते हैं। यह दोष जिसकी जन्मपत्री में होता है उसकी उन्नति सदैव बाधित रहती है। लाख प्रयास करने के बाद भी सफलता उसे जल्दी नहीं मिल पाती। जीवन की दौड़ में कालसर्प दोष से पीड़ित व्यक्ति सर्वथा पीछे रह जाता है, ऐसा ज्योतिष मनीषियों का मानना है। यह दोष किस बौद्धिक वर्ग की उपज है, यह कहना कठिन है। ज्योतिष के प्रसिद्ध अनेक मूल ग्रन्थों में इसका कहीं भी विवरण नहीं मिलता है। यह अलग विषय है, जो मैं अपने अन्य साहित्य में लिख रहा हूँ।

मूलतः बारह प्रकार से कालसर्प दोष व्यक्ति की जन्मपत्रिकाओं में बनते हैं। लग्न में राहु तथा सप्तम में केतु (स्वभाविक है) हों तथा अन्य समस्त ग्रह या तो बाएँ स्थित हों अथवा दाएँ तो यह कालसर्प दोष का एक विकल्प है। इसी प्रकार राहु क्रमशः दूसरे, तीसरे अथवा सातवें भाव में हो और केतु क्रमशः आठवें, नवें अथवा लग्न में हो और अन्य सातों ग्रह राहु, केतु के इस अर्धगोलाकार भचक्र से बाएँ अथवा दाएँ स्थित हों तो यह अन्य उदाहरण है कालसर्प दोष के। इन स्थितियों में व्यक्ति पर पड़ने वाला सुप्रभाव अथवा दुष्प्रभाव क्या हो सकता है, यह अलग विषय है। हाँ इनसे जनित दुष्प्रभाव के निदानस्वरूप रत्नों की सहायता से हम शुभ की अनुभूति अवश्य कर सकते हैं।

जन्मपत्री में देखें कि राहु किस राशि में स्थित है। पंचधा मैत्रीचक्र से उस राशि के स्वामी ग्रह के मित्र, अधिमित्र ग्रह चुन लें। यदि वह ग्रह अथवा उनकी राशि राहु की राशि से अर्थात् जिस राशि में राहु है, छठे अथवा आठवें भाव में स्थित न हो तो आप उस ग्रह के रत्न कालसर्प दोष के निदान हेतु चयन

कर सकते हैं। कालसर्प दोष निवारण के लिए रनित की पत्री एक अच्छा उदाहरण है। मैंने इसको पन्ना तथा माणिक रत्न पहनने का सुझाव दिया था। शतरंज की भावी चालों की तरह उस समय रत्न चुनते समय मैंने इस पहलू पर भी अच्छी तरह विचार-मनन कर लिया था। पाठक देखें कि राहु कन्या अर्थात बुध की राशि में बैठकर कालसर्प दोष बना रहा है। राहु का रत्न गोमेद भी यहाँ इस दोष के निदान हेतु धारण करवाया जा सकता था परन्तु उक्त दो रत्न क्यों चुने गए पाठक इसका विवेचनात्मक पहलू देखें—

कन्या राशि के स्वामी ग्रह बुध के पंचधामैत्री के आधार पर सूर्य, शुक्र, मंगल, शनि तथा राहु मित्र हैं। शनि और मंगल को सीधा-सीधा इसलिए छोड़ दिया गया था कि वह कन्या राशि से षडाष्टक दोष बना रहे थे। शुक्र मंगल के नक्षत्र में था इसलिए पहले वह मंगल का प्रभाव देता। मंगल त्याज्य था ही इसलिए शुक्र का रत्न भी यहाँ कार्य नहीं करता। बुध ग्रह अपने ही नक्षत्र में स्थित था। कृष्णामूर्ति पद्धति के अनुसार वह ग्रह अधिक प्रबल हो जाता है जो अपने ही नक्षत्र में होता है। राहु भी बुध अधिष्ठित राशि का स्वामी है, इस दृष्टिकोण से भी बुध शुभ रहा। साथ में सूर्य के रत्न माणिक्य को इसलिए भी चुना गया कि वह लग्नेश था।

4. नाड़ी दोष और रत्न चयन

वर-कन्या की जन्मपत्रियों को विवाह हेतु मिलाना केवल एक तथाकथित जन्मपत्रिका मेलापक परम्परा का निर्वाह करना नहीं है। इसका मूल उद्देश्य है भावी दम्पत्ति के गुण, स्वभाव, आचार-व्यवहार, प्रजनन शक्ति, विद्या, आर्थिक दशा मिलान करना जिससे कि दोनों का भावी जीवन सुखमय हो। इस गुण मिलान पद्धति में निम्न बातें होती हैं—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, गण मैत्री, भकूट तथा तथाकथित महादोष नाड़ी दोष। क्रम में एक-एक अधिक गुण माने जाते हैं अर्थात वर्ण का 1, वश्य का 2, तारा का 3, योनि का 4, ग्रह मैत्री का 5, गण मैत्री का 6, भकूट का 7 तथा नाड़ी का 8। इस प्रकार कुल 36 गुण होते हैं। इसमें कम से कम 18 गुण मिलने पर विवाह किया जा सकता है परन्तु नाड़ी और भकूट गुण अवश्य होने चाहिए। इन गुण के बिना 18 गुणों में विवाह मंगलकारी नहीं माना जाता है। यदि वर और वधु की नाड़ी एक होती

है तो दोनों के लिए शुभ नहीं होता है, ऐसी ज्योतिष की मान्यता है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि आदि, अन्त्य तथा मध्य तीन प्रकार की नाड़ियों में अन्तिम नाड़ी का एक होना दोनों की मृत्यु तक का कारण बनता है। इसीलिए नाड़ी का विवाह मेलापक सारिणी में न मिलना लोगों को भयभीत किए हुए है। यदि विवाह हो गया है और दोनों की नाड़ी एक है और आप इससे भयभीत हैं तो रत्नों का प्रयोग करके अपने भय को दूर कर सकते हैं। वैसे बारम्बार मैं यही परामर्श देता हूँ कि इस प्रकार भयभीत नहीं होना चाहिए। ज्योतिष शास्त्र एक सूचकमात्र है, फल तो अन्ततः ईश्वरीय देन है। हमारे हाथ में तो कुछ है ही नहीं। हाँ हम पुरुषार्थी अवश्य बन सकते हैं। हमारे क्रम-उपक्रम भी, यदि वह उचित हैं, इसी पुरुषार्थ का एक भाग हैं।

लड़का और लड़की यदि अश्विनी, आद्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों में से किसी एक में जन्म लेते हैं तो यह आदि नाड़ी कहलाती है। भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद में से किसी एक में दोनों लड़का-लड़की जन्म लेते हैं तो यह मध्य नाड़ी है। कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण अथवा रेवती में से किसी एक में जन्म लेते हैं तो यह अन्त्य नाड़ी होती है।

लड़के-लड़की दोनों का जन्म यदि एक नक्षत्र में होता है, परन्तु उनके चरण भिन्न हैं अर्थात् लड़का माना रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुआ है और लड़की तीसरे चरण में तब यहाँ नाड़ी दोष नहीं होगा तथा इस प्रयोजन हेतु रत्न धारण करवाने की भी आवश्यकता नहीं है। परन्तु यदि लड़का-लड़की एक नक्षत्र के एक ही चरण में जन्मे हैं तो यह नाड़ी दोष का कारण है, यहाँ आप निम्न प्रकार से रत्न प्रयोग करवा सकते हैं, यह उपक्रम नाड़ी दोष निदान में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है, यह मेरा अनुभूत है।

दोनों के नक्षत्र स्वामी ग्रह की बलाबल स्थिति क्या है। यहाँ तीन विकल्प हो सकते हैं।

1. दोनों ग्रह बलवान हों।
2. दोनों ग्रह बलहीन हों।

3. एक बलवान हो तथा दूसरा बलहीन हो।

यदि दोनों ग्रह बलवान हैं तो आप इस ग्रह से सम्बन्धित रत्न, उपरत्न अथवा रत्न दोनों को प्रयोग करवा सकते हैं। माना दोनों का जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। ज्येष्ठा का स्वामी ग्रह है बुध। इसलिए यहाँ लड़का-लड़की दोनों को आप पन्ना अथवा उसका कोई उपरत्न धारण करवा सकते हैं।

यदि नक्षत्र स्वामी ग्रह लड़के-लड़की दोनों की जन्मपत्री में क्षीण हैं तो दोनों की जन्मपत्रिका में पंचधामैत्री से उन ग्रहों के मित्र तथा अधिमित्र ग्रह देख लें। दोनों में से जिसके भी वह ग्रह नक्षत्र स्वामी ग्रह से छठे अथवा आठवें भाव में स्थित हों तो वह ग्रह छोड़ दें। शेष ग्रह के रत्न तदनुसार लड़के तथा लड़की को धारण करना दीर्घायुष्य प्रदान करने वाला तथा सुख-समृद्धि दाता सिद्ध होगा।

तीसरी स्थिति में लड़के तथा लड़की के नक्षत्र के स्वामी ग्रह जन्मपत्री में बलवान तथा बलहीन हो सकते हैं। दोनों की पत्री में जिसके ग्रह बलवान हों उनसे सम्बन्धित रत्न उसको धारण करवा सकते हैं।

दोनों में से जिसके ग्रह बलहीन हों उनके पंचधामैत्री से मित्र ग्रह देखकर यह पता कर लें कि उनमें से उसके नक्षत्र स्वामी ग्रह से वह षडाष्टक दोष तो नहीं बना रहे हैं। यदि नहीं, तो उन ग्रह के रत्न आप उसको धारण करवा सकते हैं।

5. मारकेश, मृत्युभय एवं रत्न चयन

राजा हो अथवा रंक, मृत्युभय से कोई भी अछूता नहीं है। सब इसके आगे धराशायी हैं। मृत्यु आनी है तो फिर त्रिदेव भी उसे टाल नहीं सकते। यदि इस पर विजय प्राप्त हो गयी होती तो कुबेरपति अथवा धनपति कभी मरते ही नहीं। क्या है यह भयभीत करने वाला मारकेश? ज्योतिष में वह कौन-कौन से अरिष्टकारी योग बनते हैं जो मारण करते हैं अथवा मरण तुल्य कष्ट देते हैं? यह पूर्णतया ज्योतिष शास्त्र के विषय हैं। पुस्तक का मैं यहाँ वह सब लिखकर व्यर्थ में कलेवर नहीं बढ़ाना चाहता। तथापि संक्षिप्त में यह जान लें कि मृत्यु का निर्णय करने के लिए मारक का ज्ञान करना आवश्यक है तदनुसार ही

रत्नादि चयन करना सम्भव है। ज्योतिष में लग्नेश, षष्ठेश, अष्टमेश, गुरु तथा शनि से मारकेश का विचार होता है। अष्टमेश बलवान होकर यदि 1, 4, 6, 10 अथवा 12वें भाव में हो तो मारक बन जाता है। पूर्व की भाँति ऐसे में अष्टमेश के मित्र ग्रहों को पंचधामैत्री सूची से ज्ञात कर लें। यह देख लें कि जहाँ अष्टमेश स्थित है वह ग्रह उससे षष्ठम-अष्टम भावगत न हों, न ही उनकी राशि इन भावों में पड़ती हो। उन ग्रहों के रत्न आप मारकेश के प्रभाव को कम करने के लिए धारण कर सकते हैं। यहाँ विशेष रूप से यह ध्यान रखें कि अन्य किसी विधि से यदि बलवान अष्टमेश का रत्न निकल रहा हो तो वह कदापि धारण न करें अन्यथा वह प्रबल मारकेश बन जाएगा। मारकग्रह का प्रभाव अष्टमेश ग्रह की अन्तर्दशा में प्रभावी होता है, इसलिए उस दशा में यत्न करके वह रत्न अवश्य जुटा लें।

शनि षष्ठेश तथा अष्टमेश होकर यदि लग्नेश को देखता है तो लग्नेश ही मारक हो जाता है। ऐसी स्थिति में लग्नेश को, यदि वह बली है, उसके रत्न से बलवान करना होगा। परन्तु यदि लग्नेश ऐसे में बली नहीं है तो पूर्व की भाँति उसके मित्र ग्रहों में जो बलवान ग्रह हो तथा लग्नेश से छठे-आठवें भी न हो का रत्न धारण करवाना बुद्धिमानी होगी।

पाराशर के मत से जन्मकुण्डली में द्वितीय और सप्तम भाव मारकेश हैं तथा इन दोनों के स्वामी-द्वितीयेश, सप्तमेश, द्वितीय और सप्तम में रहने वाले पापग्रह एवं द्वितीयेश और सप्तमेश के साथ रहने वाले पापग्रह मारकेश हो जाते हैं। जैसा कि पूर्व में लिखा है, पापग्रह मारकेश यदि बली है तब उनके रत्न-उपरत्न अथवा रंगादि से सर्वथा बचें। अन्यथा वह प्रबल मारकेश बन जाते हैं। यहाँ उनके मित्र ग्रहों के रत्न पूर्व की भाँति ही प्रयोग करने चाहिए। शनि ग्रह यदि मारकेश के साथ हो तो मारकेश को छोड़कर स्वयं ही मारक बन जाता है — साक्षात काल। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि मारकेश से भी दो हाथ आगे है, इसीलिए सब इससे भयभीत रहते हैं। प्रबलमारक शनि का रत्न, छल्ला, कड़ा ऐसे में कदापि प्रयोग न करें। सुरक्षा की दृष्टि से शनि के मित्र ग्रहों में से पूर्व की भाँति छाँटकर उनके रत्न, रंगादि चयन करें।

द्वादेश पापग्रह हो तो मारक बन जाता है। पापग्रह षष्ठेश हो अथवा पाप

राशि में षष्ठेश स्थित हो या पापग्रह से दृष्ट हो तो षष्ठेश की दशा मारक हो जाती है। मारकेश की दशा में षष्ठेश, अष्टमेश और द्वादशेश की अन्तर्दशा भी मारक होती है। मारकेश यदि अधिक बलवान है तो उसकी ही दशा अथवा अन्तर्दशा में मरण अथवा मरण तुल्य कष्ट होता है। राहु-केतु 1, 7, 8 अथवा 12वें भाव में हो अथवा मारकेश से 7वें भाव में हों अथवा मारकेश के साथ हो तो मारक बन जाते हैं। मकर और वृश्चिक लग्न वालों के लिए राहु मारक बन जाता है।

जहाँ ज्योतिषीय गणनाएँ आएँगी वहाँ पाठकों को असुविधा अवश्य होगी, ऐसे में योग्य ज्योतिष से भी परामर्श कर सकते हैं और मारकेश को ठीक-ठीक जानकर उसके मित्र ग्रह का रत्नादि धारण कर सकते हैं।

6. शनि का भूत और रत्न चयन

ज्योतिष ग्रन्थों में शनि की साढ़ेसाती और ढइया का अलग-अलग से वर्णन है। इसकी गणना चलित नाम से, लग्न से, चन्द्र से तथा सूर्य से की जाती है। एक व्यक्ति के जीवन में अधिक से अधिक साढ़े बाइस वर्ष साढ़ेसाती में निकल जाते हैं। कहते हैं साढ़ेसाती में जातक उन्नति नहीं कर पाता, उसे दुःख, कलह तथा बीमारी आदि निरन्तर घेरे रहते हैं।

यदि शनि उच्च का हो और उसे साढ़ेसाती प्रारम्भ हो जाए तो उसकी चहुँदिश हानि प्रारम्भ हो जाती है। सामान्यतः शनि की साढ़ेसाती का विचार जन्मपत्री में चन्द्रमा की स्थिति से किया जाता है। गोचरवश भ्रमण करता हुआ शनि जब चन्द्रमा से द्वादश भाव में प्रवेश करता है तो यह शनि की साढ़ेसाती का प्रारम्भ कहा जाने लगता है। चन्द्रमा से तीसरी राशि को जब शनि पार करता है तो साढ़ेसाती का अन्त माना जाता है। इस प्रकार एक राशि पर ढाई-ढाई वर्ष भ्रमण करता हुआ चन्द्र की राशि सहित उसके आगे और पीछे स्थित रहता है।

चन्द्रमा से चौथी तथा आठवीं राशियों में जब शनि गोचरवश ढाई-ढाई वर्ष स्थित रहता है तो यह शनि की ढइया कहलाती है। शनि के इन गोचरवश स्थित स्थानों को लोगों ने शनि का भूत, शनि का प्रकोप, दारिद्रय और आरोग्य से जोड़कर एक अज्ञात भय बैठा दिया है; यह उचित नहीं है। शनि के इन

दोषकालों में मैंने अनेक लोगों को सुख-समृद्धिवान बनते देखा है। मैं स्वयं उदाहरण हूँ। 1990 के दशक में शनि की ढइया के मध्य जो उपलब्धियाँ मुझे मिली हैं, मैं भूल नहीं सकता हूँ।

शनि के तथाकथित इन दिनों में सामान्यत: शनि का रत्न नीलम, उपरत्न अथवा लोहे का छल्ला अथवा कड़ा पहनने का चलन है। यह चयन ठीक है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिए नहीं। सदैव ध्यान रखें कि यम-नियम प्रत्येक व्यक्ति पर सटीक बैठें, यह आवश्यक नहीं है। मेरी अपनी मान्यता है कि किसी भी रूप से निदान के समय सामान्य नियमों के स्थान पर व्यक्ति विशेष के अनुरूप नियम खोज करके ही आगे बढ़ना चाहिए।

रत्न चयन की विधि मैंने यहाँ भी अन्य दोषों की तरह चुनी है। पाठक स्वयं मनन-गुनन करें कि सामान्यत: शनि का रत्न नीलम धारण करवाकर क्या वह उचित करेंगे?

अपनी फाइलों के विभिन्न विचित्र विवरणों में से बरेली में 8 नवम्बर 1945 को दिन में 12:55 पर जन्में एक सज्जन की कुण्डली उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत कर रहा हूँ।

21 अक्टूबर 1982 को तुला राशि जब गोचरवश प्रविष्ट हुआ था तो इनके लिए वह शनि की साढ़ेसाती बना रहा था। वह आज एक उच्च राज्य पत्रित अधिकारी हैं। इनके विषय में प्रचलित था कि वह हरफनमौला हैं। खेल का मैदान हो या हसीनों के बीच कोई रंगीन शाम, वह ही छाये रहते थे। गायन, चित्रकारी, लेखन, भ्रमण, अध्ययन, मनन आदि सबमें उनका नाम आता था।

जन्म विवरण

नाम	युगल
लिंग	पुर्लिङ्ग
जन्म तिथि	08-11-1945
जन्म दिन	गुरुवार
जन्म समय	12:55:00

लग्न कुण्डली

पंचधा मैत्री चक्र

ग्रह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	बुध	शनि, केतु		शुक्र, राहु
चन्द्र	सूर्य	गुरु, शुक्र	बुध, केतु	मंगल,शनि	राहु
मंगल	सूर्य, गुरु	शुक्र	चन्द्र, राहु, केतु	शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	गुरु, केतु		मंगल, शनि राहु	चन्द्र
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	शनि, राहु, केतु	बुध, शुक्र		सूर्य
शुक्र	बुध, शनि, केतु	मंगल,गुरु	चंद्र, राहु		सूर्य
शनि	शुक्र, राहु	गुरु	सूर्य, बुध		चन्द्र, मंगल, केतु
राहु	शनि	गुरु	मंगल, शुक्र बुध		सूर्य,चंद्र, केतु
केतु	शुक्र	बुध, गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल		शनि, राहु

मंगल (7 वर्ष)

21-05-1990
21-05-1997
मंगल 18-10-90
राहु 06-11-91
गुरु 12-10-92
शनि 21-11-93
बुध 18-11-94
केतु 15-04-95
शुक्र 15-06-96
सूर्य 21-10-96
चन्द्र 21-05-97

परन्तु ग्रहों के दुष्प्रभाव से जीवन के किसी भी पहलू को वह पूर्णतया नहीं छू सके तथा उनको जीवन अभावों में ही व्यतीत हुआ। अध्ययन स्वरूप उनकी पत्री का अवलोकन करें। शनि का तुला राशि में भ्रमण उनके जीवन में स्थिरता तथा गम्भीरता लाने लगा। जीवन को सफल बनाने का उन्होंने एक लक्ष्य बना लिया गुह्य विद्याओं में शोधपरक कार्य करने का। यहाँ से धन, प्रसिद्धि तथा सुख-समृद्धि इन्हें मिलने लगी।

पंचधामैत्री से शनि के मित्र ग्रह हैं शुक्र, राहु तथा गुरु। तुला राशि में शनि बलवान होता है। साढ़ेसाती प्रारम्भ होने से कुछ दिन पूर्व ही मैंने उन्हें नीलम रत्न धारण करवाया था। पुखराज उन्होंने पूर्व में ही पहन रखा था। साढ़ेसाती प्रारम्भ होते ही कुछ दिन उनके जीवन में कलह, क्लेष तथा तरह-तरह से हानियाँ प्रारम्भ हो गयीं। अपने रत्न चयन को लेकर मैं पूर्णतया आश्वस्त था। एक बार पुनः मैंने उनकी जन्मपत्री का अवलोकन किया। शनि के गोचर स्थान से आठवीं राशि गुरु की पड़ती है। गुरु का रत्न यहाँ अरिष्टकारी बन रहा था। मैंने उन्हें उसे तुरन्त उतार देने का परामर्श दिया। पुखराज का उतरना था कि उनके जीवन में शनि का सुप्रभाव प्रारम्भ हो गया। शनि के वृश्चिक राशि को पार करते ही अर्थात 16 दिसम्बर 1987 से उनके जीवन में दुर्भाग्य का पुनः

पदार्पण हो गया। जो व्यक्ति हवाई जहाजों में घूमता हो और उसके भाग्य से टूटी हुई कार भी छिन जाए तो उसकी मनःस्थिति का स्वयं अनुमान लगा लीजिए। लग्नपत्री का अवलोकन करने पर स्पष्ट हुआ कि धनुराशि (शनि जहाँ गोचरवश स्थित था) से अष्टम भाव में शनि बैठा हुआ है। जो विपरीत होते ही उथल-पुथल करवाने लगा है। मैंने उन्हें नीलम उतारकर पुनः पुखराज धारण करवा दिया। कुछ ही माह में उनका डगमगाता जीवन फिर स्थिर हो गया। कहने का कुल तात्पर्य यह है कि शनि की साढ़ेसाती में भी उचित निदान मिल जाने के कारण उन सज्जन का जीवन ही बदल गया।

साढ़ेसाती में रत्न धारण करवाते समय आप भी ध्यान रखें कि धारण किए गए रत्न का कैसा भी सम्बन्ध उसके गोचरभाव से छठे अथवा आठवें से न हो।

किस कार्य में क्या धारण करें

व्यापार में उन्नति	पन्ना + पुखराज + लहसुनिया
परीक्षा में सफलता	पुखराज + मूंगा + पन्ना
नौकरी में उन्नति	पन्ना + पुखराज अथवा पन्ना + पुखराज + हीरा
वैवाहिक सफलता	मोती + पुखराज + मूंगा
सुख - समृद्धि	पन्ना + गोमेद + मोती

पदार्पण हो गया। जो व्यक्ति हवाई जहाजों में घूमता हो और उसके भाग्य से टूटी हुई कार भी छिन जाए तो उसकी मनःस्थिति का स्वयं अनुमान लगा लीजिए। लग्नपत्री का अवलोकन करने पर स्पष्ट हुआ कि धनुराशि (शनि जहाँ गोचरवश स्थित था) से अष्टम भाव में शनि बैठा हुआ है। जो विपरीत होते ही उथल-पुथल करवाने लगा है। मैंने उन्हें नीलम उतारकर पुनः पुखराज धारण करवा दिया। कुछ ही माह में उनका डगमगाता जीवन फिर स्थिर हो गया। कहने का कुल तात्पर्य यह है कि शनि की साढ़ेसाती में भी उचित निदान मिल जाने के कारण उन सज्जन का जीवन ही बदल गया।

साढ़ेसाती में रत्न धारण करवाते समय आप भी ध्यान रखें कि धारण किए गए रत्न का कैसा भी सम्बन्ध उसके गोचरभाव से छठे अथवा आठवें से न हो।

किस कार्य में क्या धारण करें

व्यापार में उन्नति	पन्ना + पुखराज + लहसुनिया
परीक्षा में सफलता	पुखराज + मूंगा + पन्ना
नौकरी में उन्नति	पन्ना + पुखराज अथवा पन्ना + पुखराज + हीरा
वैवाहिक सफलता	मोती + पुखराज + मूंगा
सुख - समृद्धि	पन्ना + गोमेद + मोती

पदार्पण हो गया। जो व्यक्ति हवाई जहाजों में घूमता हो और उसके भाग्य से टूटी हुई कार भी छिन जाए तो उसकी मन:स्थिति का स्वयं अनुमान लगा लीजिए। लग्नपत्री का अवलोकन करने पर स्पष्ट हुआ कि धनुराशि (शनि जहाँ गोचरवश स्थित था) से अष्टम भाव में शनि बैठा हुआ है। जो विपरीत होते ही उथल-पुथल करवाने लगा है। मैंने उन्हें नीलम उतारकर पुन: पुखराज धारण करवा दिया। कुछ ही माह में उनका डगमगाता जीवन फिर स्थिर हो गया। कहने का कुल तात्पर्य यह है कि शनि की साढ़ेसाती में भी उचित निदान मिल जाने के कारण उन सज्जन का जीवन ही बदल गया।

साढ़ेसाती में रत्न धारण करवाते समय आप भी ध्यान रखें कि धारण किए गए रत्न का कैसा भी सम्बन्ध उसके गोचरभाव से छठे अथवा आठवें से न हो।

किस कार्य में क्या धारण करें

व्यापार में उन्नति	पन्ना + पुखराज + लहसुनिया
परीक्षा में सफलता	पुखराज + मूंगा + पन्ना
नौकरी में उन्नति	पन्ना + पुखराज अथवा पन्ना + पुखराज + हीरा
वैवाहिक सफलता	मोती + पुखराज + मूंगा
सुख - समृद्धि	पन्ना + गोमेद + मोती

भाग्यप्रदायक दिशा एवं रत्न चयन

अनेक प्रकरण ऐसे सामने आते हैं कि जहाँ व्यक्ति ने अपना नाम, काम स्थान आदि परिवर्तन किया नहीं और सौभाग्य उसका द्वारा खटखटाने लगा यह मैं नहीं कह रहा, वरन् एक मत से प्रत्येक वर्ग, धर्म आदि के मानने वाले स्वीकार करते हैं। मैंने इस विषय में अनेक अनुभूत प्रयोग किए हैं। नाम परिवर्तन से भाग्य में हुए त्वरित प्रभाव को अनेकानेक लोगों ने स्वीकारा है इसका उदाहरण है मेरी एक छोटी सी पुस्तक 'भाग्यशाली नाम'। जिन लोगों ने उसे पढ़ा और परखा है वह मेरी बात से अवश्य सहमत होंगे। इस प्रयोग के मैंने रत्नों से भी जोड़ने का प्रयास किया है। मेरा यह नया शोध कार्य कितन सफल सिद्ध होगा यह निर्भर करेगा पाठकों के अधिकाधिक प्रयोग करने पर

यदि आपको अपना जन्म लग्न ज्ञात है तब तो उत्तम है अन्यथा अपने नाम के प्रथम अक्षर की राशि को लग्न मानकर लग्न कुण्डली तैयार करिए माना आपका नाम राम है और आपकी नाम राशि तुला बनती है। तुला राशि से आपकी कुण्डली निम्न प्रकार बनेगी।

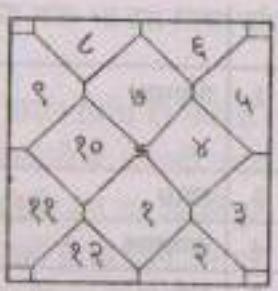

कुण्डली में आप देखिए कि दूसरे, नवें तथा ग्यारहवें भाव में कौन-कौन सी राशियाँ हैं और वह राशियाँ किन-किन दिशाओं अथवा विदिशाओं की सूचक हैं। उदाहरण में इन भावों में क्रमशः वृश्चिक, मिथुन तथा सिंह राशियाँ हैं और वह उत्तर, पश्चिम तथा पूर्व दिशाओं की कारक हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अपने वर्तमान स्थान से यदि आप इन दिशा-विदिशाओं में पड़ने वाले गाँव, शहर आदि में प्रवास करते हैं तो आपके भाग्य में उत्तरोत्तर उन्नति की सम्भावना बढ़ सकती है। यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि यह चयन बहुत ही साधारण सा सूत्र है, शुभ फल की प्राप्ति के लिए ज्योतिषीय अन्य घटकों का आपके लिए अनुकूल होना भी परमावश्यक है। लाभ देने वाले घटकों में एक विकल्प

उचित रत्न चयन भी हो सकता है। इन राशियों के रत्न, उपरत्नादि यदि परस्पर मित्र हैं तो आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध हो सकते हैं। यदि तीन रत्नों का संयोग न मिल पाए तो आप यह देखें कि वे कौन से दो रत्न परस्पर मित्र हैं। यदि यह संयोग भी नहीं मिल रहा है तो आप राशियों के अन्य मित्र राशियों के रत्न चयन करें। अन्य मित्र राशियाँ चयन करते समय षडाष्टक दोष का ध्यान अवश्य रखें अर्थात वह राशियाँ छठे, आठवें भाव में परस्पर न हों। यदि मित्र राशियों से भी रत्न नहीं चयन हो पा रहे हैं तो आप नवम भावगत राशि के अनुरूप एक अकेला रत्न भी धारण कर सकते हैं।

विभिन्न रोग तथा रत्न चयन

क्रम	रोग	क्या धारण करें
1.	मधुमेह	पन्ना+ सफेद पुखराज+ सफेद मूंगा तथा मध्यमा उँगली में स्वर्ण धातु में लाल मूंगा।
2.	रक्तचाप	पीला पुखराज+चन्द्रकांत+ पन्ना+लाल मूंगा अथवा नीलम+माणिक्य+गार्नेट
3.	श्वास	पुखराज+नीलम अथवा पुखराज+पन्ना
4.	पागलपन	मोती+गोमेद
5.	क्षय	पुखराज+पन्ना अथवा हीरा+माणिक्य
6.	रक्त विकार	नीलम+मूंगा अथवा मूंगा+गोमेद
7.	शीघ्रपतन अथवा नपुंसकता	हीरा+गोमेद अथवा हीरा+पुखराज
8.	कामला अर्थात पीलिया	पुखराज+मूंगा
9.	टांसिल्स अथवा श्वेत कुष्ठ	मोती+पन्ना
10.	मिर्गी	मोती+पन्ना

उचित रत्न चयन भी हो सकता है। इन राशियों के रत्न, उपरत्नादि यदि परस्पर मित्र हैं तो आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध हो सकते हैं। यदि तीन रत्नों का संयोग न मिल पाए तो आप यह देखें कि वे कौन से दो रत्न परस्पर मित्र हैं। यदि यह संयोग भी नहीं मिल रहा है तो आप राशियों के अन्य मित्र राशियों के रत्न चयन करें। अन्य मित्र राशियाँ चयन करते समय षडाष्टक दोष का ध्यान अवश्य रखें अर्थात वह राशियाँ छठे, आठवें भाव में परस्पर न हों। यदि मित्र राशियों से भी रत्न नहीं चयन हो पा रहे हैं तो आप नवम भावगत राशि के अनुरूप एक अकेला रत्न भी धारण कर सकते हैं।

विभिन्न रोग तथा रत्न चयन

क्रम	रोग	क्या धारण करें
1.	मधुमेह	पन्ना+ सफेद पुखराज+ सफेद मूंगा तथा मध्यमा उँगली में स्वर्ण धातु में लाल मूंगा।
2.	रक्तचाप	पीला पुखराज+चन्द्रकांत+ पन्ना+लाल मूंगा अथवा नीलम+माणिक्य+गार्नेट
3.	श्वास	पुखराज+नीलम अथवा पुखराज+पन्ना
4.	पागलपन	मोती+गोमेद
5.	क्षय	पुखराज+पन्ना अथवा हीरा+माणिक्य
6.	रक्त विकार	नीलम+मूंगा अथवा मूंगा+गोमेद
7.	शीघ्रपतन अथवा नपुंसकता	हीरा+गोमेद अथवा हीरा+पुखराज
8.	कामला अर्थात पीलिया	पुखराज+मूंगा
9.	टांसिल्स अथवा श्वेत कुष्ठ	मोती+पन्ना
10.	मिर्गी	मोती+पन्ना

कृष्णामूर्ति पद्धति एवं रत्न चयन

मूलत: मैं कृष्णामूर्ति पद्धति का विद्यार्थी हूँ। जब सत्तर के दशक के अन्त में मैंने ज्योतिष क्षेत्र में पदार्पण किया था तब उत्तर भारत में कुछ गिने चुने बौद्धिक ज्योतिष ही हुआ करते थे। इस पद्धति के विद्वान तो खोजने पर भी नहीं मिलते थे। इसके दो कारण थे एक तो इस पद्धति की पठनीय सामग्री मात्र अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध थी दूसरे इस विधि में गणना करने में लम्बा समय लगता था। इस पद्धति के परिणामों के आगे अनेकानेक बार दिग्गज विद्वान मेरे सामने धराशायी होते थे। अस्तु...।

इस पद्धति का मूल आधार है नक्षत्र। नक्षत्र को यहाँ भाव, राशि, दृष्टि बलादि से अधिक बलवान माना गया है। कृष्णामूर्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह 'यदि', 'लेकिन', 'किन्तु', 'परन्तु' आदि से सर्वथा अलग-थलग है। उस समय इस विद्या की मात्र छ: पुस्तकें थीं जिन्हें के. पी. रीडर कहा जाता था। इसके अतिरिक्त विषय की मासिक पत्रिका नियमित निकलती थी। सौभाग्य से अब सब कुछ हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है। सुविधाजनक बात यह है कि कम्प्यूटर द्वारा आप शुद्ध पत्री भी इस विधा की उपलब्ध कर सकते हैं।

के. पी. रीडर भाग तीन में रत्न चयन की एक सरल विधि दी गयी है। पाठक इसे भी अपनाकर अपने निष्कर्ष निकालें। जन्मपत्री से आपको प्रथम तथा एकादश भाव के उपस्वामी ग्रह स्पष्ट हो जाएंगे। यदि यह ग्रह किसी भी प्रकार से पत्री के 6, 8 तथा 12वें भाव से सम्बन्धित नहीं हैं तो आप उन ग्रह अथवा ग्रहों के रत्न तदनुसार चुन सकते हैं। ग्रह किन-किन भावों को इंगित करते हैं, यह भी जन्मपत्री में आप सरलतम रूप से तलाश सकते हैं। इन भावों के उपस्वामी ग्रह के अनुसार आप वह धातु भी चयन कर सकते हैं जिसमें आपको अपना भाग्यशाली रत्न धारण करना है।

पाठकों की सुविधा के लिए यहाँ 18 नवम्बर 1956 को प्रात: 7 बजकर 10 मिनट पर बिजनौर में जन्मे व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पाठक ध्यान दें कि प्रथम तथा एकादश भाव के उपस्वामी ग्रह क्रमश:

कृष्णामूर्ति पद्धति एवं रत्न चयन

मूलत: मैं कृष्णामूर्ति पद्धति का विद्यार्थी हूँ। जब सत्तर के दशक के अन्त में मैंने ज्योतिष क्षेत्र में पदार्पण किया था तब उत्तर भारत में कुछ गिने चुने बौद्धिक ज्योतिष ही हुआ करते थे। इस पद्धति के विद्वान तो खोजने पर भी नहीं मिलते थे। इसके दो कारण थे एक तो इस पद्धति की पठनीय सामग्री मात्र अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध थी दूसरे इस विधि में गणना करने में लम्बा समय लगता था। इस पद्धति के परिणामों के आगे अनेकानेक बार दिग्गज विद्वान मेरे सामने धराशायी होते थे। अस्तु...।

इस पद्धति का मूल आधार है नक्षत्र। नक्षत्र को यहाँ भाव, राशि, दृष्टि बलादि से अधिक बलवान माना गया है। कृष्णामूर्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह 'यदि', 'लेकिन', 'किन्तु', 'परन्तु' आदि से सर्वथा अलग-थलग है। उस समय इस विद्या की मात्र छ: पुस्तकें थीं जिन्हें के. पी. रीडर कहा जाता था। इसके अतिरिक्त विषय की मासिक पत्रिका नियमित निकलती थी। सौभाग्य से अब सब कुछ हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है। सुविधाजनक बात यह है कि कम्प्यूटर द्वारा आप शुद्ध पत्री भी इस विधा की उपलब्ध कर सकते हैं।

के. पी. रीडर भाग तीन में रत्न चयन की एक सरल विधि दी गयी है। पाठक इसे भी अपनाकर अपने निष्कर्ष निकालें। जन्मपत्री से आपको प्रथम तथा एकादश भाव के उपस्वामी ग्रह स्पष्ट हो जाएंगे। यदि यह ग्रह किसी भी प्रकार से पत्री के 6, 8 तथा 12वें भाव से सम्बन्धित नहीं हैं तो आप उन ग्रह अथवा ग्रहों के रत्न तदनुसार चुन सकते हैं। ग्रह किन-किन भावों को इंगित करते हैं, यह भी जन्मपत्री में आप सरलतम रूप से तलाश सकते हैं। इन भावों के उपस्वामी ग्रह के अनुसार आप वह धातु भी चयन कर सकते हैं जिसमें आपको अपना भाग्यशाली रत्न धारण करना है।

पाठकों की सुविधा के लिए यहाँ 18 नवम्बर 1956 को प्रात: 7 बजकर 10 मिनट पर बिजनौर में जन्मे व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पाठक ध्यान दें कि प्रथम तथा एकादश भाव के उपस्वामी ग्रह क्रमश:

बुध तथा गुरू हैं। बुध 1, 12वें भाव का धनात्मक तथा 3, 4, 8 एवं 11वें भाव का ऋणात्मक कारक है। गुरु 10 तथा 12वें भाव का धनात्मक तथा 2 और 5वें भाव का ऋणात्मक कारक है। पाठक देखें कि बुध 8 तथा 12वें भाव का और गुरु 12वें भाव का कारक है। इसलिए यहाँ पन्ना और पुखराज दो रत्न इनके लिए शुभ नहीं सिद्ध होंगे।

दूसरे अन्य एक उदाहरण के लिए 12 जून 1976 को दिन में 12 बजकर 28 मिनट पर जयपुर में जन्मी लड़की की पत्रिका का अवलोकन करें।

यहाँ प्रथम भाव का कारक मंगल तथा एकादश भाव का कारक चन्द्र ग्रह है। मंगल धनात्मक रूप से 9 तथा 11वें और ऋणात्मक रूप से 2 तथा 4वें भाव का कारक है तथा चन्द्र ऋणात्मक रूप से 2, 11वें और धनात्मक रूप से 4, 9वें भाव का कारक है। इस लड़की को मैंने एक ही चाँदी की अँगूठी में मोती तथा मूंगा धारण करवाया था। कालान्तर में बहुत शुभ सिद्ध हुआ।

आरोग्य तथा सामान्य स्वास्थ्य के लिए मैंने अपनी पद्धति के. पी. आधार पर निर्धारित की है। सैकड़ों उदहारणों में मैंने पाया है कि रत्न चयन करने की यह विधि सरल तथा प्रभावशाली है। मात्र थोड़े से अभ्यास के बाद स्वास्थ्य लाभ के लिए आप भी अपने लिए अनुकूल रत्न चयन कर सकते हैं। विधि निम्न प्रकार से है—

कृष्णामूर्ति पद्धति से बनी जन्मपत्री में से पंचम, सप्तम तथा एकादश भाव के कारक ग्रह (Significators) छाँट लें। इनमें से उन ग्रहों को छोड़ दें जो छठे, आठवें तथा बारहवें भाव के भी कारक हैं। इन बचे हुए ग्रहों में से निम्न चार बातें देखते हुए सर्वाधिक बलवान ग्रह चुन लें—

वह ग्रह जो शुभ भावों के स्वामी हैं।

वह ग्रह जो अन्य बलवान ग्रहों से दृष्ट हैं।

दशा अथवा अन्तर्दशा का स्वामी ग्रह इस बलवान ग्रह के नक्षत्र में स्थित है।

इन ग्रहों में उन ग्रहों को भी छोड़ दें जो सूर्य के सानिध्य (Combust) में अपना बल क्षीण कर रहे हैं।

भाग्य से किसी ग्रह के लिए यदि उक्त चारों बातें मेल खाती हैं तब आप

उस ग्रह का रत्न अपने लिए निश्चित कर लें। यदि दशा, अन्तर्दशानाथ उक्त से मेल नहीं खाता है तब उसे भी छोड़ दें तथा उक्त में से अन्य बलवान ग्रह चुन लें।

सूत्र को स्पष्ट करने के लिए पुस्तक से 8 नवम्बर 1945 को जन्में व्यक्ति का उदाहरण लेते हैं।

पंचम, सप्तम तथा एकादश भावों के कारक ग्रह हैं क्रमशः शुक्र, राहु, चन्द्र, गुरु, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र तथा केतु। जहाँ ग्रहों की पुनरावृत्ति हो रही है वह ग्रह हम छोड़ देते हैं। कुल कारक ग्रह इस प्रकार से बनते हैं—शुक्र, राहु, चन्द्र, गुरु, मंगल तथा केतु। दूसरे चरण में उन ग्रहों को भी हम नहीं विचारते जो छः, आठ तथा बारहवें भाव के कारक हैं। शुक्र त्याज्य है क्योंकि वह छठे भाव का कारक है। चन्द्र त्याज्य है क्योंकि यह भी छठे भाव का कारक है। गुरु त्याज्य क्योंकि यह बारहवें भाव का कारक है। मंगल त्याज्य है क्योंकि यह छठे भाव का कारक है।

इस प्रकार हमारे पास दो ग्रह शेष बचे राहु और केतु। पाठकगण ध्यान से पत्री का अवलोकन करें कि राहु मिथुन राशि में छठे भाव में बलवान माना जाता है। राहु अपने ही नक्षत्र में है। किसी भी दुष्ट ग्रह से न तो दृष्ट है न ही सूर्य के कारण बलहीन हो रहा है। इसलिए राहु अपनी दशा के प्रारम्भ से बलवान हो गया है—यह स्वास्थ्य का प्रतीक बन गया है राहु का रत्न गोमेद इनको अन्तःबल देगा। यह रत्न रोगनिरोधक क्षमता को और भी बलवान कर देगा। मई 1997 से राहु की महादशा प्रारम्भ हो गयी थी। बहुत अच्छा गोमेद यह धारण किए हुए है। इन्हें बहुत लाभ है।

यह तथ्य स्मरण रखें कि इस विधि द्वारा चुना गया रत्न विपरीत प्रभाव नहीं देगा तथापि यह अवश्य ध्यान रखें कि यह नियम प्रत्येक व्यक्ति पर ठीक बैठे—आवश्यक नहीं है। इसके लिए पत्री की सूक्ष्मता से अध्ययन विवेचन की आवश्यकता अवश्य होगी।

स्वास्थ्य की भाँति जीवन के अन्य पहलुओं के लिए भी आप उन सम्बन्धित भावों के कारक ग्रहों को लेकर उपरोक्तानुसार अपना भाग्यशाली रत्न चयन कर सकते हैं।

एस. के. अग्रवाल

दिन रविवार

तारीख 18 नवम्बर 1956

समय सुबह 7:10

स्थान बिजनौर

कृष्णामूर्ति पद्धति

ग्रह	राशि	अंश	राशेश	नक्षत्र	अंतर	प्रत्यंतर
सूर्य	वृश्चिक	2:26:37	मंगल	गुरु	राहु	बुध
चन्द्र	मेष	29:42:15	मंगल	सूर्य	राहु	गुरु
मंगल	कुम्भ	28:28:21	शनि	गुरु	शुक्र	बुध
बुध	वृश्चिक	5:25:40	मंगल	शनि	शनि	गुरु
गुरु	कन्या	3:29:36	बुध	सूर्य	शनि	बुध
शुक्र	कन्या	27:35:31	बुध	मंगल	गुरु	मंगल
शनि	वृश्चिक	10:57:36	मंगल	शनि	सूर्य	शुक्र
राहु	वृश्चिक	5:49:35	मंगल	शनि	बुध	शुक्र
केतु	वृष	5:49:35	शुक्र	सूर्य	बुध	सूर्य
हर्ष	कर्क	13:43:01	चन्द्र	शनि	राहु	शनि
नेप	तुला	7:49:45	शुक्र	राहु	राहु	बुध
प्लू	सिंह	7:08:42	सूर्य	केतु	राहु	शुक्र

निरयण भाव

	राशि	अंश	राशेश	नक्षत्र	अंतर	प्रत्यंतर
1	वृश्चिक	7:09:23	मंगल	शनि	बुध	शनि
2	धनु	7:29:07	गुरु	केतु	राहु	मंगल
3	मकर	10:52:01	शनि	चन्द्र	चन्द्र	केतु
4	कुम्भ	15:20:39	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र
5	मीन	17:02:11	गुरु	बुध	बुध	केतु
6	मेष	13:58:06	मंगल	शुक्र	शुक्र	चन्द्र
7	वृष	7:09:23	शुक्र	सूर्य	केतु	शुक्र
8	मिथुन	7:29:07	बुध	राहु	राहु	शनि

9	कर्क	10:52:01	चन्द्र	शनि	सूर्य	केतु
10	सिंह	15:20:39	सूर्य	शुक्र	शुक्र	बुध
11	कन्या	17:02:11	बुध	चन्द्र	शनि	चन्द्र
12	तुला	13:58:06	शुक्र	राहु	बुध	गुरु

लग्न

निरयण भाव चलित

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव	ग्रह
I	मंगल-बुध, शुक्र-शनि+राहु,
II	सूर्य-मंगल-गुरु
III	बुध-शनि, राहु
IV	मंगल, बुध- शुक्र, शनि, राहु
V	सूर्य-मंगल-गुरु
VI	चन्द्र, मंगल-शुक्र-केतु,
VII	शुक्र-
VII	बुध
IX	चन्द्र
X	सूर्य+चन्द्र-मंगल, गुरु+केतु
XI	बुध-शुक्र,
XII	सूर्य, चन्द्र, बुध,गुरु, शुक्र-राहु, के

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2रा-5वाँ-10वाँ-12वाँ
चन्द्र	6वाँ, 9वाँ-10वाँ-12वाँ
मंगल	1ला-2रा-4था, 5वाँ-6वाँ-10वाँ,
बुध	1ला, 3रा-4था-8वाँ-11वाँ-12वाँ,
गुरु	2रा-5वाँ-10वाँ, 12वाँ
शुक्र	1ला-4था, 6वाँ-7वाँ-11वाँ, 12वाँ-
शनि	1ला-3रा-4था,
राहु	1ला-3रा-4था-12वाँ,
केतु	6वाँ-10वाँ-12वाँ,

स्वामित्व

वार स्वामी	:	सूर्य
लग्न स्वामी	:	मंगल
राशि स्वामी	:	मंगल
नक्षत्र स्वामी	:	सूर्य
अन्तर स्वामी	:	राहु

साधारण खनिज तथा रत्न

देखा जाए तो साधारण पत्थर भी रत्न की तरह खनिज ही है परन्तु वह रत्न नहीं कहे जाते। रत्न की कठोरता, रासायनिक संरचना, संरचना के मूलकारक तथा यौगिकतत्व साधारण पत्थर से भिन्न होते हैं इसीलिए अधिकांशतः वह साधारण खनिज की तुलना में दुर्लभ तथा मूल्यवान है।

रमल शास्त्र एवं रत्न चयन

रमल अर्थात अरबी ज्योतिष विद्या से बिना जन्म विवरण अथवा जन्म पत्रिका के भी आप अपना भाग्यशाली रत्न चयन कर सकते हैं। यह विधि सरल है और अनुभूत भी। अरबी भाषा में रमल का अर्थ रेत है। अरब ज्योतिष रेत पर बिन्दु तथा लकीरें खींचकर गणनाएँ करते थे तदनुसार भविष्य का लेखा-जोखा पढ़ते थे। तदन्तर में सामान्यरूप से मिलने वाले 8 पासों से निश्चित पद्धति द्वारा रमल कुण्डली (प्रस्तार) बनाकर फलादेश किया जाने लगा। प्रस्तार में आपका भाग्यशाली रत्न भी छुपा हो सकता है। आइए प्रयास करते हैं उसे तलाशने का।

रमलशास्त्र लकीर तथा बिन्दुओं से बनी 16 आकृतियों पर आधारित है। प्रत्येक आकृति एक राशि, दिशा तत्त्व, शुभ-अशुभ गुण आदि इंगित करती है। इसे सर्वप्रथम समझ लें।

क्रम	नाम	आकृति	राशि	तत्त्व	स्वामी ग्रह	रत्न	शुभ/अशुभ
1.	लह्यान	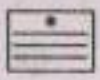	धनु	अग्नि	गुरु	पुखराज	शुभ
2.	कब्जुल दाखिल	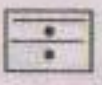	सिंह	पृथ्वी	सूर्य	माणिक्य	शुभ
3.	कब्जुल खारिज		कुम्भ	अग्नि	शनि	नीलम	अशुभ
4.	जमात		मिथुन	पृथ्वी	बुध	पन्ना	मध्यम
5.	फरहा		तुला	वायु	शुक्र	हीरा	शुभ

6. उक्रला	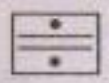	कुम्भ	पृथ्वी	शनि	हीरा	अशुभ
7. अंकीस	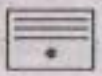	मकर	पृथ्वी	शनि	नीलम	अशुभ
8. हुमरा	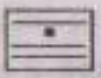	मेष	वायु	मंगल	मूंगा	अशुभ
9. बयाज़	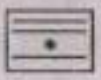	कर्क	जल	चन्द्र	मोती	शुभ
10. नुस्बुल ख़ारिज	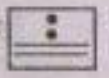	सिंह	अग्नि	सूर्य	माणिक्य	शुभ
11. नुस्बुल दाख़िल	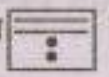	मीन	जल	गुरु	पुखराज	शुभ
12. अतवे ख़ारिज	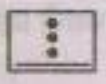	मकर	अग्नि	शनि	नीलम	अशुभ
13. नक़ी		वृष	जल	शुक्र	हीरा	अशुभ
14. अतवे दाख़िल	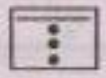	वृष	वायु	शुक्र	हीरा	शुभ
15. इज्ज़तमा	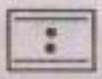	मिथुन	वायु	बुध	पन्ना	मध्यम
16. तरीक़	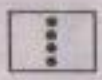	कर्क	जल	चन्द्र	मोती	शुभ

भाग्यशाली रत्न तलाशने के लिए सर्वप्रथम आपको निश्चित करना है शकुन पंक्ति में उपरोक्त 16 आकृतियों के निश्चित स्थान। इस क्रम में जिन 16 आकृतियों का स्थान कुण्डली अर्थात प्रस्तार में निश्चित है वह निम्न प्रकार से है। प्रस्तार की आकृति भी पाठक ध्यान में रखें। विभिन्न घरों का क्रम इसमें सदैव दाएँ से बाएँ सुनिश्चित होता है। अन्तिम दो अर्थात 15वें तथा 16वें घर बाएँ से दाएँ क्रम में अंकित किए जाते हैं।

शकुन पंक्ति में निश्चित विभिन्न 16 घर

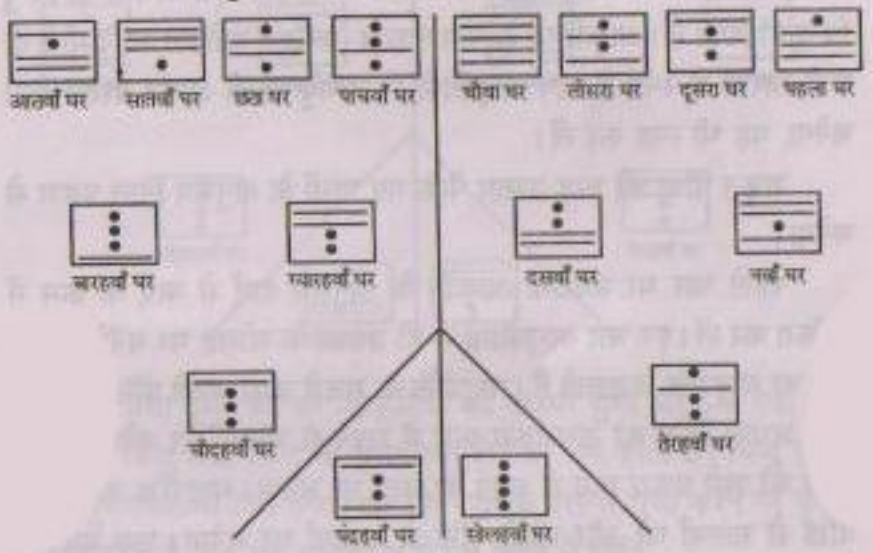

प्रस्तार बनाने के लिए विधिअनुसार तथा सिद्ध किए हुए विशेष पासे अपने मन में इष्टदेश का ध्यान करते हुए तथा अपना रत्न सम्बन्धी प्रश्न विचारते हुए शुद्ध समतल स्थान पर छोड़ें। रमल शास्त्र के लिए प्रयुक्त इन पासों से जो बिन्दु-आकृतियाँ ऊपरी सतह पर गिरें उन्हें नोट कर लें। माना आपके द्वारा फेंके गए पासे निम्न प्रकार से गिरते हैं।

रमल शास्त्र में प्रयुक्त होने वाले चार-चार में जुड़े इन आठ पासों की भाषा रमल की शक्ल अर्थात आकृति में समझें। यह आकृति बिन्दु तथा लाइनों में निम्न प्रकार से स्पष्ट होगी।

दो समानान्तर बिन्दु लाइन बनते हैं। ऊर्ध्वाकार एक अथवा दो बिन्दु बिन्दु ही बनते हैं। आकृतियों के नाम लह्यान-कब्जुल दाखिल आदि पीछे दी गयी सारणी से स्पष्ट हैं। इन आकृतियों से जन्मकुण्डली अर्थात प्रस्तार कैसे बनेगा, यह भी स्पष्ट कर लें।

शकुन पंक्ति की तरह प्रस्तार फेंके गए पासों के अनुरूप निम्न प्रकार से बनेगा।

पहले चार घर उपरोक्त आकृति के अनुसार दाएँ से बाएँ के क्रम में अंकित कर लें। इन चार आकृतियों से ही प्रस्तार के सोलह घर बनेंगे। पहले चार घर मातृपंक्ति कहलाते हैं। मातृपंक्ति के सबसे ऊपर वाली पंक्ति में स्थित रेखा अथवा बिन्दु को ऊर्ध्वाकार क्रम में रखने से पांचवाँ घर बनेगा। दूसरी पंक्ति को इसी प्रकार क्रम से रखने पर छठा घर बनेगा। मातृपंक्ति की तीसरी पंक्ति से सातवाँ घर और चौथी पंक्ति से आठवाँ घर बनेगा। एक बार यह समझने में आपको कठिनाई अवश्य आयेगी, परन्तु दो-चार बार के अभ्यास से यह सरल लगने लगेगा।

+ + +

प्रस्तार अर्थात रमल कुण्डली

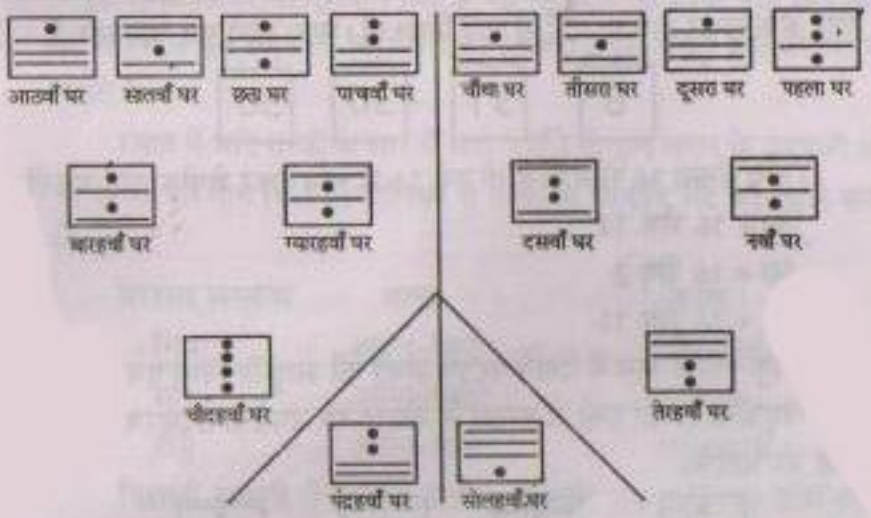

पहले तथा दूसरे घर की आकृतियों को परस्पर गुणा करने से नवाँ घर प्राप्त होगा। बिन्दु तथा बिन्दु के गुणनफल से रेखा प्राप्त होती है। बिन्दु तथा रेखा के गुणनफल से रेखा तथा रेखा और रेखा के परस्पर गुणा करने पर पुनः रेखा प्राप्त होती है, यह सूत्र गुणनफल से पूर्व ध्यान में रखें।

पहले तथा दूसरे घर को गुणा करना अधिक स्पष्ट कर लेते हैं—

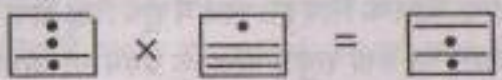

इसी प्रकार तीसरे तथा चौथे घर को परस्पर गुणा करने से दसवाँ घर, पाँचवे तथा छठे घर के गुणनफल से ग्यारहवाँ घर, साँतवे तथा आठवें से बारहवाँ घर, नवे तथा दसवें से तेरहवाँ घर, ग्यारहवें तथा बारहवें घर से चौदहवाँ घर, तेरहवें तथा चौदहवें से पन्द्रहवाँ घर और पहले तथा पन्द्रहवें घर के गुणनफल से प्रस्तार का सोलहवाँ घर प्राप्त होता है। यदि आपका प्रस्तार शुद्ध बना है अर्थात आपकी गणना में कहीं कोई त्रुटि नहीं हुई है तो पन्द्रहवें

घर की आकृति सदैव दो बिन्दुओं वाली होगी। यदि यह आकृति नहीं आती तो गणना में कहीं कमी है। ऐसे में प्रभु स्मरण कर आप पुन: पासे फेंककर श्रीगणेश करें।

यदि आपके पास पासे नहीं हैं तो आप एक से लेकर सौ तक के कोई चार अंक लेकर क्रमश: दाएँ से बाएँ लिख लें। माना सोचे गए चार अंक हैं—

6	31	50	30

यदि संख्या 16 से बड़ी है तो उसे 16 से भाग देकर शेषांक प्राप्त कर लें।

30 ÷ 16 शेष 14

50 ÷ 16 शेष 2

31 ÷ 16 शेष 15

शकुन पंक्ति क्रम में देखने पर इन अंकों की आकृति निम्न प्रकार बनेगी। यही मातृपंक्ति है और इसी से प्रस्तार के सोलह घर उपरोक्त उदाहरण की भाँति स्पष्ट हो जाएंगे।

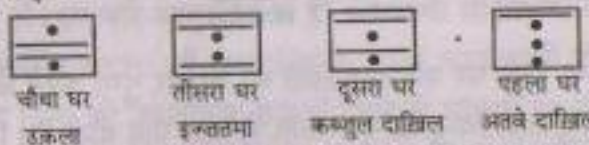

भाग्यशाली रत्न चयन करने के लिए प्रस्तार का पहला घर महत्त्वपूर्ण है। यह घर आपका भाग्य दर्शाता है। इस घर से मान-प्रतिष्ठा, शरीर तथा उसके विभिन्न अंग, आयु, स्वास्थ्य का फलादेश किया जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के उत्थान अथवा पतन के लिए इस भाव में शुभ चिह्न होना आवश्यक है।

प्रस्तार के प्रथम घर तथा शकुन पंक्ति के प्रथम घर अर्थात लग्नान को परस्पर गुणा करके गुप्त आकृति तलाश करें। यदि यह शुभ है तो इसकी राशि के अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं। उदाहरण में दिए प्रथम भाव से यह स्पष्ट करते हैं—

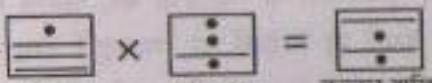

दोनों के गुणनफल से कब्जुल दाखिल गुप्त आकृति प्राप्त होती है, जो कि शुभ है। इसका अर्थ यह हुआ कि आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते हैं। यह

आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। विषय की गहनता में यदि बढ़ते जाएँगे तो गुप्तादिगुप्त सूत्र आपके हाथ लगते जाएँगे। शोधपरक आपका प्रयास अधिक रंग लाने लगेगा। अध्ययन, मनन, शोधादि किसी की बपौती नहीं है। मनीषियों ने गुह्य विद्याओं के जो सूत्र हमें दिए हैं वह भी तो उनके शोध, प्रज्ञा ज्ञान आदि का परिणाम हैं। हम क्यों नहीं वैसे ही अथवा उनसे उत्तम सूत्र तलाश कर सकते?

रमल में यदि तत्त्वों के सार में चले जाएँगे तो रत्न चयन के आपको और भी अच्छे परिणाम मिलेंगे। तालिका से तत्त्वों के मित्रादि भेद को पहले समझ लें।

परस्पर सम्बन्ध	तत्त्व	तत्त्व
मित्र	अग्नि-वायु	जल-पृथ्वी
सम	अग्नि-पृथ्वी	जल-वायु
शत्रु	अग्नि-जल	वायु-पृथ्वी

पिछली सारणी से स्पष्ट है प्रत्येक आकृति एक तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती है। यदि कोई आकृति ऐसे घर में स्थित है जो उस घर के तत्त्व की मित्र है तो उस घर से सम्बन्धित फल और भी अच्छे मिलेंगे। यदि वह तत्त्व परस्पर शत्रु है तो परिणामों में न्यूनता रहेगी। रत्न विषयक प्रकरण में हमें मित्रवत राशियाँ ही चयन करना हैं। सम तत्त्व राशियाँ भी चयन की जा सकती हैं।

प्रस्तार अर्थात रमल कुण्डली में कुल 16 घर होते हैं। परन्तु फलादेश के लिए ज्योतिष में जन्मकुण्डली की तरह 12 भाव ही प्रयुक्त होते हैं। जो भाव बलवान बनाना है अर्थात उस भाव के अनुरूप कार्य सिद्ध करना है उससे सम्बन्धित रत्न आप तलाश कर सकते हैं।

माना आपको धन सम्बन्धि कार्य के लिए अपने अनुरूप रत्न चयन करना है तो दिए गए उदाहरण से गुप्त आकृति आएगी फरहा जो कि शुभ है। इससे पुष्टि होती है कि धन विषयक पहलू के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

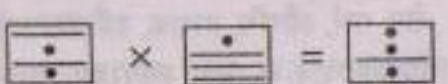

जिस विषय के लिए आप रत्न चयन कर रहे हैं वह शुभ है तब तो रत्न आपको मिल गए हैं परन्तु मध्यम अथवा अशुभ स्थितियों में गोपाल राजू के मतानुसार सम्बन्धित रत्न धारण न करें। उस परिस्थिति में ग्रह के सम्बन्धित रंग के पदार्थ आप दान करें तब आपको आशातीत लाभ की सम्भावना रहेगी।

उदाहरण के लिए प्रस्तुत प्रस्तार में आपको सन्तान सम्बन्धी पहलू के लिए रत्न धारण करना है। इसके लिए आपको गुप्त रूप से पांचवाँ घर तलाशना होगा—

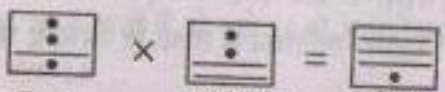

यहाँ अंकीस राशि अशुभ है तथा इसका रत्न नीलम धारण करना सम्भवतः शुभ न हो। ऐसे में सुरमा दान करें। शनिवार के दिन तेल से बना भोज्य पदार्थ भूखे को खिलाते रहने से आपको लाभ मिलेगा।

प्रस्तार के किस घर से आप क्या लाभ ले सकते हैं और यदि उसमें शुभ आकृति नहीं है तब उससे सम्बन्धित ग्रह का रत्न न धारण करके क्या दान आदि करें, जिससे कि वाँछित फल की प्राप्ति हो इसका संक्षिप्त विवरण भी यहाँ लिख रहा हूँ। इससे पाठकों को सुविधा हो जाएगी।

घर	जिससे सम्बन्ध है
पहला	स्वास्थ्य, आयु, मान-प्रतिष्ठा, जीवन में उन्नति, परिणाम, भाग्य आदि।
दूसरा	धन, जीविका के साधन, लाभ बहुमूल्य सामग्री, व्यवसायिक सहयोगी आदि।
तीसरा	यात्रा और उससे लाभ, संयम, भाई-बहन का सुख आदि।
चौथा	भूमि, सम्पत्ति, सुख-समृद्धि, कृषि सम्बन्धी कार्य आदि।
पांचवाँ	प्रेम प्रसंग, सन्तान, नवविवाहिता, शिक्षा आदि।
छठा	रोग, गर्भ, औषधि, तलाक, तान्त्रिक प्रयोग, चौपाये आदि।
सातवाँ	विवाह, शत्रु, कर्जदार, व्यवसाय, प्रवास आदि।
आठवाँ	मृत्यु भेद, दुर्भाग्य, औषधि, गुप्तधन, ऋण की अदायगी,

	वसीयत आदि।
नवाँ	धर्म, इष्टदेव, परिजन आदि।
दसवाँ	राज्य अधिकारी, पारितोषक, गुरु, राज्य अधिकार, सम्मान, सरकारी पद आदि।
ग्यारहवाँ	मनवांछित फल की प्राप्ति, शुभ कर्म, पूजा-अर्चना, सफलता आदि।
बारहवाँ	कारागार, परस्त्री प्रकरण, क्रय-विक्रय, भय, दुष्ट कर्म आदि।

ग्रह	दान योग्य सामग्री
सूर्य	गेहूँ, जौ, गुड़, ताँबा, रक्त वस्त्र, कमल, चन्दन, माणिक्य, लाल वस्त्र में मीठी वस्तु, गोलाकार वस्तु, रविवार को मुख्य द्वार पर टाँगें।
चन्द्र	चावल, श्वेत वस्त्र, चाँदी, शंख, चन्दन, पुष्प, चीनी, मिश्री, दही, घी, मोती, फल, सात कुँओं अथवा नदियों का जल लाकर एक चाँदी की डिब्बी में रखें।
मंगल	काँसा, हाथी दाँत, हरी वस्तु, पन्ना, सोना, कपूर, जौ, घी, हरे रंग का चौकोर वस्त्र भवन में रखें, रसोईघर में हरा पत्थर लगवाएँ।
गुरु	पीला वस्त्र, सोना, धार्मिक पुस्तकें, मधु, शक्कर, छाता, पीतल का एक टुकड़ा एकान्त स्थल में अग्नि में जलाक लाल कर लें। उसे उसी स्थान में मिट्टी में दबाकर ठण्डा करें। इस टुकड़े को घर लाकर रखें।
शुक्र	सोना, चाँदी, चावल, घी, श्वेत वस्त्र, चन्दन, दही, सुगन्धित वस्तु, मिश्री, गोल ताँबे के पात्र में गेहूँ भरकर घर में कहीं दबा दें।
शनि	काला वस्त्र, लोहा, काली उड़द, नीलम, सरसों का तेल, काले पुष्प, कुलथ की दाल तथा काला सुरमा यह सब

	चीजें लोहे के पात्र में भरकर घर में दबा दें।
राहु	अभ्रक, काला तिल, काला वस्त्र, कम्बल, तेल, सूखे गोला गिरि में छेद करके शक्कर भरकर कहीं पीपल अथवा बढ़ की जड़ के पास दबा दें।
केतु	काला तिल, काला वस्त्र, कम्बल, तेल, धर्म स्थल में ऊँचाई पर एक तिकोना ध्वज लगवाएँ।

यह सब लिखने का प्रयोजन पाठक समझ गए होंगे। यदि घर की शुभ स्थिति है तब तो उससे सम्बन्धित रत्न धारण करें। स्थिति शुभ न हो तो उपरोक्तानुसार दान आदि का अनुसरण करें।

चमत्कारी सिक्का

बिल्कुल शुद्ध तांबे को सिक्के के आकार का बनवा लें। इसमें छेद कर लें। आग में तपाकर इसको लाल करें और पानी में बुझा लें। अब इसको रेत तथा नींबू से रगड़कर अच्छी तरह चमका लें। नीले रंग के धागे में डालकर यह सिक्का गले में इस प्रकार धारण करलें जिससे कि यह जहाँ दोनों पसलियाँ मिलती हैं, वहाँ तक लटका रहे। दो-तीन माह बाद किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के पश्चात इसे पुनः आग में तपाकर और पानी में ठण्डा करके धारण कर लें। दिल की धड़कन यदि असमान्य होती है अथवा उत्साह की कमी आ गयी हो, उसके लिए अचूक चमत्कारी प्रयोग है।

जैन प्रश्नशास्त्र एवं भाग्यशाली रत्न चयन

प्रश्नशास्त्र को फलित ज्योतिष का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। जन्मपत्री की अनुपस्थिति में प्रश्नकर्ता के प्रश्नानुसार तात्कालिक समाधान अथवा फल बताने के लिए यह शास्त्र बहुत उपयोगी है। उपलब्ध दिगम्बर जैन ज्योतिष ग्रन्थों में प्रश्नशास्त्र का सर्वाधिक चलन है। जैनाचार्यों ने इस शास्त्र का बहुत ही सुन्दर तथा सरल भाषा में विवेचन किया है।

प्रश्नकर्त्ता के फल तथा समाधान बताने में मुख्यत: तीन विधियाँ प्रचलित हैं—

1. तात्कालिक समय की प्रश्न कुण्डली बनाकर ग्रहों की विभिन्न राशिगत स्थिति द्वारा। इसका मूल आधार गणनाएँ हैं।

2. स्वरशास्त्र के अन्तर्गत सूर्य एवं चन्द्र स्वर की स्थिति द्वारा। इसका मूल आधार प्रश्नकर्त्ता का अदृष्ट होना है।

3. प्रश्नकर्ता के प्रश्नों से उसके मनोभाव आदि के ज्ञान द्वारा। यह पूर्णतया मनोविज्ञान पर आधारित है।

अपने कार्य के लिए हम ज्योतिषीय गणनाओं द्वारा रत्नों का चुनाव करेंगे। शोधकार्य को आगे बढ़ाने के लिए तथा गणना किए गए रत्न की अपने लिए शुभता की परख के लिए स्वरशास्त्र तथा प्रश्नकर्त्ता के मनोभाव का भी सहारा लिया जा सकता है। संयोग एवं सौभाग्य से चुने गए रत्न की दोनों विधियों से पुष्टि भी हो जाती है तो उस रत्न को बिना किसी शंका के धारण किया जा सकता है। वह शुभ फल देगा ही देगा।

सर्वप्रथम ध्यान दें कि प्रश्नकर्त्ता रत्न सम्बन्धी प्रश्न जब पूछता है तो उसका मुँह किस दिशा-विदिशा की तरफ होता है। प्रत्येक दिशा का एक अंक निश्चित है। जिस तरफ मुँह करके प्रश्न किया जाए वह अंक लिख लें।

दिशा/विदिशा	सम्बन्धित अंक
पूरब	1
पश्चिम	2
उत्तर	3
दक्षिण	4
उत्तर-पूरब	5

जैन प्रश्नशास्त्र एवं भाग्यशाली रत्न चयन

प्रश्नशास्त्र को फलित ज्योतिष का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। जन्मपत्री की अनुपस्थिति में प्रश्नकर्ता के प्रश्नानुसार तात्कालिक समाधान अथवा फल बताने के लिए यह शास्त्र बहुत उपयोगी है। उपलब्ध दिगम्बर जैन ज्योतिष ग्रन्थों में प्रश्नशास्त्र का सर्वाधिक चलन है। जैनाचार्यों ने इस शास्त्र का बहुत ही सुन्दर तथा सरल भाषा में विवेचन किया है।

प्रश्नकर्त्ता के फल तथा समाधान बताने में मुख्यत: तीन विधियाँ प्रचलित हैं—

1. तात्कालिक समय की प्रश्न कुण्डली बनाकर ग्रहों की विभिन्न राशिगत स्थिति द्वारा। इसका मूल आधार गणनाएँ हैं।

2. स्वरशास्त्र के अन्तर्गत सूर्य एवं चन्द्र स्वर की स्थिति द्वारा। इसका मूल आधार प्रश्नकर्त्ता का अदृष्ट होना है।

3. प्रश्नकर्ता के प्रश्नों से उसके मनोभाव आदि के ज्ञान द्वारा। यह पूर्णतया मनोविज्ञान पर आधारित है।

अपने कार्य के लिए हम ज्योतिषीय गणनाओं द्वारा रत्नों का चुनाव करेंगे। शोधकार्य को आगे बढ़ाने के लिए तथा गणना किए गए रत्न की अपने लिए शुभता की परख के लिए स्वरशास्त्र तथा प्रश्नकर्त्ता के मनोभाव का भी सहारा लिया जा सकता है। संयोग एवं सौभाग्य से चुने गए रत्न की दोनों विधियों से पुष्टि भी हो जाती है तो उस रत्न को बिना किसी शंका के धारण किया जा सकता है। वह शुभ फल देगा ही देगा।

सर्वप्रथम ध्यान दें कि प्रश्नकर्त्ता रत्न सम्बन्धी प्रश्न जब पूछता है तो उसका मुँह किस दिशा-विदिशा की तरफ होता है। प्रत्येक दिशा का एक अंक निश्चित है। जिस तरफ मुँह करके प्रश्न किया जाए वह अंक लिख लें।

दिशा/विदिशा	सम्बन्धित अंक
पूरब	1
पश्चिम	2
उत्तर	3
दक्षिण	4
उत्तर-पूरब	5

10 का अंक ही क्यों चुना, नवरत्नों की संख्या 9 अथवा राशियों की संख्या 12 क्यों नहीं, यह विवादास्पद है। तथापि उक्त गणना से रत्न-उपरत्न चुनकर हजारों प्रश्नकर्त्ताओं को लाभ पहुँचा है। अपने शोधकार्य में मैंने 10 के स्थान पर राशियों की कुल संख्या 12 से भी योगफल को भाग देकर अनेक बार परखा है। शनि की राशि कुम्भ अर्थात अंक 11 को मैंने राहु के रत्न गोमेद तथा मंगल की आठवीं वृश्चिक राशि अर्थात अंक 8 के लिए मैंने लहसुनिया रत्न प्रयोग करवाया। दोनों के मुझे सन्तोषजनक परिणाम मिले। सुझाव भी यही है कि नवरत्नों में गोमेद तथा लहसुनिया रत्न को अनदेखा न किया जाए और इसके लिए कुल योगफल को 12 से भाग दिया जाए।

प्रश्नगत गणना में आए योगफल को 10 से भाग देने पर शेष 7 बचेगा जो कि हीरे का द्योतक है। यदि योगफल में 12 से भाग दिया जाए तो शेष रहेगा 11 जो कि गोमेद रत्न का द्योतक है। निष्कर्ष यह निकलता है कि हीरे से अधिक शुभफल प्रश्नकर्त्ता को गोमेद देगा।

अब यह बौद्धिक पाठकों के अपने-अपने बुद्धि एवं विवेक पर निर्भर करेगा कि वह कौन-सी विधि अपनाएँ।

एक बार प्रश्नकर्त्ता के रत्न का चुनाव हो जाने पर प्रश्नकर्त्ता के फल की अन्य दो विधियों के माध्यम से हम यह भी स्पष्ट कर सकते हैं कि उक्त रत्न हमें त्वरित फल देगा अथवा फल तो देगा परन्तु विलम्ब से और फल देगा ही नहीं अर्थात रत्न का चयन ठीक नहीं हुआ है वह शुभ सिद्ध नहीं होगा।

1. सर्वप्रथम स्वच्छता से निम्न यन्त्र बना लें।

प्रश्नकर्त्ता से कहें कि यन्त्र के किसी भी कोष्ठक पर अपने दाएँ हाथ की अनामिका उँगली रखें। मन में अपने इष्ट का ध्यान करते हुए यह भाव बनाए रखें कि अमुक रत्न अथवा उपरत्न मुझे अवश्य लाभ देगा।

1	2	3
6	5	4
7	8	9

यदि प्रश्नकर्त्ता 1, 4, 5, 6, 9 अंकों में से किसी एक पर उँगली रखता है तो समझिए रत्न का चुनाव बिल्कुल ठीक है और वह लाभदायक सिद्ध होगा। यदि वह 3 अथवा 7 पर उँगली रखता है तो रत्न का प्रभाव होगा तो परन्तु प्रभाव में समय भी लग सकता है। यदि प्रश्नकर्त्ता की उँगली 2 अथवा 8 अंकों में से किसी एक के ऊपर रखी जाती है तो आप तुरन्त उसे स्पष्ट कर दें कि रत्न का चुनाव उसके लिए ठीक नहीं हुआ है और उससे लाभ मिलने में संशय ही रहेगा।

2. प्रश्नकर्त्ता की उस समय की गतिविधियों को ध्यान में रखें जिस समय वह अपने अनुरूप चुने गए रत्न के सम्बन्ध में प्रश्न करता है। यदि ऊपर देखते हुए अथवा आज्ञाचक्र का स्पर्श करके ध्यान करते हुए अथवा अपने इष्टदेव की पूजा-अर्चना करते हुए प्रश्न करता है तो आप समझ लीजिए कि चुना गया रत्न उसके लिए शुभ रहेगा। यदि वह शरीर को खुजाता है अथवा माथे को रगड़ता है या कुछ सोचता है फिर ध्यान की मुद्रा में आ जाता है तब समझ लीजिए कि रत्न उसके लिए शुभ तो है परन्तु उसके द्वारा लाभ प्राप्त करने में कुछ विलम्ब हो सकता है, यदि प्रश्न करते समय वह इधर-उधर देखता हुआ विचलित-सा लगता है, धरती पर पैर रगड़ता है, उँगलियों अथवा नाखून से कुर्सी-मेज अथवा धरती पर बैठा हुआ है तो नीचे खरोंचने लगता है तो वह रत्न उसके लिए शुभ फल कभी नहीं देगा।

3. रत्न धारण करने सम्बन्धी प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न पूछते समय का लग्न स्पष्ट करिए। यह देखिए कि प्रश्न के समय कौन-सी राशि लग्न में थी। यदि प्रश्न के समय लग्न में मेष, मिथुन, कन्या अथवा मीन राशियाँ हैं तो रत्न का चुनाव बिल्कुल ठीक है। वृष, कर्क, सिंह अथवा तुला राशियों में रत्न ठीक चुना गया है परन्तु उसके शुभ फल में विलम्ब हो सकता है। वृश्चिक, धनु, मकर अथवा कुम्भ लग्न में किया गया प्रश्न इस बात का द्योतक है कि चुना गया रत्न अथवा उपरत्न प्रश्नकर्त्ता के लिए शुभ सिद्ध नहीं होगा।

4. प्रश्नकर्त्ता से 1 से लेकर 108 तक का कोई भी अंक अकस्मात सोचने के लिए कहें। जो भी अंक वह सोचे उसको 12 से भाग करें। यदि शेष 2, 6, 11 अथवा शून्य बचता है तो रत्न का चुनाव बिल्कुल ठीक हुआ। 1, 3, 7 अथवा 9 शेष बचे तो भी रत्न ठीक है। लाभ मिलेगा परन्तु विलम्ब से। परन्तु शेष यदि 4, 5, 8 अथवा 10 आए तो समझ लीजिए कि रत्न का चुनाव ठीक नहीं हुआ है।

इस प्रकार से जैन-सिद्धान्त ज्योतिष विषयक ग्रन्थों के अनेक प्रकरण सामने आते हैं जहाँ उनके उपयोग से तथा साथ-साथ अपने शोधपरक प्रयासों से, अपनी बुद्धि विवेक से तथा प्रज्ञा ज्ञान से रत्नों-उपरत्नों का उचित चयन किया जा सकता है। पाठक इसे अपनाकर लाभ उठाएँ, यही कामना है।

इस्लामिक मान्यता एवं रत्न चयन

मुस्लिम समाज में भी रत्न धारण करने की परिपाटी प्रचलित है। परन्तु रत्न का चयन वहाँ राशि अथवा नक्षत्र के आधार पर न करके ग्रह तथा उससे सम्बन्धित रंग के आधार पर किया जाता है। मुस्लिम समाज में ज्योतिष अर्थात् नजूम को एकमत से स्वीकारा गया है तथा धरती और आकाश का सम्बन्ध ग्रहों पर ही आश्रित होना माना गया है। इसलिए वह एक ऐसे ग्रह के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं जो कि व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन निर्धारित करता है। रूलिंग प्लेनेट की तरह यह ग्रह भी जीवन पर नियन्त्रण रखता है। इस ग्रह को व्यक्ति की जन्म तिथि की सहायता से निकाला जाता है। यह विधि जितनी सरल है उतनी ही मुस्लिम समाज में प्रचलित और सफल भी है। दर्जनों मुस्लिम रत्न विक्रेताओं से मेरे सम्बन्ध रहे हैं। मैंने अपनी खोज में पाया कि अधिकांश नजूमी रत्न चयन में एकमतता रखते हैं। वहाँ विविधता कम है। जहाँ विविधता कम होती है वहाँ एक तो प्रक्रिया सरल हो जाती है दूसरे वहाँ भ्रम की सम्भावना भी न्यून बन जाती है। किसी ने एकमत से कोई एक बात स्वीकार कर ली तो वह सत्य है ही, उसका अस्तित्व अवश्य होगा। ऐसा ही सत्य मुझे इस्लामिक रत्न चयन पद्धति में लगा। जब पाठक इस विधि से रत्न चयन करके लोगों के अनुभव एकत्रित करेंगे तब मेरे वक्तव्य की स्वतः पुष्टि हो जाएगी।

अपनी जन्म की तिथि, माह तथा वर्ष के अन्तिम दो अंक जोड़ लें। इस गणना के लिए शताब्दी को छोड़ दिया जाता है। माना आपकी जन्मतिथि 08-11-1980 है। इनका कुल योग हुआ— 8+1+1+8=18

कुल योग को स्थिर संख्या 9 से भाग दें— 18÷9=0 (शेष)

एक अन्य उदाहरण देखें। माना किसी व्यक्ति का जन्म 27-11-1973 को हुआ है। यहाँ कुछ योग होगा—

2 + 7 + 1 + 1 + 7 + 3 = 21

योग को 9 से भाग दिया। 21÷9=3 (शेष)

जन्मतिथि गणना से निकले शेष से व्यक्ति का भाग्यशाली ग्रह निकलता है। निम्न सारिणी से स्पष्ट होता है कि शून्य शेष बचे व्यक्ति का भाग्यशाली ग्रह मंगल है जिसको उर्दू में जैनब कहते हैं। मुस्लिम सिद्धान्त के अनुसार यहाँ सुनहरे रंग के रत्न को धारण करना बताया गया है। इसी प्रकार शेष 3 वाले व्यक्ति का भाग्यशाली ग्रह मंगल अर्थात मर्रीख है। इस ग्रह के लिए काले रंग के रत्न को धारण करने पर बल दिया गया है। मुस्लिम पद्धति में दरअसल किसी रत्न विशेष का चयन न करके रंग का चयन किया जाता है। व्यक्ति की अपनी-अपनी सुविधा तथा सामर्थ्य है, वह उस रंग से सम्बन्धित रत्न भी धारण कर सकता है।

शेष अंक	ग्रह	उर्दू नाम
1	सूर्य	शम्स
2	चन्द्र	क़मर
3	गुरू	मर्रीख़
4	राहु	अतारु
5	बुध	मुश्तरी
6	शुक्र	जोहरा
7	केतु	जुहल
8	शनि	रास
9	मंगल	जैनब

क्रम	ग्रह	किस रंग का (रत्न-उपरत्न)
1	शम्स	पीत वर्ण अथवा सुनहरा
2	क़मर	हरित अथवा नील वर्ण
3	मुश्तरं	गुलाबी
4	रास	हल्का श्याम वर्ण
5	अतार	हरित अथवा पीतवर्ण
6	जोहर	नील वर्ण
7	जैनब	सुनैहरा
8	जुहल	श्याम वर्ण
9	मर्रीख़	श्याम वर्ण

✣ ✣ ✣

सिद्धलामा द्वारा रत्न परिचय एवं चयन

लामाओं में एक सिद्ध एवं दिव्य लामा 'लोंबसांग राम्पा' का नाम विश्वभर में प्रसिद्ध है। गुह्य विद्या, निर्वाण, भविष्य दर्शन, दिव्य शक्तियाँ, स्वर विज्ञान, रत्न आदि विषयों पर उन्होंने सात महत्त्वपूर्ण पुस्तकें दी हैं। जिसने भी उनकी एक-आध पुस्तक पढ़ी है, वह उनका प्रेमी हो गया है। लिखा है कि दिव्यता का अकूत भण्डार उनमें समा गया था, उनकी दिव्य दृष्टि (तृतीय नेत्र) चैतन्य हो गयी थी। यदि दिव्य अथवा गुह्य साहित्य में थोड़ी सी भी रुचि है तो उनका साहित्य अवश्य पढ़ें। तृतीय नेत्र 'दी थर्ड आई' में उनकी ज्ञान-दिव्यता का वर्णन है।

उनकी सात अन्य पुस्तकों में से एक है 'विजडम ऑफ दी एन्शीऐन्ट्स'। एक अध्याय में अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर उन्होंने रत्नों के विषय पर भी प्रकाश डाला है। उसका संक्षिप्त विवरण-परिचय पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह वह तथ्य है जो विश्वस्तर पर चर्चित तथा मान्य सिद्ध हुआ है। इन रत्नों में कुछ विदेशी रत्न भी हैं अर्थात वह रत्न जो सम्भवतः भारतवर्ष में उपलब्ध नहीं हैं। सुविधा की दृष्टि से उनके अंग्रेजी नाम दे रहा हूँ ताकि विश्व के किसी भी क्षेत्र में इन नामों से रत्न खोजे जा सकें।

अक़ीक़ (Agate)

अधिकांशतः अक़ीक़ को एक लाल रंग के रत्न के रूप में ही मान्यता मिली है परन्तु वास्तव में अक़ीक़ लाल, हरे, भूरे, सफेद, काले आदि रंगों में भी मिलते हैं। सुदूर पूरब के देशों में लाल अक़ीक़ को मकड़ी, बिच्छु आदि के विष से रक्षा कवच के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह मिथ्या नहीं है। लाल अक़ीक़ से जो विकिरण होता है उससे मकड़ी, बिच्छू आदि घबड़ाकर दूर भागते हैं।

भूरे रंग के अक़ीक़ से जो ऊर्जा निकलती है वह आत्मविश्वास के लिए बहुत उपयोगी है। शत्रु पर विजय तथा महिला मित्रों को आकर्षित करने में इस अक़ीक़ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस उपरत्न को यदि सीने में पैन्डेन्ट के रूप में धारण किया जाए तो यह मनःस्थिति को नियंत्रित रखता है। मानसिक रूप से

विक्षिप्त रोगियों के लिए यह दवाई की तरह कार्य करता है। पेट तथा आँतों के अनेक रोगों में भूरे रंग का अक़ीक़ लाभदायक सिद्ध होता है। मध्य पूरब के देशों में ऐसी मान्यता है कि पेट के अतिरिक्त और भी अनेक शारीरिक व्याधियों से यह रत्न रक्षा करता है।

चीन में जैविक अवशेषों के मिश्रण से युक्त एक विशेष प्रकार का अक़ीक़ पत्थर खेतीहर व्यक्तियों के लिए विशेष आकर्षण रखता है। उनकी मान्यता है कि ऐसा अक़ीक़ धारण करने से उनकी उपज-फसल अच्छी होगी।

2. कहरवा (Amber)

यकृत, गुर्दे अथवा अपच के असहाय रोगों में कहरवा बहुत उपयोगी है। राम्पा लिखते हैं कि कहरवा को आटे की तरह पीसकर शहद के साथ मिलाकर यदि चाट लिया जाय तो बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। परन्तु यह सर्वसुलभ नहीं है क्योंकि वास्तविक कहरवा अत्यधिक मँहगा है।

स्त्रियाँ यदि वाँछित पति पाने में दुर्भाग्यशाली हैं अथवा विवाह के लिए लड़का देखते समय उसे आकर्षित करने में असफल रहती हैं तो एक ज्योतिर्लिंग की आकृति का कहरवा गले में धारण करके लड़के से साक्षात्कार करें। लड़के को रिझाने का यह एक उत्तम साधन सिद्ध हो सकता है।

पश्चिम के देशों में यह प्रायः इसलिए प्रयोग नहीं किया जाता कि इसमें उचित पॉलिश के बिना चमक का अभाव होता है।

कटैला (Amethyst)

कटैला उपरत्न अधिकांशतः बड़े पादरी अँगूठी में इस उद्देश्य से धारण करते हैं ताकि धर्मपरायण, श्रद्धावान, भक्त, पुण्यशील आदि व्यक्ति उसे वहाँ ये चूम सकें। यह विश्वास श्रद्धालुओं में रहता है कि इस प्रकार से बड़े पादरी के हाथ की लगी अँगूठी में कैटेला चूमने से वह निश्चिन्त तथा सन्तुष्ट होंगे। उन्हें शान्ति की प्राप्ति होगी। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कटैला उपरत्न से विघटित होने वाली किरणों के प्रभाव से व्यक्ति को परमशान्ति मिलती है।

सुदूर के पूर्वी देशों में बहुत पहले से ही कटैला को शान्ति प्रदान करने के लिए प्रयोग किया जाता था।

बेरिल (Beryl)

ऐसी मान्यता है कि सन्त थॉमस बेरिल उपरत्न के संरक्षक हैं। लीवर के रोगों में यदि पीले रंग का बेरिल प्रयोग करवाया जाए तो वह रोग के निदान में सहायक सिद्ध होता है। अपच के रोग के लिए भी इसका प्रयोग लाभदायक है।

कार्नेलियन (Carnelian)

अनेक स्थानों में इस उपरत्न को ब्लड स्टोन के नाम से भी जाना जाता है। मस्तिष्क में खून के जमाव को सामान्य करने के लिए यह रत्न उपयोगी है। अर्धपारदर्शी रत्न उत्तम माना जाता है। रोग के निदान में इसका प्रभाव भी अपारदर्शी रत्न की तुलना में अधिक होता है।

केटोचाइटिस (Catochitis)

भूमध्यीय द्वीपों में विशेष रूप से कोर्सिका में पाया जाने वाला यह रत्न वास्तव में अद्वितीय है। इस रत्न का व्यक्ति की त्वचा से विशेष चुम्बकीय प्रभाव होता है। यदि दोनों हाथों को आपस में रगड़कर घर्षण विद्युत उत्पन्न करें और इस रत्न के पास ले जाएँ तो वह त्वचा से ठीक एक चुम्बक की तरह चिपट जाएगा। कोर्सियावासी यह रत्न आत्माओं के दुष्प्रभाव तथा सम्मोहन आदि के प्रभाव से बचाव के लिए करते हैं।

केल्सिडोनी (Chalcedony)

कुछेक पिछड़े हुए देशों में इस रत्न का पाउडर पित्त की थैली के स्टोन निकालने में प्रयुक्त किया जाता है।

क्रिस्टल (Crystal)

क्रिस्टल बॉल उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी है जो इसके द्वारा भविष्य दर्शन की शैली में उत्सुक हैं। सुदूर के पूर्वी देशों में पुजारी पीढ़ी दर पीढ़ी क्रिस्टल के गोले चमकाकर रखते हैं। अन्ततः उस क्रिस्टल में इतनी क्षमता भर दी जाती है कि वह भविष्य दर्शन करने वाले को ईश्वरीय इच्छा से अवगत करा देता है। इस प्रकार के क्रिस्टल का प्रयोग आध्यात्मिक प्रयोजन से भी पुजारियों द्वारा किया जाता रहा है।

हीरा (Diamond)

हीरे के बारे में विश्वास किया जाता है कि यह विष से रक्षा करता है तथ

पागलपन ठीक करता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से हीरा अनेक रोगों का निदान करता है। कोहिनूर हीरे के विषय में एक भारतीय मत के अनुसार परीक्षण की दृष्टि से इसे साधारण पानी में डुबाकर रखा गया तथा एक बीमार व्यक्ति को वह पानी पिलाया गया, चमत्कारी रूप से वह रोगी कुछ ही दिनों में ठीक हो गया।

हीरे को लेकर एक किंवदन्ती यह भी प्रसिद्ध है कि यदि कोई व्यक्ति ऊदबिलाव की खाल से बने कोट में हीरा सिलकर अपनी मनपसन्द किसी महिला के पास जाएगा तो उससे वह वशीभूत होकर अपना पूरा प्रेम उस पर लुटाएगी।

पन्ना (Emrald)

आँखों के रोगों में हरा पन्ना लाभदायक सिद्ध होता है। एक आम धारणा पन्ने की शक्ति को लेकर यह बनी हुई है कि इससे आँखों के रोग पूर्णतया ठीक हो जाते हैं। आँखों की तरह कुदृष्टि के प्रभाव को भी पन्ना दूर करता है। कहते हैं कि गले में धारण किया हुआ पन्ना बुरा चाहने वाले पर ही दुष्प्रभाव दिखाने लगता है।

पूर्वी देशों में ऐसे अनेकानेक उदारहण हैं जहाँ आँखों के अनेक दोषों में पन्ना धारण करने पर रोगी को आराम मिला।

गार्नेट (Garnet)

आज गार्नेट रत्न अधिक चर्चित नहीं है परन्तु एक समय था जब इसे चर्मरोग में अधिक से अधिक उपयोग किया जाता था। मान्यता यह थी कि खतरों से इस रत्न के पहनने वालों की रक्षा होती थी। अँगूठी की तरह उस समय यह थोड़ा सा जड़वाकर हृदय के ऊपर रहे, इस प्रकार गले में पहना जाता था।

रोग से होने वाले अनर्थ की सूचना यह रत्न अपने बदलते हुए रंग-आभा से दे देता था जिससे इस धारण करने वाला दुर्भिक्ष से समय से पूर्व ही चेत जाता था। यूरोप में अनेक लोग आज इसे इस धारणा से धारण करते हैं कि उनके प्रेम एवं प्रणय सम्बन्धों में स्थिरता बनी रहेगी।

जेड (Jade)

जेड रत्न की कल्पना अधिकांशत: मात्र हरे रंग में की गयी है तथापि यह अनेक रंगों में मिलता है यथा पीला, हरे रंग के अनेकों रंग, नीला, आसमानी,

काला आदि। चीन में वर्षों पूर्व यह उपरत्न अलकंरण के रूप में बहुतायत में प्रयोग होता था।

साम्यवादी राज्य से पूर्व चीन में व्यापारी अपने चोगे की लम्बी आस्तीनों में हाथ छुपाए रहते थे। व्यापार की किसी भी गतिविधि से पहले अपनी आस्तीनों में ताली बजाकर छुपाए हुए इस उपरत्न के माध्यम से तिलिस्म करते थे। वह यह पूछते थे कि भावी व्यापार लाभदायक होगा अथवा नहीं। बीमारी के निदान के रूप में यह उपरत्न मूत्र सम्बन्धी अनेक रोगों में लाभदायक है। जलंदर अर्थात जलोदर नामक रोग में भी गुणकारी सिद्ध होता है।

जेट (Jet)

यह एक काला रत्न है इसका शुद्ध नाम है गेगेटिक्स (Gaggitis)। ब्रिटेन के कैल्ट नामक जाति के पुरोहित, पादरी, ऐन्द्रजालिक भविष्यवक्ता आदि यह चाकू के रूप में प्रयोग करते थे। आज भी पश्चिम समुद्र के तटीय क्षेत्र की जनजातियाँ मछली पकड़ने पर जाने से पूर्व इस रत्न को घिसकर आग उत्पन्न करके अपने समुद्र से सुरक्षित लौटने की प्रार्थना करते हैं।

जब दन्त चिकित्सा का श्रीगणेश नहीं हुआ था तब दन्तक्षय, दन्तशूल आदि से छुटकारा पाने के लिए इस रत्न का पाउडर बनाकर प्रभावित भाग में लगाते थे। मान्यता थी कि इस प्रकार से दाँत के अन्य रोग भी ठीक हो जाते थे। सिरदर्द तथा पेट के दर्द के लिए भी यह रत्न लाभदायक है।

लेपिज़ (Lapis Lazuli)

इस रत्न को मेसोपोटामिया सभ्यता काल में अत्यन्त पवित्र तदनुसार पूजनीय माना जाता था। गुह्य विद्या, तिलिस्म आदि तथा अनेक जनजातियों में इसका उपयोग होता था। अपनी सुन्दरता के कारण भी इसे पवित्र माना गया है। रोग निदान क्षेत्र में गर्भपात रोकने के लिए महिलाओं को यह पहनाना लाभदायक सिद्ध होता है।

ऑनेक्स (Onyx)

पूरब के देशों में इसे दुर्भाग्य का रत्न कहते हैं। दुर्भाग्य की आँख किसको किस दृष्टिकोण से देखती है, यह निर्भर करता है व्यक्ति-व्यक्ति पर।

ओपल (Opal)

इस रत्न को भी दुर्भाग्य की श्रेणी में रखा गया है। धुँधला ओपल

आस्ट्रेलिया में गुह्य विद्या विशेषज्ञों द्वारा अनर्थ की भावना से प्रयोग किया जाता है। कुछ लोग इसको विशेष रूप से शुभ रत्न मानते हैं। आँखों के रोग में यह बहुत लाभदायक है। सौभाग्य से यदि काले रंग का ओपल मिल जाए तो समझ लीजिए आपके लिए सौभाग्य का द्वारा खुल गया है। ऐसे ओपल में यदि माणिक्य की तरह किरण भी देखें तो यह आपके लिए सुख-समृद्धि के द्वार खोल देगा। आपकी महत्त्वाकांक्षा पूर्ण करने में यह विशेष रूप से अजूबा सिद्ध होगा।

रूबी (Ruby)

संक्रामक रोगों से रक्षा के लिए यह रत्न बहुत शुभ है। हीरे की तरह अच्छे माणिक्य में भी यह गुण है कि पानी में डुबाकर रखने पर वह पानी रोगी को लाभ पहुँचाता है।

राम्पा जी लिखते हैं कि आँतों के एक रोगी ने माणिक्य निगल लिया और उसे पुनः मुँह से उगल दिया। यह क्रिया वह कई बार दोहराता रहा। उसका कैंसर चमत्कारी रूप से ठीक हो गया।

टच स्टोन (Touch Stone)

जीवन में चहुँदिश सफलता, सुख-समृद्धि तथा मानसिक शान्ति के लिए राम्पा के द्वारा निर्मित यह रत्न चमत्कारी प्रभाव वाला है। यदि अपने अनुरूप गुणों वाला यह रत्न धारण कर लिया जाए तो लाभदायक सिद्ध होता है, यदि रत्न का चुनाव ठीक नहीं हुआ है तो उसे धारण करने वाला चिड़चिड़े स्वभाव का शिकार हो जाएगा।

टरक्वेज (Turquoise)

तिब्बत में यह रत्न बहुत ही सामान्य है। तिब्बत के चार्म बॉक्स (Charm Boxes), ब्रिजा (Turquoise), व्हील (Prayer Wheels) आदि में इस रत्न से अलंकरण के पीछे मान्यता यही होती है कि यह रत्न सौभाग्य का प्रतीक है। तिब्बत में महिलाएँ यह बालों में सजाती हैं। बौद्ध धर्म में यह एक अत्यन्त पवित्र रत्न माना जाता है। यहाँ यह धारणा प्रायः प्रचलित है कि इसके प्रयोग से स्वास्थ्य ठीक रहता है।

लाल किताब एवं रत्न चयन

शकुन तथा टोटकों का श्रीगणेश कब और कैसे हुआ, यह विवादास्पद है। 'पहले अण्डा आया अथवा मुर्गी' की तरह। सम्भवत: सर्वप्रथम जीवात्मा जब अपनी परछाई देखकर डरा होगा तो आत्मरक्षा के उसने उपाय खोजना प्रारम्भ कर दिए होंगे और उसी शृंखला में शकुन और टोटकों का भी प्रारम्भ हो गया होगा अर्थात् जब से व्यक्ति ने डर का अनुभव किया होगा तभी से उससे बचने के लिए क्रम-उपक्रम करने प्रारम्भ कर दिए होंगे।

रहस्यमयी ब्रह्माण्ड से मानव कल्याण के लिए ऋषि एवं महर्षियों के सूक्ष्मज्ञान द्वारा अनेक गुह्य सिद्धान्त प्रतिपादित हुए। काल क्रमानुसार इनमें कुछ कृतिबद्ध हुए, कुछ मौखिक ही चलन में चलते रहे और कुछ लोप हो गए। अरुण संहिता अर्थात् लाल किताब इसी क्रम में एक ऐसी कृति है जो टोटकों तथा उपायों से भरी हुई है। संस्कृत की मूलकृति किसी प्रकार अरब के आद नामक स्थान पर पहुँच गयी, वहाँ इसका अरबी तथा फारसी में अनुवाद हुआ। इस सदी में इसका उर्दू में अनुवाद हुआ। लाल किताब के विषय में अनेक और भी किंवदन्ती प्रचलित हैं। सत्य क्या है, यह तो राम जानें? परन्तु यह सत्य है कि लाल किताब में वर्णित टोटके भाग्य को पढ़ने और अनिष्ट से रक्षा कर पाने के लिए चमत्कारीरूप से प्रभावशाली है। रत्नों द्वारा सौभाग्य प्राप्त करने का भी इसमें वर्णन मिलता है परन्तु वह आधा-अधूरा है। आवश्यकता है इस ज्ञान को समझने की उसमें अधिक विस्तृत खोज करने की, तदनुसार व्यवहार में लाने की ताकि अधिकाधिक रूप से मानव का कल्याण हो।

ज्योतिष शास्त्र की तरह यहाँ भी लग्न कुण्डली बनाई जाती है। लाल किताब में प्रयुक्त जन्मपत्री मूलत: पारम्परिक जन्मकुण्डली ही है। जन्मकुण्डली में ग्रहों को यथास्थान रहने दें, जिन राशियों में वह स्थित हैं उन्हें हटा दीजिए तथा लग्न को 1 (मेष) राशि मानते हुए दूसरे, तीसरे, चौथे आदि बारहों भाव में क्रमश: 2 (वृष), 3 (मिथुन), 4 (कर्क) आदि बारहों राशि 12 (मीन) तक लिख दीजिए। यह कुण्डली लाल किताब का आधार है।

लग्न कुण्डली

लाल किताब की कुण्डली

लग्न कुण्डली में चाहे जो भी लग्न हो लाल किताब के अनुसार यहाँ सदैव मेष राशि ही रहती है। इसी प्रकार क्रमशः दूसरे में वृष, तीसरे में मिथुन आदि मीन तक बारह राशियाँ होती हैं। यह इन घरों की स्थाई राशियाँ हैं।

जो ग्रह शतप्रतिशत शक्तिशाली होते हैं वह उच्च के ग्रह कहे जाते हैं तथा जो ग्रह निर्बल होते हैं वह नीच के ग्रह कहे जाते हैं। कुण्डली में इनमें स्थान भी सुनिश्चित हैं। यह नोट कर लें।

उच्च के ग्रह

नीच के ग्रह

स्व अर्थात स्पष्ट ग्रह

स्पष्ट ग्रह शुभता प्रदान करने में पूर्ण रूप से सहयोगी सिद्ध होते हैं।

ज्योतिषशास्त्र के नियमों की तरह प्रत्येक ग्रह की अपनी दृष्टि विशेष होती है। सूर्य, चन्द्र, गुरु तथा बुध अपने से सातवें भाव को देखते हैं। गुरु, राहु, केतु अपने से पाँचवें, सातवें तथा नवें भाव को देखते हैं। मंगल चौथे, सातवें तथा आठवें भाव को तथा शनि अपने से तीसरे, सातवें तथा दसवें भाव को देखता है। प्रत्येक ग्रह की दृष्टि अपने से सातवें भाव पर अवश्य होती है।

रत्न चयन करने के लिए यह सूक्ष्म परिचय पूर्ण नहीं कहा जा सकता तथापि यह भूमिका विषय को समझने और व्यवहार में लाने की कुंजी अवश्य

सिद्ध हो सकती है। किसी कुण्डली में ग्रह यदि बलवान हैं। लाल किताब की भाषा में कहें तो यदि वह अपने पक्के घरों में स्थित हैं तो उनसे सम्बन्धित रत्न चयन किया जा सकता है। लाल किताब सदैव उच्च अर्थात शतप्रतिशत शक्तिशाली ग्रहों के रत्न धारण करने पर बल देती है। ऐसे योग कुण्डली में खोजना बहुत ही सरल है। परन्तु यदि कुण्डली में शक्तिशाली ग्रह अथवा ग्रहों का अभाव हो तो आप सुप्त ग्रह तथा सुप्त भाव को बलवान बनाने की प्रक्रिया अपनाएँ। यह विधि जितनी सरल है उतनी ही प्रभावशाली सिद्ध होगी। भारत अग्रवाल नामक, गंगा एन्क्लेव, रुड़की स्थित एक व्यक्ति की कुण्डली से रत्न चयन विधि को अधिक स्पष्ट करते हैं ताकि पाठकों को विषय के समझने में अधिक सुविधा रहे।

जन्म समय : 22 सितम्बर 1967, दिन में 3 बजे

स्थान : रुड़की

जन्मकुण्डली

लाल किताब के अनुसार कुण्डली

कुण्डली में चन्द्र ग्रह सर्वाधिक बलशाली है। यहाँ चन्द्र का रत्न अथवा उपरत्न प्रयोग करवाया जा सकता है। परन्तु इसके साथ-साथ सुप्त भाव तथा सुप्त ग्रह को भी बलवान कर लिया जाएगा तो परिणाम अधिक अच्छे होंगे। कुण्डली में सर्वाधिक भाग्यशाली ग्रह उच्चभाग्य का द्योतक है।

भाग्य के लिए सर्वोत्तम ग्रह तदनुसार रत्न-उपरत्न आदि का चयन आप निम्न चार बातों की सहायता से कर सकते हैं—

1. जिस राशि में ग्रह उच्च का होता है और लाल किताब की कुण्डली के अनुसार भी उसी भाव अर्थात राशि में स्थित होता है तो उससे सम्बन्धित रत्न भाग्यरत्न होता है।

2. यदि ग्रह अपने स्थाई भाव में स्थित हो तथा उसका कोई मित्र ग्रह उसके साथ हो अथवा उसको देखता हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न भाग्य रत्न होता है।

3. नौ ग्रहों में से जो ग्रह श्रेष्ठतम भाव में स्थित हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न भाग्य रत्न होता है।

4. कुण्डली के केन्द्र अर्थात 1, 4, 7 तथा 10 वें भाव में बैठा ग्रह भी भाग्यशाली रत्न इंगित करता है।

यदि उक्त भाव रिक्त हों तो नवां, नवां रिक्त हो तो तीसरा, तीसरा रिक्त हो तो ग्यारहवां और ग्यारहवां भाव रिक्त हो तो छठा और यदि छठा भाव भी रिक्त हो तो बारहवें भाव में बैठा ग्रह भाग्यग्रह कहलाता है। इस ग्रह से सम्बन्धित रत्न भी भाग्यरत्न कहलाता है।

जब किसी भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं होती अर्थात वह भाव किसी भी ग्रह द्वारा देखा नहीं जाता हो वह भाव सुप्तभाव कहलाता है। उदाहरण में ऐसे सुप्तभाव पहला तथा सातवाँ है। इन दोनों भावों को कोई भी ग्रह नहीं देख रहा है। इसके लिए यदि इन भावों को चैतन्य कर देने वाले ग्रहों का उपाय किया जाए तो वह भाव चैतन्य हो जाएँगे तथा इन भावों से सम्बन्धित विषय में व्यक्ति को आशातीत लाभ मिलने लगेगा।

सुप्त भाव चैतन्य करने वाले ग्रह

सुप्त भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
कौन सा ग्रह चैतन्य करेगा	मंगल	चन्द्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चन्द्र	शनि	शनि	गुरु	केतु

भारत अपने शारीरिक तथा गृहस्थ जीवन से बुरी तरह से त्रस्त हैं। पाठक ध्यान दें पहला भाव इनका सुप्त है जो कि शरीर तथा स्वास्थ्य का द्योतक है। सातवाँ भाव भी सुप्त है। यह पत्नी, पारिवारिक जीवन आदि का कारक है। उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि पहले भाव को बलवान बनाने के लिए मंगल का तथा सातवें भाव को बलवान करने के लिए शुक्र को बलवान करने की आवश्यकता है। इन ग्रहों से सम्बन्धित रत्न मूंगा तथा हीरा दोनों समस्याओं के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

जब कोई ग्रह किसी अन्य ग्रह को नहीं देखता तो वह ग्रह सुप्त कहलाता है। यहाँ शुक्र तथा मंगल ऐसे ग्रह हैं जो किसी भी ग्रह को नहीं देख रहे हैं इसलिए इनके अधिष्ठित रत्न भाग्यशाली सिद्ध होंगे। पाठक यहाँ एक विचित्र संयोग देखें कि भाव सुप्त तथा ग्रह सुप्त को चैतन्य करने के लिए एक से ही रत्न निकले हैं।

सुप्त ग्रह कब जाग्रत होते हैं अर्थात आयु के किस वर्ष में फल देते हैं इनका विवरण भी लाल किताब में मिलता है। यदि उस वय में खोज किए हुए ग्रह के उस रत्न का प्रयोग किया जाए तो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में यथा उपाय सहायता मिलती है। निम्न सारिणी के रूप में यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

सुप्त ग्रह विवरण सारिणी

सुप्त ग्रह का नाम	किस प्रयोजन में चैतन्य होंगे	किसी आयु में चैतन्य होगा
सूर्य	राजकीय कार्य सम्बन्धी	22 वर्ष के बाद
चन्द्र	शिक्षा सम्बन्धी	24 वर्ष के बाद
मंगल	स्त्री सम्बन्धी	28 वर्ष के बाद
बुध	व्यापार तथा लड़की के विवाह सम्बन्धी	34 वर्ष के बाद
गुरु	व्यापार सम्बन्धी	16 वर्ष के बाद
शुक्र	विवाह के बाद भाग्योदय सम्बन्धी	25 वर्ष के बाद
शनि	भूमि-भवन सम्बन्धी	36 वर्ष के बाद
राहु	ससुराल पक्ष सम्बन्धी	42 वर्ष के बाद
केतु	सन्तान के जन्म सम्बन्धी	48 वर्ष बाद

लाल किताब के आधार पर अनेकानेक ऐसे ही अन्य शोधपूर्ण प्रयोग मैं अलग से लिख रहा हूँ। क्या पता वह कार्य कब पूर्ण हो। परन्तु रत्न विषयक जिज्ञासु स्नेही पाठक वृन्दों के लिए सूत्र तथा उन्हें खोलने की कुंजी अवश्य देकर जा रहा हूँ। अपने बुद्धि-विवेक से इस विद्या को और भी आगे बढ़ाएँ।

+ + +

कीरो का अंकशास्त्र एवं रत्न चयन

भविष्य दर्शन का श्रीगणेश मैंने सर्वप्रथम कीरो की पुस्तक पामिस्ट्री फॉर ऑल से किया था। तब से एकलव्य की तरह उन्हें अपना दिव्य गुरु मानकर इस क्षेत्र में आगे बढा था। आज जबकि रत्न की अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिख रहा हूँ और कीरो का वर्णन न करूँ तो यह क्षम्य नहीं होगा। उन्हीं की परिपाटी को मैंने आदर्श माना है—कम लिखो, अच्छा लिखो। कीरो की एक पुस्तक के आगे हजारों पुस्तकें सूर्य के आगे दीपक की तरह हैं। अंक विज्ञान से कीरो ने व्यक्ति के लिए शुभ रंगों का वर्णन किया है। रंगों के साथ-साथ विभिन्न रत्नों की गणना भी कर दी है।

रत्न चयन की यह विधि विश्वस्तर पर चर्चित तथा मान्य है। व्यक्ति का जन्म यदि रात्रि में बारह बजे के बाद हुआ है तब उस तिथि को परिवर्तित मानें। इस विधि में तिथि परिवर्तन रात्रि बारह बजे से होता है, न कि हिन्दू पद्धति के अनुसार सूर्योदय से। माना किसी का जन्म 25 नवम्बर 1970 की रात्रि में 12 बजकर 5 मिनट पर हुआ है तो उस तिथि को आप 26 नवम्बर मानें। भ्रम दूर करने के लिए इस तिथि को लिखने का उत्तम तरीका है 25/26 नवम्बर 1970।

प्रस्तुत तिथि क्रम प्राथमिक अंक के रूप में है एक से लेकर नौ तक अर्थात जहाँ माना 9 अंक लिखा है तो उसको 18 तथा 27 तिथि में जन्में व्यक्ति के लिए भी समझें। कुछ तिथियाँ दो अंक में हैं। इनको प्राथमिक अंक न बनाएँ। इन्हें दो अक की मात्र एक ही तिथि समझें।

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
माणिक्य	1	9
,, ,,	2	9
,, ,,	3	9, 30
,, ,,	4	1, 2, 5, 8, 27
,, ,,	5	9

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
माणिक्य	6	9
,,	7	9
,,	8	4, 9
,,	9	9
,,	10	9
,,	11	2, 4, 5, 6, 7, 8, 9
,,	12	3, 6, 9
मोती	1	2, 7, 29
,,	2	2, 7
,,	3	2, 7
,,	4	2
,,	5	2, 7, 8
,,	6	2, 3, 7
,,	7	2, 5, 7
,,	8	2, 5, 7
,,	9	2, 6, 7
,,	10	2, 7
,,	11	2, 7
,,	12	2, 7, 8
पन्ना	4	8
,,	5	2, 5, 6, 7, 9
,,	6	6
,,	7	6, 8
औपल	3	2
,,	4	2
,,	5	6
पुखराज	1	1, 4

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
पुखराज	2	1, 4
,,	3	1 ,4
,,	4	1, 4, 8, 9
,,	5	1, 4, 8
,,	6	1
,,	7	1, 2
,,	8	2, 3, 4, 6, 9
,,	9	1, 4
,,	10	1, 2, 4, 6
,,	11	1
,,	12	1, 4
हीरा	1	1, 4, 5
,,	2	1, 4, 5
,,	3	1, 4, 5
,,	4	1, 4, 5, 9
,,	5	1, 4, 5, 9, 30
,,	6	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7,
,,	7	1, 2, 3, 4, 5, 7
,,	3	3, 4, 5, 6, 7, 9
,,	9	1, 3, 4, 5, 6 9
,,	10	1, 4, 5, 6, 9
,,	11	1, 5
,,	12	1, 4, 5
लहसुनिया	1	2
,,	2	2
,,	4	2
,,	5	2, 6

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
लहसुनिया	6	2
,,	7	7
नीलम	1	4, 6
,,	2	1, 4, 8
,,	3	1, 4, 8
,,	4	4, 8
,,	5	4, 8
,,	6	1, 2, 4, 8
,,	7	1, 4
,,	8	2, 3, 4, 6, 8
,,	9	1, 4, 6, 8, 9
,,	10	1, 3
,,	11	1, 3, 4
,,	12	4
अम्बर	1	1
,,	2	1
,,	3	1, 4
,,	4	1, 4, 8, 9
,,	5	1, 4, 8
,,	6	1
,,	7	1, 2
,,	8	2, 3, 6, 7
,,	9	—
,,	10	1, 6
,,	11	1
,,	12	1, 4
काला मोती	1	3, 4

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
काला मोती	2	4, 8
,,	3	8
,,	6	8
,,	7	8
,,	8	8
,,	9	8
,,	10	8
,,	12	8
मरगज	1	2, 7
,,	2	2, 7
,,	3	2, 7
,,	4	2
,,	5	1, 2, 5, 6, 8, 9
,,	6	2, 7
,,	7	2, 5, 9
,,	8	2, 7
,,	9	2, 7
,,	10	2, 7
,,	11	2, 7
,,	12	2, 4, 7
चन्द्रकांत मणि	1	2, 7
,,	2	2, 7
,,	3	2, 7
,,	4	2
,,	5	1, 2, 6, 7, 9
,,	6	2, 5, 27, 28, 30
,,	7	1, 2, 3, 4, 7

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
चन्द्रकांत मणि	8	2, 7
,,	9	2, 7
,,	10	2, 7
,,	11	1, 2, 7
,,	12	2, 7
ब्लड स्टोन	1	9
,,	2	9
,,	3	9
,,	8	9
,,	9	9
,,	10	9
,,	11	4, 5, 6, 8
फिरोज़ा	1	6
,,	4	22, 27
,,	5	1, 2, 3, 5, 7, 8, 9
,,	6	6
,,	7	6
,,	8	6
,,	9	6
,,	10	2, 3, 4, 6, 7, 9
,,	11	3, 6
,,	12	3, 6
सब सफेद एवं चमकदार	1	5
,,	2	5
,,	3	5
,,	4	5
,,	5	5, 9, 28, 29

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
सब सफेदएवं चमकदार	6	1, 2, 3, 4, 5, 6, 9
,,	8	5
,,	9	3, 4, 5, 6, 7
,,	10	5
,,	11	5
,,	12	5, 30
सब गहरे रंग के	8	8
,,	9	8
,,	10	8
,,	11	8
लाजवर्त	5	4
कटैला	1	3
,,	2	3, 6, 7, 9
,,	3	2, 3, 4, 7, 8, 9
,,	5	3, 6
,,	6	3
,,	7	3
,,	8	3
,,	9	3
,,	10	3
,,	11	3
,,	12	1, 2, 3, 5, 6, 9
ब्लड स्टोन एवं सब	2	9
लाल रत्न	4	1, 2, 8, 9
,,	5	9
,,	7	9

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
,,	8	9
,,	9	9
,,	10	9
,,	11	4, 5, 6, 7, 8, 9
,,	12	3, 6, 9
हरे रत्न	5	6
,,	6	8
गार्नेट	1	9
,,	2	9
,,	3	9, 30
,,	4	1, 2, 8, 27
,,	5	9
,,	6	9
,,	7	9
,,	8	9
,,	9	9
,,	10	9
,,	11	4, 5, 6, 7, 8, 9
,,	12	3, 6, 9
काला हीरा	1	3, 8
,,	2	8
,,	3	8
,,	4	8
,,	5	8
,,	6	8
,,	7	8
,,	9	8

रत्न/उपरत्न	माह (अंक)	जन्म तिथि
काला हीरा	10	8
,,	12	8
,,	6	6, 9
,,	7	5
,,	8	7
,,	11	7
,,	12	2
सब आसमानी रत्न	1	6
,,	3	1, 4
,,	4	4
,,	5	2
,,	6	6
,,	7	6
,,	8	6
,,	9	6
,,	10	4
,,	11	3, 6
बैंगनी अथवा पर्पल कलर	1	3
,,	2	3
,,	3	3, 7
,,	5	3
,,	6	30
,,	8	3
,,	10	3
,,	11	3
,,	12	2, 3, 7, 8

अंक विज्ञान को आधार मानकर कीरो द्वारा रत्नों का चुनाव करना एक सरल तथा सफल विधि है। परन्तु यह केवल उनके लिए ही उपयोगी है जिन्हें अपनी जन्म तिथि तथा जन्म मास का पता है। दूसरे इसमें कीरो ने अधिकांशत: मूल्यवान रत्नों को ही प्राथमिकता दी है। अन्य रत्न/उपरत्नों को उन्होंने क्यों महत्ता नहीं दी, इसका कहीं वर्णन नहीं मिलता। मैं समझता हूँ कि कीरो एक भद्र और धनाड्य वर्ग के भविष्यवक्ता अधिक थे। सम्भवत: हीरे, माणिक्य, पुखराज, नीलम आदि का चयन उन्होंने उस एक सीमित वर्ग के लिए ही किया हो।

जो भी है मैं उनकी विधि स बहुत प्रभावित हूँ। आप भी लाभ उठाकर देखें। प्रथम कॉलम में रत्न/उपरत्न का नाम, दूसरे में माह (अंक) तथा तीसरे में आपकी जन्म तिथि दी है। आपको अपना भाग्यशाली रत्न इन सारणियों से चयन करने में कठिनाई नहीं होगी। फिर भी एक उदाहरण दे दूँ जिससे प्रत्येक वर्ग के लिए यह सुलभ हो जाए। मानो आपका जन्म 9 जनवरी को हुआ है। आप देखें प्रारम्भ में जन्मतिथि के नीचे 9 अंकित है। इसके बायीं ओर माह का अंक अर्थात 1 अंकित है। यह रत्न/उपरत्न के नीचे लिखे माणिक्य के सामने आता है। इससे स्पष्ट होता है कि आपका भाग्यशाली रत्न माणिक्य है। ठीक इसी प्रकार अन्य तिथियों तथा मासों के अंक देखकर आप अपना रत्न/उपरत्न उनके अनुसार चुन सकते हैं। कुछ मास के आगे कोई तिथि नहीं दी गयी है। इसका अर्थ यह समझें कि इस तिथि माह में जन्में व्यक्ति कीरो के अनुसार वह रत्न धारण न करें।

यदि आपने किसी विधि से अपना भाग्यशाली रत्न खोज लिया है तो यह विधि आपके लिए अधिक उपयोगी तथा सरल होगी। मान लीजिए आपकी जन्मतिथि 12 अगस्त है और राशि तथा लग्न के आधार पर आपका शुभ रत्न कटैला आता है। उपरत्न कटैला के लिए उसके सामने 3 अगस्त लिखा है। आप देखें कि कटैला रत्न 3, 12, 21 तथा 30 अगस्त में जन्में व्यक्ति के लिए शुभ है। कहने का तात्पर्य यह है कि कीरो की अंक विधि के अनुसार भी कटैला रत्न उपयुक्त है। इसलिए यह रत्न आप निसन्देह धारण कर सकते हैं।

इसके विपरीत जन्मतिथि के आधार पर यदि आप इस विधि के अनुसार

रत्न तलाश रहे हैं तो हो सकता है कि आपकी तिथि के अनुसार आपके लिए दो, तीन अथवा अधिक भाग्यशाली रत्न निकलें। जैसे 12 अगस्त में जन्में व्यक्ति के लिए पुखराज, हीरा, नीलम, अम्बर तथा सारे बैंगनी एवं पर्पल रंग के रत्न और उपरत्न निकलते हैं। यहाँ भ्रम होना स्वाभाविक है तथा रत्न का चुनाव करना दुष्कर। ऐसी स्थिति में आप अपना रत्न चयन करने के लिए राशि, लग्न, जैन पद्धति, के. पी., गोपाल राजू आदि अन्य प्रकार की विधियों का भी सहारा लें। सर्वप्रथम यह देखें कि कोई एक रत्न विशेष क्या अन्य दो-तीन अथवा अधिक विधियों से भी वही निकलता है। माना 3 अगस्त के लिए लग्न राशि तथा के. पी. पद्धति से भी पुखराज रत्न शुभ आता है तब यह रत्न आपके लिए सर्वाधिक भाग्यशाली होगा ही होगा। परन्तु यदि अन्य विधियों का सहारा लेने पर भी रत्नों की संख्या अधिक आती है तो आप उनमें परस्पर मैत्री देखें। परस्पर मित्र रत्न दो-तीन अथवा अधिक की संख्या में भी अँगूठी, पैन्डैन्ट, ब्रेसलेट आदि के रूप में धारण किए जा सकते हैं। यह रत्न आप लग्न यन्त्र अथवा अन्य किसी अपने अनुरूप चुने गए यन्त्र में भी जड़वाकर उपयोग कर सकते हैं।

मैं यह पुनः लिख रहा हूँ कि रत्नों के चयन का शोधपूर्ण मेरा यह अनुभव तदनुसार प्रयोग करवाना रत्नों की अपनी अनुरूप खोज का अन्त नहीं है। यह तो रत्न विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करने का श्रीगणेश है। इसमें अपने बुद्धि-विवेक तथा प्रज्ञाज्ञान का प्रयोग अवश्य कीजिए।

जीवन का निर्धारित चक्र एवं रत्न चयन

कबालिस्ट मानते हैं कि जीवन का प्रत्येक भाग एक ग्रह विशेष के स्वामित्व में रहता है। उस ग्रह की गुण-प्रकृति के अनुसार जीवन की स्वयं के उस भाग विशेष में व्यक्ति का व्यवहार-आचरण रहता है। इस आचरण को रत्न अथवा रंगों के द्वारा अनुरूप दिशा में नियन्त्रित किया जा सकता है।

जीवनचक्र के यह सात भाग प्रत्येक दिन में सात ग्रहों के अनुरूप एक-एक घंटे के अन्तराल से भी प्रभावित होते हैं। प्रत्येक भाग एक होरा कहलाता है जो अंग्रेजी के अक्षर ऑवर से बना है। जीवनशासित ग्रहों के अनुसार भी रत्न चयन किए जाते हैं। यह विषय अलग अध्याय में भी लिख दिया है।

कबालिस्ट ने औसत आयु यहाँ 98 वर्ष की मानी है तथा इस कुल वय को सात भागों में बाँटा है। आयु के इन भिन्न-भिन्न वर्षों में व्यक्ति की प्रवृत्ति, आचरण तदनुसार गतिशीलता निम्न प्रकार से रहती है। वय के इन विभिन्न वर्षों में रत्न अथवा सम्बन्धित रंगों का समावेश भी व्यक्ति के जीवन में करवा दिया जाए तो उसकी क्रियाशीलता निश्चित रूप से बढ़ जाती है। पाठकगण गोपालराजू की रत्न चयन की इस विधि का प्रयोग करें—परिणाम अच्छे मिलेंगे।

आयु से-तक	प्रवृत्ति	आचरणशीलता	सम्बन्धित ग्रह	रत्न-उपरत्न तथा रंग
1-4	संवेदना, चेतना, बोध	बचपन, अस्थिरता	चन्द्र	मोती, चन्द्रकान्त, सफेद अक्रीक, सफेद पुखराज, सफेद मूंगा
4-12	सहजज्ञान,बोधक्षमता, चित्त	ज्ञान, पढ़ाई	बुध	पन्ना,हरा अक्रीक, ओनेक्स, हरी तुरमुली
12-22	उत्तेजना, कामुकता, क्रोध	प्रेम, जीत की इच्छा	शुक्र	हीरा, स्फटिक,- सफे., अक्रीक, ओपल

आयु से-तक	प्रवृत्ति	आचरण शीलता	सम्बन्धित ग्रह	रत्न-उपरत्न तथा रंग
22-41	जीवन शक्ति, प्राण शक्ति	महत्वाकांक्षा, पुरुषत्व	सूर्य	माणिक्य, रतवा, लाल अक्रीक, लाल चन्द्रकान्त
41-56	उत्साह, जिज्ञासा	एकाग्रता, तीव्रता	मंगल	लाल मूंगा, गार्नेट, लाल अक्रीक
56-68	आशा, विस्तार	परिपक्वता, पूर्णता	गुरु	पुखराज, पीला अक्रीक, सुनैला, टाइगर
68-98	विस्तार, आशावादिता, मनन, चिन्तन, ध्यान	ह्रास	शनि	नीलम, कटैला, नीली, लाजवर्त, नीला अक्रीक, काला स्टार

+ + +

परमहंस श्री योगानन्दजी के गुरुदेव सद्‌श्री युक्तेश्वर जी सामान्य प्रयोजन के लिए प्रायः सोने, चाँदी और तांबे का कड़ा लोगों को धारण करवाते थे। परन्तु चमत्कारिक रूप से फल लाभ के लिए वह चांदी और सोने की धातु का कड़ा पहनने पर विशेष बल देते थे।

बनखंडी (हरिद्वार) के प. धर्मानन्द जोशी जी भी विभिन्न भार के कुछ धातुओं के छल्ले अथवा कड़े प्रयोग करवाने के लिए सर्वविख्यात रहे हैं। इस पद्धति को गम्भीरता से यदि आगे बढ़ाने पर कार्य प्रारम्भ किया जाये तो जनहितार्थ यह एक सस्ता, सरलतम और प्रभावशाली कार्य सिद्ध हो सकता है।

हमारे केन्द्र में इस परम्परागत विधि को जीवन्त रखने के लिए कार्य प्रगतिशील है। इस विषय के जिज्ञासु एवं शोध विद्यार्थी कृपया अपने अनुभवों सहित हमें सहयोग दें जिससे कि हमारा कार्य क्षेत्र व्यापक हो सके और यह सस्ती एवं सरलतम विधि सर्वसुलभ हो सके। हमारा लक्ष्य है कि सबका निःस्वार्थ कल्याण हो।

भाग्यांक, विभिन्न आकृतियाँ एवं रत्न चयन

अपना भाग्यांक ज्ञात करके उनके अनुरूप विभिन्न आकृतियाँ चुनकर सुन्दर सी अँगूठी, पैन्डैन्ट आदि बनवाकर रत्नों की तरह आप उनका सुप्रभाव देख सकते हैं। यदि पैन्डैन्ट आदि के लिए धातु तथा रंग भी अपने अनुरूप चुन लिया जाए तो प्रभाव तुलनात्मक रूप से अच्छा होगा। जहाँ जन्मतिथि के अभाव में भाग्यांक निकालना सम्भव न हो वहाँ विवाह की तिथि से भी अपना भाग्यांक निकाला जा सकता है। विवाह की तिथि भी व्यक्ति को एक नए जीवन में प्रवेश करवाती है। यदि अविवाहित हैं तो अपना नामांक निकाल लें और उसको यहाँ अपना भाग्यांक समझें। रत्नों के अभाव में विभिन्न आकृतियों की अँगूठी, टॉप्स, पैन्डैन्ट आदि लड़कियों एवं महिलाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होते हैं। अलंकरण के साथ-साथ उन्हें विभिन्न रत्नों जैसा ही लाभ प्राप्त होगा। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका चुनाव सरल, सर्वसुलभ तथा अनहित से सर्वथा दूर है।

भाग्यांक	अँगूठी पैन्डेंट, ब्रोच आदि की आकृति
1	वृत्ताकार, गोलाकार, लम्बवत, रेखायुक्त, छिद्रयुक्त, स्तम्भाकार
2	घुमावदार आकृतियाँ, फूलदान, कटोराकार, समानान्तर रेखायुक्त युग्माकृतियाँ
3	त्रिकोणाकार, अण्डाकार, त्रिआयामी
4	वर्गाकार, चतुर्भुजाकार, गुणक चिह्न
5	नोकीली तथा परस्पर बिना जुड़ी, संधिकार
6	सुडौल, गोलाकार, मनोहर घुमावदार
7	अर्धचन्द्राकार, हस्तकौशल सुसज्जित घुमावदार, नोकीली, सींघ के आकार वाली
8	सर्पाकार, लहरदार, अंग्रेजी का अक्षर 'S'
9	नोकीली, धारदार, माला, तीर, तलवार, चाकू, अग्नि जिह्वाकार

पाकुआ संख्या एवं रत्न चयन

यदि आपको अपने जन्म का वर्ष पता है तो फैंगशुई पद्धति द्वारा आप अपनी पाकुआ संख्या अर्थात भाग्यशाली अंक भी निकाल सकते हैं। यह विषय यहाँ इसलिए नहीं दे रहा क्योंकि इससे पुस्तक का कलेवर बढ़ जाएगा। यह विस्तृत वृहद् विषय है इसका उल्लेख मैं अपनी फैंगशुई वाली पुस्तक में अलग से कर रहा हूँ।

+ + +

विभिन्न धातुएँ तथा आयुर्वेदिक मत

क्रम	धातु	मत
1.	सोना	हृदय को बल देता है, मिर्गी रोग के लिए गुणकारी तथा शांतिदायक धातु है।
2.	चांदी	इसके वर्क तथा भस्म से हृदय बलवान बनता है।
3.	तांबा	तांबे के पात्र में भोजन करने से जिगर की पीड़ा, तिल्ली आदि रोगों में लाभ पहुँचता है।
4.	लोहा	इसका बुरादा हाथ में बांधने से दुःस्वप्न तथा बुरी मनोवृत्ति से राहत मिलती है। इसका जंग बारीक पीसकर सुरमा बनाकर पलकों पर लगाएँ तो वह गिरती नहीं। लोहे में बुझा पानी पीने से तिल्ली तथा अन्य पेट के रोगों में राहत मिलती है।
5.	शीशा	(नाग) इसका यंत्र पैर पर बांधने से स्वप्नदोष में राहत मिलती है।
6.	कलई	इसका घेरा बनाकर वृक्ष की जड़ में डालने से फल खूब आते हैं तथा फल गिरते भी नहीं हैं। इसका यंत्र कमर में बांधने से कामशक्ति में न्यूनता आती है।
7.	जस्त	इनकी बाली कानों में पहनने से वह कभी पकते नहीं है। जस्ते का छल्ला मोटापा कम करता है।

विभिन्न रंग एवं भाग्यशाली रत्न चयन

जीवन को सुन्दर बनाने के लिए ज्योतिष के नियमों का पालन करने पर शास्त्रों में विशेष रूप से बल दिया गया है। विगत दो-तीन दशकों से शकुन, अंधविश्वास आदि जैसी बातों से अलग बौद्धिक लेखकों ने गुह्यविद्या पर बहुत कुछ दिया है। दुर्भाग्य यह रहा कि वास्तव में उपयोगी विषय वस्तु तो लुप्तप्रायः हो गयी और चलन में रह गयीं घिसी-पिटी अधकचरे ज्ञान वाली अप्रयोगिक बातें। प्रचार, मीडिआ, बैनर, रंग, रूप-सज्जा आदि के माध्यम से बेर तो खूब बिक गए और बिक रहे हैं परन्तु उक्त सब साधनों के अभाव में अँगूर बिक नहीं पाए, न ही बिक रहे हैं और पड़े-पड़े सड़ गए अर्थात लुप्तप्रायः हो गए। अपने साहित्य में मैंने अनवरत प्रयास किया है कि कहीं कोई एक लुप्तप्रायः ऐसा सूत्र किसी के काम आ जाए तो मेरा वर्षों का अध्ययन, स्वाध्याय-मनन तथा शोधपरक प्रयास सार्थक हो जाए।

इधर के वर्षों में जो ज्योतिषीय विवेचन तथा नियम विशेष रूप से प्रतिपादित हुए हैं उनमें कुछेक अंक शास्त्रीय गणनाएँ भी करवायी जाती रहीं जो आयधि सूत्र (Ayadi Formulae) कहलाती हैं, विशेषरूप से मानव कल्याण के लिए उजागर हुई है। इन सूत्रों के अन्तर्गत मुख्यतः चार नियम चलन में हैं—

1. वास्तु पुरुष
2. दिक्पाल
3. ग्रह व्यवस्था
4. अंक शास्त्र

इस अध्याय में केवल रंगों के गुणधर्म तथा उनके द्वारा भाग्यशाली रत्न का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह विषय ग्रह व्यवस्था के अन्तर्गत आता है। नवग्रहों में से प्रत्येक ग्रह किसी न किसी रंग का स्वामी है। उस रंग की अनुपयोगी आपूर्ति हमारे जीवन में किसी न किसी रूप से अराजकता भर देती है और हमारा जीवन दुःखों में बीतने लगता है। रंग मूलतः इस उपयुक्त आपूर्ति को सन्तुलित करते हैं।

रंगों का विज्ञान अद्‌भुत तथा विस्तृत है। उस दुनियाँ की कल्पना करिए जहाँ सब कुछ श्याम-श्वेत होता। रंग-बिरंगी तितलियाँ, फूल, इन्द्रधनुष, प्रकृति की रंगीनी आदि सब कुछ रंगहीन होता। जीवन में क्या कहीं कोई रंग रह जाता? वास्तुकार अथवा फैंगशुई पण्डित क्या रंगों में तथा रंगों से लयबद्धता बनाकर वास्तुजनित दोष दूर कर पाते? कलर थिरेपी से आज विश्वस्तर पर रोग निदान के लिए शोधपरक प्रयास हो रहे हैं, क्या वह सम्भव हो पाते?

मानसिकता का अनुभव रंगों के आधार पर करके क्या मनोरोग विशेषज्ञ रोगी का रोग निदान कर पाते? निरभ्र गगन की नीलिमा यदि रंगहीन होती तो क्या हमें आकर्षित कर पाती? वनों की हरीतिमा, उद्यानों का रंगमयी लुभावनापन, बसन्त की बहार क्या यह सब हमें उत्फुल्ल कर पाता?

हमारे अनेक प्रश्नों तथा सोच से परे रंग, उनका अस्तित्व तथा उनका जीवन पर प्रभाव सत्य अधिक है, इसमें अन्य किसी विपरीत मत का स्थान नहीं है। डॉ. मयंक शाह, निदेशक भूमि हैल्थ सर्विस के अनुसार, ''जीवन के अस्तित्व को बनाने रखने के लिए आक्सीजन, पानी, खाना तथा आवश्यक पदार्थों की तरह रंग भी उतने ही महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक हैं।''

रंगों द्वारा विभिन्न रोगों की चिकित्सा में सब कुछ आधारित है व्यक्ति विशेष के आभामण्डल तथा सूर्य के सात रंगों पर। सूर्य की रश्मियों में सात रंग हैं—बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल। जब यह रश्मियाँ शरीर पर पड़ती हैं तो यह अपने-अपने घटकों में फैल जाती हैं। शरीर के विभिन्न अवयव इन्हें अपनी आवश्यकता के अनुसार तथा अपने कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने में समाहित कर लेते हैं। सुनकर अचम्भा होगा कि शरीर के विभिन्न अवयव, अंग-मस्तिष्क, दिल, गुर्दे, फेफड़े, आँते, यकृत, प्लीहा आदि विभिन्न रंग रखते हैं। मानव शरीर वास्तव में विभिन्न रंगों का एक बड़ा पिण्ड है। रासायनिक पदार्थों से शरीर में सन्तुलन की तरह रंगों से भी सन्तुलन बना हुआ है जो कि स्वस्थ शरीर के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। रंगों की किसी भी स्थिति में हुई कमी अथवा बढ़ोत्तरी शारीरिक विषमता उत्पन्न करने लगती है फलस्वरूप हम रोगी हो जाते अथवा होने लगते हैं। रंगों की आपूर्ति में रत्न-उपरत्नों का उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है जितना कि सूर्य

चिकित्सा, रंग चिकित्सा तथा जल चिकित्सा आदि का है।

थियोगिम्बैल ने अपनी पुस्तक 'हीलिंग विद लाइट एण्ड कलर' में स्पष्ट किया है कि व्यक्ति को रंग शारीरिक, मानसिक तथा भावात्मक कुल तीन प्रकार से प्रभावित करते हैं। उनके सिद्धान्त को आधार मानकर विभिन्न रंगों को बल देने के लिए मैंने उन रंगों से सम्बन्धित रत्न-उपरत्न प्रयोग करवाकर अनेक लोगों पर अच्छा प्रभाव अनुभव किया है।

थियो ने रंगों की तीन प्रकार की प्रकृति दी है उस प्रकृति के अनुरूप ही व्यक्ति का व्यवहार रहता है। रंगों से इनमें सामंजस्य पैदा करके व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है। निम्न सारिणी पाठक ध्यान रखें। रत्नों के चुनाव के समय यदि प्रश्न कुण्डली में रंगों के प्रश्न द्वारा प्रश्नकर्ता अपने अनुरूप रंग पूछता है तो उस व्यक्ति की प्रकृति जानकर रत्न चुनने में और भी अच्छा चयन सामने आएगा।

प्रकृति	रंग
गरम (उत्तेजना)	लाल, नारंगी, पीला
ठण्डे (शान्त)	नीला, बैंगनी, गहरा नीला
मध्यम (सन्तुलित)	हरा

उदाहरण देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाएगा कि व्यक्ति क्या पहनने अथवा किसको पहनने से बचें। माना कोई स्त्री मासिकधर्म की अधिकता से पीड़ित है। रक्त का अत्यधिक प्रवाह उसको उत्तेजना तो दे ही रहा है शारीरिक वेदना से भी वह पीड़ित है। उसके लिए यदि किसी विधि से माणिक्य या अन्य कोई लाल रंग यदि निकलता है तो वह और अधिक उत्तेजना देगा तदनुसार रक्तस्राव बढ़ने की प्रवृत्ति और प्रबल हो जाएगी। इसलिए यहाँ प्रयास करना होगा कि उस महिला के लिए लाल रंग का उपयोग न किया जाए। यदि किसी व्यक्ति में अत्यधिक गुस्सा भरा हुआ है तो उसे भी गरम रंगों का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए। मानसिक तनाव दूर करने के लिए अथवा बच्चों में उत्साहवर्धन के लिए लाल रंग उपयुक्त हो सकता है।

शान्ति चाहने वाले व्यक्ति की पहचान है कि उसे ठण्डे रंग अधिक पसन्द आएंगे। इसके विपरीत उन्हें भी यदि उत्तेजना उत्पन्न करने वाले गरम

रंग प्रयोग करवा दिए जाएंगे तो उनका मन उच्चाट होने लगेगा। जिन व्यक्तियों की सात्विक प्रवृत्ति है उन्हें बासंती, नारंगी रंग अधिक पसन्द होंगे। इसके विपरीत उन्हें यदि काला रंग प्रयोग करवा दिया जाता है तो उनमें कपट, झूठ तथा धोखेबाजी के दुर्गुण उत्पन्न हो सकते हैं। यहाँ प्रयास किया जाएगा कि इन रंगों का चुनाव न हो। किसी भौतिकवादी अथवा धनलोलुप व्यक्ति को यह दो सात्त्विक रंग कभी भी शुभ सिद्ध नहीं होंगे। पीत वर्ण का सम्बन्ध लक्ष्मी तत्त्व से है। लक्ष्मी वैभव की अधिष्ठात्री हैं। इसलिए इस तत्त्व को आकर्षित करने के लिए पीला रंग यहाँ बहुत शुभ सिद्ध होगा। यदि सौभाग्य से इनके लिए पीला रंग धारण करना शुभ निकलता है तब तो सोने पे सुहागा है।

सफेद रंग को ज्ञान, वैराग्य, एकता, समता का प्रतीक माना जाता है। ऐसी प्रवृत्ति वाले लोगों का काला अथवा लाल रंग किसी भी रूप में यदि पहनवा दिया जाएगा तो विपरीत प्रभाव देगा। भले ही वह उनकी राशि, नाम, प्रश्न कुण्डली आदि अनेक विधियों से शुभ निकलता है। यहाँ प्रयास किया जाएगा कि इन रंगों की आवृत्ति न हो।

ज्योतिर्विज्ञान में रंगों के मन तथा शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों को एक मत से स्वीकार किया गया है। मान्यता यह है कि यदि सप्ताह में प्रत्येक दिन ग्रह विशेष से तालमेल बिठाते हुए रंग का चयन कर लिया जाए तदनुसार वह रंग प्रयोग किया जाए तो प्रभु की कृपा अवश्य मिलती है। दिवस विशेष के अधिपति देवता का संरक्षण प्राप्त करने का यह बहुत प्रभावशाली और सस्ता उपाय है। परन्तु प्रत्येक दिन के लिए रंग का निर्धारण करना साधारण कार्य नहीं है। मेरे मित्र डॉ आलोक भारद्वाज तथा राकेश लाम्बा प्रत्येक दिन के रंग के अनुसार यथासम्भव प्रयास करते हैं कि उसी रंग के कपड़े धारण करें। यदि कपड़ा कभी नहीं भी पहन पाते हैं तो कम से कम उस दिन सम्बन्धित रंग का रूमाल अवश्य साथ रखते हैं। सामान्य नियम के अनुसर विघ्न-बाधाओं से उन्हें सर्वथा दूर होना चाहिए, परन्तु ऐसा है नहीं। विगत पाँच वर्षों से मैं उन्हें संकटों और मानसिक तनाव में जूझता हुआ देख रहा हूँ। वास्तव में रंगों का चुनाव कोई प्रज्ञावान सतपुरुष ही कर सकता है। इस प्रकार अपरिपक्व ज्ञान से किया गया रत्न अथवा रंग आदि का चुनाव लाभ के स्थान पर हानि ही देगा।

जब तक यह स्पष्ट न हो जाए कि किस रंग की आपूर्ति आपके लिए आवश्यक है तथा वह आपके मनोभाव आपकी रुचि के अनुकूल भी है तब तक इस दिशा में रत्न अथवा रंग अपनाने की पहल न करें।

रंगों द्वारा मानव कल्याण के लिए विश्वव्यापी प्रयोग किए गए हैं। वैज्ञानिकों, ज्योतिर्विदों, अंकशास्त्रीयों, रंग विशेषज्ञों आदि में कीरो का नाम आदर से लिया जाता है। अंक तथा विभिन्न रंगों में उन्होंने आकर्षण तलाश कर विभिन्न नियम प्रतिपादित किए हैं और जो बौद्धिक वर्ग में मान्य भी हैं। व्यक्ति को यदि अपना अनुकूल रंग मिल जाए। उसको वह रत्न, कपड़े, घर, वाहन आदि के रंग, नित्यप्राय: प्रयोग की जा रही वस्तुओं आदि के रूप में अपना ले तो रंगों की चमत्कारी विधि द्वारा उसको अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं। व्यक्ति को यदि अपनी जन्मतिथि का पता है तो वह उसके अनुसार अपना भाग्यशाली रंग खोज सकता है और इस रंग के अनुरूप रत्न-उपरत्न का चुनाव कर सकता है। व्यक्ति की जन्मतिथि के अनुसार जो भी सहायक रंग बने उस रंग का रत्न-उपरत्न वह धारण कर सकता है, यह सामान्य सा नियम है। पाठकों के लिए कीरो के मतानुसार तिथि तथा उनके पूरक रंग सारिणी के रूप में दे रहा हूँ। आप स्वयं अपना रंग तदनुसार रत्न-उपरत्न चुनकर लाभ उठा सकते हैं। सारिणी में प्रत्येक रंग के आगे माह का अंक दिया है और उसके ठीक सामने वह तिथि है जिसमें कि आपका जन्म हुआ है। जहाँ एक व्यक्ति के लिए एक से अधिक भाग्यशाली रंगों की आवृत्ति हो रही है वहाँ भाग्यशाली रंग के चयन में कठिनाई आएगी तदनुसार अपने अंक का अनुरूप रत्न, उपरत्नादि भी उन्हें नहीं मिल पाएगा। ऐसे में गणना करें कि अपनी तिथि के अनुसार कौन सा रत्न-उपरत्न आपके लिए शुभ सिद्ध हो रहा है। इसके लिए कीरो की रत्न चयन विधि अलग से भी सारिणी के रूप में दे रहा हूँ। उस रत्न-उपरत्न के रंग के अनुसार भी आप नियम पालन कर सकते हैं। परन्तु यहाँ भी अनेक बार यह कठिनाई आएगी कि एक तिथि के लिए एक से अधिक रत्न भी हो सकते हैं। ऐसे में विभिन्न रत्न-उपरत्नों के युग्मों के चयन आप उनसे सम्बन्धित ग्रह के मित्रवत व्यवहार के अनुसार कर सकते हैं इसे आगे चलकर उदाहरण के रूप में भी प्रस्तुत कर दिया गया है ताकि

पाठकों को वास्तव में अनुरूप रत्नादि चुनने में कठिनाई न आए।

जन्मतिथि में अधिकांशतः प्राथमिक अंक ही लिखे जा रहे हैं। उदाहरण के लिए समझ लें कि जहाँ प्राथमिक अंक माना 1 लिखा है तो उसका अनुरूप रंग 10, 19, 28 तिथियों में जन्म लेने वालों के लिए भी वही होगा। कुछ ऐसे अंक भी लिखें हैं जो प्राथमिक नहीं हैं उन्हें वही अंक मानें उनका प्राथमिक अंक नहीं बनता है, जैसे 30 तिथि को 30 ही समझें 3+0=3 नहीं।

रंग	माह (अंक)	जन्म तिथि
गुलाबी	1	9
	2	9
	3	9, 29, 30
	4	2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	6	9
	7	7, 27
	8	9
	9	9
	10	9
	11	3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	12	3, 6, 9
सुनैहरा-भूरा Golden Brown	1	1
	3	1, 4
	4	4, 8
	5	1, 8
	6	1
	7	1, 2, 7, 9, 29
	8	1, 6, 9
	9	4
	10	1, 6
	11	1
	12	1, 4

गहरा लाल रंग Crimson	1	9
	2	9
	3	9, 29, 30
	4	2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	6	9
	7	7, 27
	9	9
	10	9
	11	3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	12	3, 6, 9
नीला+लाल=बैंगनी Violet Purple	2	3, 9, 24, 25
	3	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	4	6
	5	3, 5
	6	3
	7	3
	8	3
	10	3
	11	3
	12	1, 2, 3, 4, 5, 6
चमकीला किन्तु हल्का बैंगनी Mauve	1	3
	2	3, 9, 24, 25
	3	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	4	3
	5	3, 6
	6	3
	8	3
	9	3
	10	3
	11	3
	12	1, 3, 4, 5, 6

सलेटी, धुँधला, राख अथवा जस्ते के रंग वाला Greys	1	4, 8
	2	1, 4
	3	1, 4
	4	2, 4
	6	1, 4
	8	1, 2
	9	2
	10	1
दूधिया-पीलापन लिए सफेदी Cream	1	2, 7
	2	2, 7
	3	2, 7
	4	7
	5	1, 2, 5, 6, 7, 8
	6	2, 7
	7	1, 5, 6, 7
	8	1
	9	6, 7
	10	7
	11	1, 2, 5, 7
	12	2, 7
फौलाद का सा नीला रंग Pastels Colours	1	4, 7
	2	4, 7
	8	7
	9	2
	10	2, 7
	11	2, 7
	12	7
लाल Red	1	9
	2	9
	3	9, 29, 30
	4	2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	6	9

	7	7, 27
	9	9
	10	9
	11	3, 4, 5, 6, 7, 9
	12	3, 6, 9
काँसे के रंग का Bronze Colours	1	1
	3	1, 4, 8, 9
	5	1
	7	4
	8	4
	9	4
	11	1
	12	1
गहरा भूरा-मटमैला Dove Grey	1	1, 2, 7
	2	2, 7
	3	2, 7
	4	7
	5	2, 7
	6	2, 7
	7	1, 2, 3, 5, 6, 7
	8	7
	9	7
	10	2, 7
	11	1, 2, 7
	12	2, 7
नीला	1	1, 4, 6, 8
	2	2, 4, 6, 8
	3	1, 4, 6
	4	3, 6, 8, 27
	5	1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 16
	6	6
	7	1, 4, 6

	8	1, 3, 4, 6, 7, 8
	9	1, 2, 4, 6
	10	1, 2, 3, 4, 6, 7, 9
	11	1, 6
	12	3
पीला	1	1, 4
	2	1, 4
	3	1, 4
	4	4, 8, 9
	5	4, 8
	7	1, 2, 4, 7, 27
	8	1, 2, 3, 4, 6, 7, 9
	9	1, 4
	10	1, 4, 6
	11	1
	12	1, 4
हल्के रंग	2	5
	3	5
	4	5
	5	5
	6	2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
	7	5
	8	5
	9	1, 3, 5, 9
	10	5
	11	8
गहरे रंग	2	8
	3	8
	8	8
	9	8
	12	8

पीला-हरा	1	2
	2	2
	3	2
	6	2,8
	7	5
	9	7

सुनैहरा	1	1, 4
	2	1, 4
	3	1, 4
	4	4, 9
	5	1, 4, 8
	6	1
	7	1, 2, 4, 7, 29
	8	1, 2, 3, 4, 6, 9
	9	1, 4
	10	4, 6
	11	1
	12	1, 4

सफेद	1	2, 5, 7
	2	2, 5, 7
	4	2, 7
	5	1, 2, 5, 6, 7, 8
	6	2, 7, 27
	7	1, 5, 6, 7
	8	1
	9	6, 7
	10	7
	11	1, 2, 5, 7
	12	2, 7

बैंगनी	1	3, 8
	2	3, 9, 24, 25
	3	1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8
	4	3
	5	3, 5
	7	3
	8	3
	9	3
	10	3
	11	3
	12	1, 3, 4, 5, 6
हरा	1	7
	2	7
	3	7
	4	2, 7
	5	1, 2, 5, 6, 7
	6	2, 7, 27, 28, 30
	7	1, 6, 7
	8	1, 7
	9	2
	10	7
	11	1, 2, 7
	12	2
	1	8
काला	8	8

रंग का अद्‌भुत विज्ञान सात रंगों के रंग पर आधारित है। सूर्य की रश्मियों में सात रंग हैं। परन्तु कुछ विद्वान और वास्तुविद् छः रंगों के अस्तित्व को मानते हैं—श्वेत, लाल, पीला, हरा, नीला तथा काला। कुल रंग सात माने जाएँ अथवा छः या नौ, वस्तुतः यह उक्त छः रंगों के मेल-मिलाप का ही परिणाम हैं। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि रंगों के इस मेल-मिलाप से दस लाख विभिन्न रंग बनाए जा सकते हैं। परन्तु इनमें से हम केवल 378 रंग ही देख पाते हैं। अपने दैनिक जीवन में नवरस तथा नवरंगों का अनोखा सम्बन्ध हम देखते रहते हैं। यह हमारे मनोभाव के द्योतक है। विडम्बना यही है कि अपरिपक्व ज्ञान के कारण रंगों के इन संयोगों का अपने जीवन में हम ठीक-ठीक ताल-मेल नहीं बैठा पाते। यदि रंग-रत्न विज्ञान का पूरा-पूरा लाभ लेना है तो अनुरूप रत्न-उपरत्न रंग आदि चयन करने के लिए व्यक्ति की प्रकृत्ति, मनोभाव तथा पसन्द का भी अवश्य ध्यान रखें। चुनाव से पूर्व यह अवश्य अध्ययन करें कि उसका मन किस रस में डूबा है। यह सामान्य सा नियम है, जिस रंग का वह चुनाव करेगा, उस रस का ही वह प्रेमी होगा। रस का चुनाव एक बार कर लेने के बाद सरलता हो जाएगी कि रत्न भी वही चुनें जो उस रस का द्योतक हो। रंग कौन-कौन से नौ रस दर्शाता है यह निम्न से स्पष्ट हो जाएगा।

क्रमांक	रस	रंग
1.	शृंगार (Erotica)	श्याम
2.	हास्य (Laufter)	श्वेत
3.	करुण (Pathatic)	मटमैला
4.	रौद्र (Furious)	लाल
5.	वीर (Heroic)	लाल, नीला
6.	वीभत्स (Repulsive)	नीला
7.	दैवी (Supernatural)	पीला
8.	प्रेम (Love)	गुलाबी
9.	दया (Emotion)	मटमैला

भाव-रस-रंग तदनुसार रत्न-उपरत्न का चुनाव कर सबमें परस्पर लयबद्धता बनाकर लिया गया निर्णय हमें सटीक परिणाम देगा, यह मानकर

चलिए। सात रंगों के प्रकम्पन्न सात पदार्थों—ठोस, द्रव, गैस तथा पदार्थ की चार अवस्थाएँ वस्तुत: 'ईथर' के ही हैं। इन्हीं से ही ग्रह-नक्षत्रों का निर्माण हुआ और इन्हीं से ही मनुष्य की मन:स्थिति, मनोभाव का संचालन हुआ। सूर्य के सात रंगों की तरह अन्य ग्रहों के रंग का अपना-अपना प्रभाव है जिसे हम अपने तथा अपने आसपास के वातावरण को अनुकूल बनाने का उपक्रम करते हैं।

रंगों तथा विभिन्न रंगों के रत्न-उपरत्नों के गुणधर्म का सबसे अच्छा उपयोग आज वैकल्पिक चिकित्सा में किया जा रहा है। जैसा कि ऊपर लिखा है कि रंगों का सम्बन्ध भावना से है और बीमारी के विषय में कहा गया है कि वह मस्तिष्क में उत्पन्न होती है तथा शरीर में पलती है अर्थात बीमारी मूलत: भाव प्रधान है। रंगों तथा रंग-बिरंगे रत्नों का सीधा प्रभाव हमारे पंचकोषों एवं षट्चक्रों के रंगों पर भी पड़ता है, जो हमारे समस्त शरीर तन्त्र के संचालक हैं। रंगों के प्रभावी गुण के कारण ही रंग चिकित्सा का चलन हुआ। इस चिकित्सा में शारीरिक तथा मानसिक रुग्णता दूर करने का उपक्रम-साधन रंग है। रत्न के पीछे प्रभाव का मूल कारण रंग ही हैं। इसीलिए विभिन्न रंगों के निदान में रत्नों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विज्ञान भी स्वीकार करता है कि अल्ट्रावायलेट किरण (परावैंगनी) मन, मस्तिष्क तथा शरीर के हारमोन्स तथा एन्जाइम्स को प्रभाविक करने का गुण रखती है। यह जीवनशक्ति को बढ़ाने में अत्यन्त उपयोगी है।

ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों तथा विभिन्न रंगों के तारतम्य को जोड़ने पर बल दिया जाता है क्योंकि इनमें हुआ असन्तुलन ही मूलत: बीमारियों का कारण है। वैसे तो रंग तथा विभिन्न बिमारियों पर उनका भाँति-भाँति से किया गया उपयोग 'फोटो मैडिसन' विषय के अन्तर्गत आता है और जो विश्वभर में चर्चित तथा चलन में भी है परन्तु इन सबमें सस्ता तथा सरल-सुगम उपाय रंगों का चुनाव ही है। कुछ बीमारियों के लिए लाभदायक रंग लिख रहा हूँ उनका उपयोग अपने कपड़ों आदि के लिए करके उपयुक्त मात्रा में इनका समावेश अपने शरीर में करवा सकते हैं।

बैंगनी रंग (Violet)

इसका सीधा प्रभाव दमा और अनिद्रा के रोगी पर पड़ता है। अर्थराइटिस, गाउट्स, औडिमा, हिस्टीरिया तथा प्रत्येक प्रकार के दर्द में यह सहायक है। जहाँ मच्छरों का अधिक प्रकोप होता है तदनुसार बीमारियाँ फैलती हैं वहाँ बैंगनी रंग बहुत सहायक सिद्ध होता है। इसका सीधा प्रभाव शरीर में पौटेशियम की न्यूनता को दूर करता है। यह रंग बालों के रोगों में सहायक है। गंजेपन तथा नपुंसकता को यह दूर करता है। लाल रंग नीले रंग के संयोग से बनने वाला यह रंग फेफड़े के रोगों में लाभदायक है। यह रंग भावुकता का प्रतीक है। भावुक व्यक्ति इस रंग को अधिक पसन्द करते हैं। यदि भावुक व्यक्ति में इस रंग की अधिकता हो जाती है तो वह उन्माद के शिकार होने लगते हैं। यहाँ यह विशेष रूप से ध्यान रखना पड़ेगा कि डिप्रैशन के ऐसे रोगियों को बैंगनी रंग के रत्न पहनवाएँ अथवा नहीं। इस रंग से मन में व्याप्त असन्तोष आदि जैसे भावों को सहजता से जीता जा सकता है। गर्भवती महिलाओं में इस रंग का विशेष लगाव होता है। यदि यहाँ बैंगनी रंग प्रयोग करवाया जाता है तो भावात्मक रूप से ऐसी महिलाएँ अपने को सुरक्षित अनुभव करने लगेंगी।

यदि हीरा, जिरकन अथवा अन्य सफेद रंग के तराशे हुए चमकीले रत्न यहाँ प्रयोग करवाए जाएँ तो लाभ होगा।

आसमानी रंग (Blue)

यह रंग रक्त में ऑक्सीजन की कमी दर्शाता है। इस रंग की प्रकृति शीतल, शान्तिदायक तथा कीटाणुनाशक होती है। यह पित्तजनक अथवा गर्मी के प्रकोप के कारण उत्पन्न हुए रोगों में बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। यह मानसिक तनाव दूर करता है। स्नायुतन्त्र का पोषक तत्त्व नीला रंग है। हाथ पैर, जलघात, वीर्य आदि रोगों में जलन, तेज ज्वर, हैजा, अतिसार, घबराहट, सिरदर्द, अनिद्रा, उक्त रक्तचाप, मासिकधर्म की अधिकता आदि में यह रंग पर्याप्त लाभ देता है। बालों के रोग, गर्दन, मुँह, मस्तिष्क एवं सिर सम्बन्धी रोगों में इसका उपयोग सन्तोषजनक परिणाम देता है। इस रंग की अधिकता से कब्ज, प्रमेह, पसलियों में दर्द तथा फेफड़ों के रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इस रंग की न्यूनता से उत्तेजना, क्रोध बढ़ने लगता है। बाल असमय में गिरने लगते हैं।

त्वचा रोग तथा शरीर में जलन-सी अनुभव होती है तथा मूत्र प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लगता है। व्यक्ति में विश्वास, सद्भावना तथा सहयोग की वृत्ति में कमी आने लगती है। नेत्र के रोग, पेट का कैंसर, स्त्रियों में गुप्त रोगों में यह रंग संजीवन के स्थिर मूल्यों का प्रतिपादन करता है। विचारों तथा भावनाओं का अच्छा सम्बन्ध एवं विकास उत्पन्न होता है। यदि उचित रंग का पुखराज, सुनैला, चन्द्रमणि अथवा कोई अन्य पीले रंग का उपरत्न चुन लिया जाए तो उपरोक्त शारीरिक विकारों में न्यूनता लाई जा सकती है।

लाल रंग (Red)

यह रंग नाड़ी तथा हृदय को गति पहुँचाता है। स्वैच्छिक मांसपेशियों तथा जननेन्द्रियों पर इस रंग का आधिपत्य है। रक्त की कमी तथा जिगर की बीमारियों में यह रंग उपयोगी सिद्ध होता है। व्यक्ति की अत्यधिक लालिमायुक्त त्वचा दर्शाती है कि ऑक्सीजन का विशाक्त प्रवाह शरीर पर होने लगा है। यह सर्दी से हुए रोगों में उष्णता देता है। चर्म रोगों में, शारीरिक दुर्बलता में, हृदय सम्बन्धी विकारों में यह रंग उपयोगी है। यह मानसिक ऊर्जा में बढ़ोत्तरी करता है। इस रंग की प्रकृति गरम है यदि मासिकधर्म के दिनों में किसी महिला का रक्तस्राव सामान्य नहीं है तो इन दिनों वह यदि लाल रत्न-उपरत्न धारण किए है तो उतार दें। यहाँ तक कि इन दिनों वह कोई लाल रंग के वस्त्र भी न धारण करें।

लाल रंग भूख बढ़ाता है। किसी रोगी अथवा खाने से जी चुराने वाले बच्चे को यह रंग अथवा लाल रंग-उपरत्न आदि प्रयोग करवाया जाए तो उसे लाभ देगा। सर्दी, जुकाम, रक्तचाप तथा गले के रोगों में यह रंग लाभदायक है। आँखों के रोगों के लिए यह रंग उपयोगी सिद्ध होता है।

माणिक्य अथवा लाल रंग के अन्य उपरत्न उक्त रोगों में लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

नारंगी रंग (Orange)

यह रंग गर्म तथा उत्तेजक है। कफजन्य अथवा सर्दी के रोगों में लाभदायक है। यह शरीर में आयोडीन की कमी की आपूर्ति करता है। यह रक्त की कमी (हीमोग्लोबिन) को दूर करता है। माँसपेशियों को स्वस्थ रखता है इसलिए चेहरे पर जल्दी झाँई-झुर्रियाँ नहीं आने देता। जिगर, गुर्दे, आँत, मूत्राशय,

नेत्ररोग, दृष्टिदोष, प्रदर, रक्तस्राव आदि में लाभदायक है। महिलाओं के अनियमित मासिकधर्म में, बच्चों के बिस्तर गीला करने की आदत में, बालों के रोग में, मोटापे में तथा एलर्जी आदि में यह रंग बहुत उपयोगी है। इस रंग की अधिकता से उल्टी, दस्त, मरोड़, होठों में खुश्की, प्यास की अधिकता, भूख की कमी, नाखूनों का नीला हो जाना आदि लक्षण परिलक्षित होने लगते हैं। इस रंग का अधिपति रत्न मोती है।

हरा रंग (Green)

बौद्धिक क्षमताओं को सक्रिय करके यह रंग मानसिक शान्ति प्रदान करता है। हाँलाकि इस रंग का सम्बन्ध शक, ईर्ष्या-द्वेष एवं क्रियाशीलता से भी जोड़ा जाता है। यदि यह मटमैला हो तो विचारों में कलुषता भर देता है। इसीलिए इस रंग को द्वैत रंग—दो विचारों वाला रंग कहते हैं। इस रंग की कमी शारीरिक दुर्बलता, उद्विग्नता एवं अशान्ति बढ़ाती है। ऐसे व्यक्ति मनोविकार तथा हीनभावना के शिकार होते हैं। गैस्ट्रिक अल्सर तथा पाचनतंत्र सम्बन्धी रोग सम्भावित रहते हैं। यह रंग छूत/संक्रामक रोग, चर्मरोग तथा रक्तों के रोग दूर करने में सक्षम है। कब्ज, उच्चरक्तचाप, दिल की धड़कन का बढ़ जाना, नेत्र रोग, गुर्दे, त्वचा, मूत्राशय में रोग आदि पर अपना विशेष प्रभाव दिखाता है। इस रंग का अधिपति रत्न पन्ना है।

पीला रंग (Yellow)

सिर दर्द, हड्डियों के रोग, पागलपन के दौरे, यकृत के लगभग समस्त रोगों में लाभदायक सिद्ध होता है। यह रंग वीरता का प्रतीक है। महिलाओं के अनेक रोगों में यह रंग प्रभावशाली सिद्ध होता है। त्वचा में उत्पन्न V+6 की कमी को दूर करने में यह रंग सक्षम माना गया है। यह रंग गरम स्वभाव का होने के कारण उत्तेजना पैदा करता है। इसलिए इसकी अधिकता उत्तेजना से जनित रोगों को जन्म देती है। इस रंग का अधिपति रत्न मूंगा है।

सफेद रंग (White)

यह रंग शान्ति, सादगी तथा उच्च विचारों का प्रतीक है। यह रंग सर्दी-जुकाम में लाभदायक है। मानसिक तनाव, स्त्रियों के अनेक रोगों में यह उपयोगी सिद्ध होता है।

नीला रंग (Indigo)

मुख रोग, गले के रोग, जलघात, वीर्य सम्बन्धी रोगों में यह रंग लाभदायक सिद्ध होता है।

रंग चिकित्सा में विभिन्न रत्नों का विशेष रूप से योगदान है। अनेक चिकित्सक वर्ग के उन लोगों से मेरी चर्चा हुई है जो ज्योतिष, रत्न, रंगादि को भी अपनी चिकित्सा पद्धति में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। विश्वस्तर पर इन्द्रधनुष के सात रंग, उनकी मानव शरीर में हुई कमी अथवा अधिकता से पनपे रोग तथा उनके तदनुसार निदान हेतु रत्नों का क्रम उल्लेखनीय है। पाठक रोगानुसार इनका अनुसरण कर लाभ उठाएं।

क्रम	रंग	रत्न चिकित्सा में प्रतिनिधि रत्न
1.	लाल (Red)	माणिक्य अथवा उसका उपरत्न
2.	पीला (Yellow)	मूंगा अथवा उसका उपरत्न
3.	हरा (Green)	पन्ना अथवा उसका उपरत्न
4.	बैंगनी (Violet)	नीलम अथवा उसका उपरत्न
5.	नीला (Indigo)	हीरा अथवा उसका उपरत्न
6.	नारंगी (Orange)	मोती अथवा उसका उपरत्न
7.	आसमानी (Blue)	पुखराज अथवा उसका उपरत्न

यह रत्न अनेक वर्णों के हो सकते हैं। यह विविधता रत्न चयन में प्रायः बाधक बनती है। भाग्यशाली रंग मिल भी जाए इसीलिए तब भी शुभ रत्न चयन नहीं हो पाता। यह समस्या कुछ हद तक दूर करने का प्रयास कर रहा हूँ। किस वर्ण के कौन-कौन रत्न-उपरत्न हो सकते हैं, इसके लिए निम्न सारिणी लाभदायक सिद्ध होगी।

रंग/वर्ण	सम्बन्धित रत्न/उपरत्न
1. लाल	लाल मूंगा, गोमेद, तामड़ा, माणिक्य
2. पीला	पुखराज, गोमेद, बैरुज, मोती, हीरा
3. हरा	पन्ना, फिरोजा, पैरिडौट, मैलेकाइट, स्पीडोट
4. नीला	नीलम, नीली, बैरुज, फिरोजा, गोमेद, नीलवर्ण पुखराज
5. बैंगनी	एक्सोलाइट, तामड़ा, कटैला

6. काला	स्फटिक, हीमेटाइट, काला अक़ीक़
7. सुरमई	मोती, स्फटिक, लहसुनिया, अक़ीक़, स्पाइनल
8. भूरा	गोमेद, हीरा, मोती, हेलोलाइट
9. सफेद	स्फटिक, मोती, अम्बर
10. गुलाबी	पुखराज, स्पाइनल, बैरुज़
11. नारंगी	गोमेद, स्पाइनल, फ्लोराइट
12. रंगहीन	चन्द्रकांत, गोमेद, स्फटिक, पुखराज, हीरा, पैरीडॉट

+ + +

रत्नों के लिए टैस्ट हाउस

यदि मँहगें रत्न क्रय किए जाएँ तो उनकी सत्यता की परख करवाने की समस्या सामने आती है। इसके लिए बड़े शहरों में कुछ टैस्ट हाउस उपलब्ध हैं। रत्न की वास्तविकता का प्रमाण पत्र वहाँ से मात्र कुछ रूपयों में लिया जा सकता है। यह प्रमाण पत्र विश्वसनीय तथा रत्न जगत में मान्य है। आपका रत्न बदल न जाए इसके लिए उनके फोटो भी साथ लगा दिए जाते हैं। कुछ ऐसे ही स्थानों के पते लिख रहा हूँ, आप सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

1. इन्डियन जेमोलोजिकल इन्स्टीट्यूट
   एफ-32, झंडेवालान,
   रानी झांसी रोड, नई दिल्ली
2. जेम टेस्टिंग लेबोरेट्री
   राजस्थान चैम्बर भवन
   एम.आई.जी. रोड, जयपुर
3. नेचुरल जेम्स
   सी-4, जुहू एपार्टमैन्ट (भूमि तल)
   लीडो सिनेमा के पीछे, जुहू तारा रोड,
   शांताक्रूज (प.), मम्बई

नीला रंग (Indigo)

मुख रोग, गले के रोग, जलघात, वीर्य सम्बन्धी रोगों में यह रंग लाभदायक सिद्ध होता है।

रंग चिकित्सा में विभिन्न रत्नों का विशेष रूप से योगदान है। अनेक चिकित्सक वर्ग के उन लोगों से मेरी चर्चा हुई है जो ज्योतिष, रत्न, रंगादि को भी अपनी चिकित्सा पद्धति में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। विश्वस्तर पर इन्द्रधनुष के सात रंग, उनकी मानव शरीर में हुई कमी अथवा अधिकता से पनपे रोग तथा उनके तदनुसार निदान हेतु रत्नों का क्रम उल्लेखनीय है। पाठक रोगानुसार इनका अनुसरण कर लाभ उठाएं।

क्रम	रंग	रत्न चिकित्सा में प्रतिनिधि रत्न
1.	लाल (Red)	माणिक्य अथवा उसका उपरत्न
2.	पीला (Yellow)	मूंगा अथवा उसका उपरत्न
3.	हरा (Green)	पन्ना अथवा उसका उपरत्न
4.	बैंगनी (Violet)	नीलम अथवा उसका उपरत्न
5.	नीला (Indigo)	हीरा अथवा उसका उपरत्न
6.	नारंगी (Orange)	मोती अथवा उसका उपरत्न
7.	आसमानी (Blue)	पुखराज अथवा उसका उपरत्न

यह रत्न अनेक वर्णों के हो सकते हैं। यह विविधता रत्न चयन में प्रायः बाधक बनती है। भाग्यशाली रंग मिल भी जाए इसीलिए तब भी शुभ रत्न चयन नहीं हो पाता। यह समस्या कुछ हद तक दूर करने का प्रयास कर रहा हूँ। किस वर्ण के कौन-कौन रत्न-उपरत्न हो सकते हैं, इसके लिए निम्न सारिणी लाभदायक सिद्ध होगी।

रंग/वर्ण	सम्बन्धित रत्न/उपरत्न
1. लाल	लाल मूंगा, गोमेद, तामड़ा, माणिक्य
2. पीला	पुखराज, गोमेद, बैरुज, मोती, हीरा
3. हरा	पन्ना, फिरोजा, पैरिडौट, मैलेकाइट, स्पीडोट
4. नीला	नीलम, नीली, बैरुज, फिरोजा, गोमेद, नीलवर्ण पुखराज
5. बैंगनी	एक्सोलाइट, तामड़ा, कटैला

6. काला	स्फटिक, हीमेटाइट, काला अक्रीक
7. सुरमई	मोती, स्फटिक, लहसुनिया, अक्रीक, स्पाइनल
8. भूरा	गोमेद, हीरा, मोती, हेलोलाइट
9. सफेद	स्फटिक, मोती, अम्बर
10. गुलाबी	पुखराज, स्पाइनल, बैरुज
11. नारंगी	गोमेद, स्पाइनल, फ्लोराइट
12. रंगहीन	चन्द्रकांत, गोमेद, स्फटिक, पुखराज, हीरा, पैरीडॉट

+ + +

रत्नों के लिए टैस्ट हाउस

यदि मँहगें रत्न क्रय किए जाएँ तो उनकी सत्यता की परख करवाने की समस्या सामने आती है। इसके लिए बड़े शहरों में कुछ टैस्ट हाउस उपलब्ध हैं। रत्न की वास्तविकता का प्रमाण पत्र वहाँ से मात्र कुछ रूपयों में लिया जा सकता है। यह प्रमाण पत्र विश्वसनीय तथा रत्न जगत में मान्य है। आपका रत्न बदल न जाए इसके लिए उनके फोटो भी साथ लगा दिए जाते हैं। कुछ ऐसे ही स्थानों के पते लिख रहा हूँ, आप सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

1. इन्डियन जेमोलोजिकल इन्स्टीट्यूट
   एफ-32, झंडेवालान,
   रानी झांसी रोड, नई दिल्ली
2. जेम टेस्टिंग लेबोरेट्री
   राजस्थान चैम्बर भवन
   एम.आई.जी. रोड, जयपुर
3. नेचुरल जेम्स
   सी-4, जुहू एपार्टमैन्ट (भूमि तल)
   लीडो सिनेमा के पीछे, जुहू तारा रोड,
   शांताक्रूज (प.), मम्बई

नियंत्रक अंक एवं भाग्यशाली रत्न चयन

जन्मतिथि के अनुसार गणना किया गया व्यक्ति का भाग्यशाली नियंत्रक अंक, भाग्यांक, मूलांक, जन्मांक आदि व्यक्ति को चमत्कारिक रूप से प्रभावित करता है, इसमें लेशमात्र भी मिथ्या, भ्रम तथा संशय नहीं है। अंकों का यह सद्धान्त विश्वस्तर पर मान्य है। आवश्यकता केवल उस भाग्यशाली अंक को खोजने की है। अंकशास्त्र के अन्तर्गत भाग्यशाली अंक की खोज करके तदनुसार शुभाशुभ फल, रंग, रत्न-उपरत्नादि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। सौभाग्य से व्यक्ति के अनुरूप अंक, रंग, रत्नादि यदि पता चल जाते हैं और जीवन में उनका उपयुक्त विधियों से उपयोग किया जाता है तो अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। परन्तु यह गणना, खोज अथवा चयन इतनी सरल नहीं है जितनी कि हम कोई अंकशास्त्र की पुस्तक पढ़कर समझ लेते हैं। इसका मुख्य कारण है विषय की वास्तव में ज्ञानवर्धक हिन्दी पुस्तकों का अभाव। पाठक मेरी बात से शत-प्रतिशत सहमत होंगे कि अंग्रेजी साहित्य की तुलना में हिन्दी में अंक शास्त्र पर बहुत कम तथा आधा-अधूरा लिखा गया है। पाश्चात्य लेखकों का साहित्य विश्वस्तर पर मान्य है। हाँ! भारतीय वैदिक अंकशास्त्र मान्य तो है परन्तु एक तो वह क्लिष्ट भाषा में उपलब्ध है, दूसरे सर्वसुलभ नहीं है, तीसरे उसके सूत्र गुप्त हैं—उनकी कुंजी हमारे पास नहीं है। सम्भवतः इसीलिए वैदिक अंकशास्त्र पर शोधकार्य आगे नहीं बढ़ पाया। जो थोड़ा-बहुत शोध हुआ भी है वह नगण्य है।

हिन्दी की तथाकथित अंकशास्त्र की पुस्तकों में जो कलेवर हमें पढ़ने को मिल रहा है, वह अधूरा है या फिर खिचड़ी बना दिया गया है। मेरा उद्देश्य किसी की आलोचना करना कदापि नहीं है। जो सत्य है वही लिखा है। अंकशास्त्र की एक पुस्तक में विद्वान लेखक ने उसमें लाल किताब के टोटके मिला दिए। बौद्धिक पाठक स्वयं मनन करें पुस्तक क्या बन गयी होगी?

पाश्चात्य लेखकों ने अंकशास्त्र पर ठोस कार्य किया है। ग्रहों के अंकों पर जो नियम प्रतिपादित किए हैं वह एकमतीय शोधकार्य का परिणाम हैं। विविधता का वहाँ बहुत कम स्थान है। उस शोधकार्य के अंशों में से ही मैंने अपने प्रज्ञाज्ञान द्वारा रंग, रत्नों आदि के चयन की विधियाँ खोजी हैं। व्यवहार

में लाने पर मुझे उनसे बहुत सन्तोषजनक परिणाम मिले हैं। व्यक्ति के नियंत्रक अंकों से और भी अधिक प्रभावशाली प्रभाव पाने के लिए उनमें निरन्तर खोजपरक अध्ययन-मनन तथा व्यवहार में लाने की आज आवश्यकता है। सम्भवत: मेरा यह प्रयास जिज्ञासुओं को विषय पर और अधिक कार्य करने की प्रेरणा दे सके।

हमारी आकाश गंगा के सात मुख्य ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि एक निश्चित परिपथ पर भ्रमण करते हुए अनवरत विभिन्न बारह राशियों पर भ्रमण करते हैं। प्रत्येक ग्रह किसी न किसी राशि का स्वामी है।

1. **सूर्य** पाँचवीं राशि अर्थात सिंह का स्वामी है।
2. **चन्द्र** चौथी राशि अर्थात कर्क का स्वामी है।
3. **मंगल** पहली एवं आठवीं राशि अर्थात मेष तथा वृश्चिक राशि का स्वामी है।
4. **बुध** तीसरी एवं छठी राशि अर्थात मिथुन एवं कन्या का स्वामी है।
5. **गुरु** नवीं एवं बारहवीं राशि अर्थात धनु एवं मीन का स्वामी है।
6. **शुक्र** दूसरी एवं सातवीं राशि अर्थात वृष एवं तुला का स्वामी है।
7. **शनि** दसवीं एवं ग्यारहवीं राशि अर्थात मकर एवं कुम्भ का स्वामी है।

अंकशास्त्र में प्राथमिक अध्ययन के लिए सामान्यत: ग्यारहवीं राशि कुम्भ तथा बारहवीं राशि मीन को स्थान नहीं दिया गया है। इस प्रकार से विभिन्न ग्रहों का अंकों पर स्वामित्व निम्न प्रकार से है।

ग्रह	जिस अंक का स्वामी है
सूर्य	5
चन्द्र	4
मंगल	1 तथा 8
बुध	3 तथा 6
गुरु	9
शुक्र	2 तथा 7
शनि	10

अंकशास्त्र के विभिन्न स्कूल तथा विद्वानों ने ग्रहों के तथा अक्षरों के

अलग-अलग मान निर्धारित किए हैं। जो पाठक अंकशास्त्र के ज्ञाता हैं, उन्होंने हिब्रू, पाइथागोरियन, चाल्डियन, हिन्दू वैदिक आदि पद्धतियों में विभिन्नता देखी होगी। ग्रहों के अंक निर्धारण में जॉन हेडन का नाम सबसे ऊपर है। विषय की पुस्तक 'होली गाइड' में उन्होंने जो अंक मान दिए हैं उन्हें अंकशास्त्र के लगभग प्रत्येक विद्वानों ने स्वीकार किया है। अपनी गणनाओं के लिए मैं यही अंक प्रयोग करवाऊँगा। पाठक इन्हें कण्ठस्थ कर लें क्योंकि इनके बिना विषय आगे नहीं बढ़ पाएगा।

एक रोचक, रहस्यमयी अंक 3 के चमत्कारी वर्ग (3×3=9) का वर्णन और कर दूँ जिससे कि पाठकों की रुचि जाग्रत हो, विषय किसी भी स्तर पर नीरस न लगे और जॉन हेडन के अनुसार ग्रह, अंकों का परस्पर सम्बन्ध आदि स्पष्ट हो जाए तथा सरलता से कण्ठस्थ हो जाए।

इस चमत्कारी वर्ग के पीछे अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं कि इसका वास्तविक उद्गम स्रोत कहाँ हैं?

चीनी वास्तुशास्त्र फैंगशुई के अन्तर्गत यह मान्यता है कि इसका शुभारम्भ प्रागैतिहासिककालीन चीन के पाँच शासकों में से 'शिया यू' के समय में हुआ। चीन में पीली नदी पर सिंचाई का कार्य देखते समय 'यू' को एक विशालकाय कछुआ दिखाई दिया। उस कछुए को देवतुल्य माना गया। कछुए की पीठ पर प्राकृतिक रूप से 3 अंक का एक चमत्कारी वर्ग अंकित था। उसमें 1 से लेकर 9 तक के अंक थे। वर्ग में ऊपर-नीचे, आड़े-तिरछे किसी भी तरफ से अंकों को जोड़ने पर योग 15 आता है। धीरे-धीरे बा-गुआ, पा-कुआ यन्त्रों का आविष्कार हुआ। यह यन्त्र फैंगशुई में रीढ़ की हड्डी के समान हैं इसके बिना फैंगशुई में आगे बढ़ा ही नहीं जा सकता और इन यन्त्रों का आधार था 'यू' द्वारा देखा गया चमत्कारी उनका निम्न यन्त्र। इसका विस्तृत वर्णन मैंने अपनी फैंगशुई की पुस्तक में भी किया है।

'लो-शु' चमत्कारी वर्ग

4	9	2
3	5	7
8	1	6

भारतीय वाङ्मय में विशेषरूप से तंत्र क्षेत्र में यंत्र का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। पन्द्रह के यन्त्र में अंक यहाँ भी 1 से लेकर 9 तक हैं परन्तु उनका क्रम बदल गया है। इस यन्त्र का अपना अलग से महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका विस्तृत विवरण मैंने अपनी पुस्तक 'दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय' में लिख दिया है। विषय के जिज्ञासु पाठक यह पुस्तक ज्ञानवर्धन के लिए देख सकते हैं। पन्द्रह के इस को सूर्य यन्त्र भी कहते हैं।

पन्द्रह के यन्त्र को तीसरा महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है जॉन हेडेन न जो हमारे इस अध्याय का मूल आधार है। तीनों यन्त्रों में से पहले कौन-सा यन्त्र आया? किस सद्प्रेरणा से कौन आगे बढ़ा? यह विवादास्पद विषय है, ठीक पहले अण्डा आया या मुर्गी की तरह। इन यन्त्रों के उद्गम की कहानी का यहाँ कोई औचित्य भी नहीं है, व्यर्थ में पुस्तक का कलेवर बढ़ाने वाली बात है। बौद्धिकता इसमें है कि जो प्रयोगानुकूल लगे उसे प्रत्यक्ष करके परख लिया जाए। संतोषजनक परिणाम मिलें तो शोधकार्य आगे बढ़ाया जाए, अस्तु।

अंक विज्ञान में जॉन हेडेन का पन्द्रह का यन्त्र निम्न है। ग्रह जिस अंक के स्वामी है वह भी यहाँ दर्शाए जा रहे हैं जिससे कि पाठकों को गणना करने में सरलता रहे।

3 गुरु	1 सूर्य	9 मंगल	आध्यात्मिक
6 शुक्र	7 चन्द्र	5 बुध	मानसिक
2 चन्द्र	8 शनि	4 सूर्य	शारीरिक

वर्ग में 1 से लेकर 9 अंकों का विभाजन तीन वर्गों में किया गया है। 2, 8, 4 जिनके ग्रह क्रमशः चन्द्र, शनि तथा सूर्य हैं, को शारीरिक अंकों के समूह में रखा गया है। 6, 7, 5 अंकों को जिनके ग्रह शुक्र, चन्द्र तथा बुध हैं, को मानसिक अंकों के समूह में रखा है और इसी प्रकार 3, 1, 9 को जिनके ग्रह

क्रमश: गुरु, सूर्य और मंगल हैं आध्यात्मिक समूह में रखा गया है। इस यन्त्र अर्थात वर्ग को आगे बढ़ाने की कुंजी समझें।

सैफायरल ने अपनी पुस्तक 'दी कबाला ऑफ नम्बर्स' में इस चमत्कारी वर्ग द्वारा व्यक्ति के गुण-अवगुणों को जानने की सरल तथा सटीक विधि दी है। उसका संक्षिप्त विवरण यहाँ देना इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति के मनोभाव के अनुकूल भी रत्न, रंग आदि चुनने में सहायता मिले।

इसके लिए आवश्यकता है अपना व्यक्तिगत वर्ग बनाने की। इसकी सहायता से व्यक्ति के गुण, स्वभाव आदि अनेक बातों का विवरण सरलता से निकाला जा सकता है। रत्न धारण करने के लिए रत्न शास्त्री को व्यक्ति के गुण-मनोभाव को जानना-समझना भी अति आवश्यक है।

सर्वप्रथम अपनी सूर्य तिथि एकत्रित कर लें। सूर्य तिथि रात्रि बारह बजे के स्थान पर दिन में बारह बजे परिवर्तित हो जाती है। जैसे किसी व्यक्ति का जन्म यदि 28 जनवरी को प्रात: 11:05 बजे हुआ है तो उसकी जन्मतिथि 27 जनवरी मानी जाएगी। यदि जन्म का वर्ष 1990 है तो इसको इस प्रकार लिखा जाएगा—27-01-90 और जो वर्ग बनेगा वह निम्न प्रकार से होगा।

अगले चरण में जन्मतिथि का सयुक्तांक निकाल लें। यथा—

2+7+1+9=19=1+9=10=1+0=1

इस प्रकार सयुक्तांक अंक 1 आता है जो व्यक्ति की स्वतन्त्र प्रकृति तथा अहम् को दर्शाता है।

	1 सूर्य	9 मंगल
	7 चन्द्र	
2 चन्द्र		

अंकों का वर्ग में स्थापन व्यक्ति के गुण परिलक्षित करता है। कौन-सा ग्रह शुभता दे रहा है तथा कौन सा पीड़ित कर रहा है यह वर्ग के भरे तथा रिक्त वर्गों से तथा उनकी आवृत्ति और एक-दूसरे की परस्पर निकटता से जानकर

तदनुसार व्यक्ति का भाग्यशाली रत्न खोजा जा सकता है।

विषय को आगे बढ़ाने से पूर्व अंकों से सम्बन्धित तथ्य पहले समझ लें कि वह क्या दर्शाते हैं ?

1. अंक एक से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति स्वतन्त्र व्यक्ति है। बन्धन उसे पसन्द नहीं है। उसकी विशिष्ट वैयक्तिक रुचियाँ हैं। वह एकाधिकार चाहने वाला है। सदैव अपना वर्चस्व चाहता है। आत्मप्रशंसक है सदैव यही चाहता है कि मेरा ही अत्यधिक प्रयोग हो। वह सदैव गर्वित रहते हैं और अहंकार से भरे हुए हैं।

2. अंक दो से पता चलता है कि व्यक्ति अस्थिर प्रवृत्ति का है। उसके जीवन में भी स्थिरता नहीं है। परिवर्तन उसका लक्ष्य है। यात्राओं में उसकी रुचि है।

3. तीन अंक से पता चलता है कि व्यक्ति विकासवादी है, वृद्धि तथा प्रसार में रत रहने वाले उन्नति पाते हैं तथा इनका विकास भी होता है। यह धन-ऐश्वर्य की पुष्टि करते हैं।

4. इन व्यक्तियों को कार्य की सिद्धि तथा उपलब्धि प्राप्त होती है। ज्ञान का यह बोध करते हैं। यह सात्त्विक प्रवृत्ति के परन्तु भौतिकवादी होते हैं। जीवन के प्रत्येक पहलू में व्यवहारकुशल होते हैं। इनमें अहम् होता है। यह आडम्बरपूर्ण जीवन जीने के प्रेमी होते हैं, इन्हें दिखावा पसन्द है।

5. ऐसे व्यक्ति बौद्धिक, बुद्धिमान, पढ़े-लिखे ज्ञानवान वर्ग के बनते हैं। निरन्तर इन्हें ज्ञान प्राप्त करने की ललक रहती है। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में इनकी रुचि होती है। यह व्यापार के क्षेत्र में अच्छा नाम कमाते हैं।

6. छः अंक वाले व्यक्ति कलाकार तथा कलाप्रेमी होते हैं। इन्हें कविता, संगीत तथा अन्य ललित कलाओं में रुचि रहती है। प्यार-स्नेह, मोह-ममता तथा सहानुभूति इनमें कूट-कूटकर भरी होती है। सही अर्थों में यह प्रेम करना जानते हैं।

7. ऐसे व्यक्ति पर मानसिक प्रभाव शीघ्र पड़ता है। यह ख्याति अर्जित करते हैं। अनेक दूर-सुदूर की यात्राएँ करते हैं। यह सर्वतोमुखी तथा प्रतिभावान होते हैं तथा जीवन में उन्नति करते हैं।

8. आठ अंक वाले व्यक्ति दुर्भाग्यशाली होते हैं। व्यभिचार, रोग-शोक, हानि का इन्हें प्राय: सामना करना पड़ता है। जीवन में पग-पग पर इनके लिए व्यवधान खड़े होते हैं। यह किसी भी क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाते।

9. नौ अंक वाले स्वतन्त्रजीवी होते हैं। जिज्ञासा, उत्साह तथा कार्य करने की असीमित शक्ति इन्हें सफल बनाती है। विषय को समझने के लिए इनकी तीव्रबुद्धि तथा पैनीदृष्टि सदैव सहायक सिद्ध होती है।

उदाहरण 1—

अन्तत: हम अध्ययन करेंगे कि किस अंक की आवृत्ति अधिक है तथा वह किस अंक के साथ सम्बद्ध है। उदाहरण के लिए दिए गए वर्ग में सूर्य तथा मंगल और सूर्य तथा चक्र परस्पर सम्बन्ध बनाए हैं। वर्ग में सूर्य की हुई आवृत्ति ने व्यक्ति को पुन: दम्भी बना दिया। यह सदैव चाटुकारिता तथा प्रशंसकों के मध्य घिरे रहना चाहते हैं अपनी प्रशंसा से फूलकर कुप्पा होने वाले। इस कारण से इनकी बुद्धि मंगल के कारण कुण्ठित हो गयी है। अपनी असीमित शक्ति का इन्हें गर्व है। इस दम्भ ने अच्छा सोचने समझने की शक्ति भी इनसे छीन ली है। डर यह है कि इनकी सोच कहीं विध्वंसक न बन जाए। चन्द्र के कारण बन रही इनकी कल्पनातीत कल्पना गुरु के अभाव में प्रायोगिक रूप नहीं ले पा रही।

मैंने इन्हें इस नकारात्मक मनोवृत्ति से छुटकारा दिलाने के लिए माणिक्य तथा पुखराज एक साथ धारण करवाया। इनकी मानसिकता ही बदल गयी। आशातीत परिणाम का एक अन्य कारण यह भी रहा कि अन्य कुछ उपक्रमों से भी इन्हें पुखराज तथा माणिक्य रत्न उपयुक्त बैठ रहे थे।

उदाहरण 2—

यह सज्जन 8 नवम्बर 1945 को जन्मे थे इनका संयुक्तांक 2 आता है। इनका वर्ग निम्न प्रकार से बनता है।

	1	
		5
	8	4

अंक एक की आवृत्ति ने इन्हें अत्यधिक खुद्दार बनाया। खुद्दारी भी ऐसी कि भूखे मर जाएंगे पर हाथ नहीं पसारेंगे। शनि (8) तथा सूर्य (4) के साथ ने इनकी सारी प्रतिभाएँ अभावों में छीन लीं। यदि इन्हें कहीं कोई 'गॉड फादर' मिल गए होते तो जगत में यह सूर्य की तरह देदिप्यमान होते। सूर्य (4) तथा बुध (5) के संयोग ने इन्हें कम से कम एक अदद अच्छी नौकरी अवश्य दिलवाई परन्तु जहाँ सफलता अथवा उन्नति की बात आई वह इनसे आगे-आगे भागती रही। सूर्य ने इन्हें दिलवाया अवश्य परन्तु बहुत विलम्ब से। अंक आठ के कारण मैंने नीलम रत्न इन्हें प्रयोग करवाया परन्तु उसके प्रभाव सदैव विपरीत रहे। इनकी वृश्चिक राशि होने के कारण मूंगा इन्हें उपयोग करवाया परन्तु उसने भी सब उल्टा ही किया। अकस्मात ध्यान आया कि महत्त्वाकांक्षाएँ पूरी न हो पाने का कारण कहीं गुरु का वर्ग में अभाव तो नहीं। मैंने कुछ ही दिनों में इन्हें पुखराज तथा नीलम रत्न विधिनुसार प्रयोग करवाए। आध्यात्मिक तथा भौतिक पक्षों का मिला-जुला रूप इनमें परिलक्षित होने लगा। जो प्रतिभा इनकी धूमिल हो चली थी वह 47-48 वर्ष की आयु के बाद पुनः जाग्रत होने लगी।

आपको आश्चर्य होगा कि इन सज्जन का नियंत्रक अंक भी 8 है। इस शनि अंक ने इन्हें दिया भी बहुत और छीन भी लिया। काश 20-30 वर्ष पूर्व वह यदि इस नियंत्रक अंक को नियंत्रित कर पाते तो आज इनके जीवन का कुछ और ही समीकरण होता।

उदाहरण-3

एक अन्य उदाहरण पाठकगण ध्यान से देखें। इनका जन्म 3 जून 1959 को सायं 6:23 बजे दिल्ली में हुआ था। इनका जन्म लग्न तथा वर्ग निम्न प्रकार से बनेगा।

3 गु	1 सू	9 मं
6 शु		

वर्ग के नियंत्रक अंक 6 (शुक्र), जो कि इन्हें ऐश्वर्य की ओर बढ़ने के लिए बाध्य कर रहा है तथा मोह-ममता से बाँधे हुए है, के निदानस्वरूप इन्हें मैंने सफेद पुखराज (हीरे की कटिंग वाला) धारण करवाया। तीन-चार माह में ही सबने उनके अन्दर अनोखा परिवर्तन अनुभव किया।

उदाहरण-4

एक अन्य उदाहरण से स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा हूँ। यह मैं बार-बार लिख ही रहा हूँ कि मेरे शोधकार्य में व्यक्तिगत अनुभव, प्रज्ञाज्ञान, संयम की विधि से अधिक आवश्यकता है। पाठक अपने बुद्धि-विवेक से यह शोधकार्य आगे बढ़ाएँ।

प्रस्तुत सज्जन का जन्म 8 फरवरी 1974 को प्रात: 8:23 बजे लखनऊ में हुआ था। इनकी लग्न तथा वर्ग निम्न प्रकार से है।

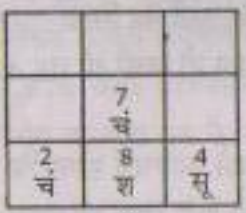

जन्मपत्री में तथा वर्ग में सूर्य, गुरु, शुक्र ने इन्हें जीवन में किसी भी सुख-सुविधा तथा ऐश्वर्य की कमी नहीं होने दी। विवाह के बाद तो जीवन के हर क्षेत्र में इन्होंने उत्तरोत्तर उन्नति की। धन-धान्य, सुन्दर पत्नी, सन्तान, ख्याति, स्वास्थ्य आदि की प्रभु ने जैसे इनके ऊपर वर्षा कर दी हो। दुर्भाग्य तो इन्हें नाममात्र को भी नहीं छू सका। वर्ग में भी इस बात की पुष्टि होती है। शनि के प्रकोप से यह सर्वथा बचे हुए हैं।

इधर दो-तीन वर्षों से इनका स्वास्थ्य अकस्मात बिगड़ने लगा। इनका क्रोध-आक्रोश आसमान छूने लगा। जितना ही यह पूजा-पाठ से जुड़ते जाते उतना ही उग्रता के कारण इनका मानसिक तनाव बढ़ता जाता।

विचार करने के बाद अन्ततः मैंने अनुभव किया कि इनकी असीमित कार्यक्षमता तो मंगल और महत्त्वाकांक्षी ग्रह गुरु के कारण उत्तरोत्तर बढ़ रही है

परन्तु बढ़ती आयु पारिवारिक दायित्व की व्यस्तता उस सबको पूर्ण नहीं होने दे रही या कहें व्यर्थ का विलम्ब करवा रही है। कुल मिलाकर कहीं वस्तुस्थिति से समझौता करने की आवश्यकता है। यदि यह अपना ध्यान अध्यात्म में और अधिक लगा दें तो धीरे-धीरे यह विरक्ति की ओर बढ़ने लगेंगे।

यह पेशे से एक डॉक्टर हैं। पत्री में गुरु तथा सूर्य के साथ ने इन्हें चिकित्सा से जोड़ा। आज के दिन खूब अच्छा इनका कार्य चल रहा है। जीवन में इन्हें उत्तरोत्तर उन्नति मिली है। इतना सब होते हुए भी इन्हें सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। अस्थिर प्रवृत्ति (चन्द्र के कारण) इन्होंने तीन बार अपना क्लीनिक का स्थान बदला। आज भी वह अपनी उपलब्धियों से प्रसन्न नहीं हैं, उनका लक्ष्य परिवर्तनशील है। दूसरे शनि उन्हें स्थिर नहीं रखने दे रहा। शनि ने चन्द्र तथा सूर्य पर प्रभाव छोड़ा है उसका ही यह सब परिणाम है। जन्मपत्री का पंचम स्थान ध्यान से देखें। इसने इन्हें संतानसुख से वंचित रखा है। उनकी सबसे बड़ी समस्या है कि उनके बाद उनकी अर्जित की हुई धन-सम्पदा का क्या होगा?

मैंने एक ही चाँदी की अँगूठी में माणिक्य तथा मोती पहनने की उन्हें सलाह दी। वह इस प्रयोग से संतुष्ट हैं।

मेरे अनुभव मेरे प्रयोग जब ही सफल सिद्ध हो रहे हैं जब मैंने अथवा मेरे पाठकों ने उन्हें सब विधियों से जोड़कर तथा उनका सार-सत निकालकर अपनाए हैं। एक विधि में जाएँगे तो सम्भावना यही रहेगी कि संतोषजनक परिणाम न मिलें।

नियंत्रक अंक

श्री राजसो ने अपनी पुस्तक 'न्यूमरोलॉजी इन ए नटशैल' में नियंत्रक अंक निकालने के लिए जॉन हेडेन के विपरीत ग्रहों के अंकमान ज्योतिष के अनुसार चुने हैं। यह विरोधाभास क्यों है, यह अपनी-अपनी खोज-विचार है। मेरा प्रयास यही रहा है कि अधिकाधिक विधियों से रत्न चुनूँ; उनमें से चुने गए रत्न अथवा रत्नों की आवृत्ति जिसकी समस्त विधियों में सर्वाधिक होगी, वह रत्न अनुकूल परिणाम देगा ही देगा।

नियंत्रक अंक प्रत्येक व्यक्ति को नियंत्रित रखता है तथा भाग्य निर्धारित

करता है। नियंत्रक अंक निकालने की विधि पहले पाठकगण स्पष्ट समझ लें क्योंकि यह पारम्परिक रूप से निकाले गए भाग्यांक से कुछ भिन्न है। पहले इसकी गणना करना स्पष्ट कर लेते हैं। सुविधा के लिए निम्न सारिणी ध्यान में रखें।

कुल अंकों का योग	नियंत्रक अंक तथा ग्रह
14, 23, 32, 41	5 सूर्य
13, 22, 31	4 चंद्र
17, 26, 29, 35, 44, 53	1 अथवा 8 मंगल
12, 15, 21, 24, 33, 39, 42, 48, 51	3 अथवा 6 बुध
18, 27, 36, 45, 54	9 गुरु
11, 16, 25, 34, 38, 43, 52	2 अथवा 7 शुक्र
10, 19, 20, 28, 30, 37, 40, 46, 55	0 शनि

यहाँ ध्यान दें कि अंक 29 का प्राथमिक अंक 1 माना है न कि 2+9=11=1+1=2। 29 अंक ही एकमात्र ऐसा अंक है जहाँ योग 1 माना गया है। दूसरे 0 में कोई भी अंक नहीं जोड़ा गया है। 10, 19, 20 आदि को 0 माना गया है न कि क्रमशः 1+0=1, 1+9=10=1+0=1, 20=2+0=2 आदि।

कुछ उदाहरण देखें तथा उक्त सारिणी को ध्यान में रखें नियंत्रक अंक गणना करना सरल हो जाएगा।

1. जन्मतिथि : 8-11-1945
   8+1+1+1+9+4+5=29=1 (2 नहीं)
2. जन्मतिथि : 3-6-1959
   3+6+1+9+5+9=33=3+3=6
3. जन्मतिथि : 8-2-1974
   8+2+1+9+7+4=31=3+1=4
4. जन्मतिथि : 19-08-2000
   1+9+8+2=20=0 (2 नहीं)

उदाहरण से नियंत्रक अंक निकालने के पश्चात राजसो की पुस्तक के आधार पर आप अपना भाग्यशाली रत्न तथा रंग चुन सकते हैं।

नियंत्रक अंक	भाग्यशाली रत्न/उपरत्न	भाग्यशाली रंग
1 अथवा 8	जैस्पर, ब्लड स्टोन	लाल, गुलाबी
2 अथवा 7	हीरा तथा प्रत्येक सफेद रत्न	हल्का-गहरा नीला, गुलाबी
3 अथवा 6	टोपाज, अक्वीक्र, फायर स्टोन	हल्के ग्रे रंग
4	मून स्टोन	सब सफेद रंग
5	नीलम	आसमानी, ग्रे
0	कटैला	काला, नीला, ग्रे
9	पन्ना, नीलम, पुखराज	बैंगनी तथा पीला

दिए गए उदाहरणों की तिथि के अनुसार नियंत्रक अंक आते हैं—1, 6, 4 तथा 0 यह व्यक्ति क्रमशः जैस्पर, टोपाज, मून स्टोन तथा कटैला धारण कर सकते हैं। ध्यान रखें यहाँ रत्न भी अन्य विधि से भिन्न-भिन्न लिए गए हैं।

यहाँ तक तो मात्र किताबी ज्ञान की बात है। इसके आगे का कार्य निर्भर करता है अपने-अपने शोध तथा अनुभव पर। पुस्तक में जन्मतिथि के आधार पर होरेरी ग्राफ बनाकर उससे व्यक्ति के गुण आदि का विश्लेषण बहुत ही सुन्दर तरीके से किया है। इन ग्राफ से व्यक्ति विशेष के लिए विभिन्न रत्नों का चुनाव कार्य मैंने अपने तथा शोधकार्य तदनुसार व्यवहार में लाए गए अनुभवों के आधार पर किया है। इस विधि द्वारा चुने गए रत्न यदि अन्य विधि से चुने गए रत्न से संयोग रखते हों तो रत्न प्रभावशाली सिद्ध होगा।

सर्वप्रथम आप ग्राफ बनाना सीख लें। इस ग्राफ में जन्म के अंकों को समानान्तर तथा उन्हें कटती हुई एक ऊर्ध्वाधर रेखा में रखा जाता है। अंकों की संख्या के अनुसार ही समानान्तर रेखाओं की संख्या घट-बढ़ सकती है। ऊर्ध्व रेखा के सबसे ऊपर सर्वप्रथम व्यक्ति का नियंत्रक अंक रखते हैं।

इसे एक उदाहरण द्वारा समझ लें।

जन्मतिथि : 24-03-1980

नियंत्रक अंक : 2+4+3+1+9+8+0=27=9

9 गुरु

2 शुक्र	4 चन्द्र
3 बुध	1 मंगल
8 मंगल	0 शनि

जिस अंक की पुनरावृत्ति होती है उसे दुबारा न लिखकर उसके ऊपर '', '' चिह्न बना दिया जाता है। उदाहरण से स्पष्ट है कि गुरु का अंक 9 दो बार आ रहा है। इसे ऊर्ध्व रेखा पर सबसे ऊपर अंकित कर दिया। अगला अंक शुक्र का 2 है जिसे क्षितिजीय रेखा के प्रारम्भ में लिख दिया। उसके बाद क्रमशः चन्द्र का 4 अंक, बुध का अंक 3, मंगल का 1, मंगल का 8 शनि का अंक 0 समानान्तर रेखा में भर दिए। ग्राफ से स्पष्ट है कि व्यक्ति का नियंत्रक अंक 9 है तथा अन्य जन्म समय के ग्रह शुक्र (2), चन्द्र (4) जो पहली रेखा में अंकित है। दूसरी समानान्तर रेखा पर बुध (3) तथा मंगल (1) और तीसरा पर मंगल (8) और शनि (0) अंकित हैं।

ग्राफ की सहायता से ग्रहों के प्रभाव की गणना की जाती है। सबसे प्रभावशाली ग्रह (अंक) नियंत्रक ग्रह (अंक) होता है जो ग्राफ के समस्त ग्रहों को प्रभावित करता है। दूसरा प्रभावशाली ग्रह वह होता है जो इस ऊर्ध्व रेखा के अन्त में आता है। उदाहरण में यह अंक अनुपस्थित है। शनि तथा मंगल दो ऐसे ग्रह हैं कि वह लम्बवत तथा क्षितिजीय जिस रेखा पर भी किसी ग्रह के आमने-सामने होंगे, उसके प्रभाव को कम करेंगे। यदि मंगल-मंगल, मंगल-शनि तथा शनि-शनि दुर्भाग्यवश एक दूसरे के आमने-सामने अथवा ऊपर नीचे एकत्र हो जाते हैं तो यह सबसे बुरा संयोग है। उपरोक्त पुस्तक में इसका विश्लेषण भी बहुत सुन्दर ढंग से किया गया है। परन्तु हमारा विषय रत्न चयन करना है न कि व्यक्ति के गुण-दोष की भविष्यवाणी करना।

कुछ उदाहरणों से रत्न चयन करेंगे। पाठक अपने अन्य उदाहरणों से भी विषय को आगे बढ़ाकर अधिक सार्थक परिणाम यदि तलाशेंगे तो यह एक अचूक प्रयोग सिद्ध होगा भाग्यशाली रत्न चयन करने का।

प्रस्तुत उदाहरण में नियंत्रक अंक 9 है जो कि बताता है कि इन सज्जन को पन्ना, नीलम तथा पुखराज रत्न शुभ फल देगा। बुध ग्राफ में मंगल की रेखा में है जो अपनी शक्ति खो रहा है। इस प्रकार भी बुध का रत्न पन्ना शुभ है। यह सज्जन यदि पुखराज तथा पन्ना एक साथ धारण करें तो इन्हें अच्छा लगेगा। पन्ने के स्थान पर यह हरे रंग का अक़ीक़ भी प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरा ग्राफ देखें :—

जन्मतिथि : 9-9-1980

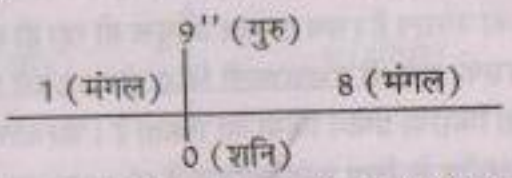

यहाँ ग्राफ में 9 अंक (गुरु) की 3 बार पुनरावृत्ति हो रही है। जिस शुभ अंक की बार-बार आवृत्ति होती है और वह बुरे प्रभाव में नहीं है तो वह अधिक प्रभावशाली फल देता है। उसे ध्यान रखें। 9 अंक इस उदाहरण में नियंत्रक अंक भी है इसकी शक्ति निश्चित रूप से बढ़ गयी है। यहाँ भी पन्ना नीलम तथा पुखराज अथवा इनका कोई उपरत्न चुना जा सकता है। नीलम यहाँ क्षीण हुए अंक के प्रभाव को बल देगा।

अन्य उदाहरण :

जन्मतिथि : 30-05-1968

यहाँ ग्राफ निम्न प्रकार से बनेगा—

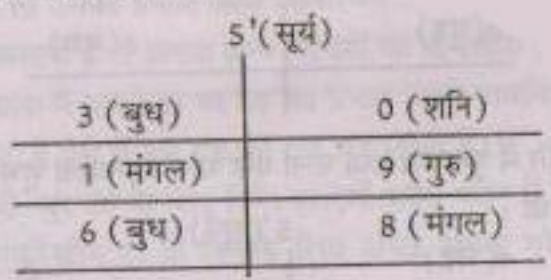

उदाहरण से स्पष्ट है कि सूर्य अंक 5 की आवृत्ति दो बार हो रही है। यह किसी दुष्प्रभाव में भी नहीं है अर्थात् ऊर्ध्वाकार रेखा पर शनि, मंगल में से कोई भी अन्य ग्रह नहीं है। परन्तु शनि ग्रह सूर्य, चन्द्र तथा मंगल के लिए शुभकारक नहीं है इसलिए यहाँ यदि सूर्य का रत्न नीलम धारण करवाते हैं तो मैं समझता हूँ यह शुभ फल नहीं देगा। हांलाकि पुस्तक के अनुसार नियंत्रक अंक का रत्न पहनवाना शुभ है। नीलम से अच्छा प्रभाव यहाँ पन्ने से होगा। परन्तु यह सदैव प्रयास रखें कि जहाँ कहीं भी रत्न चयन करने में भ्रम उत्पन्न हो वहाँ धैर्य न खोकर अन्य विधियों से भी अपना भाग्यशाली रत्न तलाश करें। इससे रत्न का किया गया चुनाव कभी प्रतिकूल प्रभाव वाला सिद्ध नहीं होगा। यहाँ कीरो के

जन्मतिथि : 9-9-1980

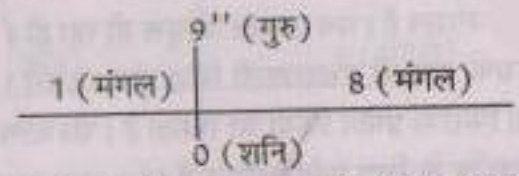

यहाँ ग्राफ में 9 अंक (गुरु) की 3 बार पुनरावृत्ति हो रही है। जिस शुभ अंक की बार-बार आवृत्ति होती है और वह बुरे प्रभाव में नहीं है तो वह अधिक प्रभावशाली फल देता है। उसे ध्यान रखें। 9 अंक इस उदाहरण में नियंत्रक अंक भी है इसकी शक्ति निश्चित रूप से बढ़ गयी है। यहाँ भी पन्ना नीलम तथा पुखराज अथवा इनका कोई उपरत्न चुना जा सकता है। नीलम यहाँ क्षीण हुए अंक के प्रभाव को बल देगा।

अन्य उदाहरण :

जन्मतिथि : 30-05-1968

यहाँ ग्राफ निम्न प्रकार से बनेगा—

5'(सूर्य)

3 (बुध)	0 (शनि)
1 (मंगल)	9 (गुरु)
6 (बुध)	8 (मंगल)

उदाहरण से स्पष्ट है कि सूर्य अंक 5 की आवृत्ति दो बार हो रही है। यह किसी दुष्प्रभाव में भी नहीं है अर्थात् ऊर्ध्वाकार रेखा पर शनि, मंगल में से कोई भी अन्य ग्रह नहीं है। परन्तु शनि ग्रह सूर्य, चन्द्र तथा मंगल के लिए शुभकारक नहीं है इसलिए यहाँ यदि सूर्य का रत्न नीलम धारण करवाते हैं तो मैं समझता हूँ यह शुभ फल नहीं देगा। हांलाकि पुस्तक के अनुसार नियंत्रक अंक का रत्न पहनवाना शुभ है। नीलम से अच्छा प्रभाव यहाँ पन्ने से होगा। परन्तु यह सदैव प्रयास रखें कि जहाँ कहीं भी रत्न चयन करने में भ्रम उत्पन्न हो वहाँ धैर्य न खोकर अन्य विधियों से भी अपना भाग्यशाली रत्न तलाश करें। इससे रत्न का किया गया चुनाव कभी प्रतिकूल प्रभाव वाला सिद्ध नहीं होगा। यहाँ कीरो के

क्रम	ग्रह	बुरा प्रभाव देंगे (ग्रह विपरीत क्रम से भी अशुभ होंगे)
1.	शनि	सूर्य, चन्द्र तथा मंगल
2.	मंगल	चन्द्र

पाठकों को स्पष्ट हो गया होगा कि शनि, सूर्य, चन्द्र तथा मंगल और मंगल तथा चन्द्र परस्पर दुष्प्रभाव देने वाले ग्रह है। जो ग्रह क्षीण है अर्थात इन ग्रहों के साथ एक रेखा पर स्थिति हैं उनका रत्न चुनना रत्न चयन विधि में एक अच्छा उपक्रम तथा विकल्प है।

विभिन्न रंग-गुण-रत्नादि

क्रम	रंग	गुण	सम्बन्धित रत्न
1.	नारंगी	गरम	मोती
2.	लाल	गरम	माणिक्य
3.	पीला	गरम	मूंगा
4.	हरा	सम	पन्ना
5.	आसमानी	ठण्डा	पुखराज अथवा चन्द्रकांत
6.	नीला	ठण्डा	हीरा
7.	बैंगनी	ठण्डा	नीलम

हस्त रेखाएँ एवं रत्न चयन

सामुद्रिक शास्त्र में हस्तरेखाओं से भूत, वर्तमान तथा भविष्य की विशुद्ध भविष्यवाणी सम्भव हैं। प्रभु ने जीवात्मा की हथेली में समूचा भविष्य अंकित कर दिया है। आवश्यकता उसे पढ़ने-समझने मात्र की है। गुह्यविद्याओं में दर्पण से पूर्ण सर्वप्रथम हस्तरेखा ज्ञान में ही मेरी रुचि जाग्रत हुई थी। विषय को खूब पढ़ा, मनन-गुनन किया, युद्ध स्तर पर व्यवहार में लाया। डेढ़ सौ से अधिक पुस्तकों का सार-संक्षेप "हस्त रेखाओं से रोग की पहचान" पुस्तक के माध्यम से एक शब्दकोश के रूप में प्रकाश में भी लाया। जिन स्नेही पाठकों ने वह पुस्तक पढ़ी, प्रयोग की, सराहे बिना नहीं रहा। अनेक जिज्ञासु पाठकों की हार्दिक अभिलाषा थी कि पुस्तक के अगले संस्करणों में समस्या निदान के पहलू भी लूँ। तब से क्रियाशील मस्तिष्क निरन्तर विचार निमग्न था। आज समय आया है कि हस्तरेखाओं के माध्यम से रत्न चुनने की सूक्ष्म प्रक्रिया पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करूँ। रोग के लिए तो नहीं, हाँ भाग्यशाली रत्न चयन के लिए लिया गया मेरा यह शोधकार्य आपको अवश्य प्रेरित करेगा कि इस गुप्तादिगुप्त विद्या को और अधिक आगे बढ़ाया जाए। पाठक यह सोचने के लिए भी अवश्य लाचार होंगे कि यह अथवा इस प्रकार की किसी विधा को हस्तरेखाओं से रत्न चयन करने के लिए अब तक प्रकाश में क्यों नहीं लाया गया?

वैसे तो हस्तरेखाओं के माध्यम से रत्न चयन के सूत्र जटिल हैं तथापि कुछ ऐसे भी हैं जो जनसाधारण अपने लिए प्रयोग कर लाभ उठा सकते हैं। विषय का यही तो सर्वाधिक आनन्ददायक पहलू है कि उसका स्वाद निर्बुद्धि भी ले और बौद्धिक भी। बच्चा भी ले और परिपक्व मानसिकता वाला सयाना भी। प्रत्येक आयु, वर्ग, जाति, स्थान के लिए वह ग्राह्य हो। हाँ सुफल यहाँ निर्भर करेगा आपकी विषय को लेकर गम्भीरता और-ठीक-ठीक चयन करने पर।

हस्तरेखा ज्ञान देना इस अध्याय में मूल उद्देश्य नहीं है तथापि निम्न चित्र

के माध्यम से स्पष्ट करलें कि हथेली में कौन सी रेखा कहाँ स्थित है ? विभिन्न पर्वत कहाँ हैं तथा वह किस ग्रह के द्योतक हैं।

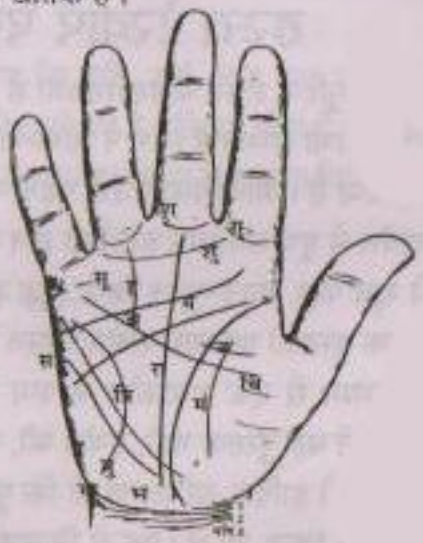

एक बार हथेली में शुभ तथा अशुभ देने वाली रेखाओं का ज्ञान आपको मिल गया तब समझ लीजिए रत्न चयन विषय आपके लिए सुलभ हो गया। हस्त रेखा के सामान्य से ज्ञान के बाद भी आप अपना भाग्यशाली रत्न चयन कर सकते हैं। मूलभूत सिद्धान्त से हमें वहाँ भी शुभतत्त्व प्रदान करने वाले घटकों को अपनाकर प्रयास करना है।

सर्वप्रथम उस हाथ को अध्ययन के लिए चुन लें जिसका दोनों में प्रभुत्त्व हो। साधारण नियमानुसार स्त्री का बायाँ हाथ तथा पुरुष का दायाँ हाथ अध्ययन के लिए चुना जाता है। परन्तु यदि कोई पुरुष बायाँ हाथ प्रधान है अर्थात बाएँ हाथ का सर्वाधिक प्रयोग करता है तब उसका बायाँ हाथ अपने प्रयोजन के लिए देखा जाएगा। अनेक स्त्री वर्ग मर्दों की भाँति कार्यरत हैं उनका दायाँ हाथ अधिक महत्त्वपूर्ण फल देगा। थोड़े से अभ्यास के बाद करतल तथा उसमें स्थित रेखाओं की पुष्टता के माध्यम से आप यह सरलता से सुनिश्चित करने लगेंगे कि बायाँ हाथ अध्ययन के लिए चुना जाए अथवा दायाँ हाथ।

हाथ में जो रेखाएँ निर्दोष हों ऊर्ध्वगामी हों तथा पूर्णरूपेण व्यवस्थित तथा उन्नत पर्वत पर अन्त होती हों, उन्हें नोट कर लें। माना आपके हाथ में प्रबल भाग्य रेखा एक उन्नत तथा सुव्यवस्थित शनि पर्वत पर समाप्त होती हो तो

आप नीलम रत्न अपने लिए चयन कर सकते हैं। भाग्यरेखा के साथ-साथ यदि उन्नत गुरु रेखा अथवा गुरु वलय भी हथेली में प्रत्यक्ष हो तो आप नीलम के साथ-साथ पुखराज भी धारण कर सकते हैं। गुरु पर्वत का शिखर उन्नत हो, तर्जनी के मूल में ठीक मध्य में स्थित हो, यहाँ एक, दो अथवा अधिक ऊर्ध्वगामी रेखाएँ करतल के किसी भी भाग से आकर समाप्त हो रही हों, गुरु पर्वत पर निर्दोष गुरु वलय हो तो यहाँ कहरवा पहन लें—आप अध्यात्म, रूहानियत की असीम शान्ति में खोने लगेंगे। ऐसे में यहाँ पुखराज का प्रयोग आपकी भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने लगेगा।

उन्नत शुक्र पर्वत हो, निर्दोष जीवन रेखा हो, इसके ठीक नीचे जीवनी रेखा हो ऐसी स्थिति में हीरा बहुत रास आएगा यह स्वस्थ पारिवारिक सुख तो देगा ही, आपके ऐश्वर्य में भी वृद्धि करेगा।

निर्दोष चन्द्र पर्वत पर गोलाई के साथ झुकी हुई मस्तिष्क रेखा भावुक कलात्मक प्रवृत्ति वाला तथा लेखक आदि बनाती है। इन गुणों में अधिक सृजनात्मकता लाने के लिए यहाँ मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह आपकी लेखनी, भावों-अविभावों को बल देगा।

करतल में एक अकेली बुध रेखा ऐसी मानी गयी है जिसका मूर्त होना अस्वस्थता का लक्षण है। यदि यह पूर्णतया दोषपूर्ण तथा उन्नत हो, जो सामान्यत: नहीं होता, तो व्यक्ति आमरण निरोगी काया का धनी होता है। यदि बुध की ऊँगली तथा बुध पर्वत भी निर्दोष हों तो आप पन्ना धारण कर लें—भौतिक सुखों में उत्तरोत्तर उन्नति दिखाई देने लगेगी।

एक अकेली निर्दोष सूर्य रेखा व्यक्ति को दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों से पूर्ण करने में सक्षम है। यदि सूर्य पर्वत भी अनामिका के मूल में ठीक मध्य में स्थित है और सूर्य रेखा ठीक इसके मध्य में समाप्त हो रही है तब तो सोने पे सुहागा। यहाँ आप एक माणिक्य धारण करके उपरोक्त सुखों में द्विगुणित लाभ पा सकते हैं।

करतल में मंगल, राहु तथा केतु के क्षेत्र निर्दोष होने पर आप क्रमश: मूंगा, गोमेद तथा लहसुनिया धारण करके इन ग्रहों से सम्बन्धित सुफलों की प्राप्ति कर सकते हैं।

शुभ रेखाओं तथा ग्रह क्षेत्रों के अनुरूप परस्पर मित्र दो अथवा अधिक रत्न भी आप अँगूठी अथवा पैन्डैन्ट के रूप में धारण कर सकते हैं। अधिक रत्न पैन्डैन्ट में यदि जड़वाते हैं तो उनका क्रम नवरत्न की भाँति चुनें। इसका विवरण मैंने अलग से लिख दिया है।

रेखाओं के साथ पाठक ऊँगलियों के पोर पर भी ध्यान रखें। अधिकांशत: आप चारों ऊँगलियों में तीन-तीन तथा अँगूठे में दो पोर देखेंगे। यदि इनकी संख्या अधिक हो तो इसका अर्थ है कि उस ऊँगली विशेष के मूल में स्थित पर्वत का ह्रास हो रहा है भले ही वह प्रबल हो अथवा इस पर कोई पुष्ट रेखा समाप्त होती हो। यहाँ भी आपको रत्न चयन नहीं करना है।

अनेक उदाहरणों में देखा जाता है कि कोई रेखा अथवा रेखाएँ करतल में नहीं हैं। ऐसे में उनसे सम्बन्धित पर्वत यदि शुभ हैं अथवा नियमानुसार उन्नत हैं तथा उनके शिखर ठीक निर्धारित क्षेत्र के मध्य में हैं तब भी आप सम्बन्धित रत्न धारण कर सकते हैं। परन्तु यदि कोई रेखा अनुपस्थित है अथवा दोषपूर्ण है और साथ ही साथ सम्बन्धित पर्वत भी शुभ नहीं है तो आप उससे सम्बन्धित रत्न मत चुनिए। ऐसे में सम्बन्धित ग्रह पर्वत अथवा रेखा के मित्र क्षेत्र ग्रह चिह्नित कीजिए और उनसे सम्बन्धित रत्न धारण करिए। उदाहरण के लिए माना आपकी भाग्य रेखा और शनि पूर्णत: दोषपूर्ण है परन्तु गुरु पर्वत तथा गुरु पर्वत पर चढ़ रही शुभ रेखा उपस्थित है तो आप गुरु का रत्न पुखराज धारण करिए यह आपकी महत्त्वाकांक्षा तो पूरी करेगा ही, आपको भाग्य भी प्रदान करेगा।

अपनी पुरानी फाइलों से कुछ अनुभूत उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ इससे विषय और सरल हो जाएगा और पाठकों में जाग्रति लाएगा।

उदाहरण-1

श्रीमती ऊषा के विवाह को 6 वर्ष हो गये थे परन्तु अभी वह सन्तान सुख से वंचित थी। जीवन रेखा ने शुक्र पर्वत का क्षेत्र कितना बढ़ा रखा है, पाठक स्वयं देखें। हाथ में बुध पर्वत पर स्थित सन्तान रेखाएँ भी स्पष्ट कर रही थीं कि सन्तान सुख मिलना चाहिए। इनके पति श्री आनन्द स्वरूप शर्मा का हाथ भी पुष्टि कर रहा था। कहीं कोई क्लीनिकल दोष नहीं था। विधि का नियम है यदि

पति-पत्नी स्वस्थ हैं और सन्तान सुख के लिए परस्पर समागम करते हैं तो सन्तान सुख मिलेगा ही मिलेगा। यहाँ यह विधि का नियम क्यों फलीभूत नहीं हो रहा था यह तो राम ही जानें। मैंने उन्हें हीरा धारण करने की सलाह दी। साथ ही साथ वह अन्य यम, नियम, प्राणायाम आदि भी जीवन में अपनाने लगे। एक चमत्कार हुआ इसके ठीक ढेड़ वर्ष बाद उन्हें एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई।

उदाहरण-2

दुर्भाग्य से भरी श्रीमती माथुर जिस समय मेरे पास आयीं तो वह बुरी तरह से मानसिक संत्रास से पीड़ित थीं। पाठक ध्यान दें कि किस तरह से राहु रेखाओं ने उन्हें मानसिक असन्तुलन दे रखा है। पाठक इनके शुक्र वलय पर ध्यान दें। इसने इन्हें मेधावी बनाया। प्रतिभा की यह धनी हैं। परन्तु इसकी सारी प्रतिभा, योग्यता समाप्ति के कगार पर थी। पता नहीं कहाँ एक आशा की किरण मन में छिपी हुई थी कि उनकी प्रतिभा एक दिन रंग अवश्य लाएगी। मैंने इनका

पति-पत्नी स्वस्थ हैं और सन्तान सुख के लिए परस्पर समागम करते हैं तो सन्तान सुख मिलेगा ही मिलेगा। यहाँ यह विधि का नियम क्यों फलीभूत नहीं हो रहा था यह तो राम ही जानें। मैंने उन्हें हीरा धारण करने की सलाह दी। साथ ही साथ वह अन्य यम, नियम, प्राणायाम आदि भी जीवन में अपनाने लगे। एक चमत्कार हुआ इसके ठीक ढेड़ वर्ष बाद उन्हें एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई।

उदाहरण-2

दुर्भाग्य से भरी श्रीमती माथुर जिस समय मेरे पास आयीं तो वह बुरी तरह से मानसिक संत्रास से पीड़ित थीं। पाठक ध्यान दें कि किस तरह से राहु रेखाओं ने उन्हें मानसिक असन्तुलन दे रखा है। पाठक इनके शुक्र वलय पर ध्यान दें। इसने इन्हें मेधावी बनाया। प्रतिभा की यह धनी हैं। परन्तु इसकी सारी प्रतिभा, योग्यता समाप्ति के कगार पर थी। पता नहीं कहाँ एक आशा की किरण मन में छिपी हुई थी कि उनकी प्रतिभा एक दिन रंग अवश्य लाएगी। मैंने इनका

जीवन गम्भीरता से पढ़ा। इनका गुरु क्षेत्र बलवान था। उस पर उठती हुई तीन रेखाएँ उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को मरने नहीं दे रही थीं। यही स्थिति उनके बुध पर्वत की थी। मैंने उन्हें एक ही अँगूठी में पुखराज तथा पन्ना धारण करने की सलाह दी। दो तीन वर्षों के अन्दर ही उनमें जीने की उमंग पुनः जाग्रत होने लगी उन्होंने अपनी कम्प्यूटर्स की अधूरी पढ़ाई पुनः पूरी की। इसमें उनके परिवार वालों का भी भरपूर सहयोग मिला। पाठकों को स्पष्ट बता दूँ रत्न के साथ-साथ राहु के लिए भी मैंने इन पर अनेक प्रयोग करवाए। आज वह एक सफल सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं।

उदाहरण-3

पाठकगण यह उदाहरण ध्यान से देखें। इनका जीवन का पूर्वार्द्ध संघर्षमय रहा। सीढ़ीदार शनि रेखा स्पष्ट बता रही है कि इनका भाग्योदय विलम्ब से और किश्तों में हुआ। इनकी पत्नी का इनके जीवन में आगमन भाग्यशाली सिद्ध हुआ। गुरु पर्वत का स्पष्ट गुरु वलय बता रहा है कि यह प्रभु के प्रति पूर्णतया समर्पित हैं। उनकी विशेष कृपा भी इनके भावी जीवन में रही। मेरी मान्यता है कि यदि भाग्य प्रबल है तो निमित्त साधन भी स्वतः मिलने लगते हैं। भाग्यरेखा में 31वें वर्ष से 35 वर्ष के मध्य का समय इनके सुनहरे काल को दर्शाता है। पहली पत्नी से इनका अलगाव हो गया था, मात्र कुछ ही दिनों में। विवाह होना-न होना बराबर था। दूसरा विवाह 31वें वर्ष में हुआ। इसी समय मैंने इन्हें नीलम तथा पुखराज धारण करवाया था जो इन्हें बहुत फला।

उदाहरण-4

अति उन्नत गुरु पर्वत केन्द्र से हटा हुआ शिखर उससे अलग को जाती हुई एक रेखा ने इन्हें अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी बना दिया था। जब यह मेरे सम्पर्क में आए तो रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज में द्वितीय वर्ष में पढ़ रहे थे। चन्द्र पर्वत पर झुकती हुई रेखा ने इन्हें भावुक भी बनाना प्रारम्भ कर दिया था। परिणामत: इनका मन पढ़ाई से उच्चाट होने लगा था। उस समय यह एक बहुत ही बहुमूल्य पुखराज तथा माणिक्य धारण किए हुए थे। मुझ पर उनकी बहुत आस्था थी। मैंने

वह दोनों रत्न उनसे उतरवा दिए और सलाह दी कि एक ही अँगूठी में मोती तथा माणिक्य धारण करें। मोती ने तो तत्काल अपना प्रभाव दिखाया। वह अपनी पढ़ाई के प्रति सजग हो गए। उनकी भावुकता व्यवहार में परिवर्तित होने लगी। सूर्य के ठीक शिखर पर अन्त हो रही आधी-अधूरी रेखा से मुझे कुछ विश्वास था कि वह गुरु की मित्र है। देर-सबेर अपना प्रभाव अवश्य दिखाएगी। आज भी वह दोनों रत्न धारण किए हुए हैं। अन्तर इतना है कि पहले दोनों चाँदी में थे अब अधिक मूल्य वाले वह एक ही सोने की अँगूठी में धारण किए हुए है। इस संयोग का चमत्कार भी उनके जीवन में हो रहा है। आज वह आई.ई.एस. में एक योग्य अधिकारी हैं।

✣✣✣

विभिन्न रोग एवं रत्न चयन

ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए रत्न धारण करने की जो परिपाटी ज्योतिषशास्त्र में प्रचलित है, निरर्थक नहीं है। इस शास्त्र के पीछे विज्ञान का रहस्य छिपा है। बौद्धिक वर्ग में यह बात सर्वविदित है कि सौरमण्डलीय प्रभाव पाषाणों के रंग-रूप, आकार-प्रकार एवं पृथ्वी, जल आदि तत्त्वों में से किसी तत्त्व की प्रधानता पर अवश्य ही पड़ता है। समगुण वाली रश्मियों के ग्रहों से पुष्ट और संचालित लोगों को वैसी ही रश्मियों के वातावरण से उत्पन्न रत्न यदि धारण करवाया जाए तो आशातीत परिणाम अवश्य मिल सकता है। इसे इस प्रकार समझें—ग्रहों के जिन तत्त्वों के प्रभाव से जो रत्न प्रभावित होते हैं, उनका प्रयोग उस रत्न के अभाव में उत्पन्न व्यक्ति पर करवाया जाए तो उस व्यक्ति को उचित शक्ति मिल सकती है। जो व्यक्ति कृष्ण पक्ष में जन्म लेते हैं उन व्यक्तियों पर चन्द्र ग्रह का विपरीत प्रभाव हो सकता है। उनके शरीर में चन्द्र रश्मियों की न्यूनता से कैल्शियम की कमी हो सकती है। ऐसे व्यक्तियों को मोती अथवा चन्द्रकान्त मणि प्रयोग करवाना लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

कोई भी घटना बिना कारण के घटित नहीं होती क्योंकि समस्त विज्ञान कारण और कारणवाद की सार्वभौम एकता पर आधारित होता है। शरीर में किसी भी रोग का होना, पनपना खनिज-लवणों के साथ-साथ विभिन्न वर्णों पर भी निर्भर करता है। रत्नों से स्फुटित होते हुए विभिन्न रंगों से शरीर के रंग प्रभाव में यदि सन्तुलन बना लिया जाए तो ग्रहों के प्रतिकूल रंग स्पन्दनों को अनुकूल बनाया जा सकता है। वैज्ञानिकों ने स्पेक्ट्रोस्कोप से अध्ययन करके अब यह सिद्ध कर दिया है कि ग्रहों से विभिन्न वर्ण निरन्तर प्रभावित होते रहते हैं। क्रिलियोन फोटोग्राफी से यह भी सिद्ध किया गया है कि ग्रहों के विभिन्न वर्गों की भाँति ही शरीर से प्रभावित प्रभामण्डल का भी रंग होता है। विडम्बना यह है कि यह सब चर्म चक्षुओं से दृष्ट नहीं है और जो कुछ दृष्ट नहीं है अथवा कहें कि अनुभूत नहीं है उसे अज्ञानी वर्ग अन्धविश्वास मान लेता है। इसके

विपरीत ज्ञात और अज्ञात को यदि तर्क, विवेचनात्मक सिद्धान्त रूप में ढाल दिया जाता है तो वह सब विज्ञान की परिधि में आ जाता है, वैज्ञानिक बन जाता है। इस अध्याय में हमारा प्रयास कारण को ज्ञात कर विभिन्न रोगों का निराकरण खोजना है और इसीलिए ग्रह तथा शरीर के वर्णभेद और उनमें परस्पर सामंजस्य की बात कही गयी है।

बच्चे के माँ के गर्भकाल तक वह पूर्णतया निर्विकार और ग्रहों की रश्मियों व वर्ण प्रभाव से पूर्णतया मुक्त होता है। पृथ्वी पर जन्म लेने के साथ ही साथ रश्मियों और वर्णों का प्रभाव उसके निर्विकार शरीर पर पड़ना प्रारम्भ हो जाता है। पूर्वजन्म के कर्मानुसार और वर्तमान वातावरण के अनरूप ही उसका शरीर निरोगी अथवा विभिन्न रोगों से पीड़ित होना प्रारम्भ हो जाता है। यह पीड़ित होना, उस पीड़ा की समयावधि, तीव्रता अथवा न्यूनता सब कर्मानुसार ही भोगी जाना प्रारम्भ हो जाती है और इस सुख-दुःख की सूचना ग्रह-नक्षत्रों के ज्ञान द्वारा ज्ञात करके तदनुसार उसका विभिन्न विधाओं द्वारा उपचार भी उपलब्ध करवाया जा सकता है। रत्न द्वारा विभिन्न रोगों की चिकित्सा उनमें से एक मार्ग है।

न्यूरोसिस्टीसरकोसिस नामक सिस्ट बनने से, शर्करा, सोडियम, पोटेशियम अथवा कैल्शियम की कमी होने से अथवा कोई आघात, इन्फेक्शन या ऑक्सीजन की कमी होने से अथवा मस्तिष्क तरंगों के अधिक मात्रा में बनने से शरीर में कम्पन्न, तनाव तथा संवेदनशील परिवर्तन होने लगते हैं। इनके कारण मूर्छा के साथ-साथ बेहोशी होने लगती है। मस्तिष्क में होने वाली इन असन्तुलित विद्युत तरंगों से हुए दुष्प्रभाव को मिर्गी कहा जाता है। रत्नों में इन असन्तुलित विद्युत तरंगों को सन्तुलित करने की क्षमता होती है। यह अथवा इनसे मिलते-जुलते अनेक मानसिक प्रवृत्तिजनित रोग, जिनमें मानसिक तनाव या डिप्रैशन प्रमुख है, मैंने रत्नों के माध्यम से ठीक किए हैं।

रुड़की सिविल अस्पताल के डॉ. शर्मा के बेटे आर्मी मेडिकल साइन्स के विद्यार्थी थे। अकस्मात् वह डिप्रैशन के रोगी हो गए। स्पष्ट है कि उनके लिए इलाज की कहीं भी असुविधा नहीं हुई होगी। पूना आर्मी मेडिकल बोर्ड ने उन्हें दो माह में स्वस्थ होने का नोटिस देकर कॉलिज से निष्कासित कर दिया। जब सारी भौतिक उपलब्धियाँ असफल होने लगती हैं तब व्यक्ति इधर-उधर

अभौतिकी उपायों की ओर भागता है। शर्माजी बच्चे को लेकर मेरे पास आए। मैंने उन्हें पुखराज तथा पन्ना पहनवाया। अनोखा प्रभाव सामने आया। दो माह के अन्दर ही लड़का कॉलिज जाने के लिए मानसिक व शारीरिक रूप से पूरी तरह तैयार हो गया। आज वह अपनी मैडिकल कोर की पढ़ाई पूर्ण करके एक सफल कमीशन्ड अधिकारी है। मिर्गी और डिप्रैशन के अनेक रोगियों के रत्न द्वारा स्वस्थ होने के ऐसे अनेक उदाहरण मेरे पास सुरक्षित हैं।

इसी प्रकार रक्तचाप, गुर्दे के दर्द, आँखों के रोग, हृदय सम्बन्धी रोग, एल्कोहल अथवा ड्रग एडिक्शन, डायबिटीज़ आदि अनेक रोगों पर भी मैंने अनेक प्रयोग सफलतापूर्वक करवाए हैं। यह अवश्य है कि ठीक होना अथवा न होना कुछ अन्य कारकों सहित व्यक्ति के विश्वास और लगन पर भी निर्भर करता है। दूसरे रोग का कारण कोई क्लीनिकल डिफेक्ट न हो अर्थात कोई दुर्घटना, अन्धा, लूलापन आदि जैसा स्थाई विकार न हो। मानसिकता से उपजे रोगों का उपचार रत्न द्वारा सफलतापूर्वक किया जा सकता है और अधिकांश रोग मानसिकता से ही उपजते हैं। कहा भी गया कि रोग मस्तिष्क में जन्म लेता है और शरीर में पनपता है इसलिए प्रत्येक रोग का इलाज सम्भव है रोगी का नहीं और इसलिए ही शरीर में पनपने से पूर्व उसका उपचार कर देने में ही बुद्धिमानी है। उपचार के लिए कौन सा मार्ग अपनाएँ यह आपकी आस्था और बुद्धिमत्ता पर निर्भर है।

उपचार की चिकित्सा पद्धति चाहे आयुर्वेदिक हो, यूनानी हो अथवा एलोपैथी हो। उद्देश्य अथवा लक्ष्य सबका यही होता है कि व्यक्ति स्वस्थ हो। यूनानी और भारतीय चिकित्सा पद्धति अर्थात वैद्यकी में जड़ी-बूटियों और धात्विक रस-भस्मों सहित विभिन्न धातुओं और पत्थरों को भी एक विशिष्ट स्थान दिया जाता है। चरक संहिता, वाग्भट, भैषज्य-रत्नावली, शारङ्गधर-संहिता आदि आयुर्वेदिक ग्रन्थों में विभिन्न खनिज रत्नों को जलाकर उनकी भस्म बनाकर औषधि के रूप में उनको प्रयोग करने की विधियाँ सविस्तार वर्णित हैं।

रत्नों से औषधि बनाना

रत्नों से औषधि बनाने की तीन विधियाँ प्रचलित हैं। इन विधियों से निर्मित औषधि अनेक असाध्य रोगों में रामबाण सा कार्य करती है। सरसाम, स्नायु

दुर्बलता, मिचली, उदर शूल, भगन्दर, अजीर्ण, पक्षाघात, सम्भोग शक्ति बढ़ाने के अनेक बाजीकरण उपचार, उच्च अथवा निम्न रक्तचाप, अस्थमा, नजला, दिल और फेफड़े सम्बन्धी अनेक रोग, प्लेग, चर्मरोग, स्मरण शक्ति, आँखों के अनेक रोग, रक्तस्राव, शारीरिक शिथिलता अथवा दुर्बलता, मोटापा, स्त्री सम्बन्धी अनेक रोग, अनेक प्रकार के ज्वर, अनेक प्रकार के गुप्त रोग, गठिया आदि अनेक रोगों से पीड़ित व्यक्ति इन औषधियों से लाभ पाते देखे गए हैं।

औषधि में प्रयुक्त रत्न उत्तम श्रेणी के होना अनिवार्य हैं। औषधि के लिए सामान्यतः सात रत्न माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, मूंगा, नीलम और मोती को शुद्ध करना भी आवश्यक माना जाता है।

रत्नों को शुद्ध करना

उत्तम श्रेणी का रत्न हो परन्तु उसे यदि शुद्ध नहीं किया गया होगा तो वह लाभ के स्थान पर हानि भी कर सकता है। आयुर्वेद में इन रत्नों को प्रयोग करने से पूर्व दोला यन्त्र द्वारा शुद्ध किया जाता है। इस विधि में मिट्टी की हंडिया में गाय का शुद्ध दूध, गोमूत्र अथवा कांजी भरकर रत्न को किसी कपड़े में बाँधकर इस प्रकार लटकाया जाता है जिससे कि वह हंडिया में लटका रहे, उसका तला न छुए। इसके बाद इस हंडिया को गोबर के कण्डे की हल्की आँच पर नुस्खे में वर्णित समयानुसार रखा जाता है। इस प्रकार शुद्ध रत्नों की तीन विधियों से औषधियाँ बनाई जाती हैं—रत्नों की गोलियाँ, रत्नों की भस्म और रत्नों की पिष्टी।

रत्नों की गोलियाँ

यदि शीघ्र प्रभाव पाने वाली अर्थात अधिक शक्तिशाली औषधिक गोलियाँ बनानी होती हैं तो सातों रत्नों को निश्चित मात्रा में लेकर जीवाणुरहित की गई स्वच्छ काँच की शीशियों में रखकर ऊपर से रेक्टीफाइड स्प्रीट अर्थात ईथर भर दिया जाता है। उसके बाद कार्क लगाकर प्रकाश से बचाकर कहीं ठण्डे स्थान में एक निश्चित समयावधि तक के लिए रख दिया जाता है। फिर जितनी शक्ति देनी होती है उसके अनुरूप शीशी को अँगूठे और तर्जनी ऊँगली से पकड़कर झटके दिए जाते हैं। अन्त में शीशी से रत्नों को निकालकर उसमें मिल्क शुगर की गोलियाँ भर दी जाती हैं। यह गोलियाँ औषधिक गुणों से

परिपूर्ण ईथर को अपने में सोख लेती हैं। जिस भी रत्न की गोली बनानी होती है ठीक इसी प्रकार से बना ली जाती हैं। इस प्रक्रिया में प्रयुक्त रत्न पुनः पुनः प्रयोग किए जाते हैं। इस तरह एक बार लिया गया रत्न आजीवन प्रयोग किया जा सकता है। विभिन्न रत्न अथवा रत्नों से बनी इन औषधिक गोलियों की मात्रा रोग और रोगी की आयु अनुसार निर्धारित की जाती है।

रत्नों की भस्म बनाना

अधिकांशत: विभिन्न रत्नों से बनी भस्मों का प्रयोग ही भारतीय चिकित्सा पद्धति में प्रचलित है। भस्म बनाने के लिए उत्तम प्रकार के अक़ीक़, संगे यशब अथवा संगे समाक आदि खनिजों से बनी खरल में पहले रत्नों को पीसकर और उसके बाद विशेष क्रिया द्वारा जलाकर अथवा फूँककर विभिन्न खनिजों की भस्म बनाई जाती हैं। भारतीय और यूनानी चिकित्सा पद्धति में मूलभूत अन्तर मात्र रत्न अथवा अन्य खनिज को पीसकर अथवा उसकी भस्म बनाकर प्रयोग करने में ही है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में मान्यता यह है कि भस्म बनाने में रत्न अथवा खनिज के मौलिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं इसलिए रत्न का प्रयोग पिष्टी, चूरण अथवा बुरादा बनाकर किया जाता है। हमारा मूल विषय रत्नों का सीधा प्रयोग करना है यदि विस्तार से यहाँ औषधियाँ बनाना व उनका उपयोग प्रारम्भ कर दिया तो एक अलग से ग्रन्थ तैयार करना पड़ेगा। फिर भी कुछ रत्नों की भस्मों का वर्णन यहाँ कर रहा हूँ जिससे विषय रोचक और जिज्ञासापूर्ण बन सके। यहाँ सावधान अवश्य करूँगा कि बिना योग्य वैद्य के इस दिशा में न बढ़ें अन्यथा हानि हो सकती है।

हीरे की भस्म

हीरे की भस्म आयु एवं शक्तिवर्धक होती है, सम्भोग शक्ति और शारीरिक तथा मानसिक और स्नायु शक्ति में वृद्धि करती है। इसका उचित सेवन मनुष्य का कायाकल्प करके सौन्दर्य प्रदान करता है। इसमें समस्त रोगों को शमन करने की शक्ति होती है। नवाबों और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने वाले अनेक राजा-महाराजाओं के विषय में प्रसिद्ध है कि वह हीरक भस्म से किस प्रकार बुढ़ापे में भी जवान बने रहते थे।

खैर की छाल के क्वाथ में इस भस्म की दो चावल बराबर मात्रा कोढ़, भगन्दर, नासर के घावों को ठीक करती है।

पुरानी से पुरानी खाँसी, क्षय रोग, फेफड़ों के रक्तस्राव और पुराने ज्वर आदि में दो चावल भस्म बाँसा के रस में खिलाने से बहुत लाभ मिलता है।

पुराने से पुराने दमा, वायु प्रणाली के अनेक रोग, साइनस, सर्दी आदि में दो चावल मात्रा अदरक के रस और शहद के साथ लेने पर बहुत लाभ मिलता है।

स्वप्न दोष, वीर्य प्रमेह, बढ़ती आयु के अनेक रोग, क्षीणता और बाजीकरण के अनेक प्रयोगों के लिए बिदारी कंद अथवा सतगिलोय के साथ यह भस्म लेने पर चमत्कारी रूप से प्रभाव दिखाई देता है।

माणिक्य की भस्म

माणिक्य की भस्म का प्रयोग विशेष रूप से हृदय सम्बन्धी अनेक रोगों में किया जाता है। यह हृदय को शक्ति प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त शारीरिक दौर्बल्य, रक्तस्राव, भूख न लगना, मस्तिष्क और स्नायु दुर्बलता, प्लेग, उन्माद, निम्न रक्तचाप, स्मरण शक्ति का ह्रास और अनेक चर्मरोग आदि में इस भस्म का प्रयोग किया जाता है।

पन्ने की भस्म

हृदय, स्नायु रोग, दुर्बलता, सरसाम, दिल की असामान्य धड़कन, मस्तिष्क, उदर शूल, बवासीर, अनेक प्रकार के नेत्र आदि रोगों में पन्ने की भस्म बहुत लाभकारी सिद्ध होती है।

मूंगे की भस्म

दूध अथवा मक्खन के साथ इस भस्म को प्रयोग करने से वीर्य गाढ़ा होता है। यह मस्तिष्क को बल देती है।

भेड़ के दूध के साथ लेने पर हड्डी के अनेक रोगों, विशेषकर उनके टेढ़े हो जाने अथवा मुड़ जाने में लाभ मिलता है।

कचनार की छाल और शहद में मिलाकर लेने से गले की गिल्टी दूर होती है।

पुखराज की भस्म

पुखराज की भस्म जठराग्नि को बढ़ाकर भूख प्रबल करती है। यह पाचन क्रिया में बहुत लाभदायक है। वीर्य को पुष्ट करती है। पित्तजनित रोगों में

यह बहुत लाभकारी है। पेचिश, गले के रोग, मिर्गी, जोड़ों का दर्द, बढ़ती आयु से हुई कमजोरी आदि में यह बहुत उपयोगी है।

नीलम की भस्म

आँखों के रोग, रक्तदोष, श्वाँस रोग, उन्माद, हिचकी, बवासीर, मलेरिया आदि में इसका प्रयोग किया जाता है। यह भस्म भूख बढ़ाती है और पाचन तंत्रिका पर नियंत्रण रखती है।

मोती की भस्म

बाजीकरण में, स्त्रियों के अनेक रोगों में, उन्माद अर्थात पागलपन में, आँखों के रोगों में इस भस्म का प्रयोग किया जाता है।

इन सात रत्नों के अतिरिक्त भी अन्य रत्नों की भस्में बनाकर विभिन्न रोगों में प्रयोग किया जाता है। यह एक अलग विषय है। एक बार पुनः कहूँगा कि पाठकगण योग्य चिकित्सक के परामर्श बिना अथवा पूर्ण ज्ञान प्राप्त किए बिना इन भस्मों को बनाने अथवा उपयोग करने का प्रयास न करें क्योंकि अज्ञानता से लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है।

रत्नों की पिष्टी बनाना

गुणकारी पिष्टी बनाने के लिए उत्तम श्रेणी के रत्नों का चुनाव, उनका शुद्ध करना और खरल करके चूर्ण बनाना महत्त्वपूर्ण घटक हैं। जितने ही उत्तम श्रेणी के रत्न लिए जाएँगे और उन्हें शुद्ध किया जायेगा उतने ही उत्तम प्रकार की पिष्टी बनेगी।

यूनानी चिकित्सा में रत्नों के रंग

यूनानी ज्योतिष में राहु और केतु को ग्रह नहीं माना गया है। उनके अनुसार अन्य सात ग्रह ही शरीर के नियामक हैं। उन्होंने उन सात ग्रहों से सम्बन्धित रत्नों को ही तदनुसार रोगोपचार में प्रयुक्त माना है। विभिन्न सात ग्रहों के रत्न तो उनके वही है जो भारतीय ज्योतिष में सामान्यतः प्रचलित हैं परन्तु उनके रंग भेद में थोड़ा सा अन्तर है।

चन्द्र का रत्न मोती है। भारत व अन्य पाश्चात्य आदि देशों में श्वेत आभा वाले मोती को सर्वोच्च माना गया है। परन्तु यूनानी पीत अथवा नारंगी आभा वाले मुक्तक को उपयुक्त मानते हैं।

मूंगा रक्तिम आभा लिए होता है और सब एक मत से इसे ही प्रयोगानुकूल मानते हैं परन्तु यूनानी विचारक पीत-नारंगी वर्ण मूंगे को उत्तम मानते हैं।

पन्ना सर्वोच्च वह है जो नीम के पत्ते से रंग वाला हरा हो परन्तु यूनानी हल्के हरे पन्ने को प्रयोज्य मानते हैं।

नीलम नीली आभायुक्त रत्न है परन्तु यूनानी विचारक बैंगनी आभा वाले रत्न को उत्तम मानते हैं।

हीरा काँच की तरह श्वेत आभायुक्त रत्न है। किसी हीरे में कुछ रंग विशेष की आभा फूटती हैं। यूनानी विचारक उस हीरे को उपयुक्त मानते हैं जो नीलवर्ण हो।

पुखराज श्वेत अथवा पीतवर्ण होता है। परन्तु यूनानी आसमानी पुखराज को मान्यता देते हैं।

ग्रह और रत्नों के रंग

वैसे तो प्रकृति का कण-कण उपयोगी है। परन्तु यहाँ हमारा विषय रत्न है। विश्वभर के विषय के असंख्य विचारकों ने प्रत्यक्ष प्रमाणों सहित यह प्रतिपादिक किया की गोलियों, भस्म और पिष्टी के साथ-साथ मूल रूप से भी रत्न विभिन्न रोग निवारण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। प्रकृति प्रमियों ने यह भी निष्कर्ष निकाला है कि जैसे-जैसे हम प्राकृतिक नियमों और सम्पदाओं से दूर होते गए हैं हमारे शारीरिक कष्ट बढ़ते जा रहे हैं। इस मत से प्रत्येक व्यक्ति सहमत है परन्तु इसे समझने-परखने का प्रयास कोई नहीं कर रहा यही हमारे दुखों का कारण है।

ब्रह्माण्ड में सात चर्चित अदृष्ट रंग व्यापत हैं और इनसे पृथ्वी का कण-कण प्रभावित होता है। त्रिकोणाकार शीशे अर्थात प्रिज्म से इन अदृष्ट रंगों का अस्तित्व सामने आता है। खोज में पाया गया कि इन इन्द्रधनुष सात रंगों का एक क्रम भी है। इसे कण्ठस्थ करने के लिए हिन्दी का शब्द बैनीआहपीनाला और अंग्रेजी का शब्द VIBGYOR बनाया गया। यह विभिन्न रंगों के प्रथम अक्षर हैं जिस क्रम से उनका अस्तित्व जाना गया है। वर्षा के बाद हल्की धूप में बना इन्द्रधनुष इन्हीं सात रंगों को दर्शाता है। यह रंग हैं—बैंगनी, आसमानी नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल।

प्रत्येक ग्रह इनमें से एक रंग की आभा बिखेरता है। हमारे शरीर के अवयव इन रंगों के अभाव में क्रियाशील होते हैं। मानव शरीर में भी सात रंग विद्यमान हैं। किसी भी रंग की न्यूनता से शरीर में कोई न कोई व्याधि उत्पन्न हो जाती है। यदि रंग की इस न्यूनता की पूर्ति कर दी जाए तो उस व्याधि से छुटकारा पाया जा सकता है। रत्न गुणों में (Sensitive Radioactive Crystals) होते हैं तथा सतरंगी किरण पट्टी में से अपने वर्ण के अनुरूप रंग को समाहित करने का विलक्षण गुण रखते हैं। इस प्रकार यह मानव शरीर में रक्तिम रंग की क्षतिपूर्ति कर उसे स्वस्थ बना सकते हैं। यह सब मात्र शास्त्रोक्त नहीं हैं, पूर्णतया वैज्ञानिक भी है। ग्रहों से निकलते इन्द्रधनुषीय यह रंग कोई न कोई शारीरिक अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मानव शरीर अस्थि, मांस और मज्जा से बना एक पिण्ड है। शरीर में खनिज और कार्बनिक पदार्थ आदि का सन्तुलन बना हुआ है। इन खनिज और अन्य पदार्थों के कारण रत्नों के रंगों का भी अस्तित्व भी माना गया है। जैसे नारंगी और लाल रंग आयरन ऑक्साइड, क्रोमियम, लीथियम, मैग्नीज और लेट्राइट के कारण होता है। पीला रंग हाइड्रस आयन आक्साइड (Limonite), फैरिक ऑक्साइड तथा क्रोमेट्स के कारण होता है। हरा रंग फैरस ऑक्साइड, क्रोमियम ऑक्साइड और फैरस सिलिकेट के कारण होता है। नीला रंग कोबाल्ट, एल्यूमीनियम, जिंक और मैग्नीशियम के कारण होता है। बैंगनी रंग कोबाल्ट तथा मैग्नीज के कारण होता है। काला रंग मैग्नेटाइट, कार्बन, कोल डस्ट के कारण होता है। सफेद रंग वैसे तो यह कहा जाता है कि सब रंगों के मिला देने पर बनता है परन्तु यह वास्तव में काओलिन, क्वाट्ज, फैल्सपार, लैड तथा एस्बेस्टस आदि के कारण होता है। रत्नों के विभिन्न इन रंगों के कारण ही शरीर के रोगग्रस्त तत्त्व को सम्बन्धित ग्रह रंग रश्मि पीड़ा में सामन्जस्य स्थापित करने में सहायता मिलती है अथवा कहें कि रंग विशेष की न्यूनता की पूर्ति होती है और व्यक्ति उस रोग से राहत अनुभव करने लगता है।

किस ग्रह का रंग कैसा है उससे शरीर किन-किन व्याधियों से पीड़ित हो सकता है तथा कौन-सा रत्न किस रोग में तदनुसार लाभकारी सिद्ध हो सकता है, साथ ही साथ यह भी बताना आवश्यक है कि राशि तथा नक्षत्र कौन से रोग दर्शाते हैं, इससे विषय सरल हो जाएगा।

चन्द्र राशि	रंग	स्वामी ग्रह	प्रभाव
1. मेष	लाल-श्वेत	मंगल	मस्तिष्क तथा पित्त
2. वृष	श्वेत	शुक्र	हड्डी, मांस, मुख, नेत्र, वात एवं कण्ठ नली
3. मिथुन	लाल-श्वेत	बुध	श्वाँसनली, कफ, कण्ठ और भुजा
4. कर्क	नील वर्ण	चन्द्र	वक्ष, रक्त संचार, पित्त तथा फुफ्फुस
5. सिंह	धूसर	सूर्य	मेरु दण्ड, पीठ, आमाशय, आँत, वात तथा हृदय
6. कन्या	श्याम	बुध	माँस-कफ, अस्थि, आंतड़ी तथा उदर का वाह्य भाग
7. तुला	श्याम	शुक्र	पित्त, गुर्दा, श्वाँसतन्त्र तथा कमर
8. वृश्चिक	बादामी	मंगल	रक्त संचार, गुप्ताङ्ग, जननेन्द्रिय, वात तथा गुदा
9. धनु	पीला	गुरु	कफ, स्नायुतन्त्र, नितम्ब तथा जांघ
10. मकर	चितकबरा	शनि	अस्थि, माँस तथा पित्त
11. कुम्भ	आसमानी	शनि	वात, अस्थि, जोड़, नसें, घुटने तथा जाँघ
12. मीन	गोरा	गुरु	कफ तथा रक्त संचार, नसें, पाँव तथा पाँव की उँगलियाँ

विभिन्न नक्षत्र के अनुसार सम्भावित रोग निम्न प्रकार से हैं—

नक्षत्र	स्वामी ग्रह	रोग
1. अश्विनी	केतु	वात, पक्षाघात तथा अनिद्रा
2. भरणी	शुक्र	आलस्य तथा ज्वर
3. कृत्तिका	सूर्य	अनिद्रा, उदर व नेत्र रोग
4. रोहिणी	चन्द्र	सिरदर्द, ज्वर
5. मृगशिरा	मंगल	चर्मरोग, त्रिदोष
6. आद्रा	राहु	अनिद्रा, वात, त्रिदोष
7. पुनर्वसु	गुरु	सिरदर्द तथा ज्वर
8. पुष्य	शनि	ज्वर, शारीरिक कष्ट
9. आश्लेष	बुध	पाँव के रोग व पीड़ा

10. मघा	केतु	सिरदर्द तथा वात
11. पूर्वाफाल्गुनी	शुक्र	सिरदर्द तथा ज्वर
12. उत्तरा फाल्गुनी	सूर्य	ज्वर तथा उदरशूल
13. हस्त	चन्द्र	उदरशूल, मंदाग्नि
14. चित्रा	मंगल	अनेक प्रकार के कष्ट
15. स्वांति	राहु	अनेकानेक कष्ट
16. विशाखा	गुरु	पीड़ा तथा कुक्षिशूल
17. अनुराधा	शनि	सिरदर्द, ज्वर आदि पीड़ा
18. ज्येष्ठा	बुध	पित्त
19. मूल	केतु	त्रिदोष, मुख तथा उदर रोग
20. पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	सिरदर्द, कम्पन्न
21. उत्तराषाढ़ा	सूर्य	कटि तथा उदर शूल
22. श्रवण	चन्द्र	त्रिदोष,ज्वर तथा अतिसार
23. धनिष्ठा	मंगल	आमाशय, मूत्र, ज्वर आदि
24. शतभिषा	राहु	सन्निपात, वात, ज्वर
25. पूर्वाभाद्रपद	गुरु	वमन, सिरदर्द, त्रिदोष
26. उत्तराभाद्रपद	शनि	दन्तशूल, पाण्डुरोग तथा ज्वर
27. रेवती	बुध	ज्वर तथा वात-पित्त

एक संक्षिप्त विवरण इस पर भी डाल लिया जाए कि नौ-रत्न कौन-कौन से रंग बिखेरते हैं तथा वह किस भाग को प्रभावित करके शरीर को रोगी बनाते हैं। राहु-केतु का वर्णन नहीं किया जा रहा क्योंकि इन्द्रधनुषीय सात रंगों में इनका वर्णन नहीं मिलता वैसे यह अल्ट्रा-वायलेट किरणें स्फुटित करते हैं।

रंग	प्रभाव	सम्बन्धित रत्न
1. बैंगनी	स्नायु तन्त्र	पुखराज
2. आसमानी नीला	वीर्य	हीरा
3. नीला	चर्बी ग्रन्थि	चन्द्रकान्त मणि
4. हरा	माँस	पन्ना
5. पीला	मज्जा	मूंगा
6. नारंगी	रक्त	मोती
7. लाल	अस्थि	माणिक्य

रोगोपचार हेतु रत्न-उपरत्न युग्म चयन

रोगोपचार हेतु रत्न विज्ञान क्षेत्र में विश्वव्यापी क्रान्तिकारी अनुसन्धान कार्य हो रहे हैं। अध्ययन, स्वाध्याय, मनन तथा हजारों अपने-पराये परीक्षण तथा अनुभव के आधार पर कुछ सामान्य रोगोपचार हेतु रत्न तथा रत्न-उपरत्नों के विभिन्न संयोग दे रहा हूँ।

पाश्चात्य देशों में इनका व्यापक चलन है। अपने प्रयोगों में मैं भी स्वयं के शोधकृत अनेक युग्मों पर बल देता हूँ। यह सब प्रामाणिक तो है ही दूसरे रोगी पर कोई विपरीत प्रभाव भी इससे अनुभव में नहीं आया है। हाँ व्यक्ति की मानसिकता, भ्रम-शंका का तो कोई निदान है ही नहीं। युग्मों का अनुकूल प्रभाव भी अकेले एक रत्न की तुलना में अधिक तथा दीर्घकालीन होता है। अकेले एक रत्न को तो उँगली विशेष में धारण करने का एक नियम है, जिसका वैज्ञानिक आधार भी मैंने लिख दिया है परन्तु दो अथवा अधिक रत्न की अँगूठी अनामिका उँगली में ही धारण करनी है। विकल्प के रूप में रत्नों का पैन्डेन्ट बनवाकर धागे अथवा चेन में डालकर गले में भी धारण किया जा सकता है।

अँगूठी अथवा पैण्डेन्ट में दो अथवा दो से अधिक रत्न जड़वाने हों तो वह ऐसे लगवाये जाएँ कि उँगली अथवा सीने पर अच्छी तरह से स्पर्श करते रहें। यह सदैव ध्यान रखें कि रोगोपचार हेतु सर्वाधिक वाँछित प्रभाव उस स्थिति में हो सकता है जब प्रथम श्रेणी के रत्न चुने गए हों। अन्यथा उपरत्न तो एक विकल्प है ही। आरोग्य की अवस्था प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद पद्धति में केस रत्न अथवा उपरत्न की गोलियाँ, भस्म तथा पिष्टी और रत्न विज्ञान में रत्न अथवा उनके संयोग प्रयोग करने से कौन-कौन सी शारीरिक व्याधियों में राहत मिल सकती है अथवा रोग का पूर्णतया शमन हो सकता है इसका विवरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। अपने-अपने बुद्धि विवेक से रत्न चयन की यह विधा भी अवश्य अपनाएँ।

रत्न/रत्न युग्म	सम्भावित रोग
रक्त वर्णिम माणिक्य	हृदय रोग, रक्तचाप, दिल की असामान्य धड़कन, बेचैनी, नेत्र रोग, दृष्टिदोष (दायीं आँख के), भय, हृदय रोग के कारण हुई दुर्बलता, रक्त की निष्क्रियता, शारीरिक ऊर्जा, आत्मविश्वास, हड्डी के रोग, मधुमेह, ज्वर, पित्त रोग, फेफड़े के रोग, मधुमेह, अजीर्ण, मानसिक रोग, मन्दाग्नि, पाण्डु रोग, अपेण्डीसाइटिस, कैंसर।
नारंगी वर्णिम मो	स्त्रियों के अनेक रोग, मिर्गी, मानसिक रोग, उन्माद, अज्ञात भय, नेत्र दोष अथवा रोग (बायीं आँख के), वीर्य दोष, रक्त दोष, पाण्डुरोग, अत्यधिक रक्तस्राव, कफ, छाती के रोग, ट्यूमर, भेंगापन, सन्निपात, प्रदर, रतौंधी, रक्ताम्लता, कैल्शियम की न्यूनता से पनपे रोग, श्वाँस, खाँसी, टॉन्सिल्स, दन्त रोग, मूत्र विकार, वीर्य दोष, सर्दी, बवासीर, पथरी, मुँह के रोग, उदर विकार, जोड़ों का दर्द, हृदय रोग, फोड़े-फुंसी।
नील अथवा हरित वर्ण पन्ना	साँस के रोग, दमा-खाँसी, वाणी दोष, आँतों की सूजन, चर्म रोग, अनिद्रा, मस्तिष्क की दुर्बलता, बाल, नर्से, माईग्रेन, गुप्त रोग, वात रोग, श्वेत कुष्ठ, मंदाग्नि।
लाल मूंगा	रक्तदोष जैसे रक्त की अशुद्धता, निम्नता आदि, मानसिक एवं मस्तिष्क सम्बन्धी विकार, मिर्गी, उन्माद, स्नायु तन्त्र सम्बन्धी दोष, अण्डकोष, कब्ज, माँसपेशियों के विकार, हड्डियों के अनेक रोग, बवासीर, मज्जा, आँत,

अस्थमा, गर्भपात, शल्य, घाव, जलन, प्रदर, कर्णरोग, चर्म रोग, मासिकधर्म की अनियमितता, आलस्य, भूख-प्यास की न्यूनता, बच्चों का सूखा रोग।

श्वेत अथवा पीतवर्ण पुखराज पाचन तन्त्र सम्बन्धी रोग, पित्त, आँत, गुर्दे, स्थूलता, जिगर, स्तन रोग, शरीर का असन्तुलित विकास, टी.बी., हृदय रोग, वात, दायाँ कान, मुँहासे, तिल्ली, पाण्डुरोग, दमा, खाँसी, नेत्र, दन्तक्षय, नकसीर, जलन, कुष्ठ रोग, वमन, सिरदर्द, कुकर खाँसी, मुख की दुर्गन्ध, रक्तस्राव।

नीलवर्ण हीरा, वीर्य दोष, धातु, प्रमेह, शीघ्रपतन, नपुंसकता, मुख व कण्ठ रोग, श्वसन क्रिया सम्बन्धी दोष, सिफलिस, यौन रोग, जलघात, मंदाग्नि, अतिसार, अजीर्ण, मधुमेह, रक्त दोष।

नीलवर्ण नीलम नीलम धारण करने अथवा औषधि के रूप में सेवन करने से मूत्र सम्बन्धी रोग, दमा, क्षय, कुष्ठ, हृदय रोग, नेत्र रोग, अजीर्ण, खाँसी, वमन, खुजली, वृक्क सम्बन्धी रोग, रसौली, जलोदर, पागलपन आदि।

बैंगनी वर्ण नीलम वायु, उदर, वीर्य, मूर्छा, कैंसर, बन्धयत्व, उन्माद, लिंग, योनि, नपुंसकता, मोतियाबिन्द, स्नायुतन्त्र, गठिया, गुदा, खाँसी, ज्वर, वमन, अजीर्ण, नेत्ररोग, दमा, कुष्ठ, हृदय, जलोदर, चर्मरोग, रुसी, वृक्क, गंजापन, सन्निपात, दीमाग की गरमी, मुँह से रक्तस्राव, पक्षाघात, निम्नरक्तचाप, पोटेशियम की कमी से रोग।

गोमेद स्वस्थ काया, चर्म रोग, मिर्गी, वायु, बवासीर, रक्तस्राव, गर्मी, अनिद्रा, तिल्ली, ज्वर, अल्सर, पेट के कीड़े, विषाणुजनित संक्रामक रोग, पीलिया, तनाव, घबराहट, ट्यूमर के विकास को रोकने में सहायक, अज्ञात भय।

लहसुनिया भूत-प्रेत बाधा, मनोरोग, अशान्ति, मस्तिष्क के सेरिब्रल भाग का नियंत्रण।

रोग विशेष के अनुरूप कौन-सा रत्न-उपरत्न अथवा उनके संयोग अँगूठी अथवा पैन्डेंट में जड़वाकर प्रयोग करें, कि रोग से छुटकारा मिले, इसका विवरण भी सारिणी के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। अन्य विधियों से अपना भाग्यशाली रत्न चुन लें। यह देखें कि क्या वह रोग के लिए दिए गए इन रत्नों से भी संयोग रखता है। यदि ऐसा है तब तो आपका रोग निदान हेतु किया गया रत्न अथवा रत्नों का चयन प्रभावशाली सिद्ध होगा ही होगा। यदि ऐसा नहीं है तब भी रोग के अनुसार आप रत्न धारण कर सकते हैं। यह पूर्व में लिख ही दिया है कि विपरीत प्रभाव की सम्भावना नहीं के बराबर होती हैं तथापि किसी व्यक्ति विशेष के विषय में यह कथन प्रारब्ध के अनुसार असफल भी हो सकता है। विकल्प तो सार्वभौमिक हैं हर स्थान, समय, व्यक्ति आदि के अनुसार अदल-बदल सकते हैं।

रत्न/उपरत्न अथवा उनके युग्म	किस रोग में लाभ देंगे
पन्ना+पुखराज अथवा चन्द्रकान्त+गोमेद	अम्ल तथा पित्त (Acidity)
लाल मूंगा+मोती अथवा फीरोजा+पीला पुखराज	दुर्घटना (Accident) से रक्षा के लिए
पुखराज+नीलम अथवा चन्द्रकांतमणि+पन्ना	एलर्जी (Allergy)
लाल मूंगा+पीला पुखराज	रक्त की कमी, हार्निया
लाल मूंगा+पन्ना	मानस रोग (Neuralgia), स्मृतिनाश (Amnesia)

लाल मूंगा+पीला पुखराज अथवा पन्ना+चन्द्रकान्त	मूर्छा (Apoplexy), हार्निया, गठिया (Gout Arthiritis), मूत्र सम्बन्धी (Bladder), आँत्र गुल्म (Appendicitis)
लाल अक्रीक+लाल मूंगा	श्वाँस रोग (Asthma)
पन्ना+चन्द्रकांत मणि+पुखराज	सूखा रोग (Atrophy), निर्बलता
नीलम+पन्ना अथवा पुखराज+माणिक्य	बालों के रोग, गंजापन लीवर (Liver Trouble)
माणिक+मोती अथवा मूंगा+चन्द्रकांत	अन्धत्व (Blindness)
चन्द्रकांत मणि	फोड़े-फुंसी, आँख का रोग (Conjunctivitis)
पन्ना+पुखराज+लाल मूंगा	ब्रेन ट्यूमर (Brain Tumer)
हल्का नीलम+लाल मूंगा	कैंसर
पन्ना+मोती अथवा पन्ना+मोती+माणिक्य या मूंगा	मोतिया बिन्द (Cataract)
लाल मूंगा+मोती	अर्श (Piles), रंगहीनता (Colour Blindness)
सफेद मूंगा+लाजवर्त अथवा ओपल+मोती	चर्मरोग (Dermatitis), खाज-खुजली (Eczema)
सफेद मूंगा+सफेद पुखराज	मधुमेह (Diabetes) अतिसार (Diarrhoea)
पन्ना+पुखराज अथवा गोमेद	पाचनतन्त्र (Digestive Disorder)
सफेद मूंगा+लाल मूंगा	कष्टार्तव (Dysmenorrhoea)

चन्द्रकांत मणि+नीलम	लाल चकत्ते (Carbuncle)
लाल मूंगा+पन्ना	कान के रोग, पित्ताश्मरी (Gall Stones)
पन्ना+चन्द्रकांत मणि	मिर्गी (Epilepsy), सिरदर्द
लाल मूंगा+चन्द्रकांत मणि	नासूर, भगन्दर (Fistula), मलेरिया, मिर्गी, जलोदर (Hydrocele), प्रमेह, सूजाक (Gonorrhoea)
बड़े से बड़ा मोती	सर्दी, उत्साहहीनता (Frigidity)
सफेद मूंगा+चन्द्रकांत	गलगण्ड (Goitre)
लाल मूंगा+माणिक्य	अतिगलन (Gangrene)
पन्ना+पीला पुखराज+चन्द्रकांत	हृदय रोग (Heart Disease)
पन्ना+पुखराज+चन्द्रकांत+माणिक्य अथवा पन्ना+पीला पुखराज+चन्द्रकांत	टाइफाइड (Typhoid)
पन्ना+पुखराज+नीलम अथवा लाल मूंगा+मोती	उच्चरक्तचाप (High Blood Pressure)
हीरा+लाल मूंगा अथवा हीरा+पुखराज (पीला अथवा सफेद)	नपुंसकता (Imotency)
पन्ना+चन्द्रकांत+पुखराज	अनिद्रा (Insomnia), एकाग्रता का अभाव
लाल मूंगा+नीलम	पाण्डुरोग या पीलिया (Jaundice)
गोमेद+लाल मूंगा	कोढ़ (Leprosy)
हीरा+मोती+फिरोजा	श्वेत कुष्ठ
सफेद मूंगा+पन्ना	श्वित्र रोग

माणिक्य+पैरिडौट	प्रेतबाधा
पन्ना+पुखराज+चन्द्रकांत अथवा गोमेद+लहसुनिया	वमन
लाल मूंगा+चन्द्रकांत अथवा मोती	मस्तिष्क विकार के कारण असन्तुलित शरीर
गोमेद+चन्द्रकांत	स्वर अथवा वाणीदोष
मोती+माणिक्य+पन्ना+लाल मूंगा	स्मृतिदोष
मोती+लाल मूंगा+चन्द्रकांत अथवा लाल मूंगा+मोती	अर्श (Piles)
नीलम+गोमेद अथवा माणिक्य+लाल मूंगा अथवा लाल मूंगा+पीला पुखराज	कमर का दर्द (Backache)
माणिक्य+लाल मूंगा अथवा मोती+लाजवर्त अथवा सफेद मूंगा	शीत दंश (Frostbite) मुँहासे (Pimple)
माणिक्य+मूंगा	शीत ज्वर
माणिक्य+मोती+पन्ना गोमेद+चन्द्रकांत अथवा पुखराज+मोती अथवा मूंगा+पुखराज	सिरदर्द (Headache) दाँतों के अनेक रोग
पुखराज+मूंगा+मोती	दुर्घटना से बचाव का रक्षा कवच
पुखराज+चन्द्रकांत	लू लगना (Sun Stroke)
हीरा+मोती+पुखराज	हार्निया (Hernia)
गोमेद+पुखराज	गठिया (Gout)
लाल मूंगा+चन्द्रकांत	मलेरिया (Malaria) अथवा विषम ज्वर

स्फटिक+गोमेद अथवा गोमेद+लाजवर्त	गुल्म (Peptic Alcer)
जिरकॉन+चन्द्रकांत+फिरोजा अथवा पुखराज+नीलम	एड्स (Aids)
पीला पुखराज+लाल मूंगा	कब्ज (Constipation), पित्त (Bile)
लाल मूंगा+पुखराज	यक्ष्मा (Tuberculosis)
लाल मूंगा+सफेद पुखराज	फिरंग रोग (Syphilis)
लाल मूंगा+पीला पुखराज	फुफ्फुस ज्वर (Pneumonia)
लाल मूंगा+पन्ना	पक्षाघात (Paralysis), मानस रोग (Neuralgia)
लाल मूंगा+पन्ना	गर्भपात (Miscarriage)
पन्ना+चन्द्रकांत+पीला पुखराज	मनोरोग (Mental illness)
लाल मूंगा+चन्द्रकांत	जलोदर (Hydrocele)

+++

आयुर्वेद शास्त्र का मूल सिद्धान्त

अपामार्ग (ऊँगा), अर्क (अर्क), पलाश (ढाक), खदिर (खैर), उदुम्बर (गूलर), अश्वत्थ (पीपल), तथा कुशा इन सातों औषधियों में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू तथा शनि सातों ग्रहों के क्रमशः विशेष तत्व विद्यमान हैं। इस प्रकार सोने, चाँदी, तांबा, पीतल, कांसा, पारा, और लोहा — इन सातों धातुओं में तथा माणिक्य, नीलम — इन सात रत्नों में क्रमशः सूर्यादि सात ग्रहों के विशेष अंश उपलब्ध होते हैं। सो मानव-पिण्ड जब जिस देवता के प्रदत्त तत्व में न्यूनता किंवा अधिकता आ जाए तो उसके तारतम्य को ठीक करने के लिए तत्तद् औषधियों की विधिवत उपासना की जाती है यही आयुर्वेद शास्त्र का मूल सिद्धान्त है।

— आचार्य श्री राम शर्मा

रोगोपचार की रत्नजड़ित प्लेट

किसी रोग के निदान के लिए एक अल्पमूल्य मशीन बनाकर हम आशातीत लाभ उठा सकते हैं। इस मशीन का उपयोग उस स्थिति में भी किया जा सकता है जबकि रोगी किसी दूरस्थ स्थान पर प्रवासी हो। लग्न यन्त्र की तरह यह मशीन भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग ढंग से बनेगी। जिस कमरे में अथवा स्थान पर रोगी का रहना-सोना होता है वहाँ इसका प्रयोग करवाया जाता है। यदि रोगी के निमित्त कोई अन्य व्यक्ति इसका उपयोग करता है तो रोगी के चित्र के सामने इसे वृत्ताकार घुमाने की व्यवस्था की जाती है।

जिस रोगी के लिए यह मशीन बनानी है सर्वप्रथम उसके अनुरूप भाग्यशाली रत्न अथवा रत्नों के युग्म चुन लें। इन रत्नों का संयोग यदि उसकी बीमारी से सम्बन्धित रत्न से भी होता है तब तो यह बहुत शुभ है अन्यथा भाग्यशाली रत्न के स्थान पर वह सम्बन्धित रत्न भी जोड़े जा सकते हैं जो बीमारी से सम्बन्धित रत्न से मित्रवत भाव रखते हैं तथा अन्य किसी विधि द्वारा रोगी के लिए शुभ होते हैं। इन रत्नों को रोगी से सम्बन्धित धातु की तीन-चार इंच व्यास की पतली एक वृत्ताकार शीट पर जड़वा लें। रत्न जड़वाते समय यह ध्यान अवश्य रखें कि रत्न शीट के आगे-पीछे तक जड़ा हो तथा उनके पृष्ठभाग एक ही ओर वृत्ताकार क्रम में हों।

ऐसी व्यवस्था कर लें कि यह चक्राकार शीट चरखे की तरह घड़ी की सूइयों की दिशा में तेज गति से व्यक्ति द्वारा घुमाई जा सके। शीट को एकसार तीव्र गति से घुमाने के लिए इसे बिजली के पंखे के शाफ्ट में भी जोड़ा जा सकता है। गति नियंत्रण करने वाले रेगूलेटर से भी इस शीट के घूमने की गति स्थिर रखी जा सकती है। दिन-रात में रोगी के पास यह रत्नजड़ित चक्राकार शीट कम से कम चार-पाँच घंटे घूमती रहना चाहिए। यदि रोगी घर से दूर है और आप उसके लिए इसकी व्यवस्था कर रहे हैं तो रोगी का एक बड़े से बड़ा चित्र लगाकर उसके पास इस शीट को उपरोक्त प्रकार से घुमाते रहें। यदि रत्न, धातु का ठीक-ठीक चयन हो जाए और रत्नजड़ित इस चक्राकार शीट को रोगी अथवा उसके चित्र के पास एक इसे घुमाने की भी उचित व्यवस्था हो जाए तो यह मशीन चमत्कारिक रूप से रोगी के रोग निदान में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

+ + +

रत्नों का विकल्प विविध वनस्पति

विभिन्न ग्रहों की शान्ति के लिए कारक रत्न-उपरत्न का चलन सर्वविदित है। परन्तु कठिनाई आती है उपयुक्त रत्न के चयन की तदनुसार अरिष्ट ग्रह दोष का निवारण हो सके। भाग्यशाली रत्न चयन की सरलतम विधियाँ एक पुस्तक के माध्यम से पहली बार पाठकों को मिल रही है। व्यक्ति स्वयं अपना भाग्यशाली रत्न चुन सकते हैं।

रत्न मँहगे होने के कारण सर्वसुलभ नहीं हैं। उनके उपरत्न भी विकल्प के रूप में पुस्तक में दिए गए हैं। अनेक प्रकरणों में तुलनात्मक रूप से सस्ते उपरत्न भी लोग नहीं जुटा पाते हैं, उनके लिए एक सस्ता-सा विकल्प है वनस्पति।

ग्रहों के लिए रत्न-उपरत्न की भाँति अनेक वृक्षों की जड़ें प्रयोग की जाती हैं परन्तु जड़ अँगूठी में जड़वाकर अथवा पैन्डेन्ट के रूप में जड़वाकर धारण नहीं की जा सकती। इसका कारण है कि एक तो वह रत्न की तुलना में बहुत ही कोमल होती है तथा दूसरे वह अल्प समय में ही सूख अथवा गल जाती है। इसलिए जड़ को ग्रह के अनुसार निर्धारित रंग के धागे, चेन में बाँधकर धारण किया जा सकता है। जब जड़ पुरानी होकर सूख जाए अथवा गल जाए तो आप पुनः नयी जड़ लगाकर उपयोग कर सकते हैं। जड़ की प्राण-प्रतिष्ठा अथवा उसको चैतन्य करना ठीक रत्न की तरह ही है परन्तु उपयोग में लेने से पूर्व उसको खोदकर लाने में अलग से उपक्रम करने होते हैं।

जो भी जड़ आप अपने अनुरूप समझें सर्वप्रथम उसका पता कर लें कि वह कहाँ से उपलब्ध होगी। जिस ग्रह से वह जड़ सम्बन्धित है उसका नक्षत्र देखकर प्रयास करें कि उस नक्षत्र विशेष में ही वह लाई जाए, उसकी प्राण प्रतिष्ठा की जाए तथा उसी नक्षत्र काल में वह धारण भी की जाए। जड़ लाने के दिन से पूर्व की रात्रि में उसको निमंत्रण देकर आ जाएँ कि अमुक वृक्ष की जड़ मैं कल आपको लेने आऊँगा। मुझे अरिष्ट ग्रहों से मुक्ति दिलाकर सुख-समृद्धि तथा शान्ति प्रदान करिएगा।

प्रात:काल में जड़ कोमलता से खोदकर साफ करके प्रयोग की जा सकती है। यह भाव मन में अवश्य रखें कि आप एक चैतन्य वस्तु खोद अथवा काट रहे हैं इसलिए बर्बरतापूर्वक उसे नहीं खोदना है। किस ग्रह की शान्ति के लिए, किस वनस्पति की जड़ किस रंग के धागे में धारण करनी है उसका विवरण नीचे दे रहा हूँ। जो व्यक्ति किन्हीं कारणों से रत्न जुटाने में असमर्थ हैं, वह यह प्रयोग करके अवश्य देखें, प्रभु प्रदत्त प्रकृति का सुन्दर उपहार उन्हें अवश्य मिलेगा

अरिष्टकारी ग्रह	किस वृक्ष की जड़	किस रंग के धागे में धारण करें
सूर्य	बेल	गुलाबी
चन्द्र	खिरनी	सफेद
मंगल	अनन्तमूल	लाल
बुध	बिधारा	हरा
गुरु	केला	पीला
शुक्र	सरपोंखा	सफेद
शनि	चिरचिटा	काला
राहु	सफेद चन्दन	नीला
केतु	असगन्ध	आसमानी

+ + +

रत्नों के विकल्प धातुओं के छल्ले एवं कड़े

धातुओं के छल्ले तथा कड़े एक सामान्य सा विषय है। बाजार में जिस अधिकता से इनका क्रय-विक्रय हो रहा है उससे स्पष्ट होता है कि इनके प्रभाव में कहीं न कहीं कोई गुह्य सार अवश्य है, जो शुभता प्रदान करने का गुण-धर्म अपने में छुपाए रखे हैं। यह विषय पदार्थतन्त्र पर आधारित है इनका विस्तृत विवरण मैंने अपनी पदार्थतन्त्र की पुस्तकों में किया है। लैचर एंटीना तथा पी.आई.पी. चित्रों से मैंने उनमें चैतन्यता के बाद हुए परिवर्तनों को भी दर्शाया है।

अब से दो दशक पूर्व कनखल, जनपद हरिद्वार के स्व. पं. धर्मानन्द जोशी जी ने विभिन्न भार के छल्ले तथा कड़ों से उत्तर भारत में धूम मचा रखी थी। धातुओं के उन सस्ते तथा सर्वसुलभ प्रयोगों की अलख आज भी उनके सुपुत्र डॉ. प्रदीप जोशी जगाए हुए हैं।

वैसे तो रत्नों के औने-पौने-सवाए आदि भार भेद को मैं महत्त्वपूर्ण नहीं मानता। परन्तु धातुओं में इस भार भेद का परिणाम दो-चार नहीं हजारों की संख्या में देख-सुन कर मुझे इस तथ्य का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ा है। यह विषय भी मैंने शोध के रूप में लिया है। मेरा शोधकार्य विभिन्न धातुओं पर निरन्तर प्रगति पर है। डॉ. प्रदीप जोशी गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में पी.आर.ओ. हैं। जिज्ञासु पाठक उनसे भी विषय के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।

जो पाठक मँहगे रत्न जुटा पाने में असमर्थ हैं, वह उनके विकल्प के रूप में धातुओं के छल्ले अथवा कड़े प्रयोग कर सकते हैं। वयोवृद्ध मनीषी द्वारा मुझे मिली धातुओं की भार भेद विधि साभार यहाँ प्रस्तुत है।

ग्रह	सम्बन्धित धातु का छल्ला तथा उसका भार	सम्बन्धित धातु का कड़ा तथा उसका भार
सूर्य	ताँबा 33 रत्ती	ताँबा 132 रत्ती
चन्द्रमा	चाँदी 36 रत्ती अथवा 24 रत्ती	ताँबा 144 रत्ती
मंगल	ताँबा 28 रत्ती	ताँबा 112 रत्ती

बुध	सोना 48 रत्ती अथवा साबुत हल्दी की गाँठ हरे रंग के धागे में	–
गुरु	सोने में पुखराज अथवा पीले धागे में हल्दी की गाँठ	–
शुक्र	चाँदी 37.5 रत्ती	चाँदी 150 रत्ती
शनि	लोहा 36 रत्ती अथवा 38 रत्ती	लोहा 92 रत्ती अथवा 115 रत्ती
राहु तथा केतु	—	लोहा 92 रत्ती

विशेष : मापन कच्ची रत्ती में है (1 रत्ती = 120 मिली.)

पाठक प्राय: त्रिधातु, पंचधातु अथवा अष्टधातु आदि के छल्ले तथा कड़ों के विषय में देखते-सुनते रहते हैं। विभिन्न धातुओं को गलाकर उनसे यह छल्ले तैयार किए जाते हैं। इन्हें ऐसे ही पहनाने में मैं कभी भी बल नहीं देता। इसके लिए भी पहले अपने अनुरूप धातु चयन कर लें। जिस ग्रह को बलवान करने के लिए आप रत्न के स्थान पर वह धातुएँ चुन रहें हैं उनके भार भी उक्त सारिणी के अनुसार होना चाहिए। यदि आप धातुओं को पिघलाकर एक छल्ले अथवा कड़े का रूप नहीं दे रहे हैं तो उन धातुओं के आप अलग-अलग छल्ले बनवाकर रत्नानुसार ही उँगलियों में धारण कर सकते हैं। कड़े के लिए सर्वाधिक सुविधाजनक स्थान हाथ की कलाई ही है।

माना आपको सूर्य तथा चन्द्रमा को बल देने की आवश्यकता किसी विधि द्वारा निकलती है तो आप 33 रत्ती ताँबे का छल्ला सूर्य की उँगली अनामिका में तथा चन्द्र के लिए 36 रत्ती अथवा 24 रत्ती चाँदी का छल्ला कनिष्ठिका उँगली में धारण करें। 36 रत्ती चुनें अथवा 24 रत्ती, यह अपने-अपने बुद्धि-विवेक के साथ-साथ आपके अनुभव और ग्रह को बलवान करने पर निर्भर करता है। यदि बल की सीमा अधिक बढ़ानी है तो आपको क्रमश: 132 रत्ती ताँबे का कड़ा तथा 144 रत्ती भार का चाँदी का कड़ा धारण करना पड़ेगा।

सामान्यत: त्रिधातु, पंचधातु तथा अष्टधातु में जो धातुएँ प्रयुक्त होती हैं। पाठकों के ज्ञानार्थ, वह भी यहाँ लिख रहा हूँ। श्री जोशीजी द्वारा लोहा, चाँदी, सोना तथा ताँबा मात्र चार ही धातुएँ सर्वाधिक प्रयोग करवाई जाती रही हैं। मैंने

अपने शोध कार्य में अन्य धातुओं तथा उनके भार को भी जोड़ा है। यह कार्य अभी प्रगति पर है। पुस्तक के आगे के संस्करणों में कभी अपने अनुभूत प्रयोग भी लिखूँगा। सोने का विकल्प मैंने पीतल अनुभव किया है। विषय को पाठक भविष्य में कितना आगे बढ़ाते हैं यह उनके बुद्धि-विवेक के साथ-साथ निर्भर करता है व्यक्तिगत अनुभव तथा प्रज्ञा ज्ञान पर। हर क्षण मैं बौद्धिक पाठकों को स्मरण करवाता हूँ कि यह पुस्तक अधिकांशत: शोध तथा अपने-पराए अनुभवों के आधार पर लिखी गयी है। इसे निष्काम तथा नि:स्वार्थ भाव से आगे बढ़ाना है। फल व्यक्ति के अपने-अपने भाग्य पर अधिक निर्भर करता है क्योंकि यह अन्तत: ईश्वरीय देन है।

+ + +

रत्नों के विकल्प विभिन्न फूल

व्यक्ति के भाग्यशाली रत्न की तरह व्यक्ति का कोई न कोई भाग्यशाली फूल भी अवश्य होता है। इस फूल का चुनाव कर लिया जाए तो रत्न धारण करने की तरह एक सम्भावना प्रबल हो जाती है कि पता नहीं कब भाग्य आपका द्वार खटखटा दे। फूल और उनके प्रभाव को लेकर विश्वभर में मान्यता है कि यह मन को तो प्रसन्नता से भरते ही हैं, शुभता के भी प्रतीक हैं। जहाँ व्यक्ति रत्नादि का किन्हीं कारणों से उपयोग नहीं कर पाते, फूलों से भी वह भाग्य पा सकते हैं।

बचपन की बहुत सारी पुरानी बातें याद आ रही हैं। मैं एक किन्नर गार्डेन में पढ़ता था। हमारी टीचर एक अंग्रेज मैम थीं। परियों की कहानियों में वह इस तरह की अनेकों बातें हमें बताया करती थीं। जो कुछ भी उस अल्पायु बुद्धि में याद रहा, लिख रहा हूँ। काश उनकी बताई सब बातें कहीं मिल जातीं तो इस पुस्तक का कलेवर और भी सुन्दर बन जाता।

ऐश्वर्यमय जीवन जीने के लिए चार पंखुड़ी वाले लाल रंग के पुष्प को लेकर एक किंवदन्ती है। तीन बहनें सात समुद्र पार से आयीं। उनके नाम थे— भाग्य, आशा और दया। जहाँ-जहाँ उपवन में उनके पैर पड़ते लाल, सफेद तथा पीले सुन्दर से फूल खिल उठते। अकस्मात् उन बहनों के पैरों के स्थान पर एक चौथी सुन्दर सी लड़की के पैर भी जुड़ गए। उस लड़की का नाम था प्रेम।

उस चौथी लड़की के आगमन के स्वागत में फूलों में एक अन्य चौथी पंखुड़ी भी खिल गयी।

कालान्तर में यह पुष्प एक तिलिस्म बन गया। विश्वभर के युवा प्रेमी इन पुष्पों में अपना प्यार तथा प्यार से उपजा भाग्य तलाशते हैं। मान्यता है कि चार पत्ती वाले लाल फूल को जो कोई प्रेमी अपने जूतों में रखेगा उसका साथी उससे जल्दी-जल्दी मिलेगा। जो कोई प्रेमी अपने सीने पर लटकाकर रखेगा वह अपने साथी प्रेमी के दिल में स्थाई स्थान बनाएगा। ऐसे प्रेमियों से शैतान सर्वथा दूर रहेगा। बालों में फूल लगाने वाली लड़की सदैव अपने प्रेमी के दिल में बसी रहेगी।

फूल के भावात्मक तिलिस्म के पीछे यह मान्यता भी चली आ रही है कि चार पंखुड़ी वाला लाल फूल भाग्यवान बनाता है। फूलों को लेकर ऐसी ही अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। बसंत ऋतु में खिलने वाले प्रथम पुष्प के दर्शन आप जिस दिन के किसी प्रात:काल में करते हैं तो उसका भी एक अर्थ है जिसका अर्थ समझकर भी उससे लाभ उठाया जा सकता है।

प्रथम फूल दर्शन दिन	फल
सोमवार	भाग्य
मंगलवार	सफलता
बुधवार	प्रेमी मिलन
गुरुवार	लाभ
शुक्रवार	अकस्मात् धन लाभ
शनिवार	दुर्भाग्य से बचाव
रविवार	भाग्य

भाग्यशाली रत्न की तरह वर्ष के प्रत्येक माह में जन्में व्यक्ति के लिए कुछ फूल विशेष भी हैं जो कि उनके लिए शुभत्व के प्रतीक सिद्ध होते हैं। यदि आपको अपने जन्म का महीना पता है जो आप अपना भाग्यशाली फूल चुनकर भाग्य को निमंत्रण दे सकते हैं।

माह	फूल तथा गुण
जनवरी	आरम्भिक वसंत का सफेद फूल (Hydrocele) जो आशा, सात्विकता तथा भद्रता का प्रतीक है।
फरवरी	बैंगनी पुष्प जो दया, विश्वास तथा लज्जा-संकोच का प्रतीक है।
मार्च	हल्का पीला नर्गिस जो सुन्दरता, नियमितता तथा लावण्य अथवा मोहकता का प्रतीक है।
अप्रैल	बसंती गुलाब (Primrose) जो प्रेम तथा प्रेमियों का प्रतीक है।
मई	सफेद लिली (White Lily) जो मधुरता तथा पवित्रता का प्रतीक है।
जून	जंगली गुलाब (Wild Rose) जो पवित्रता तथा दायित्व का प्रतीक है।
जुलाई	गुलाबी, कागजी रंग का एक फूल (Carnstion) जो शुद्ध तथा दयामयी विचारों का प्रतीक है।

अगस्त एरिया नाम की झाड़ी का सफेद पुष्प (White Heather) जो कि शुभता तथा शुभ समय का प्रतीक है।

सितम्बर सितम्बर माह में खिलने वाला गुलबहार (Michaelmas Daisy) जो सुख एवं समृद्धि का प्रतीक है।

अक्टूबर एक प्रकार की झाड़ी के पुष्प (Rose Marry) तथा पत्ते जिनसे खुशबू बनाते हैं तथा उपहार में देते हैं जो यादगार तथा शुभ विचारों का प्रतीक है।

नवम्बर गुलदावदी (Chrysanthemum) जो भाग्य तथा सच्चाई का प्रतीक है।

दिसम्बर सिरपेंच की लता (Ivy) जो सदा हरी-भरी रहती है जो विश्वसनीयता तथा सच्चाई की प्रतीक है।

फूलों की अपनी एक भाषा है। इसको जिसने समझ लिया वह समझिए कि सौभाग्य की कुंजी पा गया। वनस्पति हमसे अपने स्नेह बाँटना चाहती है। कभी उससे हाथ मिलाकर तो देखिए, आप भी प्रकृति के रंग-बिरंगे सौन्दर्य की तरह खिलने लगेंगे। जिन्हें अपनी जन्मतिथि ज्ञात नहीं है वह फूलों की भाषा समझकर रत्न-उपरत्न के स्थान पर उनका प्रयोग कर सकते हैं। प्रयोग करने के भी अनेकों प्रकार हैं। घर का अपने अनुरूप रंग के फूल से अलंकरण करना, अपने भाग्यशाली फूलों का गुलदस्ता सजाकर, शरीर में धारण करके, बालों में सजाकर, आभूषण के स्थान पर भाग्यशाली फूलों को अपनाकर आदि। फूल क्या कहते हैं ? यहाँ कुछेक फूलों से स्पष्ट कर रहा हूँ। सम्भव है आपके क्षेत्र में यह फूल न हों अथवा इनके नाम परिवर्तित हो इसलिए साथ में उनके अंग्रेजी के नाम भी लिख रहा हूँ।

	फूल	भाषा
1.	**कैमेलिया** (Camellia) चीन और जापान की एक सदाबहार झाड़ी	सौन्दर्य, प्रेम
2.	**कैन्डीटफ्ट** (Candytuft) सपाट और चिपटे गुच्छों में खिलने वाला सफेद, गुलाबी और बैंगनी रंग के फूलों वाला एक पौधा	स्नेहरहित, मतभेद

3.	**कार्नेशन लाल** (Carnation)	दिल से जुड़ना
4.	**कार्नेशन सफेद** (Carnation)	अनादर, घृणा
5.	**क्लोवर त्रिपत्र** (Clover)	अपनत्व
6.	**कोलम्बाइन** (Columbine)	मूर्खता
7.	**गुलबहार** (Daisy)	पवित्रता, भोलापन
8.	**फर्न** (Deadly Night)	झूठ, धोखा
9.	**फर्न** (Fern) बहुपत्रक	मोहक
10.	**(Forget me not)**	लज्जा
11.	**फौक्स ग्लोव** (Fox Glove) बैंगनी-श्वेत पुष्प का लम्बा पौधा	समर्पण
12.	**जिरेनियम** (Geranium) एक जंगली पौधा	सांत्वना
13.	**(Golden Rod)**	सुरक्षा
14.	**हीलियोट्राप** (Heliotrope) बैंगनी रंग का सुगन्धित पुष्प	कर्मठ
15.	**हाईसिंथ** (Hyacinth) बैंगनी रंग के फूल का पौधा	सौन्दर्य
16.	**सिरपेंचकी** (Ivy) लता जो सदैव हरी-भरी रहती है	विश्वसनीयता
17.	**लिली सफेद** (White Lily)	मधुरता
18.	**लिली पीली** (Yellow Lily)	हर्ष, उल्लास, सुख
19.	**लिली** (Lily of the Valley)	सुख का आगमन
20.	**मिनॉनेट** (Mignonette) भूरे रंग का सुगन्धित पुष्पों वाला पौधा	गुण, चरित्र
21.	**सफेद फूल वाली मेंहदी** (Myrtle)	प्रेम
22.	**नारंगी मंजरी** (Orange Blossom)	पवित्रता
23.	**रंग-बिरंगे फूलों का पौधा** (Pansy)	विचार
24.	**पैशन फ्लावर** (Passion Flower)	कष्ट झेलने का संयम

25.	बैंगनी मंजरी (Peach Blossom)	सम्मोहन
26.	प्रिम रोज (Primrose) बसंती गुलाब	प्रेम का प्रतीक
27.	गुलाब (Rose)	प्रेम का प्रतीक
28.	लाल गुलाब (Red Rose)	शर्मीलापन
29.	सफेद गुलाब (White Rose)	समृद्धि
30.	पीला गुलाब (Yellow Rose)	ईर्ष्या
31.	गुलाब की कली (Rose Buds)	अपरिपक्व एवं भ्रामक प्रेम
32.	स्वीट पी (Sweet Pea)	विछोह भाव
33.	वरबीना (Verbena) वरबेन जाति का पौधा	किसी के निमित्त प्रार्थना भाव

रत्नों से रोग कैसे ठीक होते हैं?

रत्नों की कार्य पद्धति ठीक रंग चिकित्सा की तरह है। जिस रंग के कारण शरीर के अवयवों में न्यूनता आती है, रत्न सूर्य की रश्मियों से वह रंग शोषित करके शरीर में समाविष्ट कर देते हैं। रत्नों से सूक्ष्मतर स्पन्दन अपने स्वभाव, गुण तथा कर्मानुसार प्रभाव छोड़ते हैं परिणामस्वरूप अनेक रोगों से मुक्ति मिलने लगती है।

रत्नों द्वारा तन और मन पर जो सूक्ष्मतर तरंगें अपना प्रभाव छोड़ती हैं वह अदृश्य चेतना का विषय है। उसे रसायन, भौतिक, जैविक आदि विज्ञानों की तरह प्रयोगशाला में जाँचा-परखा नहीं जा सकता परन्तु अब नवीनतम पद्धतियों की सहायता से चैतन्य हुए पदार्थों के परिवर्तित प्रभामण्डल को देखते हुए विश्वव्यापी स्तर पर यह माना जाने लगा कि अदृश्य चेतना वाले विषय में कुछ तथ्य अवश्य है।

रत्नों के विकल्प-विभिन्न वृक्षों का रोपण

ग्रह शान्ति के लिए विभिन्न रत्न-उपरत्न की तरह एक विकल्प है वृक्षारोपण। वस्तुतः वृक्षारोपण विषय है वास्तुशास्त्र का। प्राचीन एवं मध्ययुगीन नगर तथा भवनों के भग्नावशेष, अनेक मन्दिर, राजप्रासाद, दुर्ग, भवन आदि उत्कृष्ट भारतीय स्थापत्य के प्रमाण हैं। अपने प्रारम्भिक काल में भारतीय वास्तु विद्या शिल्पशास्त्र का ही एक अंग रही। कालान्तर में स्थापत्य की विभिन्न शैलियों के विकास के साथ-साथ वास्तुविद्या एक स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में अस्तित्व में आई और वास्तु ग्रन्थों की एक समृद्ध परम्परा बनी। स्थापत्य की प्रमुख शैलियों में उत्तर भारत की नागर शैली तथा दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली दो विभिन्न परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

प्रारम्भ में वास्तुशास्त्र सम्बन्धी साहित्य, पुराण, आगम, ज्योतिष, शिल्प, वनस्पति एवं वृक्षारोपण आदि के ग्रन्थों का भाग रहा है। विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र एवं समरांगण सूत्रधार उत्तर भारत के स्थापत्य की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। इसी प्रकार मानसागर एवं मयम्मत दक्षिण भारत के स्थापत्य का प्रतिनिधित्व करती हैं।

वास्तुशास्त्र के प्राचीन नियमों, नारद संहिता, यजुर्वेद, कौटिल्य के वास्तु नियमों के अनुरूप ग्रह शान्ति तथा मनुष्य जीवन के प्रत्येक दुर्भिक्ष का निराकरण वृक्षारोपण में सम्भव है। जो कार्य एक अच्छे से अच्छा रत्न नहीं कर सकता वह वृक्ष-वनस्पति के प्रयोग से हो सकता है। यह मैं नहीं कह रहा अपितु यह वह नियम है, जिन्हें सर्वथा भुला दिया है तथा जिनका विस्तृत विवरण मत्स्यपुराण, अग्निपुराण, भविष्य पुराण, पद्मपुराण, नारद पुराण, भागवत पुराण, रामायण, शतपथ ब्राह्मण, तन्त्रसार, मन्त्रमहोदधि, योग निघन्टु आदि महाग्रन्थों में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। वृक्ष एवं लताओं का अनेक स्थान पर वर्णन आता है। पद्मपुराण में लिखा है कि जलाशय के समीप पीपल का वृक्ष लगाने मात्र से व्यक्ति को सैकड़ों यज्ञों का पुण्य मिलता है। इसका स्पर्श करने से चंचला लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। इसकी प्रदक्षिणा आयुष्यमान बनाती है। इसके दर्शनमात्र से ही चित्त प्रसन्न होता है एवं पापनाश होते हैं। अशोक वृक्षारोपण शोकनाशक

होता है। पाकर का वृक्ष यज्ञतुल्य फल प्रदान करता है। जामुन का वृक्ष कुल की वृद्धि करता है। चम्पा के पौधे को सौभाग्यशाली माना गया है। कटहल का वृक्ष धन-लक्ष्मी प्रदाता सिद्ध होता है। नीम के वृक्ष से सूर्यदेव की कृपा मिलती है। नीम का वृक्ष दीर्घायुष्य प्रदान करता है। आदि... आदि।

शास्त्रों के अनुसार पीपल, बट, नीम, नारियल, चन्दन, सुपारी, बेल, आम, अशोक, हल्दी, तुलसी, चम्पा, बेला, जूही, आँवला, अँगूर, अनार, नागकेसर, मौलसरी, हरसिंहार, गेंदा, गुलाब आदि पेड़ पौधों को अत्यन्त शुभ माना गया है। वास्तुविदों में एक दूसरा समूह भी है जो वृक्ष, फूल-पौधों को मात्र अलंकरण का उपक्रम मानते हैं। परन्तु यह मत सर्वथा अनुचित है। यदि व्यक्ति सौभाग्य के अन्य नियमों के साथ-साथ वृक्षारोपण पर भी थोड़ा-सा समय दान दे दे तो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, इसमें संशय नहीं है। वैसे तो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य और समयानुसार यह नियम अपनाएँ परन्तु यदि वह थोड़ा सा भी गम्भीर होकर नियमानुसार अपनी राशि, नक्षत्र आदि के अनुरूप वृक्षारोपण करता है तो उसको जीवन के समस्त शुभ फलों का सुख मिलेगा ही मिलेगा।

शास्त्रों में घर के पूरब दिशा में बरगद, पश्चिम दिशा में पीपल, उत्तर दिशा में कैत अथवा बेर तथा दक्षिण दिशा में गूलर लगाना शुभ माना गया है। घर की वाटिका के ईशान में कटहल, आम तथा आँवला, नैऋत्य में जामुन तथा इमली, अग्नि दिशा में अनार तथा वायव्य दिशा में बेल के वृक्ष लगाना शुभ फल देते हैं। कुछ ग्रन्थकार मानते हैं कि घर के दक्षिण दिशा की वाटिका में पाकड़, पश्चिम में वट, उत्तर में उदुम्बर तथा पूरब में पीपल के वृक्ष लगाने शुभ नहीं हैं। इसी प्रकार घर के अन्दर अँगूर, चमेली, चम्पा तथा काँटेदार फल-फूल अशुभ का प्रतीक हैं। परन्तु वह इन वृक्षों तथा बेल, अशोक, मौलश्री तथा अनेक पुष्प-लताओं के मण्डप घर के समीप लगाने को शुभत्व का प्रतीक भी मानते हैं। यह कहा गया है कि काँटेदार फल-फूल तथा वृक्ष शत्रुता उत्पन्न करते हैं। दूध वाले वृक्ष जैसे बढ़, आक तथा पीपल आदि को भी कुछ लोग सम्पत्तिनाशक मानते हैं फलदार वृक्षों को कुछ लोग सम्पत्ति हननकर्त्ता मानते हैं। फलदार वृक्षों की लकड़ी तक घर में प्रयोग करने के पक्ष मे यह विद्वान नहीं

हैं। वह कहते हैं कि यह घर की सम्पत्ति और सन्तति का नाश करते हैं।

पौराणिक ग्रन्थ—नारद पुराण, ज्योतिष ग्रन्थ, नारद संहिता, आयुर्वेदिक ग्रन्थ, राजनिघन्टु, नारायणी संहिता, वृहत् सुश्रुत तथा तान्त्रिक ग्रन्थ—शारदा तिलक, मन्त्र महार्णव, श्री विद्यार्णव आदि में व्यक्ति विशेष की राशि तथा नक्षत्र के अनुसार वृक्षारोपण का एक निश्चित क्रम दिया हुआ है। यदि कोई अपनी सामर्थ्य, स्थान की सुविधा आदि के अनुरूप पूर्वाभिमुख होकर तथा पंचोपचार पूजन विधि द्वारा वृक्षारोपण करता है तो उसे दैहिक, दैविक तथा भौतिक समस्त प्रकार की व्याधियों से मुक्ति मिलती है। यदि किन्हीं अभावों में व्यक्ति वृक्षारोपण का सम्पूर्ण क्रम रोपित नही कर पाता तो उसे अपनी राशि अथवा नक्षत्र के अनुसार कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगा देना चाहिए इससे पर्यावरण में तो सुधार होगा ही, ग्रह दोषों का भी निवारण होगा।

विश्वसनीय रत्न कैसे प्राप्त करें

पहले तो अनुकूल रत्न का चयन करना अथवा करवाना एक जटिल समस्या है। यदि अनुकूल रत्न का चयन हो भी जाए तो दूसरी विकट समस्या आती है विश्वसनीय रत्न को उपलब्ध करवाने की। विशेष परिस्थितियों में केन्द्र द्वारा आपके अनुकूल भाग्यशाली रत्न को उपलब्ध करवाने का प्रावधान है। यदि विश्वास जगे तो आप भी लाभ उठा सकते हैं। परन्तु यह अवश्य ध्यान रखें कि फल मिलना अन्ततः ईश्वरीय देन है, हमारा दायित्व नहीं।

रत्नों में प्राण भरना अर्थात उन्हें चैतन्य करना एक अलग कठिन विषय है। केन्द्र से प्राण-प्रतिष्ठित भी आप उपलब्ध करवा सकते हैं। साथ-साथ अपने किसी भी निष्प्रभाव हुए रत्न को पुनः चैतन्य करने के लिए **गोपाल राजू** की विधि भी उपलब्ध कर सकते हैं।

अपने जन्मलग्न के अनुरूप वृक्षारोपण

जहाँ वृक्ष लग्न क्रम में रोपित करना है वहाँ पूरब दिशा में अपनी लग्न का वृक्ष लगा दें। यहाँ से विपरीत घड़ी की दिशा में क्रम से अन्य वृक्ष लगा लें। यह वृक्ष आयताकार, वर्गाकार अथवा वृत्ताकार किसी भी क्रम में लगाए जा सकते हैं। साथ दिए चित्र से इस विधि द्वारा वृक्षारोपण और स्पष्ट हो जाएगा।

माना आपका लग्न मेष राशि में उदय हुआ है। इससे आपका लग्न वृक्ष खादिर हुआ। पहला वृक्ष आप खादिर का लगाए फिर क्रमशः 2 के स्थान पर गूलर, 3 के स्थान पर अपामार्ग आदि ऊपर दिए किसी भी आकृति में लगा दें।

नवग्रह वृक्षारोपण विधि

वर्गाकार आकार में साथ दी आकृतिनुसार वृक्षारोपण करें। केवल इस का ध्यान रखना है कि उत्तर दिशा में पीपल का वृक्ष रहे। शेष वृक्षों का क्रम ठीक साथ दिए चित्र के अनुसार ही रखना है।

नवग्रह वृक्षारोपण

+++

जन्मराशि अथवा नामराशि से वृक्षारोपण

यदि अधिक वृक्ष लगाने की क्षमता अथवा सामर्थ्य नहीं है अथवा स्थानाभाव है तो अपनी राशि का वृक्ष चुनकर कहीं भी लगा दें।

राशि	सम्बन्धित वृक्ष	किस रत्न का विकल्प है
मेष	खादिर	मूंगा
वृष	गूलर	हीरा, पन्ना
मिथुन	अपामार्ग	पन्ना, मोती
कर्क	पलाश	मोती, नीलम
सिंह	आक	माणिक्य
कन्या	दूर्वा	पन्ना
तुला	गूलर	हीरा, सफेद पुखराज
वृश्चिक	खादिर	मूंगा
धनु	पीपल	पुखराज
मकर	शमी	नीलम
कुम्भ	शमी	नीलम, लहसुनिया
मीन	कुश	पुखराज, गोमेद

+++

जन्म नक्षत्र से वृक्षारोपण

जिनको अपना जन्म नक्षत्र ज्ञात है, वह उस नक्षत्र से सम्बन्धित वृक्ष वास्तु नियमानुसार कहीं भी लगा सकते हैं।

नक्षत्र	सम्बन्धित वृक्ष	किस रत्न का विकल्प है
अश्विनी	कुचिला अथवा बाँस	लहसुनिया
भरणी	आँवला अथवा फालसा	हीरा
कृत्तिका	गूलर	माणिक्य
रोहिणी	जामुन अथवा तुलसी	मोती
मृगशिरा	खैर	मूंगा
आर्द्रा	शीशम अथवा बहेड़ा	गोमेद
पुनर्वसु	बाँस	पुखराज
पुष्य	पीपल	नीलम
आश्लेषा	नागकेसर अथवा गंगेरन	पन्ना
मघा	बरगद	लहसुनिय
पू. फाल्गुनी	ढाक	हीरा
उ. फाल्गुनी	पाकड़ अथवा रुद्राक्ष	माणिक्य
हस्त	रीठा	मोती
चित्रा	बेल अथवा नारियल	मूंगा
स्वाती	अर्जुन	गोमेद
विशाखा	कटाई अथवा बकुल	पुखराज
अनुराधा	मौलक्षी	नीलम
ज्येष्ठा	चीड़ अथवा देवदारु	पन्ना
मूल	साल	लहसुनिया
पू. षाढ़ा	अशोक	हीरा
उ. षाढ़ा	कटहल अथवा फालसा	माणिक्य
श्रवण	मदार	मोती

धनिष्ठा	शमी	मूंगा
शतभिषा	कदम्ब	गोमेद
पू. भाद्रपद	आम	पुखराज
उ. भाद्रपद	नीम	नीलम
रेवती	महुआ	पन्ना

इस प्रकार रत्नों के विभिन्न वृक्षारोपण के और भी अनेक विकल्प हो सकते हैं आवश्यकता केवल विषय के प्रति गम्भीर होने की है। यदि किसी भी महानुभाव को ग्रह-नक्षत्रानुसार वृक्षारोपण के साक्षात दर्शन करने हैं तो वह सीधे शान्तिकुंज, हरिद्वार जाकर अपनी इच्छा पूर्ण कर सकते हैं। इस अध्याय को लिखने की प्रेरणा मुझे वहाँ से ही मिली है।

अनुकूल नवरत्न चयन

नवरत्न जड़ित अँगूठी, पैन्डेन्ट कानों के टॉप्स आदि प्रायः चलन में देखे जाते हैं। इनके द्वारा शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव का कोई सटीक प्रमाण मेरे जीवन के लम्बे अनुभव में नहीं आया। यह मात्र अलंकरण के लिए धारण किए जा रहे हैं अथवा इनका कोई मूर्त प्रभाव भी मानव शरीर पर पड़ रहा है, यह विचारणीय विषय है। नवरत्न की चाहे अँगूठी हो अथवा अन्य कुछ, उनमें रत्नों को जड़वाने का क्रम एक ही निश्चित है।

नवरत्न जड़ने का क्रम

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक्य	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

रत्न का यह निश्चिम क्रम कब से चलन में है, इसके पीछे वैज्ञानिक अथवा विवेचनात्मक क्या भाव छिपा है, यह पूर्णतयः स्पष्ट नहीं है। किसी मनीषी ने कभी तो इस क्रम का कुछ सोचकर चलन किया ही होगा। इस क्रम को बदलने का तदन्तर में किसी ने भी न तो कभी सोचा न ही इस दिशा में कभी कोई प्रयास किया। मैंने इस क्रम को लेकर बहुत छानबीन की। फैंगशुई के लो शू ग्रिड से लेकर पंचदशी (पनरिया) यन्त्रों में, अंक विज्ञान में चर्चित जादुई वर्गों में से नवग्रहों के वर्गाकार यन्त्रों में खोजा परन्तु मुझे कहीं कोई ऐसा आधार नहीं मिला जिसको लेकर नवरत्न जड़ने का निश्चित क्रम जुड़ा हो।

मैंने अनेक बार प्रयास किया कि क्यों न इस निश्चित क्रम में व्यक्ति विशेष के अनुरूप परिवर्तन करके प्रयोग करवाया जाए। मुझे कुछ सूत्र हाथ लगे। मेरे प्रयोग लाभदायक भी सिद्ध हुए। पाठक इस विषय को अपने दृष्टिकोण से आगे बढ़ाएँ क्योंकि परिवर्तन ही आविष्कार की जननी है।

यह सम्भव है कि मेरे मत से कुछ लोग सहमत न भी हों। परन्तु उन्हें यह तो स्वीकार करना पड़ेगा कि मानव कल्याण के लिए किए जा रहे अनेक क्रम-उपक्रम आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति पर खरे उतरें। इसलिए

परिवर्तन तो निरन्तर होते रहना चाहिए नहीं तो उत्थान अथवा प्रगति में ठहराव आ जाएगा। जैसा कि पारम्परिक रूप से चले आ रहे रत्न विषय को लेकर आ गया है।

नवरत्नों को मैंने व्यक्ति विशेष के अनुसार पन्द्रह के चमत्कारी एवं जादुई वर्ग में जड़वाकर नया प्रयोग किया है।

यन्त्र विज्ञान में इस पंचदशी अर्थात पनरिया यन्त्र को राजा की संज्ञा दी जाती है। इस यन्त्र की अपनी अलग महिमा है। इस यन्त्र में 1 से 9 अंक 9 वर्गाकार कोष्ठकों में अंकित होते हैं। ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ अथवा किसी भी ओर से जोड़ने पर योगफल 15 ही आता है। इस जादुई वर्ग का विवरण मैंने अपनी पुस्तक "दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय से दूर करें दुर्भाग्य" में दिया है। शिव अथवा शाक्त पंथी इसे नवधा भक्ति का प्रारूप मानते हैं। ब्रह्माण्ड में नवग्रहों का अस्तित्व माना जाता है। योग्य ब्राह्मण के भी 9 लक्षण मिलते हैं। सनातन धर्मावलम्बी इसे दुर्गा के नवार्ण मन्त्र के रूप में अंकित कर इसकी पूजा आराधना करते हैं। मुस्लिम समाज में इनमें नौ पीरों के नाम अंकित करने का वलन है। ज्योतिषशास्त्र के नौ ग्रहों को भी इसमें अंकित करने का चलन है। नाथ सम्प्रदाय वाले इसे नवनाथों के रूप में जानते हैं। जैन धर्म को मानने वाले नवकार यन्त्र के रूप में इसकी पूजा-अर्जना करते हैं। सार यह है कि यह यन्त्र अपने प्रभाव के कारण अष्टसिद्धि और नवनिधियों का पर्याय माना जाता है।

अपनी जन्मराशि अथवा नाम राशि के अनुसार इस यन्त्र में नवरत्न जड़वाकर आप भी गोपाल राजू के इस नए परिवर्तन से लाभ उठा सकते हैं।

यन्त्र का राशि अथवा तत्त्वों के अनुसार चार श्रेणियाँ मानी गयी हैं। अपने अनुरूप यन्त्र आप सर्वप्रथम इन चारों में से चुन लें।

पहली श्रेणी

(आतसी यन्त्र)

मेष, सिंह अथवा धन राशि

अग्नि तत्त्व

2	7	6
9	5	1
4	3	8

दूसरी श्रेणी

(खाकी यन्त्र)

वृष, कन्या अथवा मकर राशि

पृथ्वी तत्त्व

2	9	4
7	5	3
6	1	8

तीसरी श्रेणी

(बादी यन्त्र)

मिथुन, तुला अथवा कुम्भ राशि

वायु तत्त्व

8	1	6
3	5	7
4	9	2

चौथी श्रेणी

(आबी यन्त्र)

कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि

जल तत्त्व

4	9	2
3	5	7
8	1	6

माना कि आपकी जन्म अथवा नाम राशि कर्क, वृश्चिक अथवा मीन में से कोई एक है। आपको अपने लिए आबी यन्त्र नवरत्न जड़वाने के लिए सर्वाधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

किस अंक के स्थान पर आपको कौन-सा रत्न जड़वाना है यह आप स्मरण कर लें। अंकों के रत्न चयन करने का आधार मैंने ज्योतिष तथा अंकशास्त्र को माना है।

4	9	2
3	5	7
8	1	6

क्रम	अंक	स्वामी ग्रह	सम्बन्धित रत्न
1	1	शनि	नीलम
		(शनि की राशि मकर 10 को 1 माना है)	
2	2	शुक्र	हीरा
3	3	राहु	गोमेद
		(राहु की उच्चराशि है)	
4	4	चन्द्र	मोती
5	5	सूर्य	माणिक्य
6	6	बुध	पन्ना
7	7	केतु	लहसुनिया
		(अंकशास्त्र में 7 का स्वामी चन्द्र तथा केतु है)	
8	8	मंगल	मूंगा
9	9	गुरु	पुखराज

अंकों के अनुरूप आबी यन्त्र में आप रत्न अँगूठी, पैन्डेण्ट आदि के रूप में जड़वा सकते हैं। पैन्डेण्ट आदि का स्वरूप आप अपनी इच्छानुसार अलंकरण करवा सकते हैं। रत्न जड़ने के बाद आपके नवरत्न पैन्डेण्ट का स्वरूप निम्न प्रकार से होगा—

मोती	पुखराज	हीरा
गोमेद	माणिक्य	लहसुनिया
मूंगा	नीलम	पन्ना

शक्ति को मानने वाले शक्तिसाधना के लिए बादी यन्त्र में उक्त क्रमानुसार नवरत्न जड़वाकर नवार्ण मन्त्र का जप सिद्ध कर सकते हैं। इस यन्त्र को 'विजय यन्त्र' नाम दिया गया है। यथा नाम चहुर्दिश विजय प्राप्त करने के लिए नवरत्न का यह पैण्डेन्ट, अँगूठी आदि बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। इस नवरत्न का रूप निम्न प्रकार होगा।

8 मूंगा वि	1 नीलम ऐं	6 पन्ना डा
3 गोमेद क्लीं	5 माणिक्य मुं	7 लहसुनिया प्रै
4 मोती चा	9 पुखराज च्चे	2 हीरा ह्रीं

इस प्रकार से नवरत्नों के विभिन्न संयोगों से मैंने पचासों यंत्र, अंगूठी अथवा अन्य आकृतियाँ आदि बनवाकर सफल प्रयोग किए हैं।

✣ ✣ ✣

रत्नों की प्राणप्रतिष्ठा

किसी पदार्थ में यत्न से यदि प्राण भर दिए जाएँ तो वह चैतन्य हो उठते हैं। सामान्य भाषा में इसे कहा जाता है प्राणप्रतिष्ठा करना। रत्नों में प्राण डालकर उन्हें चैतन्य करने की अनेक शास्त्रोक्त विधियाँ हैं। अज्ञानतावश तथा कुछ समय की कमी के कारण हम इस विषय को अनदेखा कर देते हैं जिसके कारण पदार्थ से पूर्णरूप से लाभ प्राप्त करने में हम वंचित रह जाते हैं। अपनी 'सरलतम धनदायक तान्त्रिक प्रयोग' पुस्तक में मैंने इसका वर्णन किया था। हजारों लोगों ने उससे लाभ उठाया है। प्राणप्रतिष्ठा की सरलतम विधि यहाँ भी पाठकों के लाभार्थ लिख रहा हूँ। रत्न प्रयोग करने से पूर्व आप उसे चैतन्य अवश्य कर लें।

अँगूठी, पैण्डेन्ट, छल्ला, कड़ा अथवा वनस्पति आदि जो कुछ भी आप प्रयोग करने जा रहे हैं सर्वप्रथम उसे प्राणप्रतिष्ठित करने के लिए नमक के पानी, गंगाजल, अमृत, कच्चा दूध, तुलसी दल अथवा गोमूत्र आदि से शोधित कर लें। शोधन की लम्बी विधि में न जाकर प्रयोग करने वाली सामग्री को प्राणप्रतिष्ठा मुहूर्त से पूर्व गंगाजल तथा कच्चे दूध में डुबाकर रख लें। जिस मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठा कर रहे हैं उसका विवरण निम्न चक्र से आप पूर्व में सुनिश्चित कर लें।

प्राणप्रतिष्ठा मुहूर्त चक्र

समय	उत्तरायण में गुरु, शुक्र तथा मंगल के बलवान होने पर
तिथि	शुक्लपक्ष की 1, 2, 5, 10, 13 अथवा 15वीं तथा कृष्णपक्ष की 1, 2 अथवा 5वीं
नक्षत्र	पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, रेवती, रोहिणी, अश्विनी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु
वार	सोमवार, बुधवार, गुरुवार अथवा शुक्रवार
लग्न	2, 3, 5, 6, 8, 9, 11 अथवा 12वीं लग्न राशि। 1, 4, 7, 5, 9 तथा 10वें भाव में शुभ ग्रह 3, 6, तथा 11वें भाव में अशुभ ग्रह तथा अष्टम भाव में कोई भी ग्रह न हो।

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र

मन्त्र जपकर प्राणप्रतिष्ठा करने में अनेक लोगों को कठिनाई आ सकती है। ऐसे किसी योग्य व्यक्ति से, जिसका संस्कृत का उच्चारण शुद्ध हो भी आप अपने लिए प्राणप्रतिष्ठा करवा सकते हैं। प्राणप्रतिष्ठा के बिना कोई भी पदार्थ जैसे रत्न कड़ा, यन्त्रादि प्रभावी नहीं होता यह आप अवश्य ध्यान रखें। मन्त्रों में अपार शक्ति निहित है। यहाँ मैं प्राणप्रतिष्ठा करने की सर्वाधिक सरल विधि लिख रहा हूँ। इससे साधक को किसी अन्य पर आश्रित नहीं होना पड़ेगा।

मन्त्र में जो स्थान रिक्त है, वहाँ उस रत्नादि का उच्चारण करें जिसकी आप प्रतिष्ठा कर रहे हैं। रत्न को सर्वप्रथम गंगाजल तथा दूध से पवित्र कर लें। धूप, दीप, पुष्प, तिलक, अक्षत, नैवेद्य उसे श्रद्धा से अर्पित करें। सामग्री पर अपने दाएँ हाथ की अनामिका से स्पर्श करके यह मन्त्र शुद्धता से जपें। शुद्ध समयों में इस मन्त्र से सामग्री की नियमित प्राणप्रतिष्ठा करते रहें। प्राणप्रतिष्ठित सामग्री अब आपके कार्य करने में पूर्णतया सक्षम है।

मन्त्र—

अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः॥
ऋग्यजुः—सामाशर्वाणिचछंदांसि। पराप्राणशक्तिर्देवता आं बीजम्॥
ह्रीं शक्तिः॥
क्रों कीलकं। अस्यां मूर्तौ... (रत्नौ/यन्त्रौ)
प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥

पदार्थ के हृदय पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों। अं यं रं लं वं शं षं हं कं क्षं अः॥
क्रों ह्रीं आं हंसः सोहम्॥
अस्यां मूर्तौ... प्राण इह प्राणः॥
ॐ आं ह्रीं क्रों॥
अं यं रं लं वं शं षं सं हं कं क्षं अः॥
क्रों ह्रीं आं हंसः सोहम्॥
अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः॥

ॐ आं ह्रीं क्रों॥

अं यं रं लं वं शं षं सं हं कं क्षं अः॥

क्रों ह्रीं आं हंसः सोहम्।

अस्यां मूर्तौ सर्वेंद्रियाणि वाङ् मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राणपाणि पाद पयूपस्थानी हैवागत्ये सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा॥

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्॥

ज्योक पश्येम सूर्यमुच्चरंतमनुमते मृकंया नः स्वास्ति॥

ॐ चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मिणा ये मनीषिणः॥

गुहा त्रीणि निहिता नेंगयंति तुरीयं वाचो मनुष्या वदंति॥

गर्भाधानादि पंचदशसंस्कार सिद्धयर्थं पंचदशप्रणवावृत्तीः करिष्ये॥

मन्त्र उच्चारण के बाद जल छोड़े तथा 15 बार ॐ शब्द का उच्चारण करें।

रक्तांभोधिस्थपोतोल्लसद् अरुण सरोजाधि रुढाकराब्जै॥

पाशं कोदंडाभिक्षुद् भवमथ गुणमप्यं कुशं पंच बाणान्॥

बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयन लसितापीनवक्षोरुहाढ्या॥

देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥

तच्चक्षुर्देव हितं शुकमुच्चरत्॥

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्॥

मन्त्र पढ़ने के पश्चात मूर्ति, रत्न, वनस्पति अथवा अन्य के नेत्र (नेत्र न हों तो कल्पना कर लें) में दूर्वा से घी लगाएँ।

गंधाक्षतपुष्पं हरिद्रां कुंकुम च समर्पयामि।

(गंध, अक्षत, हल्दी, रोली, पुष्प, श्रद्धा से अर्पण करें।)

धूपं दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि॥

(धूप दीप दिखाकर भोग लगाएँ।)

मुखवासार्थे पूगीफलं ताम्बूलं दक्षिणां मन्त्रपुष्पं च समर्पयामि॥

(पान, सुपारी, दक्षिणा, पुष्प, मूर्ति अथवा जो कुछ सामग्री आपने ले ली हो) के समक्ष रखकर उस पर जल छोड़ें।

मन्त्र में एक शब्द '**कं**' आया है। सम्भवतः इसका उच्चारण किसी को

न पता हो। यह शब्द ल और ड के मिलेजुले उच्चारण से बोला जाएगा। स्पष्ट न हो तो किसी विद्वान से पूछ लें।

यदि आपके लिए यह सब सम्भव नहीं है तो आप निम्न प्रकार से रत्न धारण करें। अधिकांशत: मैं अपने स्नेहियों को यही विधि प्रयोग करवाता हूँ।

जिस ग्रह से सम्बन्धित रत्न आप प्रयोग कर रहे हैं उस ग्रह का नक्षत्र आप चयन कर लें। उस नक्षत्र से कम से कम बारह घण्टे पूर्व में आप प्रयोग की जाने वाली सामग्री को कच्चे दूध, गंगाजल तथा तुलसीदल में डुबाकर रख लें। चुने गए नक्षत्र में उसे उस समय निकाल लें जब उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह की 'होरा' चल रही हो। मुहूर्त में 'होरा' को मैं महत्त्वपूर्ण स्थान देता हूँ। एक तो यह सरल है, हर कोई इसे शुभकर्म के लिए चुन सकता है, दूसरे इसमें यम-नियम आदि का कोई बन्धन नहीं है। रत्न से सम्बन्धित ग्रह की इस होरा में ही उसे धारण कर लें। 'होरा' ज्ञात करने के लिए पाठक मेरी पदार्थ तन्त्र की सर्वाधिक चर्चित पुस्तक 'धनदायक तान्त्रिक प्रयोग' भी देख सकते हैं। ग्रह के अनुसार रत्न को अधिक चैतन्य और ऊर्जावान बनाने के लिए धारण करने से कुछ समय पूर्व उसे निम्न पदार्थों में भी रख सकते हैं।

ग्रह	पदार्थ
सूर्य	रक्त चन्दन के घोल में
चन्द्र	जौ मिश्रित गोघृत में
मंगल	सिन्दूर में
बुध	शहद में
गुरु	नारियल पानी में (अन्य प्रत्येक पदार्थ भी इसमें रख सकते हैं।)
शुक्र	नागकेसर में
शनि	सरसों के तेल में

उक्त विधि से आप पहले से प्रयोग किए जा रहे रत्नादि को भी पुनः चैतन्य कर सकते हैं। अपने प्रभावहीन हुए आप ऐसे ही किसी रत्न, पैण्डेन्ट को चैतन्य कर लें। यदि समयानुसार वह आपके अनुकूल है तो उसका प्रभाव आपको शीघ्र दिखाई देने लगेगा। पुराने रत्न को प्राण अर्जित करने के लिए पहले उसका शोधन अवश्य कर लें।

यह पुनः स्पष्ट कर दूँ कि प्राणप्रतिष्ठा करने की यह अत्यन्त सूक्ष्म विधि है। यदि विधि-विधान से किसी सामग्री की प्राणप्रतिष्ठा अपनी सुविधानुसार किसी अन्य से करवा लें तो अधिक अच्छा है। निःष्प्राण हुए किसी भी पदार्थ की पुनः प्राणप्रतिष्ठा का प्रावधान केन्द्र में भी उपलब्ध है।

+ + +

रत्न निश्चित उँगलियों में ही क्यों पहनें

किर्लियोन फोटोग्राफी से अब यह तथ्य उजागर हो गया है कि ग्रहों के समान रंग शरीर से प्रवाहित होने वाले प्रभामण्डल अर्थात आभामण्डल के भी होते हैं। उँगलियों के विश्लेषात्मक गहन अध्ययन से पता चला है कि तर्जनी उँगली के अग्रभाग से नीलवर्ण प्रभा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। इसी प्रकार मध्यमा से बैंगनी, अनामिका से रक्तवर्ण, कनिष्ठिका से हरितवर्ण प्रभा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। शरीर में किसी भी वर्ण की न्यूनता अथवा अधिकता से ग्रह-नक्षत्रों द्वारा प्रवाहित प्राकृत्तिक विभिन्न वर्णों में असन्तुलन स्थापित होने लगता है। तदनुसार शरीर नाना प्रकार से कष्ट भोगने लगता है। रंगों की क्षतिपूर्ति का एक विकल्प रत्न भी हैं। उँगलियों से प्रवाहित वर्णानुसार उन रंगों के ग्राह्य गुण सम्पन्न रत्नों को इसीलिए धारण करवाने का विज्ञानसम्मत प्रचलन है तदनुसार अधिकतम रंग शरीर द्वारा शोषित हो और उनका आकाशमण्डलीय ग्रह-नक्षत्रों के वर्णानुसार सन्तुलन अथवा सामंजस्य बना रह सके।

प्राण-प्रतिष्ठित अर्थात चैतन्य पदार्थों के चित्र

अब बात करते हैं विशुद्ध विज्ञान की। यह चुनौतीपूर्ण तथा शोधपरक कार्य मुझे डॉ. क्रांतीश शिवहरे, 316, साकेत नगर, इन्दौर (म.प्र.) से साभार प्राप्त हुआ है। डॉ. शिवहरे रेडियोलॉजी में एम. डी. हैं। पी.आई.पी. फोटोग्राफी (Poly Contrast Interference Photography) के माध्यम से हमने चैतन्य हुए रत्न, यन्त्र तथा अन्य पदार्थों में विलक्षण प्रभाव उनके आभामण्डल में देखे हैं। विज्ञान भी स्वीकार करने लगा है कि कुछ क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं तथा क्रम-उपक्रमों से अमूर्त पदार्थों में भी परिवर्तन परिलक्षित होने लगते हैं। यह जीवन को भी प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। परन्तु कोई व्यक्ति विशेष भी इससे प्रभावित होगा, यह आवश्यक नहीं। यहाँ प्रश्न चिह्न लगा है? गुह्य विद्याओं की समस्त अदृश्य रश्मि प्रभावों को किसी प्रयोगशाला में तो आँका नहीं जा सकता। हाँ जहाँ अनुकूल प्रभाव मिल रहे हैं अथवा जहाँ कोई तथ्य व्यक्तिगत अनुभवों में अनुभूत सिद्ध हो रहे हैं वह तो स्वीकार करे ही जाएंगे न। आप मानें या न मानें यह आपक अपने बुद्धि एवं विवेक पर निर्भर है।

अपने तान्त्रिक प्रयोगों तथा अनुष्ठानों में मैं कमलगट्टे के दाने भी प्रयोग करवाता हूँ। मन्त्र जाप के बाद हुए परिवर्तन को पाठक इनमें स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। दानों के साथ एक मोती जड़ी प्राणप्रतिष्ठा करी हुई अँगूठी भी साथ रखी है। दानों के 'औरा' में एक रंग विशेष का समावेश हुआ है। यह रंग है श्वेत। आभामण्डल शास्त्र के अनुसार यह रंग दिव्यता का प्रतीक है। कहीं किसी प्रयोग में यह रंग आसमानी भी बना है इसका अर्थ है कि दिव्यता का प्रवेश सिद्ध किए गए पदार्थों में होना प्रारम्भ हो गया है।

बच्चों में एकाग्रता की कमी को दूर करने तथा स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिए एक विशेष प्रकार के क्रिस्टल पैण्डेन्ट को चैतन्य करके विलक्षण परिणाम देखने को मिला। उनमें पढ़ाई के प्रति नितान्त गम्भीरता आना प्रारम्भ हो गयी। उनके परिणाम अपेक्षाकृत अच्छे आने लगे। ऊर्जा आँकने के एक विशेष यन्त्र लेचर एंटिना से मापने पर उसका मान 12.6° के आसपास दिखाई दिया। यह

मान दर्शाता है कि पैण्डेन्ट में विलक्षण रूप से ऊर्जा समाहित हो गयी है।

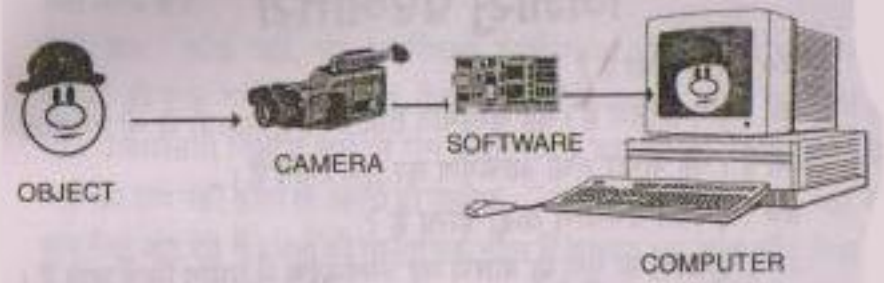

पी.आई.पी. कैमरा लगभग उक्त प्रकार का होता है। विस्तृत विवरण तथा चित्रों के लिए आप सीधे डॉ. शिवहरे से इन्दौर वाले पते पर सम्पर्क कर सकते हैं। इस तकनीकी का सूक्ष्म ज्ञान यहाँ मात्र इस उद्देश्य से लिखा गया है कि विषय को समझने-परखने का पाठक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना सकें। परम्परागत चली आ रही पुरानी परिपाटी से हटकर गोपाल राजू के शोधपरक कार्य में सहभागी बन सकें ताकि नित कुछ नया हमारे सामने आ सके।

जिज्ञासु प्रश्नोत्तरी

प्र० : रत्न क्या हैं ?

उ० : रत्न खनिज हैं। यह वनस्पति तथा जैविक साधनों से भी उपलब्ध हो सकते हैं। यह सुन्दर तथा आकर्षण का गुण रखते हैं।

प्र० : इनका उपयोग कहाँ होता है ?

उ० : सुन्दरता के गुण के कारण यह अलंकरण में प्रयोग किये जाते हैं। कठोरता के गुण के कारण इनका मशीनी उपकरण में प्रयोग होता है। जीवन को प्रभावित करने के गुण के कारण एक बड़ा वर्ग इन्हें भाग्यशाली रत्नों के रूप में भी स्वीकारता है।

प्र० : जीवन को प्रभावित करना अर्थात ?

उ० : दुर्भाग्य दूर करके सौभाग्य देना।

प्र० : वह कैसे ?

उ० : रंग सिद्धान्त एवं ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से। जीवात्मा में न्यून हो रहे रंग तथा ऊर्जा में ब्रह्माण्ड से यह शोषित करके शरीर में समाहित करना तदनुसार रंग और ऊर्जा में सामन्जस्य बनाना।

प्र० : सरल भाषा में समझाएँ कि रत्न कार्य कैसे करते हैं ?

उ० : रत्न शरीर में हुई किसी रंग विशेष की क्षति को पूर्ण करते हैं। इसे एक उदाहरण से समझें। माना आप अपने सामने एक लैम्प रखकर कोई पुस्तक पढ़ रहे हैं। लैंप के उचित स्थान पर न होने के कारण उसका प्रकाश ठीक से पुस्तक पर नहीं पड़ेगा। फलस्वरूप आपको पढ़ने में कठिनाई आयेगी। पुस्तक तथा आप माना स्थिर अवस्था में हैं परन्तु लैम्प को सुविधानुसार प्रकाश पाने के लिए किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता है। जैसे-जैसे लैम्प पुस्तक के पीछे खिसकाया जायेगा आपको पढ़ने में सुखद अनुभूति होगी। रत्न भी ठीक ऐसे ही प्रिज्म अथवा लैंस की तरह कार्य करते हैं। यह ब्रह्माण्डीय स्रोतों से वांछित रश्मियां एकत्र करके शरीर में प्रविष्ट करवाते हैं जिससे कि हमें सुखद अनुभूति होती है।

प्र० : रत्न के पीछे रत्नों के औने, पौने, सवाए आदि भार का क्या औचित्य है?

उ० : कोई नहीं, यह अपरिपक्व मानसिकता की देन है। भगवान के प्रसाद की तरह रत्नों में भी सवा, डेढ़, औने-पौने भार का चलन प्रचलित हो गया। व्यवसायी निर्बुद्धि वर्ग भी रत्न बताते समय डरा देते हैं-"यदि सवा सात रत्ती का रत्न नहीं होगा तो अनर्थ हो जायेगा।" रत्न विक्रेता भी वांछित भार का रत्न पैदा कर देते हैं। भले ही वास्तविक तौल में उसका भार कुछ और निकले।

प्र० : नकली रत्नों का चलन कब से है?

उ० : सत्रहवीं सदी में नकली कांच पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसका आकार-प्रकार ठीक हीरे जैसा बना दिया गया था। इसका अर्थ है कि कम से कम चार सौ वर्ष पूर्व तो इनका चलन हो ही गया था। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध से लेकर मध्य तक नकली रत्नों का देश-विदेश में व्यापार धड़ल्ले से होता था।

प्र० : बसरे के मोती नाम से जो बिकता है क्या वह ठीक है?

उ० : नहीं। समुद्र में इतना क्रूड आयल गिरता है कि बसरा नामक क्षेत्र के समुद्र का सारा पानी दूषित हो गया। परिणामस्वरूप दसों वर्षों से वहाँ की प्राकृतिक मोती बनाने वाली सीप ही समाप्त हो गयी हैं। अब बसरे का मोती कहाँ से आ रहा है, स्वयं सोचिए?

प्र० : रत्नों के विषय में जो पौराणिक किंवदन्तियाँ पढ़ने-सुनने में मिलती हैं—क्या उनमें सत्यता है?

उ० : पुराण हैं, पौराणिक कथाएँ भी हैं। उनमें सार-सत भी हैं परन्तु अधिकांशतः किंवदन्तियाँ ही बना दी गयी हैं। उत्थान के लिए हमें वर्तमान परिवेश में जीना है, पौराणिक युग में तथाकथित् अतिश्योक्ति वाली दन्त कथाओं और किंवदन्तियों में नहीं।

प्र० : रत्न विज्ञान के निदान वाले पहलू पर आपका अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण क्या है?

उ० : रत्नविज्ञान से एक सीमा तक निदान-लाभ सम्भव है। परन्तु उसका कोई एक नियम सब पर फिट बैठे, यह आवश्यक नहीं है।

अलग-अलग स्थान के तीन ऐसे रोगी हैं जो बिल्कुल एक से मिलते-जुलते किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हैं। एक योग्य डाक्टर तीनों को बिल्कुल एक सी दवाई देता है। यहाँ यह आवश्यक नहीं है कि तीनों रोगी एक ही दवाई से रोगमुक्त हो जाएँ। एक ठीक हो जाता है, दूसरे पर उसी दवा का विपरीत प्रभाव हो जाता है तथा तीसरे पर कोई प्रभाव ही नहीं होता। योग्य डाक्टर स्थान, समय, मनोवृत्ति, रोगी आदि को देखकर निश्चय ही अलग-अलग दवा देगा। अनेक पहलू टटोल कर फिर निदान वाले क्षेत्र में जायेंगे तो वांछित फल की अधिक सम्भावना होगी।

प्र० : लाभ के लिए रत्न किससे लेना चाहिए सुनार से, रत्न विक्रेता से या फिर किसी योग्य रत्न गणना करने वाले बौद्धिक व्यक्ति से ?

उ० : योग्य रत्न विषयज्ञाता से अनुकूल रत्न चयन करवायें। सुनार अथवा रत्न विक्रेता रत्न गणना कदापि नहीं कर सकता। रत्न विक्रेता से रत्न क्रय करें क्योंकि वहाँ से रत्न अपेक्षाकृत सस्ता मिलने की सम्भावना रहेगी।

प्र० : रत्नों की माला बनाते समय उनमें धागा पिरोने के लिए छेद कर दिये जाते हैं। क्या ऐसे रत्नों की अंगूठी भी बनवाई जा सकती है ?

उ० : नहीं। रत्न एक प्रकार से खण्डित हो गया और खण्डित रत्न अपेक्षाकृत अपनी ग्राह्यशक्ति खो देता है।

प्र० : रत्नों का चलन क्या वैदिक काल में था ?

उ० : ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में रत्न शब्द का प्रयोग मिलता है। परन्तु वस्तुतः यह रत्नबोधन प्रचलित रत्न न होकर वनस्पतियों की जातियाँ थीं। अथर्ववेद में मणियों का अवश्य वर्णन आता है। रामायण, बाईबिल, महाभारत आदि ग्रंथों में तो रत्नों का वर्णन खूब आता है। हाँ रत्नों के नाम वहाँ भिन्न अवश्य हैं।

प्र० : रत्नों की वानस्पतिक जाति से क्या तात्पर्य है ?

उ० : वानस्पतिक अर्थात् हाथाजोड़ी, कुशा ग्रंथि, श्वेतार्क, नागकेसर, रुद्राक्ष, एकाक्षी नारियल, तुलसी मञ्जरी आदि।

प्र० : रत्नों की अंगूठी के स्थान पर यदि उनकी माला धारण की जाए तो क्या अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगी।

प्र० : मेरे दृष्टिकोण से नहीं। रत्न यदि अच्छी गुणवत्ता वाला है और व्यक्ति विशेष के लिए ठीक-ठाक गणना किया गया है तो उसका सूक्ष्मभार भी प्रभावशाली सिद्ध होगा। ऐसा नहीं है कि रत्न का बड़ा सा पत्थर गले में बाँध लिया जाए तो वह प्रभाव दिखायेगा। एक चम्मच घी से जो आपूर्ति होगी वह एक गिलास घी पीकर नहीं। एक गिलास घी पीकर पता नहीं क्या होगा? स्वयं मनन करें?

प्र० : पुस्तक में रत्न चयन की इतनी अधिक विधियाँ लिख दी गयी हैं, इससे पाठकों में भ्रम उत्पन्न नहीं होगा कि कौन सी विधि अपनाएँ और कौन सी छोड़ दें? सर्वाधिक अच्छी विधि कौन सी है?

उ० : बिल्कुल नहीं, भ्रम कैसा? जब बच्चा पढ़ता है तो उसके कंधों पर गधे के भार के समान विषयों का बोझ होता है। उच्चशिक्षा में क्रमशः तीन, दो, एक विषय ही रह जाते हैं। अन्ततः विषय में से भी सार-सत निकाल कर क्रीम सरीखी मात्र एक विषय-वस्तु की खोज करी जाती है। भाग्य यदि अनुकूल नहीं होता तो वह क्रीम भी खट्टी निकल जाती है। परिणामस्वरूप अपनाई नहीं जाती, फेंक दी जाती है, कुछ ऐसा ही गोपाल राजू का साहित्य है।

अब आप इसे बिल्कुल हिन्दी में समझें। आपके सामने ब्लैक फॉरेस्ट केक, पाम फिश, चिकन पिज्जा, हॉट डॉग, मुगलई चिकन, कलाकन्द, इंद्राणी, रसमाधुरी, मथुरा की खुरचन, बदायूँ का पेड़ा, इंदौर की घमण्डी लस्सी, आगरा का अंगूरी पेठा, कोलकाता की चमचम, मुम्बई की फ्रूट आईस्क्रीम, कुमायूँ की बाल मिठाई, पंजाब का दही-मठ्ठा, मक्का की रोटी आदि एक साथ परोस दिया जाए और कहा जाए कि अपने स्वाद के अनुसार आप चुन लें तो हमारे उत्तर भारत का व्यक्ति खाने के लिए सब भोज्य पदार्थ छोड़कर गुड़ खाना पसन्द करेगा। जिसने मिठाई का स्वाद चखा ही नहीं उसके सामने क्या रसमलाई और क्या खाँड। जिसने सबका स्वाद चख लिया है वही तो समझ पायेगा कि क्या बेस्वाद हैं और क्या सुस्वाद। भोज्य पदार्थ में अपने स्वाद के अनुसार तो खाने वाला ही चुनेगा न। दूसरे उसका शरीर और स्वाद क्या स्वीकार करता है, यह महत्त्वपूर्ण है।

इतनी सामग्री इसीलिए परोसी गई है कि पता नहीं किसको क्या पसंद आ

प्र० : मेरे दृष्टिकोण से नहीं। रत्न यदि अच्छी गुणवत्ता वाला है और व्यक्ति विशेष के लिए ठीक-ठाक गणना किया गया है तो उसका सूक्ष्मभार भी प्रभावशाली सिद्ध होगा। ऐसा नहीं है कि रत्न का बड़ा सा पत्थर गले में बाँध लिया जाए तो वह प्रभाव दिखायेगा। एक चम्मच घी से जो आपूर्ति होगी वह एक गिलास घी पीकर नहीं। एक गिलास घी पीकर पता नहीं क्या होगा? स्वयं मनन करें?

प्र० : पुस्तक में रत्न चयन की इतनी अधिक विधियाँ लिख दी गयी हैं, इससे पाठकों में भ्रम उत्पन्न नहीं होगा कि कौन सी विधि अपनाएँ और कौन सी छोड़ दें? सर्वाधिक अच्छी विधि कौन सी है?

उ० : बिल्कुल नहीं, भ्रम कैसा? जब बच्चा पढ़ता है तो उसके कंधों पर गधे के भार के समान विषयों का बोझ होता है। उच्चशिक्षा में क्रमशः तीन, दो, एक विषय ही रह जाते हैं। अन्ततः विषय में से भी सार-सत निकाल कर क्रीम सरीखी मात्र एक विषय-वस्तु की खोज करी जाती है। भाग्य यदि अनुकूल नहीं होता तो वह क्रीम भी खट्टी निकल जाती है। परिणामस्वरूप अपनाई नहीं जाती, फेंक दी जाती है, कुछ ऐसा ही गोपाल राजू का साहित्य है।

अब आप इसे बिल्कुल हिन्दी में समझें। आपके सामने ब्लैक फॉरेस्ट केक, पाम फिश, चिकन पिज्जा, हॉट डॉग, मुगलई चिकन, कलाकन्द, इंद्राणी, रसमाधुरी, मथुरा की खुरचन, बदायूँ का पेड़ा, इंदौर की घमण्डी लस्सी, आगरा का अंगूरी पेठा, कोलकाता की चमचम, मुम्बई की फ्रूट आईस्क्रीम, कुमायूँ की बाल मिठाई, पंजाब का दही-मट्ठा, मक्का की रोटी आदि एक साथ परोस दिया जाए और कहा जाए कि अपने स्वाद के अनुसार आप चुन लें तो हमारे उत्तर भारत का व्यक्ति खाने के लिए सब भोज्य पदार्थ छोड़कर गुड़ खाना पसन्द करेगा। जिसने मिठाई का स्वाद चखा ही नहीं उसके सामने क्या रसमलाई और क्या खाँड। जिसने सबका स्वाद चख लिया है वही तो समझ पायेगा कि क्या बेस्वाद हैं और क्या सुस्वाद। भोज्य पदार्थ में अपने स्वाद के अनुसार तो खाने वाला ही चुनेगा न। दूसरे उसका शरीर और स्वाद क्या स्वीकार करता है, यह महत्त्वपूर्ण है।

इतनी सामग्री इसीलिए परोसी गई है कि पता नहीं किसको क्या पसंद आ

जाए और महत्त्वपूर्ण यह है कि किसका मन-शरीर क्या स्वीकार करता है। सर्वाधिक अच्छा क्या है यह तो निर्भर करेगा व्यक्ति-व्यक्ति पर। किसी को कड़ुवा करेला अच्छा लगेगा और किसी को अल्फान्जो नामक दुर्लभ आम, कोई गुड़ पसन्द करेगा तो कोई ब्लैक फॉरेस्ट केक आदि..आदि..।

प्र० : कुछ विद्वान उन ग्रहों के रत्न चुनते हैं जो जन्मपत्री में बलहीन हों ?

उ० : हाँ कुछ स्कूल ऐसे हैं जो नीच के ग्रहों के रत्न धारण करवाते हैं। यह भी उचित है परन्तु यह चयन उस स्थिति में अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है जहाँ रत्न रोगनिदान के लिए प्रयोग किए जा रहे हों।

प्र० : रत्नों को प्रयोग करने से पहले उन्हें सिराहने रखकर सोने जैसी आदि बातें प्रचलन में हैं, यह कहाँ तक सत्य हैं ?

उ० : उपयुक्त चुना हुआ रत्न नियमानुसार जब शरीर के सम्पर्क में आयेगा तब ही प्रभावी सिद्ध होगा। इस प्रकार रत्न यदि प्रभाव दिखाने लगता तो सबसे पहले तो वह रत्न विक्रेता को, जिसके बैग में रत्न भरे होते हैं, फल देता। हाँ कुछ प्रभावशाली, महत्त्वपूर्ण तथा दुर्लभ रत्न ऐसे भी हो सकते हैं जिनका प्रभाव घर में प्रवेश के बाद से ही हो सकता है। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। परन्तु ऐसे रत्न सर्वसाधारण की पहुँच से बहुत दूर हैं, इसलिए उन्हें भूल जाइए।

प्र० : क्या मूल्यवान रत्नों का ही प्रभाव मानव शरीर पर पड़ता है ?

उ० : नहीं ऐसा नहीं है। यदि रत्न चयन ठीक हुआ है तो साधारण मूल्य का उपरत्न अथवा उससे सम्बन्धित वनस्पति, रंगादि भी प्रभाव दिखायेंगे। प्रारब्ध तो प्रधान है ही, यह कभी न भूलें।

प्र० एक समयावधि के बाद क्या रत्न प्रभावहीन हो जाते हैं ?

उ० : कुछ पुस्तकों में निम्न प्रकार से वर्णन मिलता है कि माणिक्य 4 वर्ष, मोती 2 वर्ष, 1 मास 27 दिन, मूंगा 3 वर्ष 3 दिन, पुखराज 4 वर्ष 4 माह 10 दिन तक प्रभावी रहते हैं आदि। यह सिद्धान्त भी रत्नों के भार की तरह आधारहीन है।

रत्न का प्रभाव निर्भर करेगा उसकी गुणवत्ता पर तथा ग्रह-नक्षत्रों की गोचरवश विभिन्न स्थितियों पर।

प्र० : क्या चुम्बक (Magnet) भी रत्नों की तरह प्रभावी सिद्ध होता है ?

प्र० : हाँ, इसका प्रयोग रक्तचाप को सन्तुलन में लाने के लिए व्यापक स्तर पर किया जाता है।

प्र० : प्राण-प्रतिष्ठा अथवा रत्न को किसी क्रम-उपक्रम से चैतन्य कर देना क्या विज्ञान सम्मत है ?

उ० : हाँ। रत्न को चैतन्य करके उसके मूल आभामण्डल में जो परिवर्तन होते हैं। वह अब पी.आई.पी. पद्धति से मूर्त किए जा सकते हैं।

प्र० : आज हर दूसरा-तीसरा व्यक्ति रत्न, धातुओं का कड़ा, छल्ला आदि पहने दिखाई दे जाता है, इसका क्या अर्थ निकालें ?

उ० : इसका यही अर्थ निकालें कि इस विद्या का कुछ न कुछ अस्तित्व तो अवश्य है। परन्तु व्यक्ति क्या पहन रहे हैं ? क्यों पहन रहे हैं ? यहाँ भेड़ चाल तथा अज्ञानता अधिक है। आप स्वयं मनन करें मदारी की तरह दसों उँगलियों में रत्न धारण करना, गंडे-ताबीज़, त्रिपुण्ड-माला आदि से बाह्य आडम्बर रचा लेना क्या यह सब वैज्ञानिक, शास्त्रोक्त अथवा बौद्धिक मानसिकता का प्रतीक है ?

प्र० : रत्नों की कुल संख्या 84 मानी गयी है। यह संख्या रत्न जगत में अशुभ क्यों मानी गयी है ?

उ० : यह एक अंधविश्वास के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह ठीक है कि रत्न जगत में 84 रत्ती, कैरेट अथवा एक पैकेट में 84 रत्न रखना आदि प्राय: चलन में नहीं है। इसे ठीक ऐसा ही समझें जैसा कि अंक विज्ञान में 13 अंक को अशुभ माना जाता है।

प्र० : रत्न के लिए धातु तथा उँगली का भी वर्णन करें।

उ० : यदि धातु तथा उस उँगली की समुचित व्यवस्था कर ली जाए जिसमें कि रत्न धारण करना है तो परिणाम—त्वरित होगा।

किस ग्रह का रत्न	कौनसी धातु	कौनसी उँगली
1. सूर्य	स्वर्ण, तांबा	अनामिका
2. चन्द्र	चाँदी	कनिष्ठिका

3. मंगल	स्वर्ण अथवा तांबा	अनामिका
4. बुध	पारा, स्वर्ण अथवा काँसा	कनिष्ठिका
5. गुरु	स्वर्ण अथवा चाँदी	तर्जनी
6. शुक्र	त्रिधातु	कनिष्ठिका
7. शनि	रांग, त्रिधातु, लोहा, सीसा अथवा चाँदी	मध्यमा

नोट : राहु तथा केतु के लिए क्रमशः सूर्य तथा मंगल के दिन निश्चित हैं। यह अनामिका तथा कनिष्ठिका में त्रिधातु में धारण करें। त्रिधातु हैं—सोना, चाँदी, और लोहा। अष्ट धातुएँ हैं—सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, जस्ता, रांगा, सीसा तथा पारा।

प्र० : जहाँ दो से अधिक रत्न—उपरत्न धारण करने की बात है तब उनको जड़वाने का क्रम क्या होना चाहिए ?

उ० : सर्वाधिक प्रभावी उँगली ऐसे में अनामिका सिद्ध होगी। माना इसमें आप माणिक्य, पन्ना तथा पुखराज एक साथ एक ही अंगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहते हैं। तो मध्य में माणिक्य, तर्जनी उँगली की तरफ पुखराज और कनिष्ठिका उँगली की तरफ पन्ना रखें।

सामान्यतः माणिक्य से तर्जनी उँगली की तरफ क्रमशः नीलम के रत्न—उपरत्न तथा कनिष्ठिका उँगली की तरफ क्रमशः बुध, चन्द्र तथा शुक्र के रत्न—उपरत्न जड़वाएँ। यदि आप पैन्डेण्ट में यह जड़वा रहे हैं तो नवरत्न जड़वाने का क्रम चुनें। परन्तु यह सामान्य से नियम हैं। रत्न जड़वाने का क्रम व्यक्ति—व्यक्ति पर/निर्भर कर सकता है। पुखराज, माणिक्य तथा पन्ना एक व्यापारी मित्र को मैंने उनकी तर्जनी उँगली में धारण करवाकर विलक्षण परिवर्तन देखा। यही संयोग पहले वह अनामिका उँगली में धारण किए हुए थे जहाँ वह पूर्णतया निष्प्रभावी सिद्ध हो रहा था।

प्र० : रत्न अंगूठी में जड़वाये कैसे जाएँ ?

उ० : रत्न ऐसे जड़वाये कि पीछे से उसका भाग शरीर के उस भाग पर स्पर्श अवश्य करे जहाँ वह धारण किया जा रहा है। रत्न के नीचे वाला भाग (Apex) सदैव शरीर को स्पर्श करे। रत्न ऐसे चुनें जिसमें यह भाग रत्न के

ठीक मध्य में उसके फोकस पर हो ताकि रश्मियाँ यहाँ केन्द्रित हो कर शरीर में समाविष्ट हो सकें।

प्र० : यूनानी चिकित्सा पद्धति में रत्नों का क्या महत्त्व है ?

उ० : भारतीय चिकित्सा पद्धति में रत्नों की भस्म बनाकर रोग के निदान का कार्य किया जाता है। परन्तु यूनानी पद्धति में उन्हें पीसकर उनका चूरण तथा बुरादा बनाकर रोगोपचार में प्रयोग किया जाता है। वह मानते हैं कि भस्म बनाने से रत्न के मूलभूत गुण जलकर नष्ट हो जाते हैं।

प्र० : क्या रत्नों में भी वर्ण भेद माना गया है ?

उ० : हाँ सामाजिक व्यवस्था की तरह रत्न व्यवस्था के भी चार भाग माने गये हैं। उन्हीं के आधार पर रत्नों का वर्गीकरण हुआ है।

वर्ण	रत्न
ब्राह्मण	पुखराज, हीरा
क्षत्रिय	मूंगा, माणिक्य
वैश्य	मोती
शूद्र	पन्ना, नीलम, गोमेद तथा लहसुनिया

प्र० : रत्न चौरासी बताए गए हैं। क्या सब उपलब्ध हो जाते हैं ? क्या सब प्रयोग भी किये जाते हैं ?

उ० : नहीं सब रत्न उपलब्ध नहीं है। सब ज्योतिषीय दृष्टिकोण से प्रयोग भी नहीं किये जाते। उनका अन्यत्र उपयोग होता है। जैसे मूसा उपरत्न से खरल बनता है। सेलखड़ी से पाउडर आदि बनाया जाता है। जहरमोहरा साँप का विष उतारने के काम आता है। सुरमा से आँखों का अंजन बनाया जाता है। कुछ उपरत्नों से आयुर्वेद में भस्म, पिष्टी आदि बनाकर रोगोपचार में प्रयोग किए जाते हैं।

प्र० : मणियाँ क्या हैं ?

उ० : मणियाँ वस्तुतः रत्न ही है। संस्कृत में दुर्लभ, मूल्यवान आदि रत्नों को मणिसंज्ञक बना दिया गया है। यह रत्नों के ही नाम हैं। जैसे सूर्यकांत मणि माणिक्य का ही नाम है। तमोमणि गोमेद, पुष्य अर्थात पीतमणि पुखराज के नाम हैं।

प्र० : रत्न कितने प्रकार के होते हैं ?

उ० : यह विवादास्पद प्रश्न है। अब तक के उपलब्ध आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि धरती को रत्नगर्भा कहा गया है 2500 से भी अधिक अकार्बनिक रसायन उपलब्ध हैं। परन्तु इतनी बड़ी संख्या में से मात्र 16 ने ही रत्नों की श्रेणी पायी है। तथाकथित् 84 रत्न इनमें ही आते हैं। इन 84 रत्नों में से भी कुछ दुर्लभ अथवा काल्पनिक हैं। पता नहीं वह कभी अस्तित्व में आए भी अथवा नहीं, जैसे पारस मणि।

प्र०.: अनेक रत्नों को अक्रीक्र का नाम दे दिया जाता है, क्या यह उचित है?

उ०: अक्रीक्र वर्ग में बहुत से रत्न आते हैं, यह ठीक है। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि जो रत्न हमारी समझ के बाहर हैं वह अक्रीक्र वर्ग के ही हैं। क्रिस्टल एक सामान्य सा नाम है। क्वार्ट्ज एक अन्य ऐसा ही नाम है। इनके अन्तर्गत अनेक रत्न आते हैं जैसे सुलेमानी, कैल्सीडोनी, कार्नीलियन, रॉक किस्ट्रल. गुलाबी क्वार्ट्ज, ऐमिथिस्टीय क्वार्ट्ज, कैट्स आई कवार्ट्ज, जैस्पर, ऐवेन्टुराइन क्वार्ट्ज आदि। सामान्य भाषा में यह अक्रीक्र वर्ग के ही हैं इसलिए विभिन्न नामों से भ्रम होना स्वाभाविक है।

प्र०: आकृति के अनुसार रत्न कितने प्रकार के होते हैं?

उ०: प्रकृति के अनुसार इनकी कुल छः श्रेणियाँ हैं:—

1. विषम लम्ब अक्षवाले-इनमें चौड़ाई से लम्बाई अधिक होती है। जैसे पैरिडौट, पल्ली आदि।

2. एक नत अक्षवाले-मून स्टोन, मणियाँ आदि इस श्रेणी में आते हैं।

3. तीन नत अक्षवाले-अनेक प्रकार की मणियाँ इस श्रेणी में आती हैं।

4. चतुष्कोण आकृति वाले-गोमेद आदि इस श्रेणी के रत्न हैं।

5. षट्कोण आकृति वाले-कोरण्डम, नीलम आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

6. घनाकार आकृति वाले-इन रत्नों में लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई तथा मोटाई सब समान होती हैं।

प्र.: आम उपलब्ध साहित्य में रत्नों की शुद्धता की परख वाली बाते जो प्रकाशित होती रहती है, उनमें कहाँ तक सत्यता है?

उ.: रत्नों की परख उनकी क्रिस्टलीय तथा रासायनिक संरचना और

भौतिक गुणों के आधार पर की जाती हैं। वस्तुतः यही सत्य आँकने की कसौटी है। किसी भी खनिज-रत्न की विश्वसनीय परख इसके अतिरिक्त निर्भर करती है उसके परमाणिवक संघटन पर। इसके लिए आवश्यकता होती है उपकरण से सुसज्जित प्रयोगशाला की। परन्तु ऐसे उपकरण सर्वसाधारण को सुलभ नहीं हैं इसलिए रत्न की सत्यता पर भी प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है। मोटे तौर पर भौतिक परख के रूप में निम्न बातें भी सत्यता की परख में उपयोगी सिद्ध होती हैं :—

प्रकाश-आधारित गुण तथा रंग, द्युति, स्फुरदीप्ति, प्रतिदीप्ति आदि। स्वाद, गंध, स्पर्श-आधारित गुण। सम्युचयन-आधारित गुण, आकृति, बहुरूपता, कठोरता, विदलन आदि। आपेक्षित घनत्व चुम्बकत्व तथा अन्य गुण।

इसलिए बेसिर-पैर की तथाकथित बातों जैसे कि माणिक्य को दूध में डालने से वह उबलने लगता है, मूंगा जलाने से जलता नहीं, लहसुनिया को मुट्ठी में कुछ समय के लिए बन्द रखा जाए तो वह अग्निस्वरूप ज्वलंत होने लगता है, रत्न के ठीक बराबर चावल साथ बांधकर सोने से यदि वह सच्चा है तो चावल का भार घटा देता है आदि को अपने बुद्धि विवेक से ही अपनाएँ।

प्र.: क्या यूरेनस तथा नेप्च्यून के लिए भी कोई रत्न है ?

उ.: इसके लिए क्रमशः गोमेद तथा लहसुनिया प्रयोग करके देखें।

प्र.: रत्नों की विभिन्न आकृतियों का भी वर्णन करें जो सामान्यतः प्रचलित है ?

उ.: सामान्यतः रत्नों की कटिंग के समय उनके वर्ग के अनुसार उनको आकृति दी जाती है तथा ध्यान रखा जाता है कि उसमें अनुरूपता (Symmetry) रहे। वस्तुतः सिद्धान्त यह है कि रत्न का शिखर (Apex) ऐसा हो कि उसके बाह्य सतह से किरणें यहाँ से ठीक-ठीक फोकस हो सकें। रत्न इसीलिए अंगूठी आदि में इस प्रकार जड़वाए जाते हैं कि उनकी निचली सतह शरीर को स्पर्श करे और शिखर के माध्यम से किरणें शरीर में समाविष्ट हो सकें। रत्नों के निम्न प्रकार आकार अधिकांशतः प्रचलन में है।

रत्न	आकार
1. मूंगा	त्रिकोण

2. मोती	गोल
3. पन्ना, पुखराज, नीलम, माणिक्य	षट्कोण, अंडाकार
4. हीरा	षट्कोण
5. अक्रीक्र	अण्डाकार

भारत तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ प्रसिद्ध आकृतियाँ निम्न है :—

कैबीकोन कटिंग, पटल कटिंग, स्टेप कटिंग, ज्वलन्त कटिंग, जाल कटिंग, गुलाबी कटिंग तथा मिश्रित कटिंग जैसे— पतंग, कुंजी पत्थर, सम आयत, सिरेकटे त्रिकोण, अर्धचन्द्र तथा त्रिकोण, चतुर्भुज, पंचभुज आदि।

प्र.: कुछ विश्वप्रसिद्ध हीरों के नाम बताएं ?

उ.: प्राचीन तथा जगप्रसिद्ध कुछ हीरे हैं— जहाँगीर शाह हीरा, निजाम हीरा, दरिया-ए-नूर, ध्रुव हीरा, नासिक हीरा, कुनीनन हीरा, ग्रेट मुगल हीरा, ओरलेक हीरा, पिट का रीजेंट हीरा, कोह-ए-नूर, होप, स्टार आफ इण्डिया तथा जोंकर आदि।

प्र.: क्या हीरे के झिरकन के अतिरिक्त अन्य उपरत्न भी हैं ?

उ.: हीरे के कुछ अन्य उपरत्न हैं - सिम्मा हीरा, कंसला हीरा, कुरंगी हीरा, तंकू हीरा तथा दत्तला हीरा आदि।

प्र.: कहते हैं कि हीरा चाटने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है ?

उ.: नहीं, यह बात ठीक नहीं है। हाँ, यदि हीरे को निगल लिया जाए और समय रहते उपचार न करवाया जाए तो सम्भावना रहती है कि अपनी कठोरता के कारण वह आँतों को काट दे और व्यक्ति की मृत्यु हो जाए।

प्र.: क्या रत्नों में रंग कृत्रिम रूप से भी भरे जाते हैं ?

उ.: हाँ, ताप द्वारा अथवा कुछ रासायनिक घोलविशेष द्वारा रत्नों को कृत्रिम रूप से भी रंगकर अधिक आकर्षक बनाया जाता है जिससे कि अलंकरण के रूप में उनकी आभा और भी निखर जाती है। परन्तु इस प्रकार से रंगे गए रत्न की आभा प्राकृतिकरूप से मिलने वाले रत्नों की तरह स्थाई नहीं होती है।

प्र.: ऐसा क्या है जिसने आपको रत्न विज्ञान की ओर आकर्षित किया अथवा कहें कि आपको इतना सब कुछ करने की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

उ.: रोटरी क्लब, बस्तर में रत्न विषय पर मेरा भाषण चल रहा था, वहाँ किसी ने मेरा मनपसंद यह प्रश्न पूछा था।

मुझे सर्वाधिक प्रेरित किया आचार्य रजनीश जी ने। उन्होंने "ज्योतिष अद्वैत का विज्ञान" में लिखा है कि समस्त ब्रह्माण्ड एक लयबद्धता में है। धरती के प्रत्येक कण-कण से अनवरत विकिरण होता रहता है। प्राकृतिक रूप से सृष्टि स्वयं ही अपना सन्तुलन बनाने में लगी रहती है। इसमें बना असन्तुलन ही शरीर, समाज, देश, वनस्पति आदि में अराजकता उत्पन्न करने लगता है। ग्रह-नक्षत्र तथा मानव शरीर में भी एक सन्तुलन बना हुआ है। असन्तुलन की स्थिति में रत्न-उपरत्नादि भी एक अच्छा प्रभावशाली उपक्रम सिद्ध होता है। अमरीका के डॉ. ऑस्कर ने दो तरंगों के मध्य सन्तुलन का एक अच्छा प्रयास किया है। विभिन्न ग्रह तथा उनसे सम्बन्धित रत्नों की वेव लैंथ की उन्होंने गणना की। उन्होंने बताया कि विपरीत ग्रहों की वेव लैंथ सदैव ऋणात्मक होती है तथा रत्नों की धनात्मक। धन तथा ऋण में जब परस्पर सम्बन्ध बनता है तो उनका दुष्प्रभाव तटस्थ हो जाता है। निम्न सारणी में ग्रह तथा रत्नों की वेव लैंथ लिख रहा हूँ इससे शोध के विद्यार्थियों को आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी।

ग्रह	वेव लैंथ (ऋणात्मक) X 10^{-7} से.मी.	रत्न	वेव लैंथ (धनात्मक) X 10^{-7} से.मी.
सूर्य	65,000	माणिक्य	70,000
चन्द्र	65,000	मोती	70,000
मंगल	85,000	मूंगा	65,000
बुध	85,000	पन्ना	70,000
गुरू	1,30,000	पुखराज	50,000
शुक्र	1,30,000	हीरा	80,000
शनि	65,000	नीलम	70,000
राहु	35,000	गोमेद	70,000
केतु	35,000	लहसुनिया	70,000

—x—x—

ज्ञानवर्धक साहित्य पढ़ें

- श्रीमद्भागवत के 1100 रस बिन्दु *(जगद्गुरु बालस्वामी)*
- प्रभु मिलेंगे कैसे : प्रवचन संग्रह *(जगद्गुरु बालस्वामी)*
- ज्ञान सागर *(ज्ञानचिन्तकों के मर्मस्पर्शी वाक्य)*
- गीता दर्शन: श्रीमद्भगवद् गीता की व्याख्या *(नन्दलाल दशोरा)*
- विश्व का सर्वोच्च ज्ञान : चारों वेद *(अनुवाद सहित)*
- अंधविश्वास सत्य और तथ्य *(गोपाल राजू)*
- चमत्कारी हिप्नाटिज्म : रोगोपचार और त्राटक साधना *(एस. एम. बहल)*
- गायत्री साधना : गायत्री विज्ञान पर विवेचन *(एस. एम. बहल)*
- आध्यात्मिक ज्ञान के 1100 स्वर्ण सूत्र *(नन्दलाल दशोरा)*
- गीता में सम्पूर्ण योग *(नन्दलाल दशोरा)*
- सम्पूर्ण वेदों का महामन्त्र गायत्री *(बुद्धि प्रकाशदेव उपाध्याय)*
- गायत्री अर्थ संग्रह *(स्वामी सुरेश्वरा नन्द)*
- कुण्डलिनी संकेत विद्या : ललिता सहस्त्रनाम *(पं. कुलपति मिश्र)*
- आदि शंकराचार्य कृत—सौन्दर्य लहरी *(अनुवादक : पं. कुलपति मिश्र,*
- चमत्कारी रुद्राक्ष : महिमा और प्रयोग *(बाबा एवं उपाध्याय)*
- विवेक चूड़ामणि (हिन्दी अर्थ व व्याख्या) *(लेखक : नन्दलाल दशोरा)*
- ब्रह्मसूत्र : वेदान्त दर्शन (सजिल्द) *(नन्दलाल दशोरा)*
- योगवाशिष्ठ : महारामायण *(नन्दलाल दशोरा)*
- जीवन साधना से आत्मिक आनन्द *(नन्दलाल दशोरा)*
- ज्ञान से मानसिक शान्ति *(नन्दलाल दशोरा)*
- धर्म क्या है *(नन्दलाल दशोरा)*
- जीवन में सुख की खोज *(नन्दलाल दशोरा)*
- धर्म का मर्म *(नन्दलाल दशोरा)*
- विश्व के प्रमुख धर्म और उनके उपदेश *(सुरेश चन्द्र अग्रवाल)*
- मन्त्र, तन्त्र और रत्न रहस्य *(तांत्रिक बहल)*
- रत्न उपरत्न और नग नगीना ज्ञान *(पं. कपिल मोहन)*
- रत्न परिचय और चिकित्सा विज्ञान *(डॉ. उपाध्याय)*
- रूद्राक्ष और राशि के रत्न *(प्रकाश चन्द्र अग्रवाल)*

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

श्वास-प्रश्वास की सिद्धि का गहन अध्ययन-

स्वर शास्त्र

अर्थात् स्वयं सीखिये स्वरोदय ज्ञान

लेखक — श्री स्वामी हरिहरदास त्यागी

मनुष्य जब नाक के नथनों से वायु ग्रहण करता है तो वह **'श्वास'** है तथा जब नाक के नथुनों से प्राणवायु निःसृत करता है तो वह 'प्रश्वास' कही जाती है। इसी श्वास-प्रश्वास की गहन विद्या को जानने का नाम स्वर शास्त्र है।

भारतीय ज्योतिष में सर्वप्रथम स्थान रखने वाली इस स्वरोदय विद्या पर बहुत ही कम शोध कार्य हुआ है। अपितु यह स्वयं सिद्ध विद्या है तथापि स्वर का समुचित एवं सर्वस्व ज्ञान प्रदान करने वाले ग्रन्थ संस्कृत में ही उपलब्ध रहे। इन संस्कृतनिष्ठ प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों एवं लुप्तप्राय स्वरज्ञान के साहित्य को एकत्र करके स्वामी श्री हरिहरदास त्यागी जी ने अनकों वर्षों तक पूरे भारत में भ्रमण करके प्रयोग किये तब इसके अनुभवगम्य ज्ञान को सरल दोहों तथा छप्पय में प्रस्तुत किया है।

योग एवं ज्योतिष के इस संयुक्त शास्त्र में मनुष्य जीवन के विभिन्न भविष्यफल बताने की अद्‌भुत शक्ति है। इस पुस्तक का अंतिम भाग ध्यान साधना एवं कुण्डलिनी शक्तिपात के साधकों के लिए भी उपयोगी है।

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

'गोपाल राजू'
की अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

- अन्धविश्वासों का सत्य और तथ्य अर्थात् क्यों।
- सरलतम धनदायक तान्त्रिक प्रयोग
- हस्तरेखाओं से रोग की पहचान : मेडीकल पामिस्ट्री
- सात दिन में ज्योतिष ज्ञान (प्रारम्भिक)
- मन्त्र जाप के रहस्य एवं सरल प्रयोग
- दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय अर्थात् दूर करें दुर्भाग्य
- अंकों से चुनिए बच्चों के भाग्यशाली नाम
  (3500 सार्थक नामों के शब्दकोष सहित)

उपरोक्त सभी पुस्तकें प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें -

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

+++ +++ +++ +++ +++ +++ +++ +++ +

प्रस्तुत पुस्तक— स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न

यह पुस्तक आपको कैसी लगी, आपने इससे क्या लाभ उठाया, अन्य पुस्तकों की अपेक्षा आपने इसे पसन्द किया या नहीं, इत्यादि बातों में आप लेखक को अवगत करायें, इससे भविष्य में इस पुस्तक को और अधिक प्रयोगात्मक बनाने में सहायता मिलेगी। आपकी सम्मति से पुस्तक में सुधार होगा तो यह पाठकों के लिए और अधिक मूल्यवान बन सकेगी। आप अपने पत्र एवं सम्मति लेखक को निम्न पते पर भेजें—

गोपाल राजू
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र (रजि०)
30, सिविल लाइन, रूड़की (हरिद्वार)

रणधीर प्रकाशन
हरिद्वार

विभिन्न विषयों की नवीन पुस्तकें

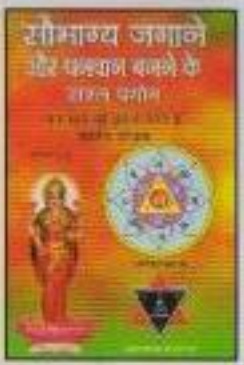

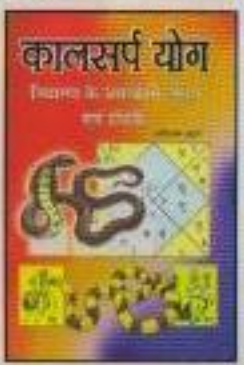

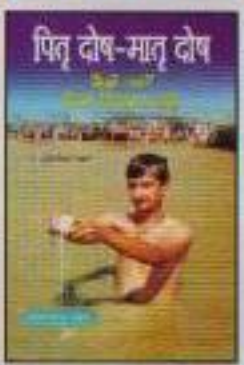

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार : 249401
फोन : 01334-226297

2. धार्मिक ग्रन्थ और नयी पुस्तकें

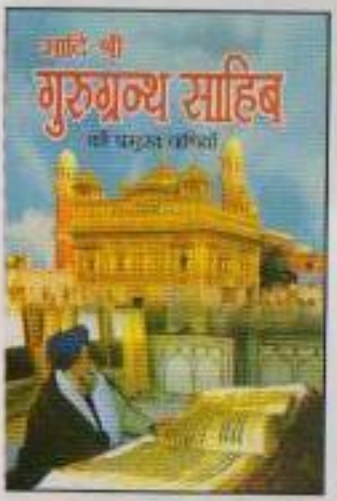

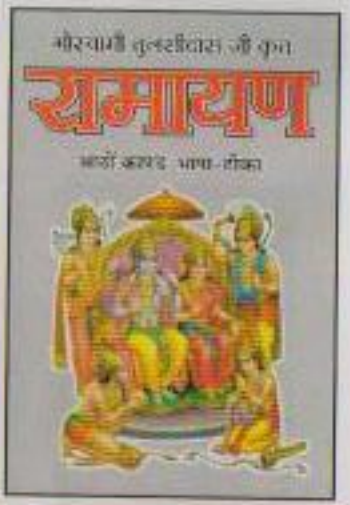

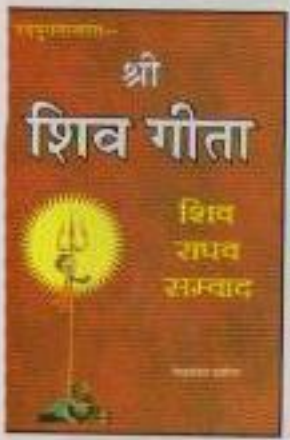

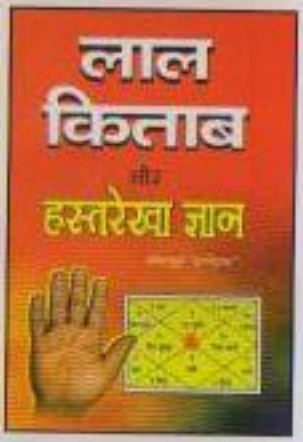

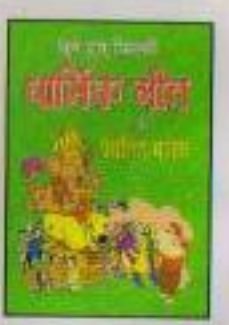

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

3. प्रत्येक परिवार के लिए संग्रहणीय ग्रन्थ

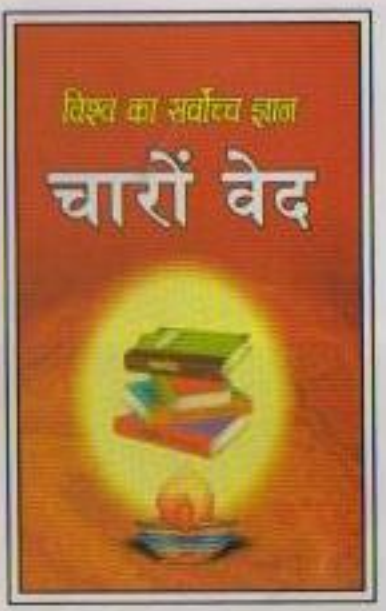

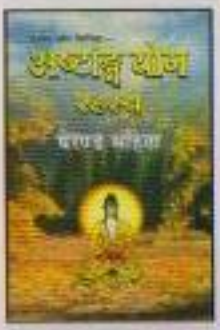

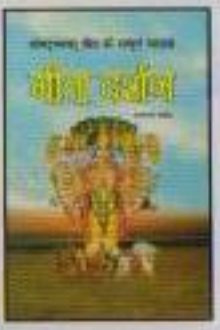

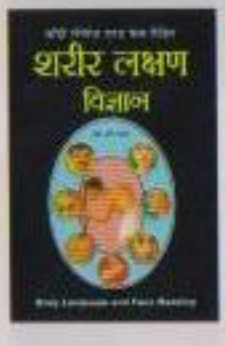

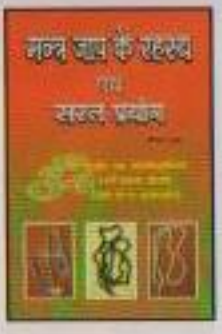

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

4. विभिन्न प्रकार के विषयों की श्रेष्ठ पुस्तकें

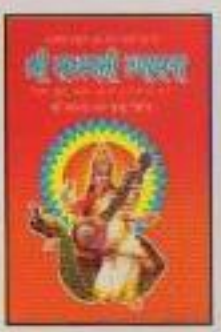

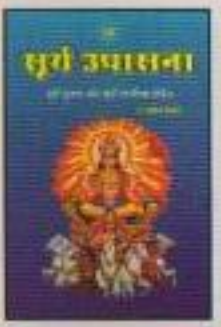

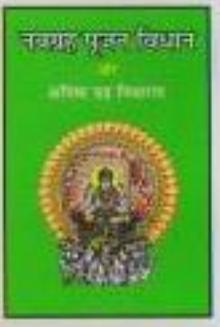

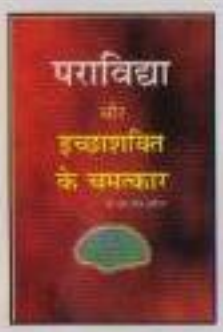

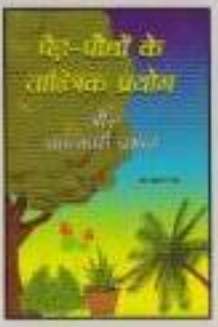

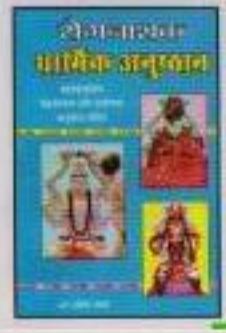

5. ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकों का अनूठा संग्रह

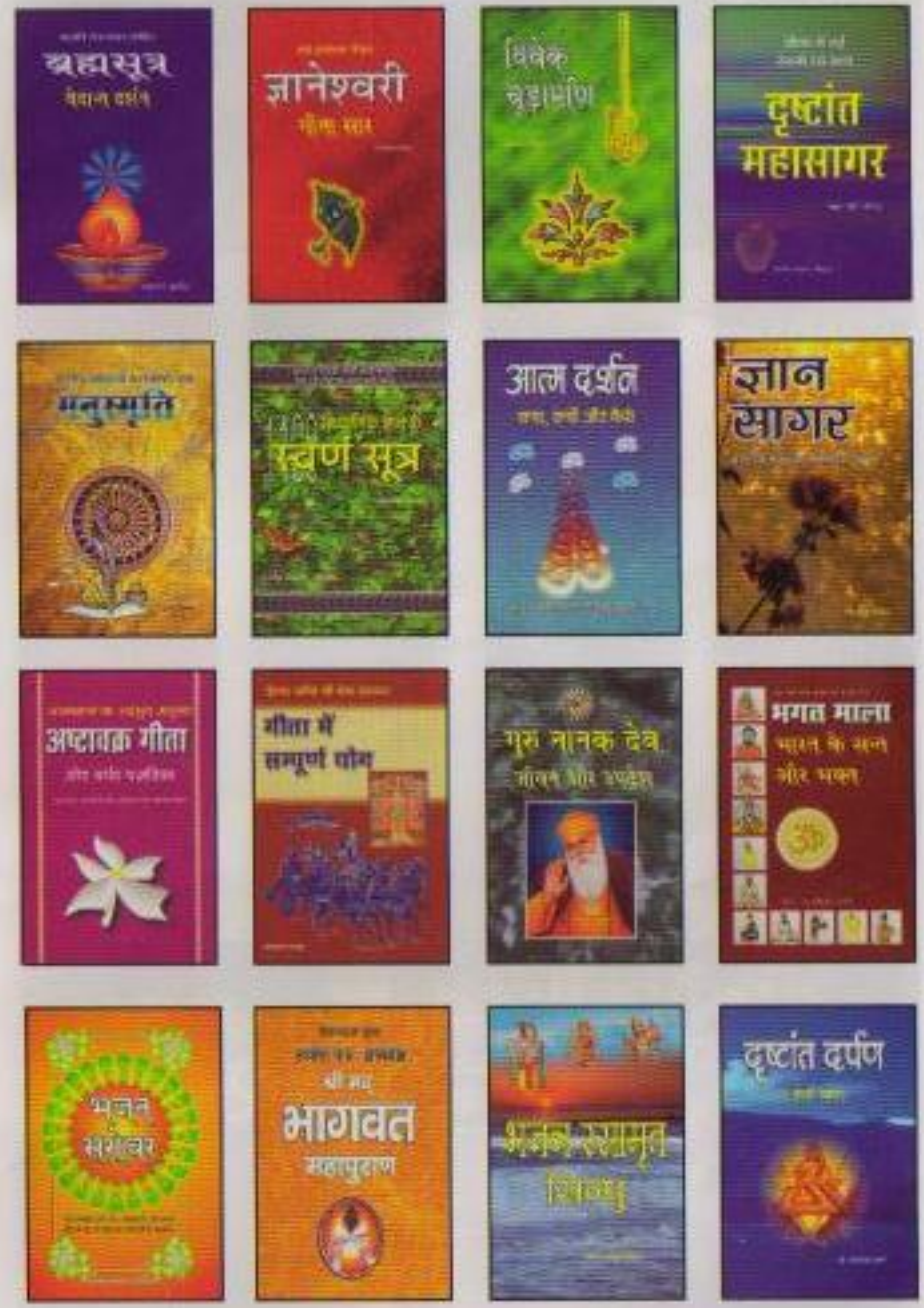

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

6. मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र व रत्न सम्बन्धी पुस्तकें

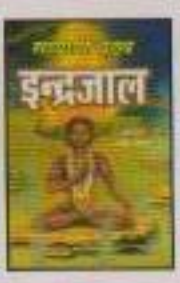

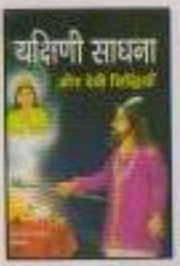

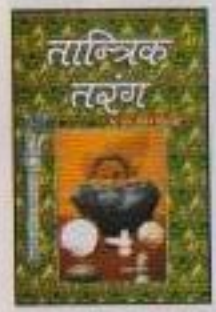

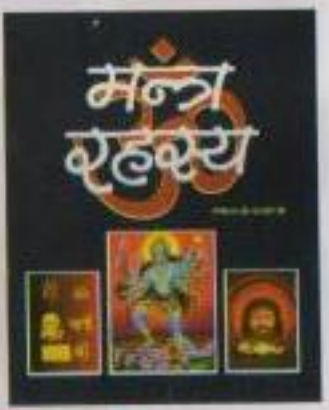

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, करोलबाग

7. ज्योतिष, रत्न, वास्तु एवं अन्य पुस्तकें

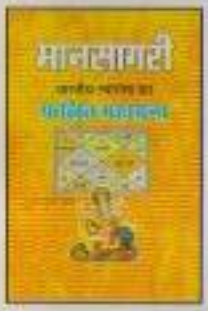

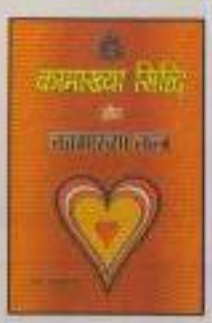

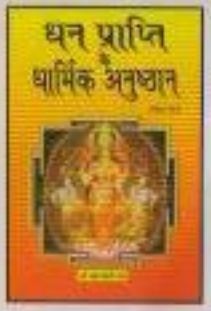

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

8. हर घर में पढ़े जाने वाले पुराणों की श्रृंखला

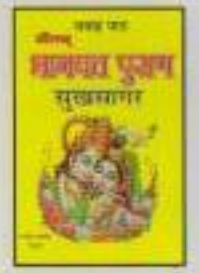

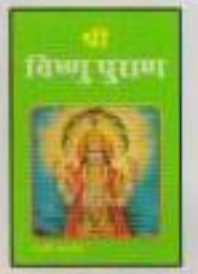

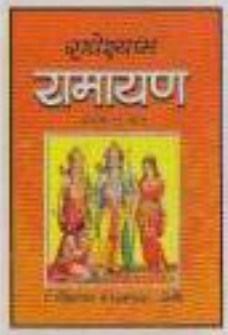

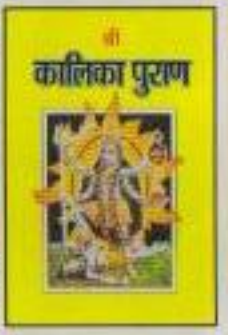

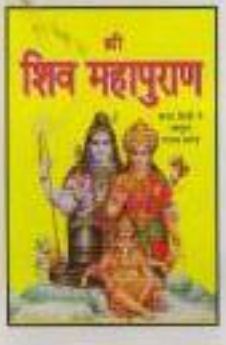

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

गोपाल राजू

रत्न मर्मज्ञ, रत्न विशारद

रत्न शिरोमणि,

मिलेनियम एवार्ड इन जैमोलॉजी,

ज्योतिष महामहोपाध्याय

यही पुस्तक क्यों....

- क्योंकि पौराणिक कथाओं तथा विषय की पारम्परिक रूप से प्रकाशित पुस्तकों से यह सर्वथा अलग है।
- क्योंकि रत्न विज्ञान विषयक आज तक के उपलब्ध साहित्य में रत्न चयन करने की इतनी सारी विधियाँ न तो उजागर हुई हैं न उन्हें उजागर करने का किसी ने प्रयास किया है।
- क्योंकि रत्न चयन करने के सूत्र,उनकी विवेचना तथा वास्तविक उदाहरणों सहित प्रस्तुत किए गए हैं, इसलिए वह जनसाधारण के लिए सरल बन गए हैं।
- क्योंकि इस पुस्तक का जितना अधिक अध्ययन, मनन तथा मंथन किया जाएगा उतने ही रत्नरूपी नवीन सूत्र हाथ लगते जायेंगे।
- क्योंकि रत्न को धारण करने से पूर्व की सर्वाधिक प्रभावशाली विधि इस पुस्तक में वर्णित है, इससे प्रभावहीन हुआ कोई भी रत्न पुनः चैतन्य हो जाएगा।
- क्योंकि इस पुस्तक के समस्त तथ्य प्रयोगातीत हैं इसलिए पुस्तक के अध्ययन-मनन से आपको अपना भाग्यशाली रत्न अवश्य मिल जाएगा।
- रत्न विज्ञान की यह एक ऐसी पुस्तक है जिसकी माँग एक दशक पूर्व अर्थात् उसके प्रकाशन के पहले से ही होने लगी थी।

रणधीर प्रकाशन हरिद्वार